।। श्रीनाथ जी ।।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

तृतीय पुष्प

(आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष)

।। श्रीनाथजी ।।

पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका

तृतीय-पुष्प

(आश्विन-कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौष मास)

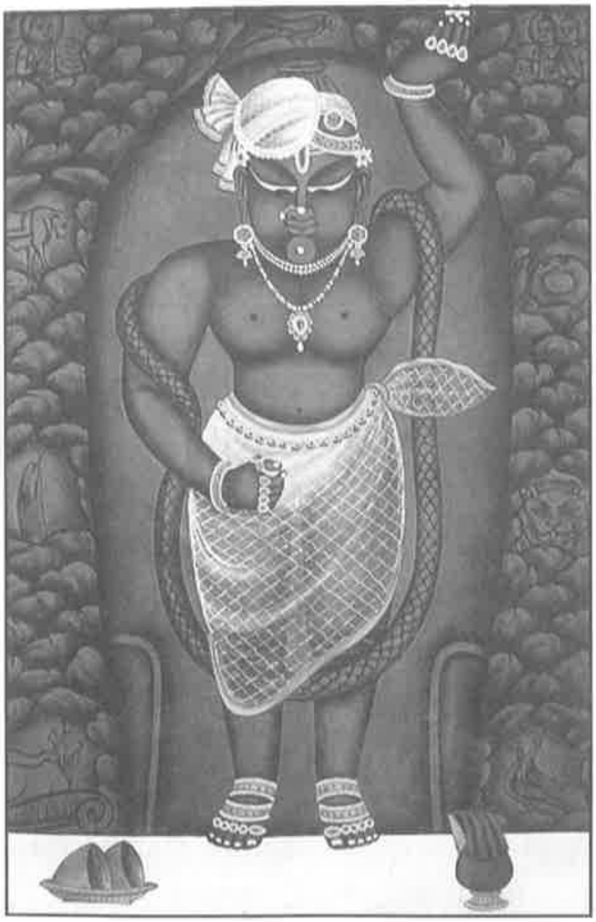

संकलन

मदनलाल शर्मा

26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294-2417209 (निवास)

संकलनकर्ता एवं प्रकाशक
श्री मदनलाल शर्मा
26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2417209 (निवास)
मोबाईल : 09461808099

संशोधन एवं संयोजन
श्री रमणलाल पारीख
19–ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2484929 (निवास)
मोबाईल : 09829307969

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक
श्री मदनलाल शर्मा
26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 313001
फोन : 0294–2417209 (निवास), 09461808099 (मोबाईल)

प्रथम संस्करण – 2012, आवृत्ति – 1000

न्यौछावर:
रू. 301.00 (तृतीय खण्ड के)

प्राप्ति स्थान
श्री मदनलाल शर्मा, 26, रामद्वारा चौक, उदयपुर (राज.) 0294–2417209
श्री रमणलाल पारीख, 19–ए, मोगरावाड़ी, उदयपुर (राज.) 0294–2484929, 09829307969
श्री बजरंग पुस्तकालय, दाऊजी घाट, मथुरा, 281001
श्री जगमोहनदास अरोड़ा, श्रीविट्ठलनाथजी मंदिर, नाथद्वारा, 0921495115

मुद्रक:
संजय प्रिन्टर्स
71, महिला मण्डल स्कूल, उदयपुर

आभार

परम कृपालु निकुंज नायक श्री गोवर्धन के चरणकमलों में सविनय यह "पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिका" का तृतीय पुष्प समर्पित करते हुए अत्यंत हर्ष है। इस तृतीय पुष्प में श्रीनाथजी के घर की प्रणालिका दिनांक 27–07–1982 स्व. श्री राधाकृष्णजी किर्तनिया विट्ठलनाथजी मन्दिर, नाथद्वारा से प्राप्त श्रृंगार एवं प्रतिदिन के किर्तनों का संकलन (माह–आश्विन, कार्तिक, मार्गशिर्ष एवं पौष का) प्रस्तुत किया जा रहा है। यह ग्रंथ श्रीगोवर्धननाथजी की कृपा एवं आचार्यवर्य गोस्वामी तिलकायत श्री 108 श्री राकेशजी (श्री इन्द्रदमनजी) महाराजश्री के शुभ आर्शीवाद के फलस्वरूप ही प्रकाशित किया जा रहा है।

इस ग्रंथ के पदों का संकलन एवं चयन नाथद्वारा मंदिर के किर्तनकार श्री तोलारामजी, श्री पन्नालालजी कुमावत तथा श्री लालन मंदिर के किर्तनकार श्री दामोदरजी कुमावत तथा श्री विट्ठलनाथजी मंदिर के किर्तनकार श्री भंवरलालजी कुमावत एवं अन्य किर्तनकारों का प्रमुख सहयोग रहा। जो अलभ्य पद थे उन्हें प्राप्त कराने में उक्त किर्तनकार महोदयों का बहुत सहयोग रहा।

इस ग्रंथ में प्रकाशित चित्रजी को उपलब्ध कराने में श्री भरतजी पालीवाल, गीता स्टूडियों नाथद्वारा, श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत भट्टियानी चोहट्टा उदयपुर तथा श्री भगवानदासजी चित्रकार नाथद्वारा का पूर्ण सहयोग रहा। इस ग्रंथ के संयोजन एवं संशोघन का महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण रूचि एवं लगन से श्री रमणलालजी पारीख, मोगरावाड़ी, उदयपुर ने किया है एवं ग्रंथ प्रकाशन में पूरा समय देकर महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस ग्रंथ के कम्प्यूटराईजेशन में "सन कम्प्यूटर", मुखर्जी चौक, उदयपुर के श्री लोकेशजी अग्रवाल एवं संजय प्रिन्टर्स, उदयपुर जिन्होंने न्यूतम लागत पर इस ग्रंथ का मुद्रण कर सहयोग दिया।

मैं उपरोक्त सभी महानुभावों का हृदय से अत्यंत आभारी हूँ कि इनके सहयोग से ही यह ग्रंथ प्रकाशित होकर आप सभी वैष्णवों के पास पहुँच सका है। विश्वास है कि वैष्णवजनों को नित्य सेवा में यह बहुत उपयोगी होगा। इस ग्रंथ में संशोघन कार्य बहुत ही लगन से किया गया है फिर भी भूल होना मानव का स्वभाव है अतः उसके लिये क्षमा करावें। किसी प्रकार की त्रुटि हो तो विद्वान वैष्णवजन कृपया उसकी जानकारी कराऐंगे ऐसी आशा है। कष्ट हेतू क्षमा प्रार्थी है।

दासानुदास

मदनलाल शर्मा

नर्बदादेवी शर्मा

दीपोत्सव, संवत २०६९

दिनांक १३-११-२०१२

आभार के दो शब्द

परम कृपालु श्रीजी बाबा तथा भगवदीयों की कृपा का फल है कि श्रीमदनलाल जी शर्मा जिन्हे मास्टर साहब के नाम से भी संबोधित किया जाता रहा है, द्वारा द्वितिय भाग के पश्चात इस पुष्टिमार्गिय सेवा प्रणालिका भाग–3 के संशोधन एवं संयोजन का कार्य भी मुझे सोंपा। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझ अकिंचन को उन्होंने इस महत्वपूर्ण कार्य के योग्य माना, मैं उनका बहुत आभारी हूँ। संशोधन के दौरान सभी पदों का बार–बार पठन होने से उनका अवगाहन एवं आत्मसात करने का अनायास विशेष लाभ मुझे मिला। इस कार्य में रूचि उत्पन्न करने का श्रेय प. भ. श्री हरिदासजी आगरा का रहा है।

वैसे तो इस ग्रंथ के संशोधन में पूरा ध्यान रखा गया है फिर भी, जैसा कि मानव स्वभाव वश भूल होना संभव है अतः कोई त्रुटि रह गई हो तो आशा है आप वैष्णवजन उदार हृदय से क्षमा करेंगे। मैं आभारी रहूँ कि उस कमी को बतलाने की कृपा करेंगे ताकि अगले अंक में और विशेष सावधानी रखी जा सके।

सभी वैष्णवों का कृपाभिलाषी।

दासानुदास
रमणलाल पारीख

क्र.स.	पद	पेज
६७	आज हमारे जैवों मोहन	२०२
६८	आज हमारे भोजन कीजे	१६२
६९	आधो मुख निलांबर सों ढांप्यो	१८१
७०	आन और आन कहत	७०
७१	आनंद आज नंदजु के द्वार	२२२
७२	आप कदंब चढ़ देखत श्याम	१७७
७३	आपुन मंगल गावै रानीजू	२२२
७४	आरोगत नंदलाल सयाने	२३९
७५	आलीरी सांवरी मुरति तेरे जियमें	२३३
७६	आवत कान्ह बने गोप बालक	१३२
७७	आवत जात हों हार परीरी	१६८
७८	आवत है आगे दे गैय्या	२३७
७९	आवो गोपाल श्रृंगार बनाऊँ	१३६
८०	आवो रे आवो भैय्या ग्वालों	१२६
८१	आये अलसाने सरसानी में	१५०
८२	आयें मेरे नंद नंदन के प्यारे	५४
	{इ}	
८३	इक आवत घरते चल धाई	७३
८४	इत ही श्याम गोपन संग ठाडे	१०१
	{उ}	
८५	उठत प्रातः रसना रस पीजैं	३
८६	उत्तर देहों कहा जाय पियसों	१५७
८७	उमड़ उमड़ बादर आयेरी	६
८८	उमड़ रहे बादर सगरी निशाके	६
	{ए}	
८९	एक रसना कहा कहो सखीरी	२४७
९०	ए तुम चले जाओ ढ़ोटा	३०
९१	एरी सखी सामरी हो अकेली	४३
९२	एसो को है जो छुवे मेरी मटुकी	३३
	{ऐ}	
९३	ऐ कौन प्रकृति तिहारी हो	३१
९४	ऐरी यह वृंदावन रंग	५८
	{क}	
९५	कछु अब कही न जाई	१५७
९६	कटि पर नीके लटपटात पीत पट	२४९
९७	कदंब चढ़ कान्ह बुलावत गैया	५१
९८	कपि चल्यो सिय समोद के	६१
९९	कबको भयो रे ढोटा दधि दानी	१५
१००	कमल सी अँखियां लाल तिहारी	२४४
१०१	कर मोदक माखन मिश्री ले	४४
१०२	करत है भक्तन की जो सहाय	१२५
१०३	करत हरि नृत्य नवरंग राधा संग	७६
१०४	कहत प्यारी राधिका अहीर	२०३
१०५	कहत सबनसों आओ आओ	२१८
१०६	कहा ओछी व्है है जात	१३६
१०७	कहा कहो लाल सुघर रंग	५६
१०८	कहां कैसे खेले लालन	१३५
१०९	कहाँ ते आये हो उठ प्रातः	२४५
११०	कहाँ जु बसे सारी रात नंदसुत	२३४
१११	कहेंधो मेरे बारे हो लाल	१२२
११२	कहो तुम सांची कहां ते आये	२३९
११३	कहो जु दान लै हों कैसे	१६
११४	कहो जु दान कैसो, कित रोकत	१९
११५	कहुँ उमड़े कहुँ घुमड़े फिरत हो	१७८
११६	कान जगावन चले री कन्हाई	१११
११७	कान्ह कह्यो नंद भोग लगावो	९८
११८	कान्ह कुंवर के कर पल्लव पर	१२०
११९	कान्ह कैसो मांगत दान	१४
१२०	कान्हर कारो नंद दुलारो	२३७
१२१	कापर ढोटा नयन नचावत	२०
१२२	किरती कुल मंडन गाईये	२५
१२३	कीजे लाड़िले पान अब दुध लाई हों	११
१२४	कीजे लाल यहि बार बियारू	१०
१२५	क्रीडत मणीमय आंगन रंग	१४४
१२६	कुल्हे की पाघ सिरपेच	१६०
१२७	कुसुम सेज पिय प्यारी पौढ़े	१२
१२८	केसर की धोती कटि केसरी उपरना-ठाडे	२१२
१२९	केसर की धोती कटि केसरी - तिलक भाल	२२०
१३०	केसर की धोती पहेरे, केसरी उपरना ओढ़े	३८
१३१	कैसे कैसे गैय्या चराई	१३३
१३२	कोउ सखी माधो लेहों माधो	१९
१३३	कौन दान दानी को	३०
१३४	कौन सुकृत इन वृजवासिन को	२३०
१३५	कृपा अवलोकन दान दैरी	२५

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
१३६	कृपा सिंधु श्री विट्ठलनाथ	२११	१७१	गोपाल को मुखार बिन्द जियमें	२५१
१३७	कृष्ण नाम जबतें श्रवण सुन्योरी	२३२	१७२	गोपाल माई कानन चले हैं	१३४
	{ख}		१७३	गोपी ग्वाल पुकारन लागे	१२९
१३८	खेलत रास रसिक रस नागर	८०	१७४	गोवर्धन की शिखर सांवरो	२५०
१३९	खेलत में को काको गुसैयां	२४७	१७५	गोवर्धन गिरी पर ठाडे लसत	१४६
१४०	खेली बहो खेली गांग बुलाई	१११	१७६	गोवर्धन चढ़ि टेरी हो	१७९
१४१	खिरक बन आछे बड़्ड़े बगर	१६८	१७७	गोवर्धन पूजा के दिन आये	७५
१४२	खिरक खिलावत गायन ठाड़े	११४	१७८	गोवर्धन पूजन चलेरी गोपाल	१०७
१४३	खंजन नैन रूप रसमाते	२३५	१७९	गोवर्धन पूजा को आये सकल	१०९
	{ग}		१८०	गोवर्धन पूजा कर गोविन्द	११०
१४४	गढ़ ते ग्वालिन उतरी	१७	१८१	गोवर्धन पूजो गोकुलराई	११७
१४५	गये पाप ताप दूर देखत	५४	१८२	गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ	१६२
१४६	गाऊँ श्रीवल्लभ ध्याऊँ श्रीवल्लभ	२	१८३	गोविन्द गोकुल की मणी मेरे	१२८
१४७	गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण	५४	१८४	गोविन्द चले चरावन गैय्या	१३४
१४८	गाय खिलावत शोभाभारी	१०८	१८५	गोविन्द तिहारो स्वरूप निगम	१३६
१४९	गायन के पाछे पाछे, काछे काछे	२४९	१८६	ग्र ग्र - थुंग थुंग तित किट थुंगन	७८
१५०	गायन सों रति, गोकुल सों रति	१९६		{घ}	
१५१	ग्वालिन तें मेरी गेंद चुराई	२४८	१८७	घर घर नंद महर के मिस ही मिस	२४४
१५२	ग्वालिन प्रकट्यो पूरण नेह	२१	१८८	घरी एक छांडो तात बिहार	११३
१५३	ग्वालिन मांगत वसन आपुने	१५१	१८९	घुंघट में मोहन मुख जोवे	१६४
१५४	ग्वालिन मीठी तेरी छाछि	२८		{च}	
१५५	गावौ गावौ मंगल चार, बधावो	१९९	१९०	चढ़ गिरि श्रृंग कहत मोहन	२५०
१५६	गिरिचढ़ टेरत ऊँचे बांह	५१	१९१	चढ़े हरि कनकपुरी पर आज	६९
१५७	गिरिधर हटरी भली बनाई	११६	१९२	चन्द्रमा नटवारी मानों सांझ	१८१
१५८	गिरि पर कोपि के उठ्यो इन्द्र	१२१	१९३	चमक आयो चन्द्र सो मुख	१८१
१५९	गुजरिया तू गर्व गहेली उत्तर नाहीं देत	१८	१९४	चरन कमल बंदो जगदीश	१३९
१६०	गुर के गुंजा पुवा सुंहारी	१०२	१९५	चल सखि चल अहो वृज पेठ लगी	२४६
१६१	गैय्या गई दूर टेरो जू कान्ह	५१	१९६	चलन न देत हो यह बटियां	१९
१६२	गोकुल की ब्रजनार दह्यो नित	३४	१९७	चलरी सखी नंदगांव जई बसीये	१५१
१६३	गोकुल को कुल देवता प्यारो	६७	१९८	चलहु गोपाल बोलत महतारी	१४४
१६४	गोकुल गोधन पूज हीं	१०५	१९९	चलहु राधिके सुजान, तेरे हित	७२
१६५	गोद बेठाय जिमावत मैय्या	१२४	२००	चलिये जु नेंकु कौतुक देखन	७७
१६६	गोद बैठे गोपाल कहत वृजराजसों	८९	२०१	चले किन जाओ अपुनी गेल	१४
१६७	गोधन पूज सबै रंग भीने	११७	२०२	चलो मेरे लाड़िले हों, पायन	२०९
१६८	गोप समाज जुटे जमुना तट	९७	२०३	चहुँ युग वेद वचन प्रतिपार्यो	५२
१६९	गोप वधु मंडल मध्य नायक	७४	२०४	चांपत चरण मोहनलाल	११
१७०	गोपन सों यों कहत कन्हाई	११८	२०५	चिरंजीवो लाल गोवर्धनधारी	१२९

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
२०६	चिरैया चूहु चुहाँनी	५	२४१	जे जन सरन आये ते तारे	२१०
२०७	चित्र सराहत चितवत मुरमुर	१५६	२४२	जेंवत कान्ह करत किलकारी	१२६
२०८	चोवा में चहल रहे हो लालन	७०	२४३	जेंवत नंद कान्ह बल भैय्या	१५१
	{छ}		२४४	जैसो श्याम नाम	१७७
२०९	छाक को भई अबार	१३०	२४५	जो कोई श्रीयमुना नाम संभारे	९
२१०	छाक ले आई ग्वालन गोरी	३८	२४६	जो पें श्री वल्लभ शरण गहे	२
	{ज}		२४७	जो पें श्री विट्ठल रूप न धरते	२००
२११	जब कुद्‌यो हनुमान उद्‌धि	५७	२४८	जो तूं अछन अछन पग धरनी धरे	२३३
२१२	जब जब देखो जाय हरि को	१६७	२४९	जो वसुदेव किये पूरण तप	२१२
२१३	जबतें श्री विट्ठलनाथ जु नयन भर	२१०		{झ}	
२१४	जन्म लियो शुभ लग्न विचार	२०७	२५०	झमकि चल राधे तोपें	१७९
२१५	जमुना घाट रोकी हो रसिक	४३	२५१	झुक रही सुन मुरली की टेर	५७
२१६	जय जय लाल गोवर्धनधारी	११८	२५२	झुठी मीठी बतियन हो लालन	१७९
२१७	जय जय जय मोहन बलबीर	११८	२५३	झूम रहे बादर सगरी निशाके	६
२१८	जय जय जय श्रीयमुना आनंद	८		{ट}	
२१९	जय जय जय श्रीवल्लभनाथ	२	२५४	टेढी हे री आली टेढ़ी अलक	१४२
२२०	जय जय जय श्रीवल्लभनंद	३	२५५	टेर हो टेर कदंब चढ़	१५२
२२१	जय जय जय श्रीवल्लभप्रभु	१		{ठ}	
२२२	जयति गोविन्द आनन्दमय	२१८	२५६	ठाड़ौई देख्यों यमुना घाट	१७
२२३	जयति भागीरथी नाथ पद्मावती	२४३	२५७	ठाड़ैरी खरिक माई कौन	१८३
२२४	जयति रूक्मिणीनाथ पद्मावती	५३		{ढ़}	
२२५	जय श्रीवल्लभ राजकुमार	१४१	२५८	ढ़ोटा काहे कों बढ़ावत रार	१७
२२६	जलते निकस तीर सब आवहु	१८८		{त}	
२२७	जसुमति लाल को वदन दिखैये	५	२५९	तरणी तनया तीर आवत ही	२४७
२२८	जसोदा एक बोल जो पाऊं	२०२	२६०	तिलक तिलंगना हो	२००
२२९	जाऊँगी वृंदावन भेटोंगी गोपाले	१४७	२६१	तिहारे खिरक बताई हो	६८
२३०	जाओ जाओ गुजरिया झूठी	१४	२६२	तिहारो दरस मोहि भावे	७
२३१	जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	१३८	२६३	तुमको टेर टेर में हारी	१६
२३२	जागिये वृजराज कुंवर, कमलकोष	५	२६४	तुम नंदमहर के लाल, मोहन	२३
२३३	जागे जगजीवन जगनायक	१३९	२६५	तुम पहिले तो देखो आय	१८७
२३४	जागे हो रैन तुम नैना अरूण हमारे	२४६	२६६	तुम पौढ़ों हो सेज बनाऊँ	१२
२३५	जा दिन संत पाहुने आवत	५४	२६७	तुम बृजरानी के लाला	२१४
२३६	जान्यो जान्यो री सयान	४४	२६८	तू चल मेरो राखो मान	५५
२३७	जान्यो प्रीत को मरम	१५२	२६९	तू बनरा रे बनी बनी आया	४८
२३८	जित्यो जित्यो हो यशोदा को नंदन	११८	२७०	तू मोहि कित लाई री यह गली	२०९
२३९	जुगल वर आवत हैं गठजोरे	२४५	२७१	तें मेरी मोतीन लर क्यों तोरी	२४८
२४०	जुरी चली है वधावन नंद मेहर	१९४	२७२	तें कहुं देख्योरी आली	२८

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
२७३	तेरी गति अगाध ये मोपे	२५१	३०९	देव दीवारी शुभ एकादशी	१३९
२७४	तेरी हों बलिबलि जाऊँ	१६२	३१०	देहों व्रजनाथ हमारी आंगी	१५५
२७५	तेरी भ्रोंह की मरोरन तें	१५९	३११	दोऊ कूल खंभ तरंग सीढ़ी	९
२७६	तेरी लाल लागो मोय बलाय	२३०	३१२	दोऊ मिल करत भांवती बतियां	७५
२७७	तेरे री वदन कमल पर नंदनंदन	५१	३१३	दौऊ कर जोड भये सब ठाडे	१००
२७८	तेरे पैयां लागु गिरिधर	१८३	३१४	दौरी दौरी आवत मोहि मनावत	५९
२७९	तेरो कहा लिये जात	१६३		{ध}	
२८०	तैं जु नीलपट ओट दियौरी	१७४	३१५	धन्य गोकुल जहाँ गोविंद आये	१९२
२८१	तैलंग कुल दीपक प्रगटे	५२	३१६	धन्य यशोदा भाग्य तिहारो	१९५
२८२	तोहि मिलन को बहुत करत हें	७१	३१७	धन्य रानी जसुमति गृह आवत	२३०
	{द}		३१८	धैनन को ध्यान निश दिन मेरे	१३१
२८३	दक्षण गति चरण अति सुखद	२०९	३१९	धौरी धुमर पीली पीहर	१०१
२८४	दान घाटी छाक आई	१४		{न}	
२८५	दान निवेरी लाल घर आये	४१	३२०	नटवर गत निर्तत है भक्तन	६३
२८६	दान मांगत ही में आनी	३०	३२१	नमो देवेन्द्र दर्पहर मुरारी	९९
२८७	द्वारे आय गुणीजन ठाडे	२२८	३२२	नमो नमो जयति श्री यमुने	७
२८८	दिन दुल्हे मेरो कुंवर कन्हैया	४८	३२३	नमो वल्लभाधीश पदकमल युगले	२
२८९	दीप दान दै हटरी बैठे	१०४	३२४	न्हवावत है सुत को नंदरानी	१११
२९०	दीप दान दै हटरी बैठे नंदबाबा	११६	३२५	नव निकुंज देवी राधिके	४५
२९१	दीप दान वृजराज देत दोऊ	११५	३२६	नवल किशोर नवल नागरिया	१२
२९२	दीप दान दे श्याम मनोहर	११४	३२७	नवल किशोर नवल मृगनयनी	३८
२९३	दीप मालिका करन आई व्रजवधु	११५	३२८	नवल किशोर में जु बन पाये	२५३
२९४	दूध दह्यो लूंटत बन बांटत	११	३२९	नागरी नट नारायण गायो	७४
२९५	दूध पियो मन मोहन प्यारे	११	३३०	नागरी नागर सों मिल गावत	७४
२९६	दूध पियो हों कुंवर कन्हाई	११	३३१	नाचत गावत बनते आवत	१५८
२९७	देखन देत न बैरिन पलकें	१४७	३३२	ना छुटे मोहन डोरना अहो	१४१
२९८	देखरी यशोदा मैय्या, कैसे हैं	२३४	३३३	नातर लीला होती जूनी	५४
२९९	देख हो कंथ रघुनाथ आयो	६१	३३४	न्याय दिन दुल्हे हो नंदलाल	१४०
३००	देखो अद्भूत अविगत की गति	१९७	३३५	न्हात बलदाऊ कुंवर कन्हाई	११३
३०१	देखो अपने नैनन को सुख	१०२	३३६	निर्तत मोहन रसिक सखन संग	५८
३०२	देखो इन दीपन की सुन्दराई	१०६	३३७	निर्तत रस दोऊ भाई रंग	२३१
३०३	देखो देखो मुरली भृकुटि नचावति	६४	३३८	निर्तत राधा नंद किशोर	७४
३०४	देखो देखो री नागर नट	६२	३३९	निर्तत रास रंगा रसिक मन	७९
३०५	देखो माई बदरन की बरियाई	१२३	३४०	निरखत ही मन अति आनंद	९
३०६	देखोरी गोपाल कहाँ हे खेलत	१७६	३४१	नीकी ऋतु लागत अति शीत की	१५७
३०७	देखोरी हरि भोजन खात	७०	३४२	नीकी खेली गोपाल की गैया	१०९
३०८	दे री हमारो सुधे दान	३०	३४३	नीके नीके री गोपाल माई चलत	१३०

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
३४४	नीके तप कियो तन गार	१८३	३८०	पूजन चलो कदम्ब वन देवी	४६
३४५	नेक चितै चलेरी लालन	२३९	३८१	पूजा विधि गिरिराज की	१०५
३४६	नैन भर देखों श्री नंद कुमार	२०८	३८२	पूजा सुनत बहुत सुख कीनों	८६
३४७	नंद जु मेरे मन आनंद भयो	२२२	३८३	पूरी पूरी पूरणमासी	८२
३४८	नंद नंदन नवल कुंवर वृजवर	१३३	३८४	प्रेंख पर्यंक शयनम्	२१४
३४९	नंद नंदन वर गिरिवरधारी	१६९	३८५	पौढ़े प्रेम के पर्यंक	११
३५०	नंद नंदन वृंदावन चंद	१९९	३८६	पौढ़े माई मदन मोहन श्याम	१२
३५१	नंद बधाई दीजें ग्वालन	२२८	३८७	पौढ़े रंग महल गोविन्द	२५१
३५२	नंद भवन को भूषण माई	१३७	३८८	पौढ़े रंग महल नंदलाल	२४१
३५३	नंद भवन में कान अरोगत	१७७	३८९	पौढ़े रंग महल सुखदाई	१४१
३५४	नंदादिक वृज मिल बैठे हैं	९५	३९०	पौढे रहो घनश्याम, बलैयां लेहों	१३१
३५५	नंदराय के नवनिधि आई	१९७	३९१	पौढ़े रंग रमनीय राय	२५३
३५६	नंदहि कहत यशोदा रानी	९५	३९२	पौढ़े श्याम जु सुखसेज	१२
	{प}		३९३	पौढ़े हरि राधिका के गेह	११
३५७	परम कृपाल श्री वल्लभ नंदन	५४	३९४	पौढ़िये पिय कुंवर कन्हाई	१२
३५८	परोसत गोपी घुंघट मारे	१५६	३९५	पौढ़िये लाल लाडिली संगलै	१२
३५९	पद्म धर्यो जन ताप निवारण	१३९	३९६	पौष कृष्ण नौमी जब आई	२०५
३६०	प्रकट व्हे मारग रीत दिखाई	२०३	३९७	पौष निर्दोष सुखकोष सुन्दर मास	२०६
३६१	प्रकटे पुष्टि महारस देन	५५		{फ}	
३६२	प्रगटे श्रीविट्ठलनाथजू	२०६	३९८	फूले गोप ग्वाल घर घर के	१०३
३६३	प्रथम गोचारण को दिन आज	१३०	३९९	फूली फूली डोले सोनेके सदन में	२५१
३६४	प्रथम गोचारण चले कन्हाई	१३०		{ब}	
३६५	प्रफुल्लित बन विविध रंग	७	४००	बड़ेन को आगे दे गिरिधर	६०
३६६	प्रलय पयोधि जले, धृतवासनी	१३८	४०१	बडे खिरक में घुमरी खेलत	१०६
३६७	पाछली रात परछांही पातन की	१५६	४०२	बडो देवता कान्ह पूजायो	५८
३६८	प्रातः समें उठ करिये श्रीलक्ष्मणसुत	३	४०३	बड़ौ बाली नंदन बली, विकट	६३
३६९	प्रातः समे उठ सोवत सुतकों	६	४०४	बधाई माई आज बधाई	२२१
३७०	प्रातः समे जागी अनुरागी	५	४०५	बधावो श्रीवल्लभ राय के गृह	२१५
३७१	प्रातः समे नव निकुंज द्वारे	५०	४०६	बनचर कौन देशतें आयो	५९
३७२	प्रातः समे श्रीवल्लभ सुतको	४	४०७	बनठन कहाँ चले ऐसी को	१८२
३७३	पिछोडी बांहन देहो दान	३१	४०८	बनत नहीं यमुना जी को न्हैवो	१७५
३७४	पियको नचवन सिखवत प्यारी	८१	४०९	बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु	७३
३७५	पिय प्यारी कुंज महल में पौढ़े	१२	४१०	बन्यो रास मंडल अहो	७२
३७६	पिय तेरी चितवन ही में टोना	१६१	४११	बल न्हाये ऐसे लालन न्हैये	११३
३७७	पिय तोही नैनन ही में राखुं	१४५	४१२	बलबल आजु की बानिक लाल	४५
३७८	पीताम्बर को चोलना पहिरावत मैय्या	१३७	४१३	बलि बलि चरित्र श्रीगोकुल राय	२२९
३७९	पूज के घर आये गोवर्धन	१२०	४१४	बलिहारी श्री विट्ठलेश की	४

क्र.स.	पद	पेज
४१५	बंशी बजावे साँवरो हो	६२
४१६	बंशीवट के निकट हरि रास रच्यो	७६
४१७	बंशीवारे सांवरे नेक मारग	४०
४१८	बसो मेरे नैनन में यह जोरी	२४५
४१९	बसे मेरे नैनन में दोऊ चंदा	१८१
४२०	बृज भयो महरी के पूत जब	१६३
४२१	बाजत नंद आवास बधाई	५२
४२२	बांट बांट सबहिन को देत	२२
४२३	बादर झूम झूम बरसन लागे	६
४२४	बार बार हरि सिखवन लागे	५३
४२५	बाबा के संग गाय खिलावत	११०
४२६	बाल दशा गोपाल की सब	२२६
४२७	बालि नंदन बली विकट वनचर	६५
४२८	ब्यारू करत जननी पै मोहन	१०
४२९	ब्यारू श्याम अरोगन लागे	१०
४३०	बिफर गई धुमर और कारी	१०७
४३१	बिहारीलाल आई छाक सलोनी	१६
४३२	बेनु बजायो री सुन्दर नंद के कन्हैया	६०
४३३	बैठी गोप कुंवर की पांती	२०३
४३४	बैठी पिय को वदन निहारे	१८२
४३५	बैठे हरि राधा संग	५१
४३६	बोलत काहे न नागरी बैना	१३१
४३७	बोलत धेनु गोवर्धन गिरि चढ़	२५२
४३८	बोलत श्याम मनोहर बैठे	२४८
४३९	बोल लिये सब ग्वाल कहत	६३
४४०	बोहोरी कृष्ण श्रीगोकुल प्रकटे	५२
	{भ}	
४४१	भक्ति गोकुल तें प्रकट भई	१६६
४४२	भक्ति सुधा बरखत ही प्रकटे	२०६
४४३	भली कीनी लाल भोरे आये	२३६
४४४	भले आये भोर गिरिवरधरण	१४२
४४५	भयो मध्यांन्ह छाक की बिरियां	१३२
४४६	भयो हरि पोढ़न को समयो	१२
४४७	भयो श्री वल्लभ गृह अवतार	२१०
४४८	भैय्या हो घेरो घेरो	१५
४४९	भोजन करत देव भये परसन	६७
४५०	भोजन करत नवल पिय प्यारी	२०२
४५१	भोजन करत पिय अरू प्यारी	१७४
४५२	भोजन करत हैं गोपाल	१५३
४५३	भोजन को बोलत महतारी	१४२
४५४	भोजन भयो भांवते मोहन	१६५
४५५	भोर भये यशोदा जू बोले	१४०
४५६	भोर भयो भावसों लै श्रीवल्लभ नाम	१
४५७	भोर ही श्रीवल्लभ कहिये	३
	{म}	
४५८	मटुकिया आन उतार धरी	२१
४५९	मटुकिया मोहन मेरी दीजे	३८
४६०	मति गिरि गिरे गोपाल के करते	१२०
४६१	मति मति जसुमति के लाल	२२
४६२	मदन गोपाल गोवर्धन पूजत	६६
४६३	मन मृग बेन्ध्यो मोहन नैन बाणसों	६५
४६४	मनावत हार परीरी माई	४६
४६५	मरगजी और कुन्द माल, लोचन	८४
४६६	महरी पूत तेरो कैसेऊ बरज्यो	२३५
४६७	महाबल कीनों हों बृजनाथ	१२६
४६८	माई बंशी की भनक कान परन	१५५
४६९	माई मीठे हरि जू के बोलना	२३४
४७०	माई मेरे श्याम लग्यो संग डोले	१७८
४७१	माई मेरो मोहन सों मन मान्यो	२३१
४७२	माई री कमल नयन श्यामसुन्दर	२१७
४७३	माई री जा दिन तें सुन्दरवदन	१३७
४७४	माई री लाल आयेरी मेरे ही	१८८
४७५	माखन की चोरी तुम सीखे हो	२४०
४७६	माधो जू जानि देहुँ चली बाट	१४
४७७	माधो जू राखो अपनी ओट	१२५
४७८	मानत पर्व दीवारी को सुख	१०३
४७९	मान लग्यो गिरिधर गावै	७२
४८०	मिल जेंवत लाड़लीलाल	२५३
४८१	मुख देखन कों आई हों लालको	५
४८२	मुरली चतुर सिरोमनि दूति	५८
४८३	में जब देखेरी गोपाल लाल	१४३
४८४	मेरी आँखियन के भूषण गिरिधारी	१४२
४८५	मेरे लाड़िले गोपाल गिरि कर धार्यो	१२६
४८६	में हरि की मुरली बन पाई	५

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
४८७	मेरे आये भोर प्यारे	२३२	५२३	ये बंशीनाद सुर साधि के बजाई	४७
४८८	मेरे तो कान्ह है री प्राण सखी	१८६	५२४	युगलवर आवत हैं जठजोरे	४९
४८९	मेरे कुल कल्मश सब ही नासै	७		{र}	
४९०	मेरे छगन मगन खेलो आंगन	२४२	५२५	रहि गये भामिनी की बांह	२४८
४९१	मेरो माई हरिनागर सों नेह	१६७	५२६	राखि हो अलक बीच चम्पकली	४६
४९२	मैय्या तेरो मोहन अति ही सयानों	२३८	५२७	राजत रंग भीनी भामिनी	८०
४९३	मैय्या यातें भई अबेर	१८३	५२८	राजे गिरिराज आज गाय गोप	११९
४९४	मैय्या री में गाय चरावन जैहों	१३४	५२९	राधा प्यारी तु रस रंग भरी	१६३
४९५	मोती ते हुं ठोर सब रारे	१६३	५३०	राधा प्यारी दुल्हन जूको, दुल्हा	४९
४९६	मोहन जेंवत छाक सलोनी	५०	५३१	राधा मोहन दोऊ करत बियारू	१०
४९७	मोहन देहों वसन हमारे	१५३	५३२	राधिका आज आनंद में डोले	३३
४९८	मोहन माखन चोरी करत फिरत	२३५	५३३	राधे जू के प्राण गोवर्धन धारी	१००
४९९	मोहन मुखारविंद पर मनमथ	१७५	५३४	राधे जू नव दुलही, दुल्हो हो	१८०
५००	मोहन लाल बियारू कीजे	१०	५३५	रानी जू अपने सुतही जिमावत	९
५०१	मोहनी मदन गोपाल लाल की	८१	५३६	रानीजू जायो हैं मोहनपूत	२०७
५०२	मोहे बोलवो न चालवो	३७	५३७	राय गिरिधरन संग राधिका रानी	४६
५०३	मूल पुरूष नारायण यज्ञ	२२५	५३८	रास में रसिक मोहन बने भामिनी	८२
५०४	मंजुल कर कुंज देश	७६	५३८	रास विलास गहे कर पल्लव	८५
५०५	मंडल मध्य रंग भरे श्यामा	७७	५४०	रूचि सों जेंवत युगल किशोर	२३८
	{य}		५४१	रूनन झूनन बाजे नुपूर	१९१
५०६	यमुना घाट रोकी हो रसिक	३३	५४२	रूप देख नैना पलक लागे नहीं	१७४
५०७	यमुना सी नाहीं कोई दुःख हरणी	८	५४३	रूसनों न कर प्यारी रूसनो निवार	१५४
५०८	यशोदा मदन गोपाल बुलावें	११०	५४४	रेन रीझी हो प्यारी हरि को रास देख	८०
५०९	यशोदा रानी जायो हे सुत नीको	२२१	५४५	रंगभरी मूरत अनंग भरी अंखियां	२३२
५१०	यशोदा रानी सोवन फूले फूली	२१७		{ल}	
५११	यह ऋतु नीकी लागत अति सीतकी	१४५	५४६	लटकत चलत युवति सुखदानी	१३१
५१२	यह छबी मोपें जात न बरनी	२५२	५४७	लरिकाई में जोबन की छबि	२४२
५१३	यह धन धर्म हीं ते पायो	२१६	५४८	ललित लाल श्री गोपाल	४
५१४	यह दीवारी बरस दीवारी	११३	५४९	ललिता जी के आज बधायो	४७
५१५	यह नित नेम यशोदाजु मेरो	२१२	५५०	लाड़ली नवललाल संग रंग	७४
५१६	यह प्रसाद हों पांऊ श्रीयमुनाजी	८	५५१	लाडिले तुमको छाक ले आई	५०
५१७	यह लीला सब करत कन्हाई	६२	५५२	लाडिले गोपाल हमारे भोजन	१२२
५१८	यह विनती चित धरिये श्रीयमुनाजी	९	५५३	लाडिले लाल की बन्दसि	१६२
५१९	यह व्रज दान दान करि राख्यो	४०	५५४	लाल आज गिरि कैसे धर्यो	११९
५२०	याचक जन गोवर्धनधर को	१९०	५५५	लाल और ललनाजू बांह जोटी	६
५२१	यातें जिय भावें सदा	१२२	५५६	लाल की रूप माधुरी	१८५
५२२	ये दोऊ नागर ढोटा री माई	१३७	५५७	लाल को मीठी खीर जो भावे	१३८

क्र.स.	पद	पेज	क्र.स.	पद	पेज
५५८	लाल गोपाल है आनंद कंद	५१	५९३	सब गोकुल को जीवन गोपाललाल	६९
५५९	लालन नाहिंन री काहु के बस के	१५३	५९४	सब मिल आई लाड़िली वृषभान	२८
५६०	लालन मनाये न मानत लाडिली	१४३	५९५	सब मिल गावौ गीत बधाई	१९२
५६१	लालन मुख की लुनाई कैसे हु	२३६	५९६	सब मिल पूछे गोवर्धन कैसे धर्यो	१२२
५६२	लाल माई बैठे राजत हटरी	११६	५९७	सबे मिल मंगल गावौ माई	२२२
५६३	लाल बने रंग भीने	१४५	५९८	सरस बनी प्यारी सरस बनी	१४७
५६४	लाल संग रति मानी में जानी	१७६	५९९	सात बरसको साँवरो	६७
५६५	लाल संग रास रंग लेत	७५	६००	सामरे बल गई है भुजन की	११९
५६६	लीला लाल गोवर्धन धर की	१२६	६०१	सामने तसवीर आ जाती है जब आपकी	२४३
५६७	ले चली री गोरस बेचन को	१९	६०२	सांवरो मंगल रूप नीधान	२१८
	{व}		६०३	सिला पखारो भोजन कीजे	५०
५६८	वल्लभ नंदन रूप अनूप	१६०	६०४	सिर सोने के सूतन सोहत	१५५
५६९	वल्लभ राजाधिराज राजत	१९१	६०५	सुखद स्वरूप श्रीविट्ठलेश राय	५२
५७०	वसन हरे सब कदंब चढ़ाये	१६५	६०६	सुखद सेज पौढ़े श्रीवल्लभ संग	२२४
५७१	वारों मीन खंजन आलीके दृगन पर	१५४	६०७	सुघर सहेली मिल आवो गावो।	२०१
५७२	विधु मधुरानन मानद	१६३	६०८	सुघर तिय कौन वाहि पे उतारो	२३६
५७३	विमल कदम्ब छांह तर ठाड़े	१५८	६०९	सुत ही जिमावत यशोदा मैय्या	१५०
५७४	विमल जस श्री विट्ठलनाथ कौ	२२३	६१०	सुन ध्वनी मुरली बन बाजे	७९
५७५	विहरत सातों रूप धरे	३९	६११	सुनरी सखी तेरो दोष नहीं	१५७
५७६	वे देखो बरत झरोखन दीपक	६९	६१२	सुनरी सैन दई ग्वालन को	५०
५७७	वृज घर घर सब भोजन खात	७३	६१३	सुन्दर सांवरे जबतें मुरली धरी	५६
५७८	वृज जन गावत गीत बधाये	१९७	६१४	सुनि मेरो वचन छबिली राधा	१५३
५७९	वज जन लोचन ही को तारो	१२४	६१५	सुनिये तात हमारो मतो	८७
५८०	व्रज पति अपने ना बिसारेगो	१२५	६१६	सुनौरी आज नवल बधायो है	१८९
५८१	व्रज में श्रीविट्ठलनाथ बिराजे	५३	६१७	सुनो हो ग्वाल यह कहत कन्हाई	६३
५८२	व्रजराज को लाल ठाडो सखी	१४६	६१८	सुभग ललना सुन ही गोविन्द गावे	२५२
५८३	व्रज वनिता मध्य रसिक राधिका	७३	६१९	सुभग श्रृंगार निरख मोहन को	१३७
५८४	वृंदावन सघन कुंज माधुरी लतान तर	६१	६२०	सुरभी कान जगाई खिरक बल	१०६
५८५	वृजानंद कंदम वृजानंद कंदम	१४९	६२१	सुरपती पूजा जान कन्हाई	७४
५८६	वृषभान नंदिनी नाचत लाल	८१	६२२	सुरराज आज पायन पर्यो	११९
	{स}		६२३	सुरंग दुरंग सोहत पाग	१७६
५८७	सकल वृजतियन में तुही जीती री	१८	६२४	सेन भोग लाई भर थारी	१०
५८८	सखियन रूचि रूचि सेज बनाई	१००	६२५	सोने की मटुकिया, जराव की ईडुरिया	२४६
५८९	सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। मणीमय	१५२	६२६	सोवत नींद आय गई श्याम ही	२४३
५९०	सखियन संग राधिका कुंवरी बीनति	२२	६२७	सोहत नासिका गिरिधर गज मोती	५७
५९१	सजि श्रृंगार चली बृजनारी	७२	६२८	सोहत लाल पाग सांकरे पेचन	१४२
५९२	सदा वृज ही में करत विहार	५३	६२९	सोहत लाल लकुटी कर राती	१३२

क्र.स.	पद	पेज
६३०	सोहत शीष दुरंगी पाग	१७६
	{श}	
६३१	शरद सुहाई हो यामिनी	८१
६३२	श्याम कही सोई सब मानी	९९
६३३	श्याम खिरक के द्वार करावत	१०५
६३४	श्याम नवल नवल वधु	७९
६३५	श्याम सजनी शरद रजनी	७९
६३६	श्याम सनेही गाईये, तातें	४०
६३७	श्यामा जु को श्याम मनावन आये	२४१
६३८	श्यामा श्याम कुंज बन आवत	२३२
६३९	शुभग मुहुरत विजय दशमी को	६९
	{ह}	
६४०	हमारी बात सुनो बृजराज	६५
६४१	हमारो कान्ह कहे सोई कीजे	५३
६४२	हमारो दान देहों गुजरेटी	२३
६४३	हमारो देव गोवर्धन पर्वत	७०
६४४	हरि को टेरत फिरत गुवारी	२१
६४५	हरि जू को ग्वालिन भोजन लाई	४५
६४६	हरि भोजन करत विनोद सों	१२५
६४७	हरि मारग जोवत भई सांझ	१६७
६४८	हरि मुख देखिये वसुदेव	७
६४९	हरियश गावत चली व्रजसुंदरी	१४९
६५०	हालरो हुलरावे माता	२१२
६५१	हारी मानी नाथ अम्बर दीजें	१८५
६५२	हँस हँस दूध पीवत नाथ	११
६५३	हँस हँस बात कहत मनमोहन	५३
६५४	हँस हँस ब्यारू करत गुपाल	१२०
६५५	हँसत हँसत लालन आयेरी	२४०
६५६	हाँके हटक हटक गाय ठठक ठठक	१५१
६५७	हाँ हाँ हठीले हरि, जननी	१२९
६५८	हिम ऋतु शिशिर ऋतु अति	२३८
६५९	हों चरणात पत्र की छैया	१९६
६६०	हों तो सों अब कहा कहों आलीरी	१६४
६६१	हों बल बल जांऊ, कलेऊ	१६३
६६२	हो बलि बलि जाऊँ छबिले लाल की	२४२
६६३	हों राधे फूलन मत ले	४३
६६४	हों वृज मांगनों जू	२१९
	{श्री}	
६६५	श्रीगोकुल गाम को पेंडो ही न्यारो	४
६६६	श्री गोकुल जुग जुग राज करो	१८९
६६७	श्री गोपाल लाल गोकुल चले हों	१६१
६६८	श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे	१९५
६६९	श्री यमुनाजी अघम उध्दारणी	८
६७०	श्री यमुना के तीर बजाई बांसुरी	६०
६७१	श्रीयमुना जी परम कृपाल कहावे	९
६७२	श्री यमुना जी पतित पावन कर्यो	८
६७३	श्री लक्ष्मण कुल चंद उदित	२०९
६७४	श्री लक्ष्मण नंदन जय जय जय	१९५
६७५	श्री लक्ष्मणभट्ट देत बधाई	२२८
६७६	श्री लक्ष्मणवर ब्रह्मधाम	२१२
६७७	श्री वल्लभ गुण गाऊं	१
६७८	श्री वल्लभ गृह आज बधाई	१९२
६७९	श्री वल्लभ गृह सदा बधाई	१९६
६८०	श्री वल्लभ तन मन धन	२
६८१	श्री वल्लभ लाल बियारू कीजे	२२४
६८२	श्री वल्लभ सुत के चरण भजो	४
६८३	श्री विट्ठलनाथ चंद उग्यो जगमें	२११
६८४	श्री विट्ठलनाथ जु के चरण शरणं	३
६८५	श्री विट्ठलनाथ बसत जिय जाके	२१७
६८६	श्री विट्ठलेश चरण कमल पावन	२१५
६८७	श्री विट्ठलेश चरण चारू पंकज	१९०
६८८	श्री विट्ठलेश विट्ठलेश कहि रे	४
६८९	श्री विट्ठलेश प्रभु नमो नमो	१९६
६९०	श्री विट्ठल मंगल रूप निधान	२१३
६९१	श्री वृषभान लडेती गाईये	४१
६९२	श्री वृषभान सदन भोजनकों	४७
६९३	श्रीहरि वृंदावन कालिन्दी तट	७९

श्री कृष्णाय नमः । श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।

श्रीमदाचार्य चरण कमलेभ्यौ नमः । श्री गुसाँईजी परमदयालवे नमः ।

कीर्तन सेवा नित्यक्रम

पुष्टि मार्गीय मन्दिरों में प्रातःकाल घंटानाद के पश्चात् कीर्तन-सेवा आरम्भ होती है। सर्वप्रथम आचार्य श्री वल्लभाचार्यजी महाप्रभु की वन्दना, फिर श्री विट्ठलनाथजी गुसाँईजी की वन्दना, श्री यमुनाजी के पद तत्पश्चात् प्रभु को जगाने (जगाइबे) के पद बोले जाते हैं। "भैरव" "विभास" आदि राग के पद वर्ष में किसी भी समय बोले जा सकते हैं पर "मल्हार" के पद केवल वर्षाकाल में और "वसन्त" राग के पद वसन्त और होरी के दिनों में ही बोले जाते हैं।

-: नित्य पद :-

प्रातः प्रार्थना आचार्य जी श्री महाप्रभु जी

राग-भैरव जय-जय-जय श्रीवल्लभ प्रभु श्रीविट्ठलेश साथें, निज जन पर करत कृपा, धरत हाथ माथें।। दोष सबें दूर करत, भक्ति भाव हिये धरत, काज सबै सरत सदा, गावत गुणगाथें।।१।। काहे को देह दमत, साधन कर मूरख जन, विद्यमान आनन्द त्यज, चलत क्यूँ अपाथें।। "रसिक" चरण शरण सदा, रहत हैं बड़भागी जन, अपनौ कर श्रीगोकुलपति, भरत ताहि बाथें।।२।।

राग-भैरव भोर भये भाव सों लै श्री वल्लभ नाम, हे रसना तू और वृथा बकै क्यों निकाम।। सेवा रस स्वाद पावै, निशदिन गुण गावै, और सब बिसरावै, यह मन आठों याम।।१।। रसिक न कछु और करें, इनहीं में भाव धरें, अतिरस अनुपान करें, और कपट वाम।। "हितहरिवंश" छिनही में, होत सगरो भक्तिमारग रूप हृदय बसै अरू, रससमूह धाम।।२।।

राग-भैरव श्री वल्लभ गुन गाऊँ, निरखत सुंदर स्वरूप, बरखत हरि रस अनूप। द्विजवर, कुल भूप सदा, बल बल बल जाऊँ।। अगम निगम कहत जाय, सुरनर मुनि लहै न ताहि, सकल कला गुन निधान, पूरण सुखदाई।। "गोविन्द" प्रभु नंद नंदन, श्री लछमन सुत जगत बंदन, सुमिरत त्रय ताप हरण, शरण रेणु पाऊँ।।

राग-भैरव जय-जय-जय श्री वल्लभनाथ। सकल पदारथ जाके हाथ।। भक्ति मार्ग जिन प्रगट कर्यो।। नाम विश्वास जगत उद्धर्यो।। सब मत खण्ड निरूपे वेद।। प्रेम भक्ति को जान्यौ भेद।। कारण करण समरथ भुजदंड।। मायावाद कियौ मत खण्ड।। परम पुरूष पुरूषोत्तम अंशी। भक्ति जनन मन करत प्रशंशी।। जाके नाम गुण रूप अनंत। निर्मल यश गावत श्रुति संत।। सुन्दर श्याम कमल दल लोचन। कृपा कटाक्ष भक्त भय मोचन।। कामना पूरण पूरण काम। अहर्निश जपूँ तिहारौ नाम।। जाके पटतर और न कोय।। “दास गोपाल” भजे सुख होय।।

राग-भैरव जोपें श्रीबल्लभ चरण गहे।। तो मन करत वृथा क्यों चिंता, हरि हिये आय रहे।।१।। जन्म-जन्म के कोटिक पातक, छिनहीं मांझ दहे।। साधन कर साधो जिन कोउ, सब सुख सुगम लहे।।२।। कोटि-कोटि अपराध क्षमा कर, सदा नेह निबहे।। अब संदेह करौ जिन कोऊ, करूणा सिंधु लहे।।३।। अबलों बिन सेवे श्री बल्लभ, भव दुःख बहुत सहे।। “रसिक” महानिधि पाय और फल, मन-वच-क्रम न चहें।।४।।

राग-भैरव नमो वल्लभाधीशपदकमलयुगले, सदा वसतु मम हृदयं विविधभावरसवलितं।। अन्य महिमा भासवासनावासितं, मा भवतु जातु निजभावचलितं।।१।। भवतु भजनीयमतिशयितरूचिरं चिरं चरणयुगलं सकलगुणसुललितं।। वदति “हरिदास” इति, मा भवतु मुक्तिरपि, भवतु मम देहशतजन्मफलितं।।२।।

राग-भैरव गाऊँ श्रीवल्लभ ध्याऊँ श्री वल्लभ, श्री वल्लभ, चरण रज लपटाऊँ। वल्लभसंतति नित्य प्रति निरखूँ, वल्लभ दासन दास कहाऊँ।।१।। कृष्णलीला सेवा नित्य करों जगत सबै तृण तुल्य धराऊँ। “व्यासदास” की यही प्रतिज्ञा, श्री गोविंद कृपातें पाऊँ।।२।।

(उत्सव)

राग-रामकली (ताल-चौताल) श्री वल्लभ तन-मन-धन, श्री वल्लभसर्वस्व मैं पाये, श्री वल्लभ प्रभु चिन्तामणि मेरे।। श्रीवल्लभ मम ध्यान ज्ञान, श्री वल्लभ बिन भजूँ न आन, श्री वल्लभ हैं सुख निधान, प्राणजीवन केरे।।१।। श्री वल्लभ मोहि इष्टदेव, सदा सेवूँ श्री वल्लभ, चरचों चरणकमल, श्री वल्लभजूके चेरे। “छीतस्वामी” गिरिवरधर, तेसेई श्री विट्ठलेश, श्री वल्लभ की बल-बल जाँऊ बेरे बेरे।।२।।

(वर्षाकाल)

राग-सौरठ मल्हार भोर ही श्री वल्लभ कहिये। आनंद परमानंद श्रीकृष्ण मुख, सुमर अष्ट सिद्धि पैये।।१।। और सुमरौ श्री विट्ठल, श्री गिरिधर, गोविंद द्विजवर भूप।। श्री बालकृष्ण, गोकुलपति, रघुपति, यदुपति, नव घनस्याम स्वरूप।।२।। पढ़ौ सुसार श्री वल्लभ वचनामृत, जपौ अष्टाक्षर मंत्र करि नेम।। अन्य श्रवण कीर्तन तजि निशदिन, सुनौ सुबोधिनी धरि जिय प्रेम।।३।। सेवा सदा नंद-यशोमति सुत, प्रेमभक्ति सहित जिय जान।। अन्याश्रय असमर्पित लेनौ, असद् अलाप असद संग हानि।।४।। नयनन निरखौ श्री यमुनाजी, और निरखौ सुखद व्रजधाम।। यह संपत्ति श्री वल्लभहि तें पैये, “हरिजन” को नांहि ओर सों काम।।५।।

राग-सौरठ मल्हार प्रात समें उठ करिये श्री लक्ष्मणसुत गान।। प्रकट भये श्रीवल्लभ प्रभु देत भक्तिदान।।१।। श्रीविट्ठलेश महाप्रभु रूप के निधान।। श्रीगिरधर श्रीगिरधर उदय भयौ भान।।२।। श्रीगोविंद आनन्दकन्द कहा वरणों गुणगान।। श्रीबालकृष्ण बालकेलि रूप ही सुहान।।३।। श्रीगोकुलनाथ प्रकट कियौ मारग बखान।। श्रीरघुनाथलाल देख, मन्मथही लजान।।४।। श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरण भगवान।। श्रीघनस्याम पूरणकाम पोथी में ध्यान।।५।। पांडुरंग विट्ठलेश करत वेदगान। “परमानंद” निरख लीला थके सुर विमान।।६।।

राग-घूरिया मल्हार उठत प्रात रसना रस पीजै, लीजै श्रीवल्लभ प्रभुको नाम।। आनंद में बीतत सब निशदिन, मन वांछित सुधरे सब काम।।१।। सुजस गान, मन ध्यान आन उर, जे राखे दृढ आठों याम।। “परमानंददास” को ठाकुर, जेहि वल्लभ तेहि सुन्दर श्याम।।२।।

प्रार्थना श्री विट्ठलनाथ जी गुसाँई जी

राग-भैरव श्री विट्ठलनाथ जू के चरण शरणम्।। श्री वल्लभनंदनं, कलि दुख खंडनं, पूरण पुरूषोत्तमं, त्रयतापहरणम्।।१।। सकल दुःखदारणं, भवसिंधुतारणं, जनहित लीला देहधरणम्।। “कान्हरदास” प्रभु सब सुख सागरं, भूतलदृढ़ भक्ति प्रकट करणम्।।२।।

राग-भैरव जय-जय-जय श्री वल्लभनंद। सकल कला वृंदावन चंद।।१।। वाणी वेद न लहे पार।। सो ठाकुर श्री अक्का जी के द्वार।।२।। शेष सहस्त्र मुख करत उच्चार।। ब्रजजन जीवन प्राण आधार।।३।। लीला ही गिरि धारयौ हाथ।। “छीतस्वामी” श्री विट्ठलनाथ।।४।।

राग-भैरव श्री वल्लभसुत के चरण भजौ। नन्दकुमार भजन सुखदायक, पतितपावन करण भजौ।।१।। दूर किये कलि कपट वेद विधि, मत्त प्रचंड विस्तार भजौ। अतुल प्रताप महिमा स्याम यश, ताप शोक अघहरण भजौ।।२।। पुष्टिमर्याद भजन सुखसीमा, निज जन पोषण भरण भजौ।। “नंददास” प्रभु प्रकट भये दोऊ, श्री विट्ठलेश गिरिधरन भजौ।।३।।

राग-भैरव श्रीगोकुलगामकौ पेंडो ही न्यारौ।। मंगलरूप सदा सुखदायक, देखियत तीन लोक उजियारौ।।१।। जहां वल्लभसुत निर्भय विराजत, भक्तजननके प्राणन प्यारौ।। “माधोदास” बल बल प्रतापबल, श्रीविट्ठल सर्वस्व हमारौ।।२।।

(उत्सव)

राग-विभास (ताल आदि) प्रात समें श्री वल्लभ सुत कौ, उठतहिं रसना लीजिये नाम।। आनंदकारी प्रभु मंगलकारी, अशुभहरण, जन पूरण काम।।१।। याहि लोक परलोक के बंधु, को कहि सकै तिहारे गुणग्राम।। “नंददास” प्रभु रसिक शिरोमणि, राज करौ श्री गोकुल सुखधाम।।२।।

(वर्षाकाल)

राग-सौरठ मल्हार बलिहारी श्री विट्ठलेश की जिन जगत उधार्‍यौ।। माया सिन्धु ते तार कें पार उतार्‍यौ।।१।। पाप-पुन्य जीव दुष्ट कौ हृदे नाँय विचार्‍यौ।। “कृष्णदास” की बाँह पकर मारग में डार्‍यौ।।२।।

राग-सौरठ मल्हार श्री विट्ठलेश विट्ठलेश कहि रे।। इनके संबंध बिना दृश्यमान वस्तुमात्र, ताकों तूँ जिय में कलेश कहि चहि रे।।१।। रसना गुण रूप कों निसवासर कर, यह सुख निरंतर अहार जैसें लहि रे।। श्री विट्ठलेश के श्रीवल्लभ के पद कौ पराग पावे जहाँ, तिनके तू दासन कौ “दास” व्है रहि रे।।२।।

जगायबे के पद

राग-भैरव ललित लाल श्रीगोपाल, सोइये न प्रातकाल, यशोदा मैया लेत बलैया, भोर भयौ बारे।। उठौ देव करूँ सेव, जागिये देवाधिदेव, नंदराय दुहत गाय, पीजिये पय प्यारे।।१।। रवि की किरण प्रकट भई, उठौ लाल निशा गई, दधि मथत जहाँ-तहाँ, गावत गुण तिहारे।। नंदकुमार उठे बिहँस, कृपादृष्टि सब पै बरस, युगलचरण कमलन पर “परमानन्द” वारे।।२।।

राग-भैरव जागिये ब्रजराज कुँवर, कमल कोश फूले।। कुमुदिनी जिय सकुच रही, भृंगलता झूले।।१।। तमचर खग करत रोर, बोलत बनराई।। रांभत गौ मधुर नाद, बच्छ चपलताई।।२।। रवि प्रकाश, विधु मलीन, गावत ब्रजनारी।। "सूर" श्रीगोपाल उठे, परम मंगलकारी।।३।।

राग-देशकार चिरैया चुह चुहाँनी, सुनहु चकई की वानी, कहत यशोदा रानी, जागौ मेरे लाला।। रवि की किरण जानी, कुमुदनी सकुचानी, कमलन विकसानी, दधि मथें बाला।।१।। सुबल, श्रीदामा, तोक, उज्वल वसन पहरें, द्वारे ठाड़े टेरत है, बाल गोपाला।। "नंददास" बलिहारी, उठौ क्यों न गिरधारी, सब कोऊ देख्यौ चाहै लोचन विशाला।।२।।

राग-चारुकेशी मुख देखन कों हों आई लाल कौ।। काल मुख देख गई दधि बेचन, जात ही गयौ है बिकाई।।१।। दिन तें दूनों लाभ भयौ, घर काजर बछिया जाई।। आईहों धाय थंभाय साथ की, मोहन देहौ जगाई।।२।। सुन प्रिया बचन बिहँस उठ बैठे, नागर निकट बुलाई।। "परमानन्द" सयानी ग्वालिनि, सेन संकेत बताई।।३।।

राग-विभास प्रात समें जागी अनुरागी, सोवतहुतीरी स्याम जू के संगिया।। चीरसंभारत उठीरी दक्षिन कर, बाम भुजा फरकी भर अंगिया।।१।। भाल में सुहाग भरि, छबि उपजत न्यारी, पहरें कसुंभी सारी, सोंधे रगमगिया।। "अग्रस्वामी" लाड़लड़ाई, बहुत कीनी बड़ाई, फूली फिरत अति ही सगमगिया।।२।।

राग-जोगिया मैं हरिकी मुरली बन पाई।। सुन यशुमति संग छाँड़ आपनौ, कुँवर जगाय देन हों आई।।१।। सुन त्रिया बचन बिहँस उठ बैठे, अंतरयामी कुँवर कन्हाई।। मुरली के संग हुती मेरी पहुँची, दै राधे बृषभान दुहाई।।२।। मैं निहार नीची नहीं देखी, चलौ संग देउँ ठौर बताई।। बाढ़ी प्रीति मदनमोहनसों, घर बैठे यशुमति बौहोराई।।३।। पायो परम भाव तो जिय कौ, दोऊ पढ़े एक चतुराई।। "परमानन्ददास" जाहि बूझौ, जिन यह केलि जन्म भर गाई।।४।।

राग-मल्हार जसुमति लालकौ बदन दिखैये।। भोर उठत आय देखत मुख, निरखतही सचुपैये।।१।। उमड़ रही घटा चहुँदिशते, बेग तुरत उठ धैये।। "परमानंद" प्रभु उठे तुरतही, निरख मुखारविंद बलजैये।।२।।

राग-सौरठ मल्हार बादर झूम झूम बरसन लागे।। दामिनी दमकते चोंक चमक श्याम, घनकी गरज सुन जागे।।१।। गोपीजन द्वार ठाड़े नारीनर भीजे, मुख देखन कारन अनुरागे।। “छीतस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, ओतप्रोत रस पागे।।२।।

राग-सौरठ मल्हार उमड़ घुमड़ बादर आयेरी चहुँदिशतें, जसोदा लाले जगाय।। ग्वाल बाल सब टेरत ठाड़े, बेग चलहु उठधाय।।१।। कबकी कहत बेग उठ बैठहु, बहु बिध बिंजन धरेहें बनाय।। “परमानंद” प्रभु मात वचन सुन, उठे लाल मुसकाय।।२।।

राग-सौरठ मल्हार उमड़ रहे बादर सगरी निशाके, अहो मेहेरि लाले दीजे जगाय। वर्षारितु कहुँ बरसै अचानक, बालक जाय डराय।।१।। चिरैयन के चुँहचुहात, जसोदा कर अपुनौ निरवारि घर काज।। दधि मथन बैठि लावौ दूध दही, द्यौंस बढ़त ब्रजराज।।२।। बछरा छोर बलभद्र जगाऊँ, दुहि दुहि लावत हैं सब गाय।। “नंददास” लाल जगाय तिहिं छिन, लीनौ अंक जसोदा माय।।

राग-पावस मल्हार लाल और ललनाजू बांह जोटी उठे प्रात, पवन लगत कमल लपटात।। यह अजरज मोपें, कहेत न बनि आवै, दोउनकौ प्रतिबिंब देख, दृग न समात।।१।। बागे बीर बनठन, सोधेंही अरगजे ऐसे, भीजे मधुकर तिनपें, उड़्यौ न जात।। “सूरदास मदनमोहन”, पियप्यारी पर वारत तनमन, देखत नांहि अघात।।२।।

राग-सौरठ मल्हार झूम रहे बादर सगरी निशाके, वर्षनकों रहे हें छाय।। जागे सब ग्वाल बाल, आये दौर ठाडे द्वार, लीने हैं लाल जगाय।।१।। दोहनी धोय दीनी, हाथ हलधर दीये हें साथ बछरा जोवत मग रांभत हें गाय।। “परमानंद” नंदरानी, फूली अंग न समानी, बार बार लेत हैं बलाय।।२।।

(जन्माष्टमी)

राग-विभास (ताल आदि) प्रात समय उठ सोवत सुतकौ, वदन उघारत नंद।। रहि न सके अतिसे अकुलाने, नयन निशा के द्वन्द।।१।। शुभ सेजमध्यते मुख निकरे, गये तिमिर मिटमंद।। मनहुँ पयोनिधि मथत, फेन फट, दई दिखाई चन्द।।२।। सुनत चकोर “सूर” उठधाये, सखीजन सखा सुछंद।। रही न सुधि शरीर, अधीर मन, पीवत किरन मकरंद।।३।।

राग-रामकली (ताल-तेवड़ा) हरि मुख देखिये वसुदेव।। कोटिकामस्वरूप सुंदर, कोऊ न जानै भेव।।१।। चारिभुजा जाकें चारिआयुध, देखिहो नर ताहि। अजहूँ मन परतीत नाँही, कहै नंदगृह लै जाहि।।२।। झरे तारे, परे पहरूवा, नींद व्यापी गेह।। निस अंधियारी, बीज चमकै, सघन बरसै मेह।।३।। कंस सोयौ, स्वान सोये, मुक्त भये दुवार।। बँधी बेड़ी छूटि गई यह, कहौ कौन विचार।।४।। सिंघ आगें, शेष पाछें, बहै जमुनापूर।। नासिका लों नीर आयौ, पार पहलौ दूर।।५।। श्रीमुख ते हुंकार कीनों, दीयौ जमुनापार।। वसुदेव मन परतीत आई, बालकगृह अवतार।।६।। नंदसौं मनुहार कीनौ कहत है वसुदेव।। कहै "सूर" सुत जानि अपनौ, बोहोत कीजे सेव।।७।।

(प्रार्थना श्री यमुनाजी)

राग-भैरव मेरे कुल कल्मश सबही नासैं, देख प्रभात प्रभाकरकन्या।। वे देखौ पाप जात जित तितर्तें, ज्यों मृगराज निरख मृगसन्या।। पोषत हैं पयपान पुत्र लों, हे जगजननी धन्य सुधन्या।। दियौ चाहै "गदाधर" हू कों, चरन कमल निज भक्ति अनन्या।।

राग-भैरव प्रफुल्लित बन विविध रंग, झलकत यमुना तरंग, सौरभ घन आमोदित, अति सुहावनौ।। चिंतामणि कनक भूमि, छबि अदभुद लता झूमि, सीतल मंद सुगंध, मरूत आवनौ।। सारस हंस शुक चकोर, चित्रित नृत्यत सु मोर, कल कपोत कोकिला, कल मधुर गावनौ।। जुगल रसिकवर विहार, "परमानंद" छबि अपार, जयति चारू बृन्दावन, परम भावनौ।।

राग-भैरव नमो नमो जयति श्री यमुने।। जय कालिंदी पुलिन मनोहर, स्यामास्याम करत हैं रवने।।१।। जलक्रीड़ा करत तेरे तट, तुम सम कोऊ नहिं तीनों भवने।। सुरनर मुनि के ध्यान न आवत, सो प्रभु तिहारे गृह गवने।।२।। तुम तौ परमकृपालु जगजननी, पतितन कों पावन भवतरनी। साख निगम पुरानन बरनी, "सूर" प्रभु के मन कों हरनी।।३।।

राग-विभास तिहारौ दरस मोहि भावे श्री यमुनाजी। श्री गोकुल के निकट बहति हों लहरन की छबि आवै।।१।। सुखदैनी, दुखहरनी, श्री यमुनाजी, जे जन प्रात उठ नावै। मदनमोहन जु की खरी पियारी, पटरानी जु कहावै।।२।। वृन्दावन में रास रच्यो है, मोहन मुरली बजावैं। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन कों, वेद विमल जस गावैं।।३।।

राग-विभास यमुना सी नाहिं कोई दुःखहरणी।। जाके स्नान ते, मिटत है पाप, होत है आनन्द, सुख की जु करनी।।१।। महिमा अगाध अपार, इनके गुण वेद-पुराणन वरणी। कहत "ब्रजपति", तुम सबन कों समझाय, छूटै यम डर, जो आवै इनकी शरणी।।२।।

राग-विभास तिहारौ पुलिन मोहि भावै श्रीजमुनाजी।। सुरब्रह्मादिक ध्यान धरतहैं, सो सुपने नहिं पावें।।१।। बिच बिच कुंजसदन अतिसुंदर, श्यामाश्याम सुहावें।। चहुँदिस सकलफूल अति फूले, गुहि गुहि कंठ धरावें।।२।। कुसुमनके बीजना जो संवारे, सखियन बांह ढुरावें।। "सूरदास" प्रभु सबसुखसागर, दिनदिन शोभा पावें।।३।।

राग-विभास श्री यमुना जी पतित पावन कर्यो।। प्रथम ही जब दियौ दरसन, सकल पातक हर्यो।।१।। जल तरंगन परस कर, पयपान सों मुख भर्यो।। नाम सुमिरत गई दुरमति, कृष्ण जस विस्तर्यो।।२।। गोप कन्या कियौ मज्जन, लाल गिरिधर वर्यो।। "सूर" श्री गोपाल सुमिरत, सकल कारज सर्यो।।३।।

राग-विभास पिय संग रंग भरि कर विलासें।। सुरत रस सिंधु में, अति ही हरषित भई, कमल ज्यों फूलते रवि प्रकाशें।। तनते, मनते, प्राणते सर्वदा, करत हैं हरि संग, मृदुल हासें। कहत "ब्रजपति" तुम सबन सों समझाय, मिटै यमत्रास इनहिं उपासें।।

राग-रामकली श्रीजमुनाजी अधम उद्धारनी मैं जानी।। गोधनसंग श्यामघनसुंदर, ललितत्रिभंगी दानी।।१।। गंगाचरन परसतें पावन, हरसिर चिकुर समानी।। सात समुद्र भेद यमभगिनी, हरि नखशिख लपटानी।।२।। रासरसिक मणि नृत्यपरायण, प्रेमपुंज ठकुरानी।। आलिंगन चुंबन रस विलसत, कृष्ण पुलिन रजधानी।।३।। ग्रीष्मऋतु सुखदेत नाथ कूँ, संग राधिकारानी।। "गोविंदप्रभु" रवितनया प्यारी, भक्तिमुक्तिकी खानी।।४।।

राग-रामकली जय जय श्री यमुना आनंद कंदिनी। दरस परस त्रिविध पाप जात, दुःख निकंदिनी।। अंग अंग छवि तरंग सोभा सिंधुनी।। ताही के अघ कुठार, जाके वंदिनी।। अक्षय आनंद गोविन्द, अगम गामिनी। 'हरिदास' तट निवास, जन्म जन्मनी।।

राग-रामकली यह प्रसाद हों पाऊँ श्री यमुनाजी।। तुम्हारे निकट रहों निशवासर, रामकृष्ण गुण गाऊँ।।१।। मज्जन करों विमल जल पावन, चिंता कलेश बहाऊँ।। तिहारी कृपातें भानु की तनया, हरिपद प्रीत बढ़ाऊँ।।२।। विनती करों यही वर मागों, अधमन संग बिसराऊँ।। "परमानंद" प्रभु सब सुखदाता, मदनगोपाल लड़ाऊँ।।३।।

राग-सौरठ मल्हार निरखत ही मन अति आनंद भयौ, देख प्रभात प्रभाकर कन्या।। जल परसत ही सकल अघभाजे, ज्यों हरि देख हरिण की सिन्या।।१।। गति और जीवन को औरन की, मेरी गति तो तुमहिं अनन्या।। "ब्रजपति" की तुम अतिहि पियारी, तुम संगमतें जान्हवी धन्या।।२।।

राग-सौरठ मल्हार यह विनती चित धरिये श्री यमुना जी।। गिरिधरलाल मुखारबिंद-रति, जन्म-जन्म नित करिये।।१।। विषसागर संसार विषम, संगतें मोहि उद्धरिये।। काम-क्रोध-अज्ञान-तिमिर अति, उर अंतरते हरिये।।२।। तुम्हारे संग बसौं निज जन संग, रूप देख मन ठरिये।। गाऊँ गुण गोपाल लाल के, अष्ट व्याधि ते डरिये।।३।। त्रिविध दोष हरकें कालिंदी, एक कृपा कर ढरिये।। "गोविंददास" यही वर माँगे, तुम्हारे चरण अनुसरिये।।४।।

राग-सौरठ मल्हार दोऊ कूल खंभ, तरंग सीढ़ी, श्री यमुना जगत वैकुंठ निश्रेनी। अति अनुकूल, कलोलन के भर लिये जात, हरि के चरनन सुख दैनी।।१।। जन्म-जन्म के पाप दूर कर, काटत कर्म-धर्म धार पैनी। "छीतस्वामी" गिरिधर जू की प्यारी, साँवरे अंग कमलदल नयनी।।२।।

(शीतकाल)

राग-मालकोष जो कोई श्री यमुना नाम संभारे।। ताको दरस परस कोऊ करहीं वाही कों वे तारे।।१।। भक्त की महिमा बरनि न सकै, यम हा हा करि हारै।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरन लालकौ, नितप्रति वदन निहारै।।२।।

राग-मालकोष श्री यमुनाजी परम कृपाल कहावें।। दरसन तें अघ दूरिजात हैं, हरिलीला सुधि आवै।।१।। जे जन तेरे निकट बसत हैं, नंदनंदन रस पावे।। जीव कृत्य देखत नहिं कबहुँ, अपनों पक्ष दृढ़ावै।।२।। कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम् यह सुन मन ललचावै।। "रसिकदास" को दास जानिये, ताते यह जस गावै।।३।।

ब्यारू/शयन भोग के पद

(१) राग-कान्हरौ रानीजू अपने सुतहि जिमावत।। बुझत बात कहो कैसे खेलें बन बन, मैया कहि कहि रूचि उपजावत।।१।। करत ब्यारू अपने अंचल सो, पोंछत वदन मनमोद बढावत।। "रसिकप्रीतम" को ले ले नंदरानीजू, हँस हँस कंठ लगावत।।२।।

(२) ब्यारू करत हैं घनश्याम।। मधुमेवा पकवान मिठाई, पिश्ता दाख बदाम।।१।। दूध भात खोवा बासौंधी, ले आई ब्रजवाम।। “आसकरण” प्रभु मोहन नागर, अंग अंग अभिराम।।२।।

(३) सेन भोग लाई भर थारी।। दारभात अरू कढ़ी बड़ी की, जसुमति माय परोसनहारी।।१।। खटरस व्यंजन दूध मिठाई, खोवा मिश्री सीतल जलझारी।। “श्री विट्ठल-गिरिधर” जें उठे, तब दासनको जूठी पनवारी।।२।।

(४) ब्यारू श्याम अरोगन लागे। बहु मेवा पकवान मिठाई, बिंजन करे मधुर रस पागे।।१।। दार भात धृत कढ़ी संधानों, रूचि कर मुखसों पापर मांगे।। “चत्रर्भुज” प्रभु जूठन दे सबकों, जो जन पावत सो बड़भागे।।२।।

(५) ब्यारू करत जननी पै मोहन, राधे जू गोपीजन संग आई।। बरजत काहेन जशोमति सुत को, दूध दही की लूट मचाई।।२।। देखी सुनी न आज लौं ऐसी, भली अनूठी सीख सिखाई।। “कुंभनदास” गिरिधरन लाल, नीकें दीजे अब समझाई।।

(६) राधा मोहन दोऊ करत ब्यारू।। एक थार संवारें सुन्दरी, एक वेष एक रूप उज्यारी।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, दंपति अतिरूचि कारी।। “सूरदासको” जूंठन दीनी, अति प्रसन्न ललितारी।।२।।

(७) कीजे लाल यहि बार बियारू।। तातो दार भात घृत सान्यो, खोवा बासोंधी रूचिकारी।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, परोस धरिहै कंचन थारी।। जेंवत स्यामराम रूचि उपजी, छबिपर “जगजीवन” बलिहारी।।२।।

(८) मोहनलाल बियारू किजे।। व्यंजन मीठे खारे रूचिसों, मांग जननी पै लीजे।।१।। खोवा मिश्रि और बासोंधी, ता ऊपर तातो पय पीजे।। सखन सहित मिल जेंवत रूचिसों, झूंठन “आसकरण” कूं दीजे।।२।।

(९) मोहनलाल बियारू कीजै।। पूरी दूध मलाई मिश्री, पहेले कौर प्यारी को दीजे।।१।। जेवत लाल लाडली संग मिल, ललितादिक निरख सुख लीजे।। “गोविन्द” प्रभु प्यारी कर बीरी, पिकदानी सखी को दीजे।।२।।

दूध के पद

(१) राग-ईमन कीजे लाडिले पान अब दूध लाई हो यशोदा मैया।। कनक कटोरा भरभर पीजे सुख दीजे, ब्रजराज कुँवरवर तेरी बेनी बढ़ेगी मेरे भैया।।१।। आछो नीको अति ओट्यो, और तामें मधुर मिठैया।। "आसकरन" प्रभु दूध पीजें, जननी को सुख दीजै, प्रात उठत करोंगी धैया।।२।।

(२) राग-कान्हरौ दूध पियो मनमोहन प्यारे।। बलबल जाऊँ गहरू जिन कीजे, कमलनयन नयननके तारे ।।१।। कनक कटोरा भर पीजे सुख दीजे, संग लेहों बलभद्र भैयारे।। "परमानंद" मोहि गोधन की सौं, उठत ही प्रात करूँ धैया रे।।२।।

(३) दूध दह्यों लूटत बन बाटत, पीजे लाल घर ही को ल्याई।। मीठो मिलाय चुहाय तान के, दान मान को लेऊ अघाई।।१।। गोपीजन जसोमति के आगे, कहत रही कछु मन सकुचाई।। "कुंभनदास" गिरिधर मुख देखत, श्यामा द्वार ही ते फिरी आई।।२।।

(४) राग-ईमन दूध पियो हो कुंवर कन्हाई, ओट्यो अति ही स्वच्छ भर लाई, तामें अधिक मिठाई।।१।। सुघर अरगजा अंग लेपन कियो, लागत परम सुहाई। "कृष्णदास" भर लाई जमुनोदक, अचवन ले कीजिये आई।।२।।

(५) राग-बिहाग हँस हँस दूध पीवत नाथ।। मधुर कोमल वचन कहि कहि, प्राण प्यारी साथ।।१।। कनक कटोरा भर्यो अमृत, दियो ललिता हाथ।। लाड़ली अचवाय पहिले, पाछे आप अघात।।२।। चिन्तामणि चित बस्यो सजनी, नाहिन और सुहात।। श्यामा श्याम की नवल छबि पर, "रसिक" बल बल जात।।३।।

पोढ़वे के पद

(१) राग-मल्हार पोढ़े हरि राधिका के गेह।। नवल निकुंज नवल सज्या रची नवल ही बरखत मेह।।१।। नवल जोबन नवल सुन्दरी, नवलजु बाढ़यों नेह।।२।। नवल "कृष्णदास" त्रैलोक-निवासी, नवलजु स्याम स्नेह।।३।।

(२) राग-बिहाग चांपत चरण मोहनलाल।। पलका पौढ़ी कुंवरी राधे, सुन्दरी नवबाल।।१।। कबहुं कर गहि नयन-मिलावत, कबंहु छुवावत भाल।। "नंददास" प्रभु छबि-निहारत, प्रीत के प्रतिपाल।।२।।

(३) पोढ़े प्रेम के पर्यंक।। सुरत रस में मग्न दोऊ, लेत भर भर अंक।।१।। कोककला प्रवीन विहरत, उठत भाव तरंग।। "कृष्णदास" प्रभु गोवर्धनधर, जीत मुदित अनंग।।२।।

(४) कुसुम सेज पिय प्यारी पोढ़े, करत है रस बतियां।। हँसत परस्पर आनंद हुलसत, लटक लटक लपटात छतियां।।१।। अति रस रंग भीने रीझेरी रीझवार, एक तन मन भई एक मति गतियां।। “रसिक” सुजान निर्भय क्रीड़त दोउ, अंग-अंग प्रतिबिम्बीत दोउन के बसन भतियां।।३।।

(५) पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। नौतनसेज बनी अति सुन्दर, बिचबिच सोंधेकी पुट दें।।१।। हों करहों चरननकी सेवा, जो मेरे नेनन अति सुख व्हे।। “गोपीनाथ” या रंग महल में, जोरी राज करो अविचल व्हे।।२।।

(६) पियप्यारी कुंजमहल में पोढ़े।। अंगसों अंग मिलाय परस्पर, अलकें छुटी मौढ़े।।१।। कोककला रसरीत प्रवीण अति, एक एक ते ड्योढ़े।। “सूर” सुरत संग्राम जीत दोऊ, पीत पिछोरी ओढ़े।।२।।

(७) पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। अनन्य व्है चरणारविंद रज, सकल पूरणकाम।।१।। अष्टसिध्धि नवनिध्धि द्वारे, जोग भोग विश्राम।। उमापति, सुकदेव, नारद, रटत निसदिन नाम।। सकल कला प्रवीण गिरधर, राधिका भुज वाम।।२।।

(८) पोढ़े श्यामजु सुख सेज।। संग श्रीवृषभान तनया, रंगरस को हेज।।१।। तरणितनया विलुलित कनक मालतीको तेज।। शोभा की सीमा हैं दंपति, “गोविंददास” गनेज।।२।।

(९) भयो हरि पोढ़न को समयों।। इत आई कुंजन की परछाई, उत ढर चंद गयो।।१।। लटकत चले दोऊ कुंज सदन में, आलस प्रसंग भयो।। “रसिक” प्रीतम प्यारी जू पोढ़े, यह सुख दृगन लयो।।२।।

(१०) नवल किशोर नवल नागरियां।। अपनी भुजा स्यामभुज ऊपर, स्याम भुजा अपने उर धरिया।।१।। करत बिहार तरनि-तनया तट, स्यामा स्याम उमगि रस भरिया।। यों लपटाय रहे दोऊ जन, मरकत मनि कंचन ज्यों जरिया।।२।। या उपमा को रवि ससि नाहीं, कंदर्प कोटि वारने करिया।। “कृष्णदास” बलिबलि जोरी पर, नंदकुँवर वृषभान दुलरिया।।३।।

(११) राग-बिहाग/केदारो। पोढ़िये पिय कुंवरकन्हाई।। नव नव वसन नवल कुसुमावलि, हों अपने कर सेज बनाई।।१।। नाहिन समें सखी काहूको, ग्वालमंडली सब बोराई।। “आसकरण प्रभु” मोहननागर, नागरि कूं ललिता लेआई।।२।।

(१२) राग-केदार तुम पोढ़ो हों सेज बनाऊं।। चौवा चरन रहौं पाटीतर, मधुरे स्वर केदारों गाऊँ।।१।। सहचरी चतुर सब जुर आई, दम्पति सुख नैनन दरसाऊं।। “आसकरन” प्रभु मोहन नागर, यह सुख श्याम सदा हौं पाऊं।।२।।

अथ उत्सव निर्णय

(१) श्री नवरात्र प्रारंभ निर्णय : आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवरात्र प्रारंभ होती है। सो प्रतिपदा उदयात लेनी। यदि दो प्रतिपदा हो तो पहली प्रतिपदा लेनी। यदि प्रतिपदा का क्षय हो तो विद्धा प्रतिपदा लेनी।

(२) श्री विजयादशमी निर्णयः - आश्विन शुक्ला १० विजयादशमी सो दशमी संध्याकाल व्यापिनी लेनी। दशमी दो प्रकार की श्रवण नक्षत्र युक्त व श्रवण नक्षत्र रहित। श्रवण नक्षत्र संध्याकाल तक हो तो मानना चाहिये। यदि संध्याकाल से पहले दशमी व श्रवण नक्षत्र समाप्त हो तो दूसरे दिन माननी। सूर्योदय के समय थोड़ी दशमी हो और श्रवण नक्षत्र की व्याप्ति संध्या समय तक हो तो उस दिन माननी चाहिये।

(३) श्री शरदपूर्णिमा निर्णय :- आश्विन शुक्ला १५ शरदपूर्णिमा सो चन्द्रोदय व्यापिनी लेनी और दो पूर्णिमा हो तो और दोनों दिन चन्द्रोदय व्यापिनी हो तो पहली पूर्णिमा लेनी। दोनों दिन चन्द्रोदय व्यापिनि न हो तो भी पहली पूर्णिमा को शरदोत्सव मानना चाहिये।

विशेष विवरण :-

(१) पूरी नवरात्री में नव विलास एवं पंचमी से करखा के कीर्तन होते हैं एवं ईन दिनों नव गोपीजन नो प्रकार की सामग्रियाँ भी आरोगाती हैं।

(२) पांच देवियों के कीर्तन (गरबा) गोपियां व राधाजी गाती है। देवी प्रसन्न होती है। वरदान मांगने हेतू कहती हैं तो मांगा कि श्रीकृष्ण पति रूप में मिलें सो देवी प्रसन्न होकर भगवान को वहां लाती है तथा दो गीत श्री ठाकुरजी के स्वयं देवी गाती है। देवियां प्रसन्न होकर नाचती है कि श्री ठाकुर जी हमारे घर पधारें है। "श्री गोवर्धनधारी मारा वाला" गीत गाती है तथा प्रार्थना करती है कि आप हमारे घर पधारना। गरबा की तैयारियां तथा नो कुंज में श्री ठाकुरजी पधारते है।

(३) पंचमी से करखा के कीर्तन गाये जाते है।

(४) श्रीनाथजी (नाथद्वारा में) शयन के दर्शन दशहरा से प्रारम्भ होते है।

(५) दशहरा से अन्नकूट की बधाई बैठ जाती है। ग्यारस से पूर्णिमा तक रास के कीर्तन होते हैं।

(६) कार्तिक कृष्णा प्रतिप्रदा को भी रास के कीर्तन होते है तथा द्वितीया से श्री गावेर्धन पूजन के पद आते हैं।

(७) आश्विन शुक्ला प्रतिप्रदा से नवरात्री तक कदम्ब बनदेवी व मुरली के कीर्तन होते हैं।

आश्विन कृष्ण १

श्रृंगार - पाग-कतरा को।

वस्त्र - फिरोजी रंग के रूपहरी कोर का पिछोड़ा तथा श्रीमस्तक पर पाग फिरोजी तथा रेशम के कामका दोहरा कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई चित्रात्मक लीली परीक्रमा की पिछवाई जिसमें वृजके सभी धाम है।

आभरण - नित्यानुसार माणक मोती के आभरण जोड़के धराये गये है।

विशेष - आज सांझी में मधुबन व तालवन का चित्रांकन किया गया है।

मंगला में राग-बिलावल/सारंग **माधो जू जानि देऊ चली बाट।। कमल नैन काहे को रोकत, बर बट जमुना घाट।।१।। और सखा देखेंगे कोऊ, गहत सीस तें माट।। तुम तों कान्ह ओर परत नहीं, नीयरें गोधन ठाट ।।२।। क्यों बिकायगों गोरस मेरो, करत भोर ही नाट।। "परमानंद" चंद्रावली खीजति, दिन प्रति यही हैं डाँट।।३।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल/ललित **चले किन जावों अपुनी गेल।। हम नित-प्रति निकसत गिरिघटीयां, गोवर्धन की सेल।।१।। दूध दही को दान अनोखो, हम लाधें कछु बेल।। प्रभु "मुकुन्द माधो" सुखदायक, घर लरिका बन छेल।।२।।**

राजभोग आते समय **दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर, रावल की रावरे ने राखी सब घेरा।। जानतो जबही देहों, नन्दजू की आन खेहों, भोजन की रही न कछु चाखों एक बेर।।१।। अति प्रविन जान राय, कनक बेला करमें लिये, बाँटत मेवा मन प्रसन्न हेर चहुँ फेर।। सकल पाक परमानंद आरोगत, "परमानंद" टोक करत सुबल टेर टेर।।२।।**

राजभोग में राग-सारंग **कान्ह केसो माँगत दान दूध दही को, यह न सुन्यो कबहु कान।। हम नित आवत यह मारग लिये दधि, कोऊ भूले रोकी आन।।१।। कहेगी जाय व्रज पति के आगें, ढीठ्यों देत न गिनत पहेचान।। "रसिक" प्रितम सुन वचन त्रिया के, अति उन्मद भये, दे गल बैयां दीनी जान।।२।।**

भोग में राग-नट **जाओ जाओ गुजरिया झुठी।। लरिका मेरो घर खेलत है, कौन चोर बन लुटी।।१।। माखन खायों मही ढ़रकायों, मोतिन की लर टुटी।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, सर्वस्व दे ग्वालन छुटी।।२।।**

संध्या में राग-कल्याण कबको भयोरे ढोटा दधि दानी।। मटुकी फोरत बांह मरोरत, यह बात कित ठानी।।१।। नंदरायकी कानि करत हों, सुनिहो यशोदा-रानी।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, गुणसागर अभिमानी।।२।।

शयन में राग-ईमन भैय्या हो घेरों घेरों, वृजनारी जान नहीं पावें।। चलीये जात उत्तर नहीं देत, लेउ छिनाई मटुकिया सीसतें, ओर ढीठ देखियत भारी।।१।। खरिक दुहाय गोरस लियें जात अपने अपने भवन, ताको दान मागत जैसे काहू लादीहें लोंग सुपारी।। "गोविंद प्रभु" आये अनोंखे नये दानी, चलों चलोरी बुलावत घरके लालविहारी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े हरि राधिका के गेह।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

राग-बिहाग चांपत चरण मोहनलाल।। (यह पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण २

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - बादली रंग के सोनेरी कोर के, शुथन तथा कांछनी व बड़ा पिताम्बर। श्रीमस्तक पर पाग पर सोनेरी डंके का मोर मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई बादली रंग की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-मोती व सोना के धराये गये है।

विशेष - आज सांझी में कमल चोक में हाथीपोल पर सांतन-कुण्ड की लीला चित्रांकित की गई है।

राग देव गंधार चले किन जावो अपुनी गेल।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-टोडी कहोजु दान लैहों कैसे, हम तौ देव गोवर्धन पूजन आई।। कोऊ दह्यो कोऊ मह्यो माखन जोरि जोरी, आछौ अछूतौ लाई।।१।। तुम्हें पहले कैसे दीजें कान्हरजू तुमे तौ सबैं फबि करत मनभाई।। "नन्ददास" प्रभु तुम्ही परमेश्वर भये अब कछु नई ये चलाई।।२।।

राजभोग आते समय छाक के पद राग-सारंग आज दधि मीठो मदन गोपाल।। भावत मोही तिहारो जूठो, चंचल नैन बिसाल।।१।। आने पात बनाये दोना, दिये सबन को बांट।। जिन नहीं पायो सुनोरे भैया, मेरी हथेरी चाट।।२।। बहुत दिनन हम रहे कुमुदबन, कृष्ण तिहारे साथ।। ऐसो स्वाद हम कबहु न चाख्यों, सुन गोकुल के नाथ।३।। आपुन खात खवावत ग्वालन, मानस लीला रूप।। "परमानंद" प्रभु हम सब जानत, तुम त्रिभुवन के भूप।।४।।

तुमको टेर टेर मैं हारी।। कहां जो रहे अबलों मनमोहन, लेहों न छाक तुम्हारी।।१।। भूल परी आवत मारग में, क्यों हूँ न पेंडो पायो।। बूझत बूझत यहां लो आई, तब तुम वेणु बजायो।।२।। देखों मेरे अंग को पसीना, उरको अंचल भीनों।। "परमानंद" प्रभु प्रीति जानकें, धाय आलिंगन कीनों।।३।।

बिहारी लाल आई छाक सलोनी।। अति अद्भूत पठई चंन्द्रवली, एक गांठ द्वे दोहनी।।१।। टेरत श्याम भुजा ऊँची कर, गई सुवास आग्योनी।। "कृष्णदास" गिरीधरजू को मन हरख्यों, विधिना "रसिक" रिझोनी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग ठाडोई देख्यो यमुनाघाट।। कहा भयो घर गोरस बाढ़्यो, और गोधन के ठाट ।।१।। जातपांत कुल को न बड़ो रे, चले जाहु किन बाट।। "परमानंद" प्रभु रूप ठगोरी, लागत न पलक कपाट।।२।।

राग-बिलावल गढ़तें ग्वालिन ऊतरी शीश महीकौ माँट।। आड़ौ कन्हैया है रह्यौ रोकी व्रजबधू बाट।।१।। नागरि दान दै।। कहाँकी हौ तुम ग्वालिनी कहा तिहारौ नाम।। बरसानेकी ग्वालिनी प्यारी राधा मेरौ नाम।।२।। मोहन जान दै।। वृंदावन की कुँजमें अचरा पकर्‍यौ दौर।। नाम दानकौ लेत हो लाला चाहत हौ कछु और।।३।। मोहन जान दै।। तुम अकेले हम अकेली बात नहीं कछु जोग।। तुमतौ चतुर प्रवीन हौ कहा कहेंगे लोग।।४।। मोहन जान दै।। सँगकी सखी सब दूरि निकसि गईं हम रोकी बनमाँझ।। घरतौ दारून सास है अब होन लगी है साँझ।।५।। मोहन जान दै।। तुम ओढ़ी है कामरी हम पेहेर्‍यौ है चीर।। उमड़ि घुमड़ि आई बादरी अंब कहा बरसावत नीर।।६।। मोहन जान दै।। प्रेम मगन ग्वालिन भईं हरिको दरशन पाय।। मुख तें बचन न आवही सो लगी ठगौरी जाय।।७।। मोहन जान दै।। लै मटुकी आगें धरी परी श्याम के पाँय।। मन भावै सो लीजियै बचै सो बेचन जाँय।।८।। मोहन जान दै।। सुख बाढ़्यो आनँद भयौ रही श्याम गुन गाय।। सुंदर शोभा देखिकें "सूरदास" बलि जाय।। मोहन जान दै।।

ढोटा काहे कों बढावत रार, मोहि घर जांन दे ।। ये नैना तें कहाँ पाये, दधि की बेचन हार ।। जोबन मद माती फिरे प्यारी, गुजर गर्व ग्वार ।।१।। तुम गोकुल की ग्वालिन, काहे करत अवेर।। दान हमारो दीजियें, सो ग्वालिनी राखी घेर ।।२।। तुम ढोटा व्रजराज के, कान्ह तुम्हारो नाम ।। हठ जिन कीजे सांवरे, बसीयत इक ही गाम।।३।। दधि बेचन ग्वालिन चली, मिले ओंचका कान।। रसिक रसीले साँवरे, गही मटुकिया आन।।४।। दानी नंदकुमार नें, तानी भ्रोंह कमान।। जात कहा व्रज सुंदरी, गुजर देहो हमारो दान।।५।। तुम दानी कब के भए, कब हम दीनों दान।। गाई चरावत नंद की, भए अनोंखे कान।।६।। मोर मुकुट माथें धरों, रिमझिम बरषे मेह।। मेरी मटुकिया छांडि दे लाला, और सबन की लेह।।७।। मोर मुकुट माथे धरों, जासों बढे सनेह।। कह्यो हमारो मानीये, अचरा छांडि तुम देह।।८।। हों गुजरि राजा कंस की, गहि पकराऊं तोहि।। आधी राति के भाजीयों, काहे को परगट होहि।।९।। भुजा ऊखारो तेरे कंस की, करो मथुरां कों राज।। दान हमारो दीजिये गुजर, काहे कों बढ़ावत रार।।१०।। तुम दानी कब के भए, कब हम दीनों दान।। हमपे छाप

दिखराव ही, तुम कापें पहिरायो दान।।११।। लें आए तो लेंहिगे, कबहु न करि हें कान।। मोहि दुहाई नंद की, तुम देहो हमारो दान।।१२।। सखियन मधि राधिका, ग्वालन मधि बलबीर।। झगरों ठानों दानकों, कालिंदी के तीर।।१३।। बारबार हो बरजती, कह्यों हमारो मान।। मारौंगी रे ग्वालिया, मोहि दाऊ की आन।।१४।। मोर पखौआ सिर धरो, बांस फुंकनी फेंट।। हाथ लकुटीया गहि लई, या सिंगार पर ऐंठ।।१५।। ब्रिन्दावन की कुंज में, मोहन दीनी टेर।। नंद महरि के लाडिले, ग्वालिन राखों घेर।।१६।। माय तुम्हारी जानिये, बाप चराई गाय।। तुम चराये जेंगरा, अब मांगत दधि को आय।।१७।। मोर चंद्रिका सिर धरो, मुख मुरली घनघोर।। कुंज गलीन राधा रवन, जै जै जुगल किसोर।।१८।। गुंजावली गरे धरे, चंदन तिलक सुढ़ार।। पीतांबर छुद्र घंटिका, अरू बैजंती माल।।१९।। मोर मुकुट माथें धरो, घुंघर बारे केस।। यह बांनिक मेरे मन बसों, प्यारो नागर नटवर भेष।।२०।। दान लीला श्रीकृष्ण की, सुनें सुनावें सब कोय।। प्रेम भक्ति जिनके बढ़े, हरि भजि निरमल होय।।२१।। दधि मटुकी आगें धरी, ग्वालिन लागी पाय।। हिलि मिलि प्रीत बढ़ाई के, “माधोदास” बलि जाय।।२२।।

संध्या आरती में राग-जंगलो अरी तुम कौन हो री, बनमें फूलवा बीनन हारी।। रतन जटित को बन्यों बगीचा, फूलरही फूलवारी।।१।। कृष्णचंद बनवारी आये, मुख क्यों न बोलत सुकुमारी।। तुमतों नन्द महर के ढोटा, हम वृषमान दुलारी।।२।। या बन में हम सदाई बसत है, हमही करत रखवारी।। बिन बूझे बीनत फूलवा, तुम जोबन मतवारी।।३।। तब ललिता एक मतो उपायो, सेन बताई प्यारी।। “सूरदास” प्रभु रसबस कीने, विरह वेदना टारी।।४।।

शयन में राग-केदार गुजरिया तू गर्व गहेली उत्तर नाही देत ।। चलत गजगति गौरस की माती, अति रसरंग भरियाँ।।१।। दिन दिन दान मार गई है हमारो, कब हूँ पालें नहिं परियां।। “गोविन्द” प्रभू कहत सखन सों घेरौ घैरों, तब धाय अंचल धरियां।।२।।

मान में राग-केदार सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। सबको भाग्य भोगवत सगरी निशा, लालगिरीधरन संग तोही बीतीरी।।१।। केतिक उपमा कहूं रावरी एकमुख, श्याम सुन्दर गरें लाय तोहि लीनीरी।। “रसिकप्रितम” महासुख दियो राधिका, यातें कमला लया रही हे रीती री।।२।।

राग-बिहाग पोढ़े प्रेम के पर्यंक।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ३

श्रृंगार - दुमाला का।

वस्त्र - हरे रंग के वस्त्र पर रूपहरी कोर के धोरा के शुथन तथा पटका। श्रीमस्तक पर रूपहरी जरी का दुमाला एवं भीमशाही किलंगी काम की धराई गयी है। ठाडा वस्त्र लाल तथा पिछवाई हरे रंग की धराई गई है। कमल चोक में सांझी में बहुलावन की लीला दिखाई गई है।

आभरण - माणक मोती सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित कहो जू दान कैसों, कित रोकत धनश्याम।। कुल किन प्रीति रीति पहचानत, किन सकुचत एसी बांन ।।१।। जो तुम लूटयों चाहत हों दधि, तोहि बाबा कि आँन।। "नंददास" प्रभु जो नहीं मानत, रहेगी न कोऊं कुल कान।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल ले चलीरी गोरस बेचन को मिसकरी, छोटी सी मटुकी और मधुर चाल।। अरबराय उठ चलीरी प्रातः विथुरी अलक, उर मरगजे वसन, गरे सोहत कुमलानी माल।।१।। कहत फिरत लेहो लेहोरी दह्यो मह्यो, ढुंढत फिरत नंदलाल।। "रामदास" प्रभुको मन मोहिरी ऐसी गति मंद, सो ऐन मेन मद गज की चाल।।२।।

राजभोग आते समय छाक के पद राग-सारंग दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर रावल की, रावरे ने राखी सब घेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग चलन न देत हों ये है बटियां।। रोकत आय श्यामघन सुन्दर, जब निकसत गिरि-घटियाँ।।२।। तौरत हार कंचुकी फारत, माँग संवारत पटियां।। पकरत बाँह मरोर नंद सुत, गहि फोरत दधि चटियाँ।।२।। "कुंभन दास" प्रभु कब दान दीनौ, नई बात सब ठटियाँ।। गिरिधर पाय पूजिये तिहारे, जानत हो सब गटियाँ।।३।।

भोग में राग-नट आज मेरी वृन्दावन में दधि लुटी।। कहां मेरो हार कहां नक बेसर, कहां मोतियन लर टूटी।।१।। बरजो यशोदा अपने मोहन कों, झकझोरत मटुकी फूटी।। "सूरदास" प्रभु के जु मिलन को, सर्वसु दै ग्वालिन छूटी।।२।।

संध्या आरती में राग-गोरी कोउ सखी माधो लेहो माधो लेहो।। बेचत प्रेम रस गोरस, कहन आवे परी जु प्रेम बस।।१।। गोरस बेचन चली बृन्दावन मांझ।। हरि के सरूप

भुली, पर गई सांझ।।२।। मन भुली तन भुली धन भुली धाम।। “परमानंद” स्वामी पुरन काम।।३।।

शयन में राग-कान्हरौ कापर ढोटा नयन नचावत, हे कोऊ तिहारे बाबाकी चेरी।। गोरस बेचन जात मधुपुरी आये अचानक बृज में घेरी।।१।। सेनन दें सब सखा बुलाये, बात ही बात समस्या फेरी।। जाय पुकारों नंद जुके आगे, जिन कोउ छुवों मटुकिया मेरी।।२।। गोकुल बस तुम ढीट भये हो, बहुतें कान करत हों तेरी।। “परमानन्ददास” को ठाकुर, बल बल जाऊँ श्यामघन केरी।।३।।

मान मिलाप में राग-केदार सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

राग-बिहाग राग-केदारो। पोढ़िये पिय कुंवरकन्हाई।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ४

श्रृंगार - ग्वाल पगो, गुलाबी रेशम की मोर शिखा का।

वस्त्र - मोठड़े का पिछोडा रूपहरी किनारी का, ठाडा वस्त्र पीला, पिछवाई लहेरीये की रूपेरी कोर की

सांझीमें - राधा कृष्ण कुंड की लीला दर्शाई गई है।

मंगला में राग-देवगंधार मटुकिया आन उतार धरी।। इन मोहन मेरो अँचरा पकर्यो, तब मैं बहुत डरी।।१।। मोपै दान साँमरों मांगत, लीने हाथ छरी।। मोहिकों तुम गहिजु रहे हो, सँगकी गई सगरी।।२।। पैया लागी करत हों विनती, दोऊ कर जोरि खरी।। "परमानंद" प्रभु दधि बेचन की, बिरियाँ जात टरी।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल ग्वालिनी प्रकट्र्यो पूरण नेह।। दधिभाजन सिर पर धर्योरी, कहत गोपाल हि लेह।।१।। कोन सुने कासों कहूँरी, काके सुरत संकोच।। काको डर पथ अपथ को री, को उत्तम को पोच।।२।। बाट घाट निजपुर गली, जहाँ-तहाँ हरिनाम।। समझाये समझत नहीं, वाहि सिख दे बिथक्यो गाम।।३।। दीपक जों मंदिर बरे, बाहिर लखे न कोय।। तृण परसत प्रज्वलित भयो, गुप्त कोन विधि होय।।४।। पान किये जस वारणी, मुख झलकन तन न संभार।। पग डगमग जित-तित धरें, बिथुरी अलक लिलार।।५।। सरिता निकट तड़ाग के, दीनों कूल बिदार।। नाम मिट्र्यो सरिता भई, को निबेरे वार।।६।। लज्या तरल तरगिंणी, गुरूजन गहरी धार।। दोऊ कुल कूल परमित नहीं, ताहि परत न लागी वार।।७।। विधि भाजन ओछ्र्यो रच्यो, लीला सिंधु अपार।। उलट मग्न तामें भयो, कौन निकासनहार।।८।। चित आकरष्यो नन्द के, मुरली मधुर बजाय।। जिहि लज्जा जग लाजयो, सो लज्जा गई लजाय।।९।। प्रेममग्न ग्वालिन भई "सूरदास" प्रभु संग।। नयन श्रवण मुख नासिका, ज्यों कंचुकी तजत भुजंग।।१०।।

राज भोग आते समय राग-सारंग तुमको टेर टेर मैं हारी।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े)

हरिकों टेरत फिरत गुवारी।। आन लेहों तुम छाक आपनी, बालक बल बनवारी।।१।। आज कलेऊ कियों प्रातही, बछरा ले वन धाये।। मेवा मोदक मैया यशोमति, मेरे हाथ पढ़ाये।।२।। जब यह बानी सुनी मनोहर, चल आये तहां पास।। कीनी भली भूख जब लागी, बल "परमानंददास"।।३।।

राग-सारंग बांट बांट सबहिन को देत।। ऐसे ग्वाल हरि हैं जो भावत, शेष रहत सोई आपन लेत।।१।। आछो दूध धोरीको, ओट जमायो अपने हाथ।। हंडिया मूँद यशोदा मैया, तुमको दे पठई ब्रजनाथ।।२।। आनंद मगन फिरत अपने रंग, वृंदावन कालिंदीतीर।। “परमानंददास” झूठो ले, बांह पसार दियो बलवीर।।३।।

राजभोग में राग-टोड़ी मति मति जसुमति के लाल, देखत सब ग्वाल बाल, विनती सुनि हा हा हरि, छूवो न देह मेरी।। रोकि रहत मारगमें, इत उत नहीं जान देत, घिरवत लियें लकुट हाथ, राखि सब घेरी।।१।। एतो कहा बल दिखावत, दोऊ दृग नहीं नचावत, भावत नहीं हमें ढ़ीट, लंगर गति तेरी।। “रसिक” प्रीतम छांडि देहु, चाहे सोई मागि लेहु, नांहि न कछु हे संदेह, हों तो निज चेरी।।२।।

संध्या में राग-ईमन अबही दान लेहूं या गोरस को, देखियत है जो मुख लेन को।। जानत हो जू एसें और ठोर करेगी घेर, है सुधे व्हे रहोगे जू कापर करत रोस नयन को।।१।। छांडिदे पट नातर कहूंगी जाय नंदराय सों, कथनियां कथत तू ज्यों ग्वाल धेनको।। “कल्याण” के प्रभु यशोदा आगे जाय कहों, बहोरि उत्तर न आवें त्रीय बेनको।।२।।

राग-गोरी सखियन संग राधिका कुँवरि बिनति कुसुम कलियां।। एकही बानिक एक वेश क्रम स्याम बाल के, हाथन रंगीली डलियां।।१।। एक अनूपम माल बनावत एक परस्पर बेंनी गूंथत, शोभित कुंद कलियां।। “सूरदास” मदन मोहन आय अचानक ठाड़े भये, मानी है रंगरलियाँ।।२।।

शयन में राग-केदार गुजरिया तूं गर्व गहेली उत्तर नाही देत ।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

मान मिलाप में राग-केदारो सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

पोढवा में राग-बिहाग कुसुम सेज पिय प्यारी पोढ़े करत है रस बतियां।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ५

श्री हरिरायजी महाप्रभु का उत्सव (महादान)

शृंगार - मुकुट काछनी का।

वस्त्र - केसरियां रूपहरी कोरके, शुथन तथा कांछनी, बड़ा पिताम्बर तथा श्रीमस्तक पर केसरियां पाग पर जड़ा हुआ मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई दान लीला की।

आभरण - ठाड़ी लड़ मोती की तथा शीरपेच शीशफूल, कुण्डल सभी हीरा माणक के, श्रीमुखारविंद पर तिलक माणक का अलंकार कमलाक्ष, नखवेशर माणक मोती के चिबुक हीरा को हार, हांस माणक मोती पन्ना के श्रीअंग में शृंगार श्री चरणारवृंद तक धराये गये है। श्रीहस्त में नखावली मोती पड़ाकी, मुद्रिका, हस्तपान, पौंची, बाजु सभी माणक मोती के तथा श्री चरणकमल में नखावली मोती पड़ा की, मुद्रिका, पगपान, पायल-पेंजनी सभी हीरा माणक के तथा जड़ाऊं नुपुर सोना के वेणु वैत्र माणक जड़े हुवे, फूल की बड़ी छड़ी धराई गई है।

विशेष - आज श्रीनाथजी ग्वाल में महादान आरोगे है। शायंकाल सांझी लीला में दानघाटी तथा मानसी गंगा चित्रित की गई है।

मंगला में राग-देवगंधार हमारों दान देहों गुजरेटी।। बहुत दिनन चोरी दधि बेंच्यो, आज अचानक भेंटी।।१।। अति सतरात कहां धों करेगी, बड़े गोप की बेटी।। "कुम्भनदास" प्रभु गोवर्धनधर, भुज ओढ़नी लपेटी।।२।।

शृंगार में राग-बिलावल तुम नंदमेहर के लाल मोहन जान दै।। रानी जसुमति प्रान आधार।।मोहन जान दै।।धृ.।। श्रीगोवर्धनकी शिखरतें, मोहन दीनी टेर।। अंतरंगसों कहत हैं सब, ग्वालिनि राखौ घेर।।नागरि दान दै।।१।। ग्वालिन रोकी ना रहें, ग्वाल रहे पचहार।। अहो गिरिधारी दौरियो, सो कह्यौ न मानत ग्वार।।नागरि दान दै।।२।। चली जात गोरस मदमाती, मानों सुनत नहीं कान।। दौरि आये मनभामते, सो रोकी अंचलतान।।नागरि दान दै।।३।। एक भुजा कंकन गहैं, एक भुजा गहि चीर।। दान लैन ठाढ़े भये, गहबर कुंज कुटीर।।नागरि दान दै।।४।। बहुत दिना तुम बचि गई हों, दान हमारो मार।। आज हों लैहों आपनौ, दिन दिनकौ दान सँभार।।नागरि दान दै।।५।। रसनिधान नवनागरी, निरख बचन

मृदु बोल।। क्यों मुरि ठाढ़ी होत है, घूँघटपट मुख खोल।।नागरि दान दै।।६।। हरख हियें हरि करखिकें, मुखतें नील निचोल।। पूरन प्रगटयौ देखिये, मानो चंद घटाकी ओल।।नागरि दान दै।।७।। ललित बचन समुदित भये, नेति नेति यह बैन।। उर आनंद अतिही बढ़यौ, सो सुफल भये मिलि नैन।।नागरि दान दै।।८।। यह मारग हम नित गईं, कबहूँ सुन्यौ नहीं कान।। आज नई यह होत है, सो माँगत गोरसदान।। मोहन जान दै।।९।। तुम नवीन नवनागरी, नूतन भूषण अंग।। नयौ दान हम माँगनौ, सो नयौ बन्यौ यह रंग।।नागरि दान दै।।१०।। चंचल नयन निहारियै, अति चंचल मृदुबैन।। कर नहीं चंचल कीजियै, तजि अंचल चंचल नैन।।मोहन जान दै।।११।। सुंदरता सब अंगकी, बसनन राखी गोय।। निरखि निरखि छबि लाड़िली, मेरौ मन आकर्षित होय।।नागरि दान दै।।१२।। लै लकुटी ठाढ़े रहे, जानि साँकरीखोर।। मुसकि ठगौरी लायकें, मोसौं सकत लई रति जोर।।मोहन जान दै।।१३।। नेंक दूरि ठाढ़े रहौ, कछू और सकुचाय।। कहा कियौ मन भांवते, मेरे अंचल पीक लगाय।।मोहन जान दै।।१४।। कहा भयौ अंचल लगी, पीक हमारी जाय।। याके बदलें ग्वालिनी, मेरे नयनन पीक लगाय।।नागरि दान दै।।१५।। सूधे बचनन माँगिये, लालन गोरस दान।। मोहन भेद जनयकैं, सो कहत आनकी आन।।मोहन जान दै।।१६।। जैसे हम कछु कहत हैं, ऐसी तुम कहि लेहु।। मनमाने सो कीजिये, पर दान हमारौ देहु।।नागरि दान दै।।१७।। कहा भरें हम जात हैं, दान जो माँगत लाल।। भई अवार घर जानदै, सो छाँड अटपटी चाल।।मोहन जान दै।।१८।। भरें जातहौ श्रीफल कंचन, कमल बसनसों ढाँक।। दान जो लागत ताही कौ, तुम दैकर जाहु निशाँक।।नागरि दान दै।।१९।। इतनी विनती मानियै, माँगत ओली ओड़।। गोरसकौ रस चाखियै, लालन अंचल छोड़।।मोहन जान दै।।२०।। संग की सखी सब फिर गईं, सुनिहै कीरति माय।। प्रीति हिये में राखिये, सो प्रगट कियें रस जाय।।मोहन जान दै।।२१।। काल्ह बहोरि हम आइ हैं, गोरस लैं सब ग्वारि।। नीकी भाँति चखाइहों, मेरे जीवन हों बलिहारि।।मोहन जान दै।।२२।। सुनि राधे नवनागरी, हम न करें विश्वास।। करकौ अमृत छाँडिकैं, को करै काल्हि की आस।।नागरि दान दै।।२३।। तेरौ गोरस चाखिवे, मेरौ मन ललचाय।। पूरन शशि कर पायकें, चकोर न धीर धराय।।नागरि दान दै।।२४।। मोहन कंचन कलशिका, लीनी शीश उतार।। श्रमकन बदन निहारिकें, सो ग्वालिनी अति सुकुमार।।मोहन जान दै।।२५।। नव विंजन गहि लालजु, श्रीकर देत ढुराय।। श्रमित भई चलौ कुंज में, नेंक पलोटूँ पाय।।नागरि दान दै।।२६।। जानत हों यह कौन हैं, ऐसी ढीठ्यों देत।। श्रीवृषभान

श्रीमद् हरिराय महाप्रभु

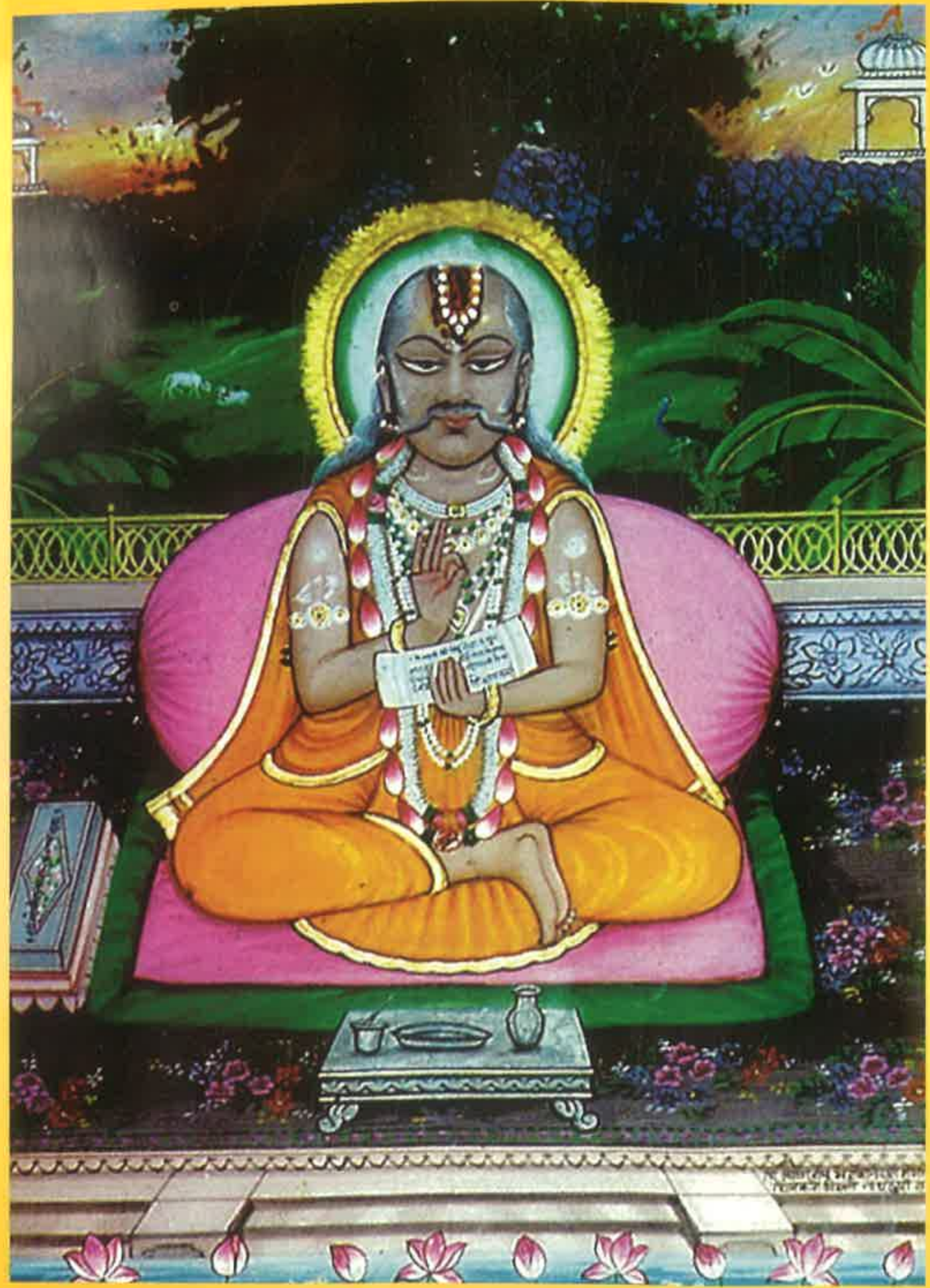

प.भ श्रीमती उषा व्यास एवं श्री राजेन्द्र व्यास नि. चौपसनी रोड़, जोधपुर
का जय श्री कृष्ण

दान लीला

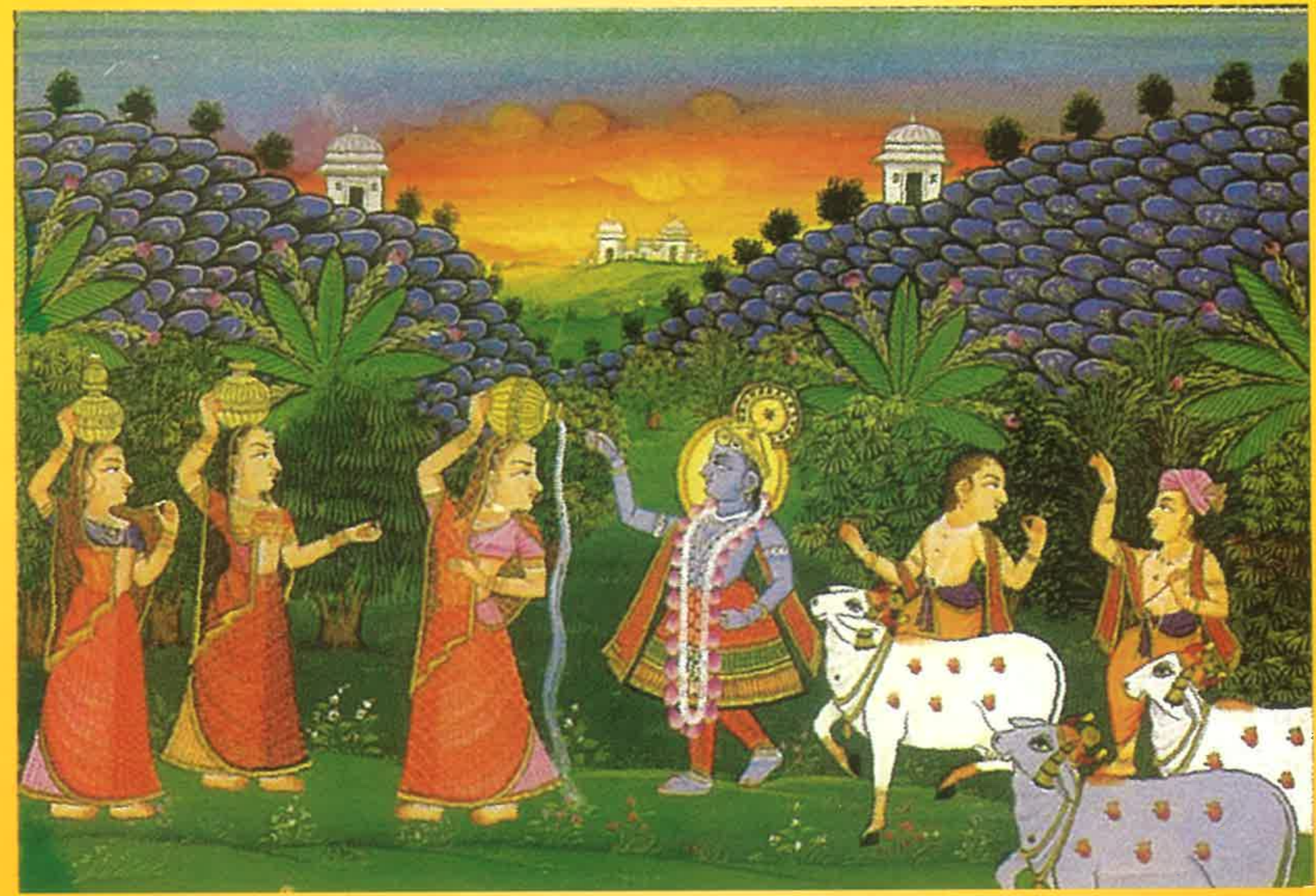

प.भ श्रीमती उषा व्यास एवं श्री राजेन्द्र व्यास नि. चौपसनी रोड़, जोधपुर का जय श्री कृष्ण

कुमारि हे, अरी तोहि बीच को लेत।।मोहन जान दै।।२७।। गोरे श्रीनंदरायजू, गोरी जसुमति माय।। तुम याहीतें साँमरे, ऐसे लच्छिन पाय।।मोहन जान दै।।२८।। मन मेरौ तारन बसै, और अंजन की रेख।। चोखी प्रीत हियें बसैं, याते साँवल भेख।।नागरि दान दै।।२९।। आप चालसो चालियै, यहै बड़ेनकी रीत।। ऐसी कबहुँ न कीजिये, हँसें लोग विपरीत।।मोहन जान दै।।३०।। ठाले ठूले फिरत हौ, और कछू नहिं काम।। बाट घाट रोकत फिरौ, आन न मानत श्याम।।मोहन जान दै।।३१।। यही हमारो राज है, व्रजमंडल सब ठौर।। तुम हमारी कुमुदिनी, हम कमल बदन के भौंर।।नागरि दान दै।।३२।। ऐसे में कोऊ आइ है, देखै अद्भुत रीति।। आज सबै नँदलालजू, प्रगट होयगी प्रीति।।मोहन जान दै।।३३।। व्रज वृंदावन गिरि नदी, पशु पंछी सब संग।। इनसों कहा दुराइयै, प्यारी राधा मेरौ अंग।।नागरि दान दै।।३४।। अंसभुजा धरि लै चले, प्यारी चरन निहोर।। निरखत लीला “रसिकजू”, जहाँ दान मान की ठोर।।मोहन जान दै।।३५।।

राजभोग आते समय छाक के पद दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर रावल की रावरे ने राखी सब घेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग कृपा अवलोकन दान देरी, महादानी वृषभान कुमारी।। तृषित लोचन चकोर मेरे, तव बदन इन्दु किरन पान देरी।।१।। सब विधि सुघर सुजान सुन्दरी, सुनी विनती तूं कान देरी।। “गोविन्द” प्रभु पिय चरण परस कहें, याचक को तूं मान देरी।।२।।

राग-गौरी कीरति कुल मंडन गाईये वृषभान नृपतिकी बाल हो।। कंचन तन सोहै मोहै, उर पहेरें मुक्तामाल हो।।१।। सखी वृंद सब आय जुरी, वृषभान नृपति के द्वार।। बीनन फूल चलौ बन राधे नवसत साजसिंगार।।२।। यह सुन कीरतिजु हँसिकें, प्यारीकौ कियौ है सिंगार।। कबरी कुसुम गुही है, मानौ उडुगण की अनुहार।।३।। शीशफूल जिम चंद विराजत, शोभा कही न जाय।। कोटि चंद वारों मुसिकन पर, काम रह्यौ मुरझाय।।४।। बंक बिराज रहे भृकुटी तट, खुटिला श्रवनन पास।। यों लपटाय रहे दोऊ जनु, नयन दरशकी आस।।५।। करनफूल झूमक अरू बंदी, लटकन बेंदि लिलार।। नकबेसर मोती अति, सोहै लटकन परम सुढार।।६।। मुखही तमोल अधर अरूनाई, दशन लसन अति सार।। चिबुक बिंदु मधुकर सुत, मानौ बैठ्यौ आसन मार।।७।। अंजन ऊपर खंजन वारों, नयन चपलता मीन।। कीरतिजू छबि निरखि निरखिकें, दीठ दिठौना दीन।।८।। चौकी चमक तिमनियाँ, दुलरी चंपकली उपहार।। बाजूबंद

पछेली चूरी, कंकन गजरा चार।।९।। पोंहोंची रत्न चौक और मुँदरी, नखभूषण छबि देत।। श्रीकर कमल बिराजत मानो, उडुगण चंद समेत।।१०।। क्षुद्रघंटिका कटि तट राजत, जेहरि नूपुर पाय।। अँगुरिन बिछिया अनवट सोहैं, शोभा कही न जाय।।११।। हरे कसबकौ लेहेंगा सोहै, कंचुकी केसरि अंग।। सारी सुही रँगी है मानों, गुलेबाँस के रंग।।१२।। कर सिंगार कह्यौ कीरतजू, जाउ लड़ैती साथ।। अली यूथमें चली परस्पर, फूलन डलिया हाथ।।१३।। चलत चाल मराल बाल, श्रीराधाजू सखियन माँझ।। बीनत फूलन यमुना कूलन, खेलत साँझी साँझ।।१४।। जालरंध्र देखत है मोहन, दृष्टिपरी व्रजबाल।। त्रियारूप कियौ है तबही, आय मिले ततकाल।।१५।। छबि निरखत वृषभान दुलारी, बहुत करी मनुहारि।। बीनत फूल अकेली हेली, तू को है सुकुमारि।।१६।। कौन गाम बसति हो, सुंदरि कहा तिहारौ नाम।। आज अबार भई है, प्यारी चलौ हमारे धाम।।१७।। नंदगाममें बास बसति हूँ, साँवरी मेरौ नाम।। साँझी मिस आई हों या बन, पूजे मनके काम।।१८।। सौनजुही, चमेली, चंपा, रायबेलि अरू बेलि।। गुलाबाँस की गेंद लिये कर, करत परस्पर केलि।।१९।। कमल, कनेर, केतकी, निवारौ, सेवती, सदा गुलाब।। गुलतुर्रा सदा सुहागिन, फूलनकी भरि छाब।।२०।। ललिता चंपकलता विशाखा, स्यामा भामा जेह।। चंद्रभगा, तुंगा, चंद्रावलि, राधा माधव नेह।।२१।। ठौर ठौर सब कहत सखिनसों, चलौ भटू घर जाँह।। स्यामाजू अरू नवल सखी दोऊ, गहे परस्पर बाँह।।२२।। सौंधे सानि मध्य चंदन मिल, करत केलि मनभाये।। निरख देव दुंदुभी बजावत, पुष्पन वृष्टि कराये।।२३।। फूल गेंद सबहिन लियैं कर, गावत साँझी गीत।। गजगति चाल चलत व्रजसुंदरि, बढ़ी परम रस प्रीत।।२४।। चहुँदिशि तैं सब आय जुरीं, वृषभान नृपति के द्वार।। कीरतिजू तब करत आरती, राई लौन उतार।।२५।। कीरति बिहँसि कही मृदुबानी, लली चली यह कौन।। प्यारी कह्यौ नंदगाम बसति हैं, खेलन आई भौन।।२६।। केसर चंदन अगर अरगजा, मृगमद कुंकुमगार।। कामधेनुकौ गोबर लैकें, साँझी धरत सँवार।।२७।। धूप दीप कर भोग धर्‍यौ, आरती करी है बनाय।। माँगत सीख सबै व्रजबाला, हाथ जोर शिर नाय।।२८।। ब्यारू आज करौ मिल ह्याँहीं, राधा जूके साथ।। कीरतिजु यों कहत सबनसौं, परसूँ अपने हाथ।।२९।। कर ब्यारू गृह गईं सहेलीं, रह्यौ खेलनकौ रंग।। कमल सेज पर पौढ़े दोऊ, मिल साँवरी राधा संग।।३०।। कहा कहूँ कछु कहत न आवै, प्रभुको यही स्वरूप।। त्रिया बसन ललिताहीं दीये, कीये हैं निजरूप।।३१।। वरनौं कहा यथामति मेरी, रसना एक बनाय।। "हरिदास" प्रभुकी यह शोभा, निरखत मन न अघाय।।३२।। 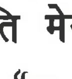

शयन में राग-अडानो आज नंद के नंदन सो, ऐसेई बढ गई रार री।। उन झटकी मेरी दधि की मटुकियां, में वाही दीनी गार री।। ललिता बीच परी झगरे में, दोऊ कर लेत उसार री।। उन उखटी मेरी तीन साख की, में उखटी वाकी चार री।।२।। उनपे मेरी चूक बक्षाओं, मोय ले पायन पार री।। राधा कृष्ण के झगरे उपर, “कृष्ण दास” बलिहार री।।३।।

मान मिलाप में राग-केदार सकल व्रजतियन में तुही जीतीरी।। सबनको भाग्य भोगवत सगरी निसा, लाल गिरिधरन संग तोही बीतीरी।।१।। केतिक उपमा कहूं रावरी एकमुख, श्यामसुन्दर गरेलाय तोहि लीनीरी।। “रसिक” प्रितम महासुख दियो राधिका, यातें कमला लया रही है रीतीरी।।२।।

पोढ़ने में राग-बिहाग रो पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ६

शृंगार - टिपारे का

वस्त्र - लाल चौफूली चुंदडी के, रूपहरी कोर के दोनों तरफ पटका। श्री मस्तक पर सोनेरी जरी के कामका टिपारा।

आभरण - हिरा-पन्ना व मोती के, ठाडा वस्त्र हरे रंग के, पिछवाई माखन चोरी की तथा सांझी में चन्द्र सरोवर व कुसुम सरोवर की लीला चित्रित की गई है।

मंगला में राग-ललित चले किन जाओं अपनी गेल।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-टोड़ी तें कहुँ देख्यौ री आली नन्दको नन्दन, मटुकी झटक के पटक गयौ।। माखन चोर चोर मन हर लीनौ, नेक हुं न डर कीनौं, नट ज्यों उलटकें सटक गयौ।।१।। मारग रोक रहत खोरन में, नैन सैन दे अटक गयो।। "तानसेन" के प्रभु माधुरी सी मुरति, रस गोरस ले गटक गयो।।२।।

राजभोग आवे तब (छाक के पद राग-सारंग) दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर रावल की रावरे ने राखी सब घेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग ग्वालिनी मीठी तेरी छाछि।। कहा दूध में मेली जमायौ, साँची कहै किन बाछि।।१।। औरे भाँति चितैबौ तेरौ, भ्रौंह चलत है आछि।। ऐसौ टकझक कबहुँ न देख्यौ, तू जो रही कछि काछि।।२।। रहसी कान्ह कर कुच गहि परसत, तू जो परति है पाछ।। "परमानंद" गोपाल आलिंगी, गोपबधू हरि नाछि।।३।।

भोग एवं संध्या आरती में राग-गौरी सबमिल आईं लाड़ली, वृषभान नृपति के द्वार हो।।धृ.।। सब मिल आय कह्यौ कीरति सों, देहु लड़ेंती संग।। बनमें फूल बिराज रहे हैं, खेलन साँझी रंग।।१।। यह सुन कीरति बोल कुंवरिकों, उबटि न्हवाई प्रीति।। अँग अँगोछ फुलेल केश बिच, पाटी पारी चीति।।२।। बेनी सुरंग गूँथि माँगमें, सेंदुर भरी बनाय।। बाँयें सीसफूल इत चंदा, बिच लटकन लटकाय।।३।। टीकी कमलपत्र काजर दै, बेसर चिबुक बिराज।। खुटिला खुभी और टेढ़ी, बेंदी झूमक साज।।४।। कंठसरी तिमनी दुलरी, चंपकली हार हमेल।। मुलकट अँगिया बाँह, बिजोंठे बाजूबंदन पेल।।५।। चूरी गजरा कंकन पोंहोंची, हाथ साँकरा मुँदरी।। कटि लहेंगा सारी फुफुंदी, बाजत किंकिणी सगरी।।६।। पग नूपूर पायल जेहर, अनबट बिछिया पगपान।। यह सिंगार कर चली लड़ैती, सब मिलि गावत गान।।७।। बनमें बीनत फूल हरखसों, डलियाँ सोहे हाथ।। फूलगेंद ले आये लालन, सखा न कोऊ साथ।।८।। खेलत गेंद परी इन बीचन, प्यारी लई उठाय।। लालन आय गेंद माँगत हैं, ललिता कह्यौ

समुझाय।।९।। अब तो गेंद न पैहौ लालन, चतुराई के मूल।। पूछत लाल सबै क्यों आईं, बनमें बीनत फूल।।१०।। कह्यौ लड़ैती साँझी धरिहैं, फूल सबै लै चीति।। लाल कह्यौ मोहि आछी आवै, देखौ मेरी रीति।।११।। सबन कह्यौ कैसें लै चलियें, एकन कह्यौ उपाय।। पेहेरावौ आभूषन सारी, करीयें सखी सजाय।।१२।। सबै हरख सिंगार किये मिल, चलीं आपने गेह।। नाम धर्यौ श्यामाजू इनको, तब बाँह परस्पर देह।।१३।। ललिता, चंद्रभागा, व्रजमंगल, मैना, नयना, रूप।। करूणा, मोहा, कुमुदा, रत्ना, लोभा, ललना अनूप।।१४।। रंभा, कृष्णा, दुर्गा, ध्याना, रूपा, हरखा नाम।। रंगा, हंसा, दामा, प्रेमा, ज्ञाना, जुहिला भाम।।१५।। चंपा, बहोला, सुमना, नीला, हीरा, मुक्ता प्यारी।। कुंजा, अमला, समला, विमला, चंद्रावली सुकुमारी।।१६।। तारा, कमला, अमला, यमुना, वृंदा, नंदा नारी।। अबला, शीला, सुखिया, प्रमुदा, नवला, सुमति बिहारी।।१७।। चतुरा, कामा, रसिका, श्यामा, राधा लै घर आँईं।। एक वेश एक रूप सबनकौ, देखत रही लुभाईं।।१८।। गावत आवत सब मन भावत, आरती कीरति साज।। पूछत कह्यौ लड़ैती यह को, जोरी भली विराज।।१९।। बीनत फूल यह मैं देखी, पूछी इनकी बात।। नंदगाम में बास बसत है, श्यामा नाम कहात।।२०।। इनमें एक बड़ो गुण मैया, जानत साँझी चीति।। मन हरखित कीरति तब बोली, खेलो सब मिलि प्रीति।।२१।। मुठिया वार आरती बारी, भीतर गई लिवाय।। भीति लीप चंदनसों छिरकी, साँझी धरत बनाय।।२२।। धूपदीप नैवेद्य धर्यौ पुनि, आरती करत सँवारि।। कीरति कह्यौ बियारू कीजै, भूखी हो सुकुमारी।।२३।। भोजनकर सब हाथ पखारे, बीरा रत्ना देत।। बीरा लै कह्यौ हम घर जैहैं, कीरति कह्यौ सुहेत।।२४।। श्यामा तुम जिन जाहु दूर घर, यहाँई सोवो रात।। औरनसों यो कह्यौ बेगिही, आवोगी उठ प्रात।।२५।। वे तब गईं रही है, श्यामा खेलत चोपर रंग।। जीत परस्पर होत दुहुनकी, राधा श्यामा संग।।२६।। एक सेज पौढ़े तब दोऊ, उठे प्रात अरसाय।। बेऊ सब आँईं तिहिं अवसर, निरख सबै मुसिकाय।।२७।। साँझी डलिया में धर लीनी, गावत चली सुभाय।। डलिया यमुनाजल पधराई, सबै न्हात सुख पाय।।२८।। लाल कह्यौ अब हम घर जैहैं, मैया जानत नाय।। यों कहि आवत जसुमति देखी, रूखे भये लजाय।।२९।। जसुमति पूछत रात कहाँ रहे, लालन कही बनाय।। दौरी गाय गयौ ता पाछें, गोवर्द्धन लियौ बुलाय।।३०।। आछे फल लै मोहि खवाये, सोय रह्यौ ता पास।। "द्वारकेश" प्रभुकी बतियाँ सुन, जसुमति आयौ हास।।३१।।

शयन में राग-केदारो तू गर्व गहेली उत्तर नाही देत।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

मान में राग-केदारो सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग तुम पोढ़ो हों सेज बनाऊं।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ७

श्रृंगार - पाग-गोलचन्द्रिका का।

वस्त्र - गुलाबी रूपहरी कोर के धोवती व पटका। श्रीमस्तक पर गुलाबी पाग व रूपहरी जरीके काम की गोलचन्द्रिका धराई गई है। आभरण नित्यानुसार हीरा माणक-मोती के तथा ठाडा वस्त्र बादली रंग के, पिछलाई गुलाबी रूपहरी कोर की तथा सांझी में जतीपुरा व गुलाल कुंड चितराया गया है।

मंगला में राग-बिलावल कौन दान दानी को।। करन लगे नई रीत अनोखे, दूध, दहींको, महीकों अजहु हम जानी को।।१।। करत हो विचित्र चाल सुबल तोक पें चखाय, काहुसों कहेत गाढ़ो जमायो काहुसों कहेत पानी को।। "नंददास" आसपास, लटक रही कनक बेलि, भ्रोहनकी अमेठन में सबही अरूझानी को।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल आज हम करी हे नंदजुकी कान।। बरज जसोदा या ढ़ोटाको, हम लूटी पहचान।।१।। बाट-घाट सखा संग लै, मारग रोकत आन।। "सूरदास" प्रभु झगरत ठाड़े, प्रीत पुरातन जान।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग दानघाटी छाक आई..(यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग देरी दे हमारो सुधे दान।। कहां जात हेरी कतराये, राख्यो चाहे मान।।१।। ढ़िंग आवे तो करों भलाई, ऐतो बुलाय करी सयान।। "रसिक" प्रीतम ग्वालन उर लाई, कीयों महारस पान।।२।।

भोग में राग-नट दान माँगत ही में आनि कछु कीयौ।। धाय लई मटुकिया आय कर सीसतें, रसिकवर नन्दसुत रंच दधि पीयौ।।१।। छूटि गयौ झगरौ हँसि मंद मुसिक्यान में, तबही कर कमलसों परसि मेरौ हीयौ।। "चत्रभुजदास" नयनसों नयन मिले, तबही गिरिराजधर चोरी चित लियौ।।२।।

संध्या में राग-पूर्वी ए तुम चले जाऊ ढोटा अपने मग, कित रोकत ब्रजबधून बाट।। कहत कहा सोई कहौ जू दूर भये, जिन परसो गोरसके माँट।।१।। दिन दिनकौ पेंडौरी माई, हम कैसेंकै आवै जाय इनसौं परी है आँट।। "गोविन्द" प्रभु तुमें डर न काहूकौं, ब्रजराज कुँवर वर जाय चरावो गोधन के ठाँट।।२।।

शयन में राग-कान्हरों कापर ढोटा नैन नचावत, हे कोऊ.(यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े।)

मान में राग-केदारों सकल ब्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

राग-बिहाग चांपत चरण मोहनलाल।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ८

श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी का उत्सव (१५८७)

श्रृंगार - मुकुट-काछनी का

वस्त्र - पीले मलमल की रूपहरी कोर की शुथन तथा काछनी, बड़ा पिताम्बर। श्रीमस्तक पर पाग पर हरा-सफेद काम का मुकुट, फूल की छड़ी तथा लहरदार लाल-सफेद मीना के वेणु वैत्र। ठाडा वस्त्र सफेद, पिछवाई निःकुंज की चित्राम की धराई गई है। सांझी में लीला चरण-पहाडी तथा भोजन-थाली चित्रित की गई है।

मंगला में राग-देवगंधार पिछोड़ी बाँहन देहो दान।। सूधे मन तुम लेहु गुसांई, राखि हमारो मान।।२।। मारग रोक रहत मन मोहन, सब गुन रूप निधान।। बदन मोरि मुसकाय भामिनि, नयन बान संधान।।२।। नंद राय के कुंवर लाडिले, सबके जीवन प्रान।। "परमानन्द" स्वामी नागर हो, तुमते कोन सुजान।।३।।

श्रृंगार में राग-टोड़ी कहोजु दान लैहों कैसे, हम तौ देव गोवर्धनपूजन आँई।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (छाक के पद) राग-सारंग दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर रावल की रावरे ने राखी सब घेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग देरी दे हमारो सुधे दान।। (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

भोग में राग-नट ऐ कौन प्रकृति तिहारी हो ललना, माई देखे सो कहा कहे, यहाँ ठाड़ों इत उत को।। सकल व्रज के बगर में, गायन के डगर में, घेरी घेरी राखि, हम कहा धरावत तुम्हारों, यह न्याव कितको।। दान दान करि राख्यो, झूठेई गाल मारत, एसें कैसे भरिबो री माई, इनसो नित नित को।। चलो री उलटि भवन जाय, दान के मिस लूटत, हम कहेगी जाय नन्द जू सों, पायो मतों "गोविन्द" प्रभु चित को।।२।।

संध्या में राग-अड़ानो आज नंद के नंदन सो ऐसेई बढ गई रार री।। (यह पूरा पद पेज २७ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन भैय्या हो घेरों घेरों वृजनारी.... (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

मान में राग-केदारो सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये पिय कुंवरकन्हाई।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ९

शृंगार - मुकुट काछनी का।

वस्त्र - केशरिया मलमल की रूपहरी कोर के शुथन तथा काछनी, बड़ा पिताम्बर। श्रीमस्तक पर केसरी पाग पर माणक जडा हुआ मुकुट। ठाडा वस्त्र सफेद, पिछवाई दानलीला की चित्राम की तथा सांझी में नंदगाम बरसाना चित्रित किया गया है।

आभरण - हीरा-माणक मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-देव गंघार मटुकिया आन उतार धरी।। (यह पूरा पद पेज २१ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बिलावल अरि ये है कोहेरी, याहे दान जो देत गोवर्धन के ग्वेड़े।। खेतनहार न गाम महैया, कान्हर डोलत ऐडे।।२।। बाप देत कर कस राजा को, पूत जगाती डोलत मेड़े।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरधर नीके जानति, चले जाहु किन पेड़े।।२।।

राजभोग आवता (छाक के पद) सारंग दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर रावल की रावरे ने राखी सब घेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग कृपा अवलोकन दान देरी महादान वृषभान कुमारी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े।)

भोग में राग-मालव/पूर्वी ए तुम चले जाऊ ढोटा अपने मग कित रोकत ब्रजबधून बाट।। (यह पूरा पद पेज ३० पर पढ़े।)

संध्या में राग-कल्याण कब को भयोरे ढोटा दधि दानी।। (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरों कापर ढोटा नैन नचावत, हे कोऊ तिहारे बाबाकी चेरी।। (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े।)

मान में राग-केदारों सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पियप्यारी कुंजमहल में पोढ़े।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण १०

शृंगार - फेंटा को।

वस्त्र - लाल सफेद लेहरिया रूपहरी कोर के धोरा के, कटि में शुथन-पटका। श्रीमस्तक पर फेंटा पर सुनहरी जरी के काम का कतरा, कलंगी। ठाड़ा वस्त्र बादली रंग के, पिछवाई लाल पीले लेहरिया की। आज सांझी में कोकिला वन की लीला चित्रायी गयी है।

मंगला में राग-विभास ऐसो को है जो छुवे मेरी मटुकी, अछुती देहड़ी जमी।। बिन मांगे दियो न जाय, केतेई करो उपाय, मेरे तो गोरस की कहां थौं कमी।।१।। और को दह्यो छिल छिलो लागत, में ओट जमायो भरके तमी।। "नंददास" प्रभु बडे ही खवैया, मेरे तो गोरस में बहुत अमी।।२।।

शृंगार में राग-बिलावल ले चलीरी गोरस बेचन को मिसकरी, छोटी सी मटुकी और मधुर चाल।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग दानघाटी छाक आई, गोकुल तें काँवर भर, रावल की रावरे ने राखी सब घेर।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग यमुना घाट रोकीहो रसिक चन्द्रावली।। हँसि मुसिक्याय कहति बृजसुन्दरी, छबीले छैल छांडो अंचली।।२।। दान निबेरि लैहों बृज सुन्दर, छांड़ौ अटपटी कित गहत अलकावली।। करसौ कर गहि हृदय सों लगाय लई, "गोविन्द" प्रभु सों तूं रास रंग मिलि।।२।।

भोग और संध्या में राग-गौरी सबमिल आई लाड़िली वृषभान नृपति के द्वार हो।। (यह पूरा पद पेज २८ पर पढ़े।)

शयन में राग-केदारो तू गर्व गहेली उत्तर नाही देत गुजरिया।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े)

मान में राग-केदारो राधिका आज आनंद में डोले।। सांवरे चंद गोविंद के रसभरी, दूसरी कोकिला मधुरस्वर बोलें।।१।। पहेरे तना नीलपट कनक हारावली, हाथलें आरसी रूपकों तोलें।। कहत "श्रीभट्ट" व्रजनारि नागर बनी, कृष्ण के सीलकी ग्रंथिका खोले।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहागरो पोढ़े प्रेम के पर्यंक।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

आश्विन कृष्ण ११

(आज महादान का उत्सव)

शृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - मलीयागिरी रंग का, रूपहरी कोरकी शुथन तथा कटि में कांछनी, मोटो पीताम्बर। श्रीमस्तक पर माणक जडेलो मुकुट, भारी श्रृंगार। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई दान लीला की चित्रामण की।

विशेष - आज श्रीजी गोपीवल्लभ भोग में महादान के मनोरथ में विभिन्न प्रकार की दूधघर, साकघर तथा बालभोग की सामग्री आरोगे तथा सांय सांझी में लालबाग चित्रित किया गया।

मंगला में राग-देवगंधार हमारों दान देहों गुजरेटी।। (यह पूरा पद पेज २३ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बिलावल तुम नंद महर के लाल मोहन जान दै।। (यह पूरा पद पेज २३ पर पढ़े।)

राग-बिलावल (गोपीवल्लभ भोग आवें तब गवाय) गोकुल की व्रजनार दह्यौ नित बेचन आवै।। भूषन विविध सिंगार बने अति परम सुहावै।। एक तें एक बिराज ही शोभा बरनी न जाय।। बन्यौ कुंज फूल्यौ सखी सो रँग रस धर्यौ बनाय।। कहत नंद लाड़िलौ।।१।। प्रा:त उठे नँदलाल सखा सब सैन बुलाये।। सुनी दानकी बात सबै आतुर उठि धाये।। पेंड़ौ रोक्यौ जायकै कालिंदी के तीर।। नवलकुंज सुखदायिका हो तहाँ ठाढ़े बलवीर।।कहत नंद. ।।२।। बनमें देखे श्याम सकल मिल भईं इक ठाँई।। लागी करन विचार अब कहा करिहैं माई।। यह मारग हम छाँड़िकै और ही मारग जाँय।। यहाँ तौ ढोटा नंदकौ सो छीन छीन दधि खाय।।कहत वृज नागरी।।३।। सुनिकें धाये ग्वाल रोककें ठाढ़ी कीनी।। कित जाओगी भाज दुहाई नँद की दीनी।। दान कृपाकर दीजियै छाँडौ अधिक सयान।। दान हमारौ लेहूँगो आली राखों तेरौ मान।।कहत नंद.।।४।। कब दीनौ हम दान कबै तुम भये जु दानी।। सुनी न कबहूँ बात जाय बूझौ नँदरानी।। उदर बसे तुम देवकी आये गोकुल भाज।। जीये झूँठौ खायकें अब क्यों नहिं आवै लाज।।कहत वृज.।।५।। जोबन कौ अति गर्व ग्वालि मुख बोल सँभारी। दूध दही के मद देत सुधेंई गारी।। नंददुहाई देत हों लेहुँ सबनकों लूट। भूषन बसन छिनायकें सो हार सबनके टूट।।कहत नंद.।।६।। लेत लूटकौ नाम कहा कोऊ तेरी चेरी। कब लीनौ तुम दान कबै दुहाई फेरी। शिर पर राजा कंस है बोलौ बचन बिचार। जो अबकें सुन पावही तौ

दुख पावै नँदनार।।कहत वृज.।।७।। तू तो ग्वालि गमार कहा मोकूँ समझावै।। शिव विरंचि
सनकादि निगम मेरौ अंत न पावै।। भक्तनकी रक्षा करूँ दुष्टन करूँ संहार।। कंस केश गहि
मारिहों सो धरनि उतारूँ भार।।कहत नंद.।।८।। बंधन पाये मात तबै क्यों न ऐसी कीनी।।
माथुरा छाँडी रात सेंन गोकुल में दीनी।। बहुत बड़ाई करत हौ सोचौ मनहिं बिचार।। खाये
आधे बेर के सो बनमें होत कुमार।।कहत वृज.।।९।। तप करती नँदनारि माँग मोपै बर
लीनौ।। बचन वेद वपु धार आय गोकुल सुख दीनौ।। तू कहा जाने बावरी हम त्रिभूवन पति
राय।। जीव जल थलमें बसुँ सो घट घट रह्यौ समाय।।कहत नंद.।।१०।। जो तुम ऐसे ब्रह्म
करत क्यों घरघर चौरी।। मैं पकरे जब आय लियौ पीतांबर छोरी।। तनक दहिके कारनें बाधें
यशोमति मात।। हम निज बंध छुड़ावहीं हो बोलत कहा इतरात।।कहत वृज.।।११।। नल
कुबरके हेत आपसुँ जाय बँधाये।। तरे तरूवर जाय बचन मुनि सत्य कराये।। मनमें सोचौ
राधिका चीर हरनकी बात।। नगन जमुनातें नीकसी हो आई हाहा खात।।कहत नंद.।।१२।।
ढीठ भये तुम कान्हा बचन बोलत जु कठोरे।। बनहि चरावौ गाय फिरौ ग्वालन संग दौरे।।
वे दिन बिसरे साँवरे छाक छीन छीन खात।। ऐंडे ऐंडे जात हो सो बोलत कहा इतरात।।कहत
वृज.।।१३।। अवनि असुर अति प्रबल मुनिजन कर्म छुड़ाये।। गौ संतनके हेत देह धरि गोकुल
आये।। जेते संग गुवाल हैं तेते हैं सब देव।। हमनें गर्व इंद्रको हर्यौ हो सो करत हमारी
सेव।।कहत नंद.।।१४।। बनमें बोलत बोल कहा अब मोहि सुनावै।। जानि तिहारी रीत कहा
बलवंत कहावै।। जौ ऐसे बलवंत हौ तो काटौ वसुदेव फंस।। छै बालक जब मारीयौ तब क्यौ
न मारयौ कंस।।कहत वृज.।।१५।। कंस केश गहि मारि वसुदेव बंद छुड़ाउँ।। उग्रसेनकों राज
दउँ शिर चँवर ढुराउँ।। भवन चतुर्दश गावही यह मेरौ परताप।। मल्ल कुवलिया मारहूँ हों
तोरूँगो गहि चाँप।।कहत नंद.।।१६।। कहा अधिकाई देत कान्ह हों नीकें जानों।। जात पात
कुल खोज कछु मोते नहीं छानो।। लरिकन के संग खायके नाम धरयौ है ग्वाल।। अब कैसे
दधि खाउगे सो हमतौ हैं व्रजबाल।।कहत वृज.।।१७।। दधि भाजन लउँ छीन कंठ मुक्ताफल
तोरूँ।। धरू पाणि पर पाणि गहि तनमनिया तोरूँ।। तुम बेटी वृषभानकी हम हैं नंदकुमार।।
जाके बल पै आई हौ तापै जाउ पुकार।।कहत नंद.।।१८।। हम तौ जात अहीर दह्यौ नित
बेचन आवें।। सुन्यौ न दधिकौ दान कहा अब नई चलावें।। तुम अनबींधे साँमरे रोकत हौ
बनमाँह।। या मुख ते दधि खाउगे सो बैठ कदँब की छाँह।।कहत वृज.।।१९।। ग्वाल नचावत
नैन बैन सुधे नहीं बोलौ।। हम अनबींधे नाहिं तुम अनबींधी डोलौ।। जबतें व्रजमें हों भयौ

तब तें लीनौ दान।। जाय कहों व्रजराज सों तैरौ दूर करै अभिमान।।कहत नंद.।।२०।। टेढ़ी बांधौ पाग कान्ह टेढ़े रहौ ठाढ़े।। रोकत हौ व्रजनार रावरे घरके बाढ़े।। जाकौ आसरौ पायकें भले बने हौ नाथ।। भाज सखा सब जाँयगे कोउ न आवै साथ।।कहत वृज.।।२१।। ऐसौ भूपति कौन जो हम पै हाथ उठावै।। बंदीजन द्विज वेद पढ़ैं द्वारे नीत गावै।। ब्रह्मरूप उत्पन्न करूँ रूद्ररूप संहार।। विष्णुरूप रक्षा करूँ सो मैं हूँ नंदकुमार।।कहत नंद.।।२२।। जो तुम ऐसे ब्रह्म हमारे छीकें ढूँढ़ौ।। घर घर माखन खाय कान्ह तिरिया सँग सूँढ़ौ।। तुम्हें दोष नहीं सामरे जाये कारी रात।। बनमें ब्रह्म कहात हौ तो क्यों तजे पिता और मात।।कहत वृज. ।।२३।।हों वृंदावन चंद रह्यौ सब माँझ समाई।। स्वर्ग मृत्यु पाताल सबे मेरी ठकुराई।। तू जो बदत है बावरी कहा है मेरौ नाम।। गज पिपीलिका आदि दै है सब मेरौ धाम।।कहत नंद. ।।२४।। दधि खैवे की बात माँग सूधें ही लीजै।। काहे कौ करत विवाद कान ऐसें नहीं कीजै।। जो ऐसे बलवंत हो तौ मथुरा काहे न जाऔ।। कंस मार घर आवही हो तब मेरौ दधि खाओ।।कहत वृज.।।२५।। सुन राधे नव नार जबै हम मथुरा जैहें।। करने हैं बहु काज फेरि नहीं गोकुल ऐहें।। कौतुक देख्यौ जो चहें तौ अबहीं दिखाऊँ तोहि।। अब कौ गयौ न आवहूँ सो फिर देखौ नहीं मोहि।।कहत नंद.।।२६।। काहेकों मथुरा जाऔ बचन ऐसे जिन बोलौ।। हम तुम रहें समीप सदा गोकुल में डोलौ।। दूध दही की को गिनें नित प्रति माँगौ दान।। तुम्हें लाज या बातकी सो हमें होत अभिमान।।कहत वृज.।।२७।। तुम अबला अज्ञान हमारे कृत्य न जानौ।। पठ्यौ काली देश कीयौ दावानल पानौ।। सुरपति व्रज पर कोपियौ गिरिवर लियौ उठाय।। बनही बकासुर मारियौ हो बालक बच्छ छुड़ाय।।कहत नंद.।।२८।। मुदित भईं व्रजनार दह्यौ लै आगें राख्यौ।। ग्वालन दीनों बाँट कछुक लै आपुन चाख्यौ।। प्रीति पुरातन जानिकें मिली वृषभान कुमार।। तन मन अरप्यौ श्यामकौं बस कीने गिरिधार।।कहत नंद. ।।२९।। तुम त्रिभुवनके नाथ करौ सोई जिय भावै।। तिहारे गुन अरू कर्म कछू हम कहत न आवै।। शेष सहस्त्र मुख गावहीं ध्यान धरत त्रिपुरार।। हम अहीर व्रजवासिनी क्यों कर पावें पार।।कहत वृज.।।३०।। श्रीराधाकृष्ण बिवाद परस्पर गाय सुनावै।। मनवांछित फल होय हृदै को ताप नसावै।। श्यामा श्याम बिराजहीं अवलोकन सुखरास।।यह बानिक मेरे बन बसो हो बलि बलि "कुंभनदास"।।कहत नंद.।।३१।।

राजभोग में राग-सारंग कृपा अवलोकन दान दैरी, महादानी वृषभान कुमारी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूरवी मोहे बोलवो न चालवो, बुलायवे न बोलवो, जसोदा जु तिहारे कान्ह, ऐसी गारी दीनी।। दधि पे लगायो दान, दिये बिन न देत जान, ऐसी अटपटी बात, तिहारे कान्ह कीनी।।१।। खोर मे मरोरी बाह, मटकी झटक लीनी, जानो कहा कीनी, माट इंडुरी नवीनी।।१।। अकथ कहानी बरजो न मानी, "ब्रजपती" रानी में तिहारी काँन कीनी।।२।।

संध्या में राग-हमीर (कल्याण) अरे तेरी याही में बन आई।। यह मारग तुम रोक रहते हो, छीन छीन दधि खाई।।२।। तुम जानत हो घेरी हमने, रही अपनी समुदाई।। "नंददास" प्रभु तनक छाछ पै, निकस जात ठकुराई।।२।।

शयन में राग-कान्हरों अहो व्रजराज राई, कौनें दान दीयों कोनें लीयौ।। यह मारग हम सदाँई आवत जात, अब कछु नई यै चाल चलाई।।२।। जो पैं न जान देई तो चलोरी उर्लाट घर, इनें तौ सबे फबी करत मन भाई।। "गोविन्द" प्रभु के नयनन सौं नयना मिले, चितैई चली कुँवरि मुसिक्याई।।२।।

मान में राग-केदारों सकल व्रजतियन में तुही जीतिरी।। (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

राग-बिहाग पोढ़े श्यामजु सुख सेज।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

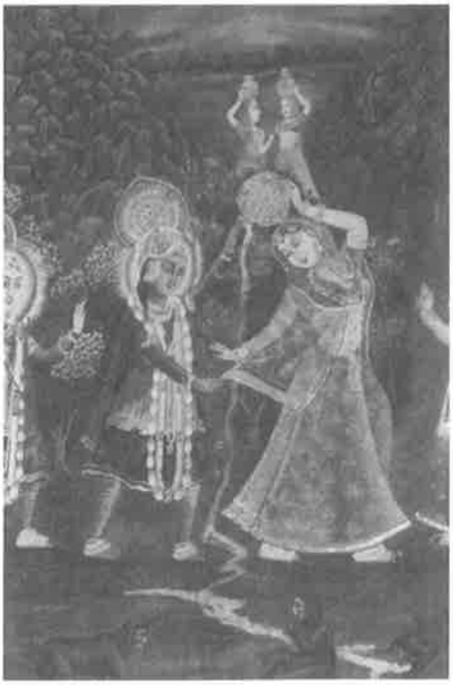

आश्विन कृष्ण १२

श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी का उत्सव। देहरी बन्दनमाल

श्रृंगार - कुल्हे जोड़ का।

वस्त्र - लाल सोनेरी कोर के कटि-पटको। श्रीमस्तक पर कुल्हे पर मोर पिछ की सादी जोड़ धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र पीला तथा पिछवाई बादली रंग की छापा वाली।

आभरण - नित्यानुसार हीरा पन्ना के धराये गये है।

विशेष - आज सांझी में शेषशाई व चीर हरण घाट चित्रित किया गया है।

मंगला में राग-देवगंघार मटुकिया मोहन मेरी दीजै।। जो कछु दधि चाखनकों चाहौ, तो रंचक पान कर कीजे।।१।। उनआये घन अटक भोरही, वनितन नौतन सारी भीजै।। रंग बहैगौ अवार मोहि व्है हे, कहा कहों जो घर कोउ खीजै।।२।। “चतुर्भुज” प्रभु हों काल्हि आइहौं, साँचीबात पतीजै।। गिरिधर लाल प्रगट भयौ तुम्हारो दान, आज अति हठ नहिं कीजे।।३।।

श्रृंगार में राग-टोडी कहोजु दान लैहों कैसे, हम तौ .... (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग छाक लेआई ग्वालिन गोरी।। यशुमति सब पकवान छाब भर, पठई टेरत भोरी।।१।। जबही आन अरोगत प्यारों, गोरस कनक कमोरी। “बृजा-धीश” प्रभु स्याम ढाकतर, भली बनी यह जोरी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग केसर की धोती पहेरे, केसरी उपरना ओढ़ै, तिलक मुद्रा धर बैठे, श्री लक्ष्मणभट धाम।। जन्मद्योंस जान जान, अद्भुत रूचि मान मान, नखशिख की शोभा ऊपर, वारों कोटिक काम ।।१।। सुन्दरताई निकाई, तेज प्रताप अतुलताई, आसपास युवती जन, करतहें गुणगान।। “पद्मनाभ” प्रभु विलोक, गिरिधर वर वागधीश, यह अवसर जे हुते, ते महा भाग्यवान।।२।।

भोग में राग-पूर्वि सखियन संग राधिका कुँवरि, ...(यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

संध्या में राग-कान्हरों कापर ढोटा नैन नचावत, हे... (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े।)

शयन में राग-केदारों गुजरिया तू गर्व गहेली उत्तर नाही देत (यह पूरा पद पेज १८ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग नवल किशोर नवल मृगनयनी, नवल नेह तेरों लाग रहयों री।। चल चलरी तोय स्याम बुलावत, काहे न करत तू मेरो कह्यों री।।१।। सुन राधे एक बात छबीली, आज माँग्यौ हरि तेरौं मह्यो री।। छिन छिन विलंब करत काहेकों, तेरौ विरह नहिं जात सह्यौ री।।२।। अधर बिम्ब राजत कर मुरली, राधे राधे ऐसौं नाम लह्यो री।। “आसकरन” प्रभु मोहन नागर, लेओ न प्रेम रस जात बह्यो री।।३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

गोस्वामी श्री गोपीनाथजी गोस्वामी श्री पुरूषोत्तमजी

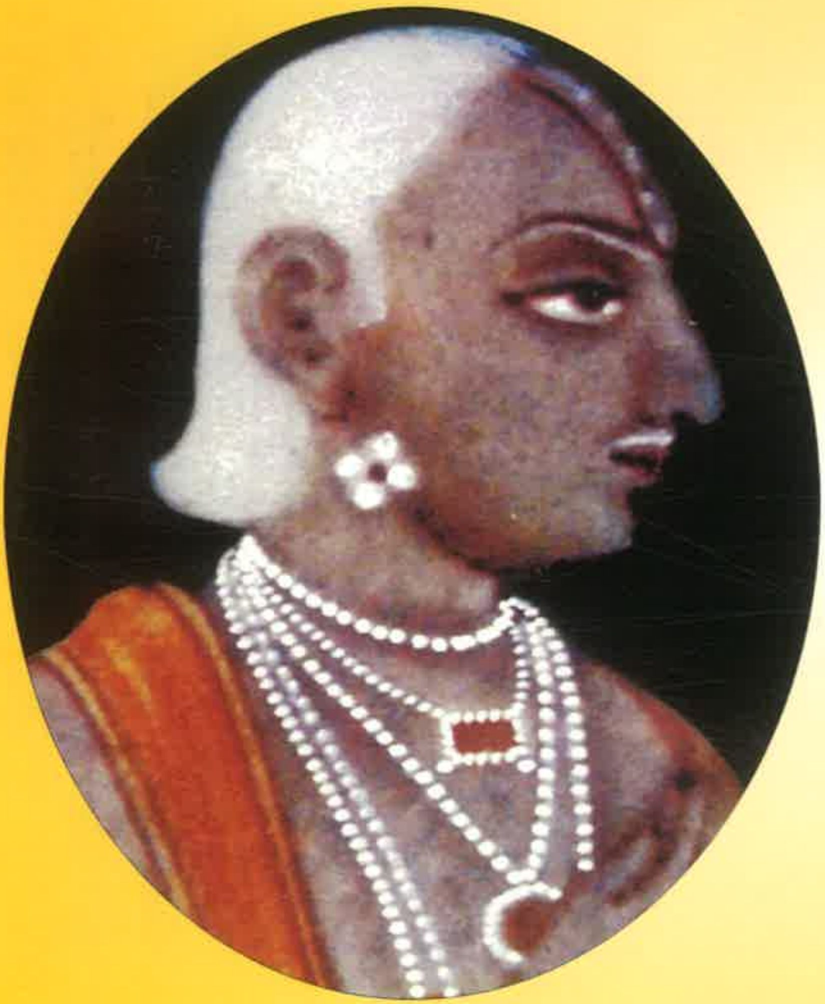

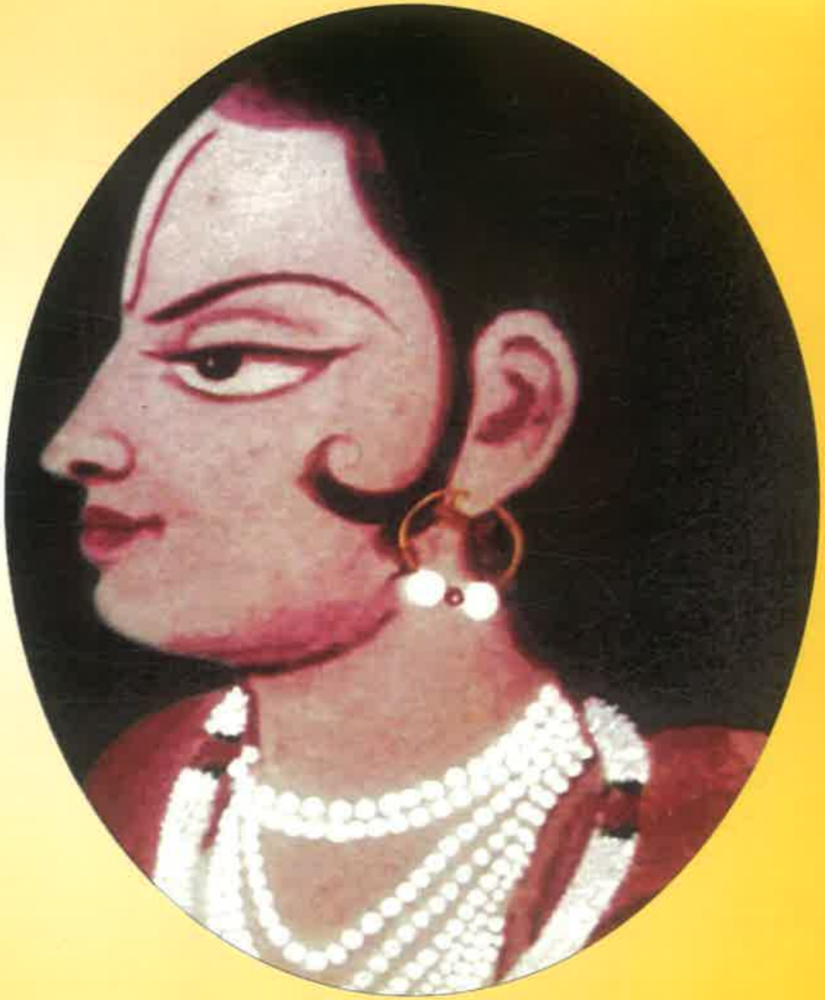

पं.भ. श्रीमती स्मिता बेन भुवनेश भाई शाह, उदयपुर का जय श्रीकृष्ण

श्री गुसाईंजी के तृतीय लालजी
श्री बालकृष्णजी (1606)

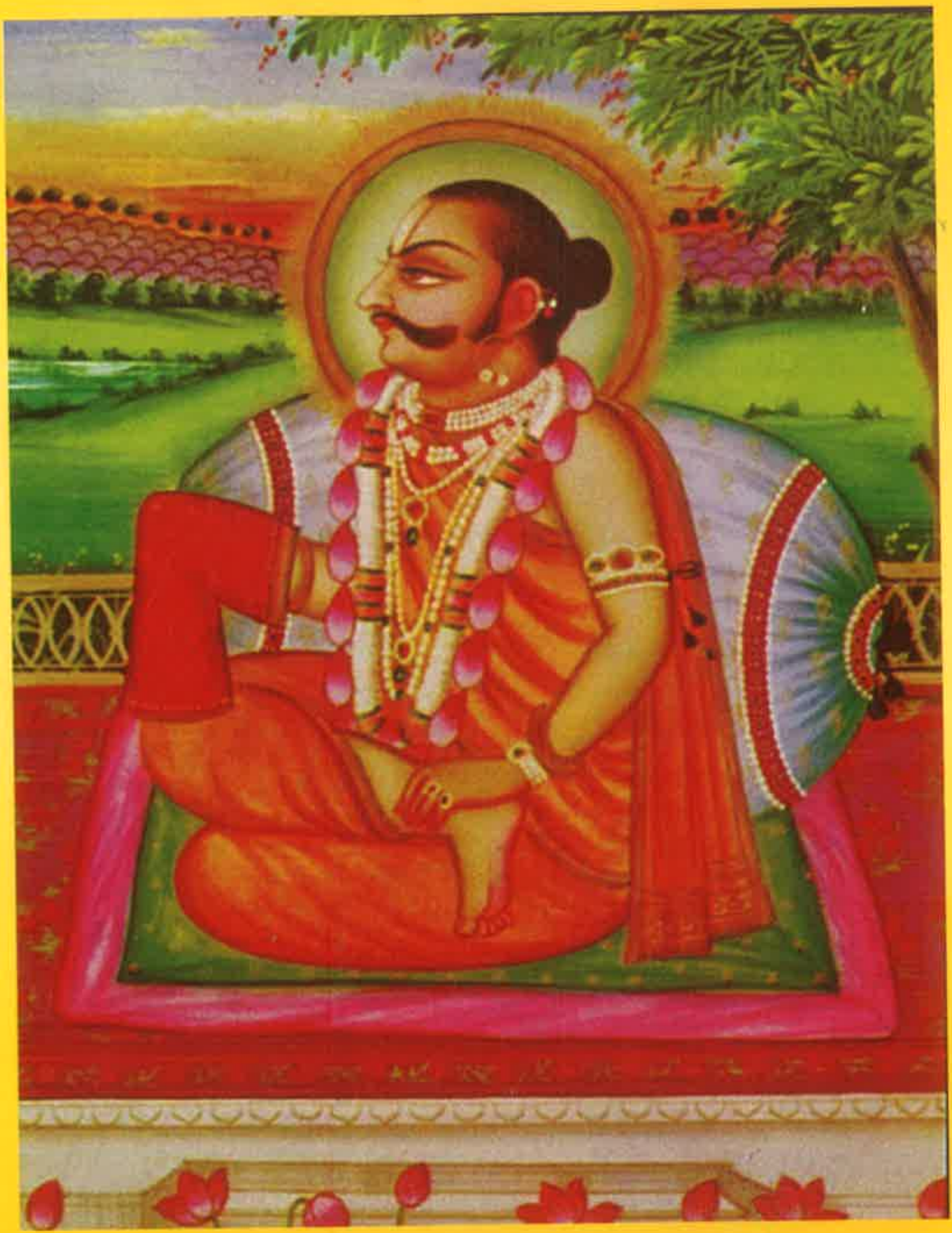

प.भ. श्रीमती कोकिला बेन एवं श्री रसिकलाल शाह, अहमदाबाद
का जय श्री कृष्ण

आश्विन कृष्ण १३

श्री बालकृष्ण जी का उत्सव

शृंगार - कुल्हे जोड़ का सुनहरी घेरा को।

वस्त्र - केसरिया रूपहरी कोर के, पिछोड़ों एवं कुल्हे तथा पर सुनहरी वादला को घेरा।

आभरण - भारी शृंगार किया गया है। ठाडा वस्त्र बादली रंग के पिछवाई केसरिया शाटन की जिसमें गाये दर्शायी है। सांझी में सेलु का झाड़, वृंदावन-बंसीवट तथा काली देह चितराया गया है।

मंगला में राग-देवगंधार हमारों दान देहों गुजरेटी ... (यह पूरा पद पेज २३ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बिलावल चले किन जाओं अपनी गेल।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग छाक लेआई ग्वालिन गोरी।। (यह पूरा पद पेज ३८ पर पढ़े।)

राजभोग में (बघाई) राग-सारंग विहरत सातों रूप धरें।। सदा प्रगट श्री वल्लभनंदन, द्विजकुल भक्ति वरे।।१।। श्रीगिरिधर राजाधिराज, व्रजराज उद्योत करें।। श्रीगोविंद इंदु जगकिरण, सींचत सुधा खरें।।२।। श्रीबालकृष्ण लोचन विशाल छबि, मन्मथ कोटि डरे।। गुण लावण्य अधिक करूणानिधि, गोकुलनाथ भरें।।३।। श्रीरघुपति, यदुपति, घनसांवल, मुनिजन शरण परे।। "छीतस्वामी' गिरिधरण श्रीविट्ठल, जिहिं भज अखिल तरें।।४।।

भोग में राग-नट ऐ कौन प्रकृति तिहारी हो ललना... (यह पूरा पद पेज ३१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-हमीर (श्याम कल्याण) अबही दान लेहूं या गोरस को, देखियत है जो मुख लेन को।। (यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

शयन भोग आवे तब राग-कान्हरौ (ब्यारू के पद) ब्यारू करत जननी पै मोहन राधे जू गोपीजन संग आई।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १० पर पढ़े)

दूध अरोगने का पद (कान्हरो) दूध दह्यों लूटत.. (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

शयन में राग-कान्हरों कापर ढोटा नैन नचावत.... (यह पूरा पद पेज २० पर पढ़े।)

मान में राग-बिराग नवल किशोर नवल मृगनयनी... (यह पूरा पद पेज ३८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहोग पियप्यारी कुंजमहल में पोढ़े।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

आश्विन कृष्ण १४

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - पंचरंगी लेहरिया का सुनहरी कोरका पिछोरा। श्रीमस्तक पर पाग पर रूपहरी जरी के काम का दोहरा कतरा।

आभरण - फिरोजा, मोती के लुमक रूपहरी धराया गया है। फुल छड़ी व वेणु धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र श्याम तथ पिछवाई चित्राम की वनयात्रा की। सांझी में श्री दाऊजी व श्रीमदगोकुल दर्शाया गया है।

मंगला में राग-ललित यह ब्रज दान दान करि राख्यो।। कबके दान कहां के दानी, दधि मिल सर्वस चाख्यो।।१।। लेहोगे कहां देन ब्रजबधु को, सब सो सयाने सुजान।। "नंददास" प्रभु रसिक सिरोमनी, ईन बातन नहीं कान।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल ले चलीरी गोरस बेचन... (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (छाक के पद) राग-सारंग कान्ह केसो माँगत दान दूध दही को यह न सुन्यो कबहु कान।। (यह पूरा पद पेज १४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग यमुना घाट रोकीहो... (यह पूरा पद पेज ३३ पर पढ़े।)

भोग (सांझी का पद) राग-गौरी बंशीवारे सांवरें नेक, मारग मोही बताव रे।। संग न सहेली फिरों अकेली, कित नंदीसुर गांव रे।।२।। भूली परी संकेत सघन वन, हो अबला कित जाऊँ।। मृगनयनी के वचन सुनत ही, आय मिले तिहिं ढाऊँ।।२।। मारग मिले अंक भरि भेटे, भलों बन्यौ हे दाऊ।। कहि "भगवान हित राम राय" प्रभु, राधारमन जाकौ नाऊ।।३।।

संध्या में राग-गौरी श्याम सनेही गाईये, तातें वृन्दावन रज पाईये हों।।ध्रु.।। राधा जिनकी भामती, कुंजन कुंजन केलि।। तरू तमाल ढिंग अरूझी, मानो लसत कनक की बेलि।।१।। महामोहनी मन हर्यो, रस बस कीने लाल।। कुच कलशन पर मन मिल्यो, लट बांध्यो मेन मराल।।२।। नैन-सैन दे तन बेंध्यो, मन बेंध्यो कल गान।। अंजन फंदन कुंवर कुरंगन, चलें दोऊ भ्रौंह कमान।।३।। नकबेसर बड़सी लगी, चित्त चंचल मन मीन।। अधर सुधा दे बेंधियौ चकृत किये आधीन।।४।। अंग-अंग रस रंग में, मगन भये हरि नाह।। "व्यास स्वामिनी" सुख दियौ, पिय संग में सिन्धु प्रवाह।।५।।

शयन में राग-ईमन भैय्या हो घेरों घेरों वृजनारी.. (यह पूरा पद पेज १५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग तुम पोढ़ो हों सेज बनाऊं।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

आश्विन कृष्ण ३०

(अमावस्या)

श्रृंगार - मुकुट-काछनी का।

वस्त्र - रूपहरी कोर की श्याम चुन्दड़ी का शुथन तथा काछनी, बड़ा पटका, श्रीमस्तक पर हीरा जड़ा हुवा मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद व पिछवाई श्याम सुनहरी छापा की। आज रंगबिरंगा कोट बनाया गया है। कोट की आरती की गई।

मंगला में राग-बिलावल गढ़तें ग्वालिनि ऊतरी शीश महीकौ माँट।। (यह पूरा पद पेज १७ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल तुम नंदमेहर के लाल मोहन जान दै।। (यह पूरा पद पेज २३ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (छाक के पद) राग-सारंग आज दधि मीठो मदन गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग कृपा अवलोकन दान देरी, महादानी वृषभान कुमारी।। (यह पूरा पद पेज २५ पर पढ़े।)

राज भोग में राग-सारंग दान निवेरि लाल घर आये।। आरती करत नन्दजूकी रानी, और हँसि हँसि मंगल गीत गवाये।।१।। ऐसे वचन सुने मैं श्रवणन, बड़े महरी के पूत कहाये।। फिरि फिरि राय बात हंसि बूझत, हमकों कहो कहा तुम लाये।।२।। लाऊँ कहा सुनों किन मोपै, छीन छीन सबने दधि खाये।। "श्रीविट्ठल गिरिधरन" लालने, बातन ही दोऊ बौराये।।३।।

भोग तथा संध्या में राग-गौरी (सांझी का एक ही पद) श्रीवृषभान लड़ेती गाईयें, कीरति कुल मंडनबाल हो।। सोनेकीसी बेलिहो, प्यारी चंपेकीसी माल हो।।१।। हंसगमनी मृगलोचनी, शोभित सहज सिंगार।। चमकत चंचल चीकने, सिर सटकारे बार।२।। घूँघरवारे बारन ऊपर, शोभित सुंदर साल।। चंदके फंद परे अहिनंदन, उरझे कंचन जाल।।३।। अतलसकौ लहेंगा कटि गाढ़ौ, दरियाई की अँगिया पीत।। उरज सुभट कंचन कवच, सजि आये रति रणजीत।।४।। कृश कटि केहरि देखि दुरै, हरि जेहर तेहर पाय।। गजगमनी, कमनी, अवनी, रवनी रति लेत बलाय।।५।। कर चूरौ ललकै झलकै, पलकै न लगै छबि

देख।। अँगुरिन मुँदरी पोंहौंची, गजरा बाजूबंद विशेख।।६।। चंपकली चौकी चमकै, दमकै दुलरी पिय पोति।। चितकों लेत चुराय चाहिकें, बदन-चंद की जोति।।७।। अरूण अधर दमकत दशनावलि, श्याम चपलता सार।। कमलकोश में बैठी पंगति, मानो भृंगकुमार।।८।। बेसर को मोती लटकै, मटके खटके प्रिय प्रान।। श्रवन बनी रूचि मनी, कनक की तनक तरकुली कान।।९।। पियदृग मोचन रतिरस रोचन, चंचल लोचन नार।। कुँवर किशोर चकोर चेंहैं, टुबा पढ़त चंद चटसार।।१०।। अलिकुल गुंजन रतिरस रंजन, नयन्न अंजन दीन।। क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ, मानो मनसिज के मीन।।११।। समर सहायक नवरस नायक, सायक घायक नयन।। कुँवर कुरंग सुरंग कमल, कानन सों ठानत ठैन।।१२।। कारी झपकारी भारी, बरूनी बरनें कवि कौन।। भ्रोंहें सुठि सोहें मोहैं, मानो हावभाव के भौन।।१३।। शुभ बिरियाँ दुपेहरियां के, फूलन की बेंदी दीनी भाल।। इंद्रबधू मानों नवलचंद कों, आय मिली ततकाल।।१४।। शीश फूल सोहै मोहै, बनी तनक कनककी आड़।। चिबुक चारू मुसिकाय, हँसत जब परत कपोलन गाड़।।१५।। यह विधि छबि अगाधा साधा, राधाजू सखियन माँझ।। बिटियाँ बहुत जो गोपनकी संग, खेलत सांझी सांझ।।१६।। गोधूलि की बिरियाँ डलियाँ, फूलन की लै चलीं हाथ।। बीनत फूलन यमुना कूलन, श्यामाजू के साथ।।१७।। एक लिये ओली चोली पर, चाँप चिबुकतर चीर।। फूलन तोरत तनहिं मरोरत, जहाँ भ्रमरन की भीर।।१८।। एकन लै लावन्य ललित, पटकी अटकी कटि छीन।। रमक झमक पल्लव नवाय, चढ़ बीनत फूल प्रवीन।।१९।। कुंदी कुंद करन कोमल, निरवारत बाला बेलि।। ललित लवंग लता बनिता, पर रहे झूमका झेलि।।२०।। जाई, जुही, केतकी, निवारी, चमेली, रायबेल।। फूलन की कर गेंदुक, बाला बनमें खेलत खेल।।२१।। बौरसरी के फूलन की, नकफुली बनावत एक।। श्यामा अभिरामा सुख धामा, खेलत खेल अनेक।।२२।। तिहिं छिन कुंजबिहारीजू, दुरि देखत कुंजन ओट।। रहे हैं चित्र कैसेजु चितेरे, लगी दृगन की चोट।।२३।। कियौ सखीको रूप लालने, भर गुलाबदल गोद।। त्रियारूप धर दरशन दीनों, मनमें मानत मोद।।२४।। निरखि निरखि वृषभान नंदिनी, बोली बचन रसाल।। सब सिंगार सोहै मोहै, तू को हैरी नवबाल।२५।। तू क्यों फिरत अकेली हेली, यह बन यमुना कूल।। नंदगाम घर सांझी कौ, हम बीनन आईं फूल।।२६।। उत्कंठित वृषभान नंदिनी, कंठ भुजा उर मेल।। आज अवार भई साँझीकों, तू संग हमारे खेल।।२७।। सखी लईं सब बोल बोल, गौ रंभन धुनि सुनि कान।। बड़ी बार घर जैहैं तो, खीजैं बाबा वृषभान।।२८।। चंदा, चंद्रभगा, चंद्रावलि, चंचलनयनी चली धाम।। बहुत फूल बीनै हैं भटू री, पूजै मनके काम।।२९।। कमल फिरावत गीत जो गावत, आवत घर

व्रजबाल।। फूलनकी कर गेंद लकुटिया, फूलनकी उरमाल।।३०।। माय धाय उर लाय लई, कीरतिजू परम प्रवीन।। अरग बढ़ाय लई घर भीतर, आप आरती कीन।।३१।। मृगमद, चंदन, केसरसों, श्यामाजू लीपी भींत।। कामधेनु के गोबरसों रचि, साँझी फूलन चीति।।३२।। धूप दीप धरि भोग अमृतरस, आप आरती उतारि।। गावत गीत पुनीत किशोरी, श्रीवृषभानकुमारि।।३३।। कर ब्यारू सब संग खेलि, चली अपने अपने धाम।। श्यामाजू और नवल सखी सुख, लूट्यौ चार्यौ जाम।।३४।। त्रिय बागौ ललिता हिं दीयौ, श्यामा पति सुघर सुजान।। रसिकरूप धर केलि करी, सुखसागर प्रानन प्रान।।३५।। शरद निशा सुख यह विधि, राधा माधौजू नित्य बिहार।। शोभा पर बल जाय "श्यामघन", अवलोकत सुखसार।।३६।।

कोट की आरती के पद राग-जंगलों एरी सखी सांमरी हो, अकेली या वन कहां ते आई।। तरून तरून तेरो तन प्यारी, श्री राधे के मन भाई।।१।। नंदगाव की सांमरी हो, श्यामा मेरो नाम।। सांझी खेल कुशल सुन राधे, दरशन ही को काम।।२।। जब ललिता जु भुज भर लईं अपुने, श्रीराधासों भेटाई।। नये नेह सों मिलत परस्पर, बरसाने ले आई।।३।। कीरत जु आदर कर लिनी, सोय रहो तुम यहांई।। स्यामा भामा सबे मिलिके, फूलन डलियां लाई।।४।। सांझी भरत धरत बहु मेवा, बीरा विधिसों खवाई।। "पुरूषोत्तम" सखी तन मन वारत, सुख लुटत सुखदाई।।५।।

राग-जंगलों हो राधे, फूलन मत ले।। तुँ तो मेरी मदन सुखदा, कुंज फूलन मत ले। नित्य नित्य कलियां बीन जात हो, अब वश परी हैं तुं मेरी।।१।। चीर हरे सो भुल जात हो, यह जमुना के तीरे।। "नागरिया" पिय प्यारी दोऊ मील, बिहरत कुंज कुटिरे।।२।।

शयन भोग आवता (ब्यारू) राग-कान्हरौं मोहनलाल बियारू किजे।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १० पर पढ़े)

दूध का पद राग-कान्हरो दूध पियो मनमोहन प्यारे।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

शयन में राग-अड़ानों आज नंद के नंदन सो, ऐसेई बढ गई रार री।। (यह पूरा पद पेज २७ पर पढ़े।)

मान में राग-सारंग जमुना घाट रोकी हो रसीक चन्द्रावली।। हँसि मुसिक्याय कहती व्रजसुन्दरी, छबीले छैल छाँड़ों अंचली।।१।। दान निवेरी लैहों व्रजसुन्दर छाँडौ अटपटी, कित गहत अलकावलि।। करसों कर गहि हृदयसों लगाय लई, "गोविंद" प्रभुसों तू रासरंग मिलि।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल १

नवरात्री प्रारंभ (देहरी वंदनमाल, अभ्यंग)

शृंगार - कुल्हे जोड़ का।

वस्त्र - चाकदार खुले बंद का लाल सुनहरी छापा के एवं सूथन पीला छापा की। श्रीमस्तक पर लाल कुल्हे, ठाडी लड़ मोती की, गोटी तीन पन्ना की, पान हीरा का जोड़ एवं पांच मोर पिछ की चंद्रीका सीरपेच शीश फूल हीरा पन्ना माणक मोती के।

आभरण - जडाऊ कुण्डल हीरा के वेणी, श्याम हीरा मोती की। श्री मुखार विंद पर माणक का तिलक, माणक के अलंकार कमलाक्ष, नकवेसर माणक मोती की चिबुक हीरा का, श्री अंग में हीरा की हांस, माणक पन्ना मोती के हार मिलमा, गुंजा माला फूलमाला नखावली मुद्रिका हीरा की। हस्तपान पोंची बाजु सब हीरा पन्ना के। श्री चरण में नखावली पगपान अनवट बिछिया पायल जेहरी सब हीरा के जड़ाऊ नुपुर सोना के। वेणु वेत्र हीरा जड़े हुऐ। हीरा का जडाऊ चोखटा पिछवाई लाल सोनेरी छापा की हरा हांसिया की।

मंगला में राग-परज जान्यौ जन्यौ री सयान, तें प्राणेश्वर सों कियौ मान, भयौ है विहान।।१।। पिया कों तेरों ई ध्यान, मेरी सीख सुन लै री कान, जामें बसे प्रान, तासों कैसौ मान।।२।। सुन मुरली कौ गान, आछी मीठी नीकी तान, संकेत स्थल रच्यों तोही कों कुसुम वितान।।३।। "सूरदास" प्रभु सुजान, सकल सिरोमणि मान, मदन-मोहन तेरें री, सुख कौ निधान।।४।।

अभ्यंग स्नान के समय राग-देवगंधार कर मोदक माखन-मिश्री ले, कुंवर के संग डोलत नंदरानी।। मिसकर पकर न्हवायो चाहत, बोलत मधुरी बानी।।१।। कनकपटा आंगनमें राख्यो, सीत उष्ण धर्यो पानी।। कनक कटोरा सोंधो उबटना, चंदनकांकसी आनी।।२।। यों लाई मंजन हित जननी, चित चतुराई ठानी।। मनमें मतो करत उठ भाजें, दुखित केस अरूझानी।।३।। निरख नयन भर देखत रानी, शोभा कहत न बानी।। गात सचिक्कण यों राजत है, ज्यों घन तड़ित लपटानी।।४।। आवो मन मोहन मेरे ढिंग, बात कहुं ईक छानी।। खिलोना एक तात जो लाये, बल अजहू नहिं जानी।।५।। राजकुंवर अधन्हातों भाज्यो, ताकी कहुं कहानी।। बेनी बाढ़ी रहि तनकसी, दुलहनी देख हंसानी।।६।। बैठे आय ब्याह पटपहरे, आनंद मनमें आनी।।"विष्णुदास" गिरिधरन सयाने, मात कहीं सोई मानी।।७।।

शृंगार में राग-बिलावल नव निकुंज देवी राधिके वरदायिनी, देवप्रिये वृंदावन वृंद वासिनी।। करत लाल आराधन, साधन कर मन प्रतीत, नामावलि मंत्र जपत, जय विलसिनी।।१।। प्रेम पुलकि भावति, गावत अति आनंद भर, नाचत रूप छबि देख, मंद हासिनी।। अंगन पट भूषन पहेराय, आरसी दिखाय, तौरत तृण लै बलाय, सुख निवासिनी ।।२।। कर जोरे चरण गहे, अमृत चारू वचनावली, विनती सुनौ दास की, दुखरासी नासिनी।। प्रतिपालौ करूणा मई, मौसु जीवन मानई प्राणदान देहो, वदत "व्यासदासिनी"।।२।।

राग-सारंग (छाक के पद) हरिकों टेरत फिरत गुवारी।। (यह पूरा पद पेज २१ पर पढ़े।)

राग-सारंग हरिजूको ग्वालिन भोजन लाई।। वृंदा विपिन विशद यमुना तट, सुन ज्योंनार बनाई।।१।। सानसान दधि भात लियो है, सुखद सखन के हेत।। मध्य गोपाल मंडली मोहन, छाक विहंसी मुखदेत।।२।। देवलोक देखत सब कौतुक, बालकेली अनुरागे।। गावत सुनत सुखद अतिमानो, "सूर" दुरत दुःख भाजे।।३।।

राग-सारंग आगे आउरी छकहारी।। जब तुम टेरे तब मैं बोली, सुनी न टेर तिहारी।।१।। मैया छाक सवारे पठई, तूं कित रही अवारी।। अहो गोपाल गैल हों भूलि, मधुरे बोलन पर वारी।।२।। गोवर्धन-उद्धरण धीर सों, प्रीति बढ़ी अति भारी।। "जनभगवान" मग्न भई ग्वालिनी, तनकी दशा विसारी।।३।।

राग-सारंग बांट बांट सबहिन को देत।। (यह पूरा पद पेज २२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग बल बल आजुकी बानक लाल।। कसुंभी पाग पीत कुलह, भरित कुसुम गुलाल।।१।। विश्वमोहन नवकेशर को, तिलक ललित भाल।। सुन्दर मुख कमलही, लपटावत मधुप जाल।।२।। बरूनी पीत विथुरित, बंद सुभग उर विसाल।। "गोविंद" प्रभु के पदनख परसत, तरून तुलसी माल।।३।।

भोग में राग-पूर्वी / कान्हरौ आज बनेरी लालन गोवर्धन धर।। रतन जटित छाजे पर बैठे वृंदारन्य पुरन्दर।।१।। ग्रथित कुसुम अलकावलि अति छबि, ध्वनित मधुप अवतंसन पर।। लटक लटक जात श्रीदामा अंक मध्य, हँस मिलवत करसों कर।।२।। मणिकौस्तुभ हृदय पदक विराजत, कंठ बनी गजमोतिन की लर।। "गोविंद" प्रभु जो सकल व्रज मोहयौ, अंग-अंग ललन सुन्दरबर।।३।।

संध्या में राग-ईमन पूजन चलौ हों कदम वनदेवी, आऔ हमारे कोऊ संग।। पूजवत सकल धोख की कामना, बली न काहु की कछु लेवी।।१।। भाव भक्ति सबहिन की मानत, शीतल सुबह सरस सुर सेवी।। "गोविन्द" प्रभू सो कहत वृषभान नंदनि सुनाय सुनाय कछुक बात औरेंबी।।

शयन में राग-कान्हरौ राखी हों अलक बीच चंपकली गनगनी।। जगमगात हीरा लाल कुलह पर पाग अति बनी।।१।। सुभग नैन तरून मदमाते मुसकाते आननी।। "गोविन्द" प्रभु व्रजराज कुंवर धन धन हो धन धनी।।२।।

पोढ़वा में राग-केदारों राय गिरीधरन संग राधिका रानी।। निविड़ नवकुंज नवकंज शय्यारची, नवरंग पियसंग बोलत पिकबानी।।१।। नीलसारी लालकंचुकी गौर तन, माँग मोतिन खचित सुन्दर सुठानी।। अर्धघूंघट ललन वदन निरखत, रसिक दंपति परस्पर प्रेम हृदय-सानी।।२।। लाल तनसुख पाग ढरक भ्रूपर रही, कुल्हें चंपकभरी सेहरो सुवानी। पांणि सों पांणि गहि उरसों लावत ललन, "गोविंद" प्रभू" व्रजनृपति सुरत सुखदानी।।३।।

आश्विन शुक्ल २

शृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - पीलाछापा के सुनहरी कोरके चाकदार खुलाबंद, धोती लाल छापा की। पटका लाल सुनहरी कोर का। श्रीमस्तक पर लाल दुमाला तथा हीरा जड़ित सेहरो। ठाड़ा वस्त्र-बादली रंग के पिछवाई चित्राम की लग्नमंडप की, भारी शृंगार हीरा पन्ना मोती के।

मंगला में राग-भैरव ये बंसी नाद सुर साधिकें बजाई प्रवीन कान।। घरी घरी घूमत सुध न रही कछु, कल न परै मेरे तन मन।।१।। ब्याकुल भई कल नांहि परत, सुनत तत छिन गई हों मधुवन।। "धीरज" के प्रभु जनम सुफल भई, निरखत श्री नंदनंदन।।२।।

शृंगार में राग-बिलावल (चोखड़ा) ललिताजी के आज बधायो श्रीवृन्दावन ब्याह रचायो।। आली सब न्योंत बुलाईं।। वे मंगलनिधि न्योतो लाईं।।टेक।। मंगल न्योतो लाईं सखियन मंडली अद्‌भुत रची।। बांधी वंदनवार चहूंदिश मध्य निधि वेदी सची।। संकेत देवी पूज ललिता हरख अति आनंद भरी।। मेरी नवल राधा दुलहनी कुंवर मिले दूल्हे हरी।।१।। देवी बहु भांत पुजाई।।सो बिधना बिध आन मिलाई।। जो राधे जिन हरी आराधे।। आज लई लग्न अनूपम साधे।।टेक।। सोई लग्न परम अनूप साधे हरख मंगल गाईयो।। महा मंगलरूप अद्‌भुत भांत मंडप छाईयो।। मेरी उबट राधा दूलहनी जब श्यामकें उबटन कियो।। स्नानकर शिर गूंथ मोरी मुकुट मोहनके दियो।।२।। करसों कर जोर फिराई।। भाँवर देकें ढिंग बेठाई।। हँसकर दईहे बधाई।। ललिता फूली अंग न समाई।।टेक।। फुलीजो अंग न समाय ललिता रंगकेवल भररही।। आज भाग्य सुहाग की कछु जात नहीं मोपें कही।। धन्यधन्य दिन यह रात धन्यधन्य यह पल शुभ घरी।। धन्यधन्य नवल किशोर दुल्हे दुलहनी राधा वरी।।३।। यह दूलह निपट सयानो।। या दुलहनकें रूप लुभ्यानो।। आली छिन छिन विलंव न कीजे।। अंचल जोरनो करलीजे।।टेक।। अंचल जोरनो कर दीयो सखियन विचार गोने को कियो।। कर दिये कुंज प्रवेश दोउ धन्य ललिताको हियो।। जहां नवल सखी अनेक छबिपर वारनें बलबल गई।। या ब्याह की रसरीत सखियन जात नहीं मोपें कही।।४।।

राजभोग आवे तब राग-सारंग श्री वृषभान सदन भोजन को, नन्दादिक सब आये हो।। तिनके चरणकमल धरिवेकों, पट पांवडे बिछाये हो।।१।। राम कृष्ण दोउ वीर बिराजत, गौरश्याम दोउ चंदा हों।। तिनके रूप कहत नहि आवे, मुनिजन के मन फंदा हो।।२।। चंदन

घस मृगमद मिलायकें भोजन भवन लिपाए।। बिविध सुगंध कपूर आदि दे रचना चोक पुराए।।३।। मानो छायो कमल कोमल दल शीतल छांय सुहाई।। आसपास परदा फूलन के मालाजाल गुहाई।।४।। शीतल जल कुमकुम के जलसों सबके चरण पखारे।। कर बिनती करजोर सबन सों कनकपटा बेठारे।।५।। राजत सब गोप भूपति संग विमल वेष अहीरा।। मानो समाज राज हंसन को जुरे सरोवर तीरा हो।।६।। धरे अनेकन कनट कटोरा और कंचनकी थारी।। ढिंग ढिंग धरी सबनके सुंदर शीतल जलभर झारी।।७।। गावन लागी गीत ब्याहके सुकुमारी व्रजनारी।। अति हुलास परिहास परस्पर यह सुख शोभाभारी।। परोसन लागे पुरोहित हितसों जिनकी वदन बडाई।। तिनके दरश परस संभाषण मानों सुर सरिता आई।।८।। ओदन की उज्वलता मानों सहेज रूप धर आये।। यह हित प्रीति प्रीतम जन हितसों प्रकटहि आप जनाये।।१०।। बरीबरा अरू बरन बिजोरा पापर पीत बनाए।। कनक वरण बेसन बहुतेरे प्रकार न जात गिनाए।।११।। आमल बेल आंब अदरख रस नीबू मिले संधाने।। सद सीरा और सुरभी घृतसों सौरभ घ्राण बखाने।।१२।। बासोंदी शिखरन और खोवा अमृत रसना तोषे।। आमल रस कटुक तीक्ष्णरस लोंन मधुर रस पोषे।।१३।। कंदमूल फल फूल पत्र जो व्यंजन सबे प्रकारा।। येहें मानों प्रकट भूतलमें अमृत के अवतारा।।१४।। और बहुत बिध षड़रस व्यंजन परोसन वारे हारे।। यद्यपि होय शारदाकी मति तदपि न जात संभारे।।१५।। शीतल सुगंध चारू सुकोमल विविध भांत पकवान।। तेउ प्रकार परे नहीं कबहुं सुरपतिहू के कान ।।१६।। कर आचमन उठे सब व्रजजन मनमें अति सुख पाये।। पट भूषण बीरा सोंधेसों पूज सदन पधराये।।१७।। यह सूख संपति यह रस शोभा कापें जात बखांनें।। जूठन जाय उठाय “गदाधर” भाग्य आपने माने।।१८।।

राजभोग में राग-सारंग दिन दुल्हे मेरों कुंवर कन्हैया।। नित उठ सखा सिंगार बनावे, नित ही आरती उतारत मैया।।१।। नित उठ आंगन चंदन लिपावें, नित ही वंदन वार बंधैयां।।२।। नित उठ ब्याह गीत मंगल ध्वनि, नित सुर नर मुनि वैद पढ़ैया।। नित नित आनंद होत मंगल वारि निधि, नित ही “गदाधर’ लेत बलैया।।३।।

भोग में राग-नट तू बनरा रे बनि-बनि आया मो मन भाया सुख उपजाया।। अति उतंग नीली घोड़ी चढ़ि, धरि सिर सेहरा अति सुंदर, अंग सुगन्ध लगाया।।१।। अपने संग सकल जन सोहैं, तिलक ललाट बनाया।। “रसिक” प्रीतम बलिहारी तेरी, उठि के अंग लगाया।।२।।

संध्या में राग-गौरी राधा प्यारी दुलहन जु को, दुल्हा देखोरी वृज लटकत।। ग्वालन संग गावत ऊंचे स्वर, श्रवन सुनत मन अटकत।।१।। प्यारो लाल देखत ही समात हिये में, अँखियनहुं नहीं खटकत।। प्रभु “कल्याण” गिरिधरजुकी माधुरी, देख समर सरन तकि सटकत।।२।।

शयन भोग आवे तब राग-कान्हरौं राधा मोहन दोऊ करत ब्यारू।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १० पर पढ़े)

शयन में राग-बिहाग युगलवर आवत है गठजोरें।। संग सोभित वृषभान नंदिनी, ललितादिक तृन तोरे।।१।। सीस सेहरो बन्यो लालके, निरख हँसत चित चोरे।। निरखि हरखि बल जाय “गदाधर”, छबि न बढ़ी कछु थोरे।।२।।

मान में राग-बिहागरो मनावत हारपरी री माई।। तूं चटते मट होत न राधे, हों हरि लेन पठाई।।१।। राजकुमार होयसो जाने, के गुरू होय पढाई।।१।। नंदनंदन को छांड़-महातम, अपनी साख बढ़ाई।।२।। ठोडी हाथ चलीदे दूती, तिरछी भ्रोंह चढ़ाई।। “परमानंद” प्रभु करोंगी दुल्हैया, तो बाबाकी जाई।।३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पियप्यारी कुंजमहल में पोढ़े।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आसोज शुक्ल ३

शृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - हरे छापा के खुला बंद को वागो सुनहरी कोरके, शुथन लाल छापा की। श्रीमस्तक पर पाग हरि, सुनहरी जरी के काम का कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र श्याम रंग का, पिछवाई हरि छापा की सुनहरी कोर की धराई गई है।

आभरण - लाल-सफेद मीना, हीरा-मोती तथा सोना के। वेणु वैत्र लाल सफेद मीना की।

मंगला में राग-भिभाष प्रातसमें नवनिकुंज द्वारे, ललिता ललित बजाई बीना।। पोढ़े सुनत श्याम श्रीश्यामा, दंपति चतुर नवीन-नविना।।१।। अति अनुराग सुहाग लाडिली, कोटिकला प्रवीन प्रविना।। "बिहारीदास" बलबल जोरि पर, तन मन धन न्योछावर किना।।२।।

शृंगार में राग-बिलावल सुनरी सेन दई ग्वालनकों, मोहनलाल बजायो बेनु।। प्रातसमें जगे अनुरागे, वृंदावन घन आनन्द माई, चले चरावन धेनु।।१।। बरन बरन बानिक बनिआये, पट-भूषण जसोमति पहेराये, भाल तिलक दे आजें नैनु।। "हरिनारायण-स्यामदास" के प्रभु माई प्रगट भये, धरि चन्द्रिका सीस, सब व्रजजन सुखदेनु।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग लाडिले तुमको छाक ले आई। बहुत वारके भूखे जानके, यशुमति मोहि पठाई।।१।। बीच मिले मृगनाद विमोही, जिन यह ठौर बताई।। चरण कमल के चिन्ह विलोकत, श्रम सब गयो भुलाई।।२।। ढिंग आये सुन वचन मनोहर, आरती अति उपजाई।। वेणुनाद मध्य श्रवण सुधा धसि, विरहे अग्नि बुझाई।।३।। मुख निरखत अपने मोहनको, छाकजो तरे उतराई।। मुख चुंबन दे "रसिक" शिरोमणि, ग्वालिन गरे लगाई।।४।।

सिला पखारो भोजन कीजे।। नीके व्यंजन बने कौनके, चाख चाख सबहिनकों दीजे।।१।। अहो अहो सुबल अहो श्रीदामा, अर्जुन भोज विशाल।। अपने अपने ओदन लाओ, आज्ञा दई है गोपाल।।२।। फल अंगुरिन अंजलिन बिच राखे, बांट बांट सबहिन कों देत।। "परमानंद" स्वामी रस रीझे, प्रेमपुंज को बंध्यो सेत।।३।।

मोहन जेंवत छाक सलोनी।। सखन सहित हुलसे दोऊ भैया, झपटत करते दोनी।।१।। आछे आछे फल ले चाखत, चाहत हरिकी कोनी।। "परमानंद" प्रभु कहत सखन सों, पहिले कर लेहु बोहनी।।२।।

लाल गोपाल हैं आनंदकंद।। बैठे हैं कालिंदीके तट, बाँटत छाक यशोदानंद।।१।। हँस हँस भोजन करत परस्पर, रस बाढ़्यो रतिरंग।। “श्री विट्ठलनाथ” गोवर्धनधारी बैठे, जेंवत एकही संग।।२।।

राजभोग में राग-सारंग बैठे हरि राधा संग कुंज, भवन अपने रंग, कर मुरली अधर धरे, सारंग मुख गाई।। मोहन अति हि सुजान, परम चतुर गुण निधान, जान बूझ एक तान, चूक के बजाई।।२।। प्यारी जब गह्यो बीन, सकल कला गुण प्रवीण, अति नवीन रूप सहित, वही तान सुनाई।। “वल्लभ” गिरिधरन लाल, रीझ दई अंकमाल, कहत भले भले लाल, सुन्दर सुख दाई।।

भोग में राग-पूर्वी गिरि चढ़ टेरत ऊँचे बाँह।। घूमर धोरी, काजरी कारी, पीरी आवही या माँह।।१।। तृन की चरण तामें सिला ऊँची पर ठाड़े, छबि फैल रही जहाँ-तहाँ।। “कृष्णदास” गिरिधरन रसिकवर, वृन्दावन विभु धर, परत मुकुट पर छाँह।।२।।

गैया गई दूर टेरो जु कान्ह।। जो ऊँचे चढ़ टेर सुनावहु, सब बगदेंगी मेरी जान।।१।। वृंदावन में चरत हरे तृन, चितई चौंकित चटें परी को कान।। दूध धार धर धरनी सींचत आई, “गोविंद” प्रभु जहाँ करत मधुपान।।२।।

संध्या में राग-गौरी कदंब चढ़ कान्ह बुलावत गैयां।। मोहन मुरली के शब्द सुनतही, जहाँ तहाँ ते उठ धैया।।१।। आवो आवो सखा संगके, पाई है एक ठैयां।। “गोविंद” प्रभु बलदाऊ सों कहन लगे, अब घरकों बगदैयां।।२।।

शयन में राग-ईमन तेरेरी वदनकमल पर नंदनंदन आली, मुरलीनाद करत गुंजार।। ललित त्रिभंगी तेरे रोम रोम रम रहे, कर राखियों उर हार।।१।। जा सुख को सनकादिक इच्छत, सो तेरे बस भये मुरार।। “कल्याण” के प्रभु कमलापति मिलवे को, किनहु न पायो पार।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग भयो हरि पोढ़न को समयों।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल ४

आज गो. ति. श्री दाऊजी महाराज श्री का उत्सव, दोहरा मंडान

शृंगार - पाग-कतरा को।

वस्त्र - केशरिया रूपहरी दो कोरके हरे शुथन तथा घेरदार वागो, पटका केसरी, गोल पाग पर मोर पीछका दोहरा कतरा। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम की नंद महोत्सव की। माला-बीड़ा, आरती तथा माला भी दो बार बोलते हैं। झारी भी दो आती है।

आभरण - भारी शृंगार-हीरा-मोती सोना के धराये गये है। वेणु वैत्र पन्ना जड़ी हुई धराई गई हैं।

मंगला में राग-देव गंधार चहुं युग वेद वचन प्रती पार्यो।। धर्म ग्लानि भई जब ही जब, तब तब तुम वपु धार्यों।।१।। सत्ययुग श्वेत वराहरूप धर, हिरणाक्ष रिपु मार्यों।। त्रेता रामरूप दशरथ गृह, रावण कुल सिंहार्यों।।२।। द्वापर ब्रज बूड़ततें राख्यो, सुरपति पायन पार्यों।। कंसादिक दानव सब मारे, वसुधा भार उतार्यों।।३।। कलियुग श्रीवल्लभ गृह प्रगटे, मायावाद निवार्यों।। "माणिकचंद" प्रभु श्रीविठ्ठलेश, पुरूषोत्तम रूप निहार्यों।।४।।

राग-बिलावल बोहोरि कृष्ण फिर गोकुल प्रकटे, श्री विठ्ठलनाथ हमारे।। द्वापर वसुधा भार हर्यो हरि, कलियुग जीव उद्धारे।।१।। तब वसुदेव गृह प्रकट होयके, कंसादिक रिपु मारे।। अब श्री वल्लभगृह प्रकट होयकें, मायावाद निवारे।।२।। एसो कवि को है जगमहियां, बरने गुण जो तिहारे।। "माणिकचंद" प्रभुको शिव खोजत, गावत वेद पुकारे।।३।।

शृंगार में राग-बिलावल तैलंग कुल दीपक प्रकटे, श्रीवल्लभ महाराज।। आज्ञा दई कृपा कर श्रीहरि, पुष्टि प्रकटावे काज।।१।। मुख मूरति प्रकट जब कीनी, निज जन भक्त समाज।। "रसिक" शिरोमणि श्रीवल्लभप्रभु, तीन लोक पर गाज।।२।।

राग-बिलावल सुखद स्वरूप श्री विठ्ठलेश राय।। वेद वदत पूरण पुरूषोत्तम, श्रीवल्लभ गृह प्रकटे आय।।१।। लटपटि पाग महारस भीने, अति सुंदर वर सहज सुभाय।। "छीत-स्वामी" गिरिधरन श्रीविठ्ठल, अगणित महिमा वरनी न जाय।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग सदा वृज ही में करत बिहार।। तबके गोप भेख वपु धार्यो, अब द्विज वर अवतार।।१।। तब गोकुल में नंदसुवन अब, वल्लभ राजकुमार।। आपुन चरित्र सिखावत ओरन, निज मत सेवासार।।२।। युगल रूप गिरिधरन श्री विठ्ठल, लीला एक अनुसार।। "चतुर्भुज" प्रभु सुख शैल निवासी, भक्तन कृपा उदार।।३।।

जयति रूक्मणीनाथ पद्मावती प्राणपति, विप्रकुल छत्र आनंदकारी।। दीप वल्लभ वंश जगत निस्तर करन, कोटि उडुराज सम तापहारी।।१।। जयति भक्तजन-पति पतित पावन करन, कामीजन कामना पुरणचारी।। मुक्तिकांक्षीय जन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ्य, गुण गणन भारी।।२।। जयति सकल तीरथ फलित नाम स्मरण मात्र, वास व्रज नित्य गोकुल बिहारी।। “नंददासनि” नाथ पिता गिरिधर आदि, प्रकट अवतार गिरिराजधारी।।३।।

राग-सारंग (देवगंधार) जय श्रीवल्लभ राजकुमार।। पर पाखंड कपट खंडन कर, सकल वेद धुरी धार।।१।। परम पुनीत तपोनिधि पावन, तन शोभित जीत मार।। निजमुख सुदृढ़ सुकृत कर, हरि पद नवधा भक्ति प्रचार।। दुरित दुरे अचेत प्रेत गति, हतित पतित उद्धार।।२।। नहीं मति नाथ कहांलौं वरणुं, अगणित गुण गणसार।। “छीतस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, प्रकट कृष्ण अवतार।।३।।

राग-सारंग केसर की धोती कटि, केसरी उपरना ओढ़े, केसरको तिलक भाल, मुद्रा मध्य सोहे।। श्रवणन मणि मुक्ता धरे, कोटि मदन मान हरे, मुकुलित शिर केश देख, कोहे जो न मोहे।।१।। श्रीवल्लभ सुत सुजान, उपमाको नहीं आन, नख शिख गिरिधरन रूप, देखेही बनि आवे।। सुंदरताई निकाई, तेज प्रताप अतुलताई, नंदनन्दन विट्ठलेश, एकही कहावें।।२।। अपने कर करि शृंगार, देखरी छाबिलों लाल, ठाडे निज मंदिरमें, निरांजन वारे।। घंटा ताल झालरि बाजे, जय जय शब्द गाजे, अपनपों “हरिदास”, वारवार डारें।।३।।

राजभोग में राग-सारंग सदा वृज ही में करत बिहार।। तबके गोप भेख वपु धार्यो, अब द्विज वर अवतार।।१।। तब गोकुल में नंदसुवन अब, वल्लभ राजकुमार।। आपुन चरित्र सिखावत ओरन, निज मत सेवासार।।२।। युगल रूप गिरिधरन श्री विट्ठल, लीला एक अनुसार।। “चतुर्भुज” प्रभु सुख शैल निवासी, भक्तन कृपा उदार।।३।।

भोग में राग-नट वृज में श्री विट्ठलनाथ बिराजे।। जिनको परम मनोहर श्रीमुख, देखत ही अघ भाजे।।१।। तिनके पद प्रतापतें निरभय, सेवक जन सब गाजे।। “छीतस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, भक्तन के हित काजे।।२।।

नातर लीला होती जुनी।। जोपें श्रीवल्लभ प्रभु प्रकट न होते, वसुधा रहेती सूनी।।१।। दिन दिन प्रति नई छबि लागत, ज्यों कुंदन बिच चूनि।। "सगुणदास" यह घरकों सेवक, यश गावत जाको मुनी।।२।।

संध्या में राग-कल्याण श्री वल्लभ लाल के गुण गाऊं।। माधुरी माधुरी मूरति देखि, आनंद सदन मदनमोहन, नयनन चेन पाऊं।।१।। श्री वल्लभनन्दन जगतवंदन, शीतल चंदन तापहरण, येही महाप्रभु इष्ट करन, चरणन चित लाऊं।। "छीत स्वामी" मन वचन, कर्म परम धर्म, येही मेरे लाडिले लडाऊं।।२।।

शयन भोग आते समय राग-इमन गांऊ श्रीवल्लभ नन्दन के गुण, लाऊं सदा मन अंग सरोजन।। पाऊं प्रेम प्रसाद ततछिन, धाऊं गोपाल गहि चित चोजन।।।१।। नाऊं सीस लडाऊं लालन, आयो शरन यही जु प्रयोजन।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, उपर वारों कोटि मनोजन।।२।।

गये पाप ताप दूर, देखत दरस परस चरण।। हों तो एक पतित तिहारो, पतित पावन विरद हो तुम, जगत के उद्धरण।।१।। स्तुति शेष कर न सके, सकल कला गुणनिधान, हो तिहारों सब विधि अनुसरण।। "छीतस्वामी" गिरिधर, तेसेई श्री विट्ठलेश, हों तो तिहारो जन्म जन्म शरण।।२।।

राग-बिहाग आये मेरे नंद नन्दन के प्यारे।। माला तिलक मनोहर बानों, त्रिभुवन के उजियारे।।१।। हृदे कमल के मध्य बिराजत, श्री व्रजराज दुलारे।। प्रेम सहित बसत उर मोहन, नेकहु टरत न टारे।।२।। काहा जानुं कहा पुन्य उदै भयों, मेरे घर जु पधारे।। "परमानंद" करत न्यौछावर, वार वार तन वारे।।३।।

बघाई राग-कान्हरा जा दिन संत पाहुने आवत।। तीरथ कोटी स्नान, एसों दर्शन पावत।।१।। प्रफुल्लित बदन रहत निशदिन प्रति, चरण कमल चित्त लावत।। मन कर्म वचन ओर नहीं जाचत, सुमरत और सुमरावत।।२।। मिथ्यावाद उपाधि रहित व्हे, विमल विमल जस गावत।। "सूरदास" प्रीतिकर तिनसों, हरिकी सुरत करावत।।३।।

शयन में राग-कान्हरों परम कृपाल श्री वल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथें।। जे जन शरण आय अनुसरही, ग्रही सोंपत श्रीगोवर्धननाथे।।१।। परम उदार चतुर चिंतामणी, राखत भवधारा बहे जाते।। भजि "कृष्णदास" काज सब सरही, जे जाने श्री विट्ठलनाथें।।२।।

प्रकटे पुष्टि महारस देन।। श्रीवल्लभ हरि भाव अति मुख, रूप समर्पित लेन।।१।। नित्य संबन्ध कराय भाव दे, विरह अलौकिक देन।। यह प्राकटय रहत हृदयमें, तीन लोक भेदन को जेन।।२।। रहिये ध्यान सदा इनके पद, पातक कोऊ न लगेन।। “रसिक” यही निरधार निगम गति, साधन ओर न हेन।।३।।

राग कान्हरौ आज धन भाग्य हमारे, प्रकटे श्री विट्ठलनाथ।। निरखत त्रिविध ताप तनके गये, भव-सागर तें तारे।।१।। श्यामल अंग बदन पूरण चंद, देखियत जग उजियारे।। “छितस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, वल्लभ राज ललारें।।२।।

राग-बिहागरो मान में मनावत हार परी री माई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहागरो तू चल मेरो राखो मान।। वे तो तिहारे मग जोवत है, तू तो निपट अयान।।१।। काहू की कही सुन धरिये जिय में, करिये अपने मनको सयान।। उठ चल हिल मिल कहत “गदाधर”, नेक न कररी तू काहू की कान।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े प्रेम के परियंक।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ११ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल - ५

शृंगार - ग्वाल-पगा को।

वस्त्र - श्याम छापा के रूपहरी कोर के शुथन तथा चाकदार खुलेबंद को वागो। श्रीमस्तक पर ग्वाल पगा पर सुनहरी जरी के कामकी मोरशिखा। ठाडा वस्त्र गुलाबी तथा पिछवाई श्याम सुनहरी छापा की। आज कल वेणुनाद तथा देवी पूजन की लीला चल रही है।

आभरण - हीरा-मोती-सोना का भारी शृंगार किया गया है वेणुवैत्र चांदी की धराई गई है।

मंगला में राग-अल्हैया बिलावल सुन्दर साँवरे जब तें मुरली अधर धरी।। सुन शिव समाधि टरी।। सुने थके व्योम विमान।। सुर वधु चित्र समान।। गृह नक्षत्र त्यजत न रास।। बाहन बँधे धुनी पास।।१।। सुनी आनंद उमंग भरे।। चल थके, अचल टरे।। चल अचल गति विपरित।। सुन वेणु कल पद गीत।। झरना झरें पाषान।। गंधर्व मोहे गान।।२।। सुन खग मृग मौन धरि।। फल तृण की सुधि बिसरी।। सुन धेनु मृग थक रहे।। तृण दंत हूँ न गहे।। बछरा न पीबें क्षीर।। पक्षे मनों मुनि धीर।।३।। द्रुम बेलि चपल भये।। नव अंकुर प्रकट नये।। तहां विरप चंचल पात।। हरि निकट कों अकुलात।। अंकुरित पुलकित गात।। अनुराग नयन चुचात।।४।। सुन चंचल पवन थक्यों।। सरिता जल चल न सक्यो।। सुन थक्यौ मंद समीर।। उलट्यो जु यमुना नीर।। सुन धुनि चलीं व्रजनार।। सुत देह गेह बिसार।।५।। मनमोहन रूप धर्यो।। काम को गर्ब हर्यो।। नव नील तन घनश्याम।। नव पीतपट अभिराम।। नव मुकुट नव मणि दाम।। लावण्य कौटिक काम।।६।। मन मोह्यो मदन गोपाल।। तन श्याम नयन विशाल।। श्रीमदन मोहन लाल।। संग नागरी नवबाल।। नव कुंज यमुना कुल।। देख "सूरदास" मनफूल।।७।।

शृंगार में राग-बिलावल सुनरी सेनदई ग्वालनकों ..... (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग हरिकों टेरत फिरत गुवारी।। आन लेहो तुम छाक आपनी, बालक बल बनवारी।।१।। आज कलेऊ कियो प्रातही, बछरा लेवन धाये।। मेवा मोदक मैया यशोमति, मेरे हाथ पठाये।।२।। जब यह वानी सुनी मनोहर, चल आये तहां पास।। कीनी भली भूख जब लागी, बल "परमानंददास"।।३।।

स्याम ढाकतर छाक अरोगत, लेकर थारी ठाढी है ललिता।। भोजन व्यंजन केलके पातनमें, चहुंधा चपलासी व्रजवनिता।।१।। निरखत अंबुज मोहनको मुख, लोचन भये मानों मृगके से चकृता।। "श्रीविट्ठलगिरिधरन" अरोगत, निकट वहत कालिंदी सरिता।।२।।

ऐ ग्वाल मंडली में भोजन करत गुपाल।। पठई छाक जसोदा मैया, विंजन बोहत रसाल।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, लाई सुन्दर बाल।। खात खवावत हसत परसपर, तारी दे नंदलाल।।२।। रूच ऊपजत तब बतियां मीठी, करत सबे बिध ख्याल।। "रसिक" सिरोमणी गिरि की छैयां, राजत ऊर बनमाल।।३।।

छाक को भई अवार, नहिं छकहारी, मोही भूख लगी भारी, कैसे रहूँगो।। ऐ गैया, मेरे मन चहियाँ, दूहूँगी बलदाऊ भैया, दूध ही पी रहूँगो।।१।। बाबासों कहा कहौ, मैया सुध भूल गई, मथत दधि मधुर मधुर, मान हूँ रहूँगो।। "श्रीविट्ठल गिरिधरन" कहत दाऊ सों, तेरो कह्यो त्योंही करूँगो।।२।।

राजभोग में राग-सारंग कहा कहो लाल, सुघर रंग राख्यो मुरली में।। तान बंधान स्वर भेद, लेत अतिजत बिचबिच, मिलवत विकट अवधर।।१।। चोख माखन की रेख, तामे गायन मिलवत, लांबे लांबे स्वर।। बिच बिच लेत तिहारो नाम, सुनरी सयानी, "गोविन्द" प्रभु ब्रजरानी के कुंवर।।२।।

भोग में करखा के पद राग-मारू जब कुद्र्यों हनुमान उदधि, जानकी सुध लेन कौ।। देखन को दशमाथ, अपने नाथ को सुख देन को।।१।। जा गिरि पर चढ़ी कुलाचे, लीनी उचकैया।। सौ गिरि दशयोजन, धंसि गयो धरनी महियां।।२।। धरनी धस गई पाताल, भार परें जाग्यों।। शेषहू को शीश जाय, कमठ पीठ लाग्यौ।।३।। अरूण वदन श्वेत, दसन बड़ौ पीन गात है।। उत्तर तें दक्षिण मानो, मेरू उड्रयो जात है।।८।। जा प्रभू को नाम लेत, भवजल तरजात है।। शतयोजन सिन्धु कुद्र्यो, तो केतिक यह बात है। रामचन्द्र पद प्रताप, जगत में यश जाकौ।। "नंददास" सुरनर मुनी, कौतुक भूले ताकौ।।६।।

संध्या में (मुरली के पद) राग-गौरी झुक रही सुन मुरली की टेर।। उततें आई पनियाँ के मिष, गौ आवन की बेर।।१।। मोर चन्द्रिका मुकुट बिराजत, चपल नयन की फेर।। "परमानंद" प्रभु मिले खिरक में, यातें भई अवेर।।२।।

ब्यारु तथा दूघ के पद नित्यानुसार

शयन में राग-इमन/कान्हरो सोहत नासीका, गिरधर गज मोती।। खोलत बीरा खात हँसत-डोलत, अरूण अधर की दीनी पोती।।१।। कुंडल लोल कपोल बिराजत, जगमगात मुख मंजुल जोती।। "गोविन्द" प्रभु देखत सुख अपनो, रसना कहा कहे मति बोती।।२।।

पोढ़वा में राग-पोढे पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल ६

शृंगार - मल्लकाछ टिपारा को।

वस्त्र - लाल मल्लकाछ, गुलाबी रूपहरी छापा को खुलेबंद का चाकदार। श्रीमस्तक पर लाल टिपारा रूपहरी जरी को साज। ठाड़ा वस्त्र बादली रंग के तथा पिछवाई चित्राम की रामायण की धराई गई है।

आभरण - सभी हीरा-माणक मोती के भारी शृंगार किया गया है। सोना के वेणु वेत्रजी धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल मुरली चतुर सिरोमनि दूती।। मोहन मुख लागत, जुबतिन को आवत आप अछूती।।१।। गृह त्यौहार तजें ऊठि धावत, मानो मनमथ द्युति।। "सूरदास" स्वामी के कारन, बंसी बढ़कर तूती।।२।।

शृंगार में राग-रामकली निर्तत मोहन रसिक सखन संग, गिडगिड ततथेई ततथेई ताता।। मृदंग धृम धृम धृम ताल उपर, सप्त सुर जो मिलवत मधुप मत्ता।।१।। टिपारो सिर पीतपट लाल काछनी बनी, किंकनी रूनझूनात गावत सुर सत्ता।। "गोविन्द" प्रभु के जु गोप बालक संग, जै जै जै करत प्रेम अनुरत्ता।।२।।

राजभोग आने पर राग-सारंग बैठे श्रीगोवरधन गिरि गोद।। मंडली सखामध्य बलमोहन खेलत हँसत प्रमोद।।१।। भई अवार भूख जब लागी चितये घर की कोद।। गोविंद तहां छाक ले आये पठई मातयशोद।।२।।

गोवरधन गिरिशृंग शिलनपर बैठे, छाक खात दधिओदन।। आसपास व्रजबालक मंडली मध्य हीं बलिमोहन बैठे, खात खवावत प्रेम प्रमोदन।।१।। काहूको छीको नाय छोर गहि डारत, वह वापर वह वाकी कोदन।। बालकेलि क्रीडत "गोविंद" प्रभु, हँस गिर जात सुबलकी गोदन।।२।।

सिला पखारो भोजन कीजे।। नीके व्यंजन बने कौनके, चाख चाख सबहिनकों दीजे।।१।। अहो अहो सुबल अहो श्री श्रीदामा अर्जुन भोज विशाल।। अपने अपने ओदन लाओ, आज्ञा दईहै गोपाल।।२।। फल अंगुरिन अंजलिन बिच राखे, बांट बांट सबहिन कों देत।। "परमानंद" स्वामी रसरीझे, प्रेमपुंज को बांध्यो सेत।।३।।

सुंदर सिला खेलकी ठौर।। मदनगोपाल जहां मध्यनायक चहुं दिश सखामंडली जोर।।१।। बांटत छाक गोवरधन ऊपर, बैठत नाना विधि की ठौर।। हँसहँस भोजन करत परस्पर, चाख-चाख ले रूचिसों कोर।।२।। कबहुँ सिखर चढ़ टेरत गायन, ले ले नाम धूमरी धौर।। “चतुर्भुज” प्रभु लीलारस रीझे गिरिधरलाल रसिक सिरमौर।।३।।

राजभोग में राग-सारंग ऐरी यह वृंदावन रंग।। सकल कला प्रवीन सा रे ग म प ध नि अलाप करत है उपजत तान तरंग।।१।। निर्तत गति जति लेत गृ गृ तत किट धी लांग थोंग बाजत मृदंग।। “गोविंद” प्रभु के जु अंग अंग पर वारती कोटि अनंग।।२।।

भोग में राग-मारू यह विध पार पोहेच्यों, पवन-पूत दूत श्री रघुनाथको।। छूट्यौ जानो धनुष तें सर, परम सुभट हाथ कौ।।१।। थर थर जहां करत भीर, ऐसी राजधानी।। पैठत तिहिं लंक बंक, कवि न शंक मानी।।२।। पुर मंदिर गिरि कदर, सुन्दर मणिराई।। रावण रणवास ढूढ़यौ, कहूँ न सीय पाई।।३।। तब कह्यो यह जेतिक नगरी, सगरी उचक लिजे।। उठांई ले जाय राम हीं, जानकी ढूंढ़ दीजे।।४।। कैधों दशकंध अंध, इहाँई ले मारो।। कैधों रघुवीर आगें, बांधि रिपुहिं डारो।।५।। यह विधि बल अपनौ, कपि सौचत जिय मांही।। “नंददास” प्रभू की मोहि, ऐसी आज्ञा नाही।।६।।

संध्या में राग-मारू बनचर कोन देश तें आयो।। कहाँ है राम कहाँ है लक्ष्मण, कहाँ ते मुद्रिका लायौ।।१।। हो हनुमान राम जू को सेवक, तुम सुधि लेन पठायो।। रावण मार ले जाऊँ तुमको, राम रजा नहिं पायो।।२।। तुम जिन जिन डरपौ मेरी माता, जोर राम दल धायो।। “सूरदास” रावण कुल खोयौ, सोवत सिंघ जगायौ।।३।।

शयन में राग-ईमन आज सखी मोहन अति बनें।। सीस टिपारो फरहरात, बरूहा चंद्र अलक बीच, बीच चंपकली अति गनें।।१।। लाल काछ कटि छुद्रघंटिका, नूपुर रूनझुनात गति लेत, ग्रग्रतां ग्रगतां तत तरंग सनें।। “गोविंद” प्रभु रसभरे, नृत्य करत सकल कला, गुन प्रवीन ब्रज नृपति निपुने।।२।।

मान में राग-बिहागरो दौरी दौरी आवत मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लईरी।। अचरा पसारके मोहि खिजावत, हौं तेरे बाबा की चेरी भईरी।।१।। जारी जा सखी भवन आपने, लखबातन की एक कहीरी।। “नंददास” वे क्यों नहीं आवत, उनके पायन कछु मेंहदी दईरी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल ७

श्रृंगार - पाग-कतरा को

वस्त्र - सफेद सुनहरी छापा के, सुनहरी कोर के, सूथन तथा वागो चाकदार-खुला बंद को।। मस्तक पर पाग पर सुनहरी जरी काम का कतरा। ठाडा वस्त्र हरे रंग के तथा पिछवाई सफेद सुनहरी छापा एवं सुनहरी कोर की। दशहरा तक नित्य भोग व संध्या में करखा के पद गाये जाते है।

आभरण - माणक-मोती-सोना के मध्य का श्रृंगार, कमलछड़ी, सोना के वेणुजी तथा वेत्रजी।

मंगला में राग-बिलावल श्री यमुनाजुं के तीर, बजाई बांसुरी नंदलाल री।। अधरन करत मिलि सप्त सुरनसों, उपजत राग रसालरी।।१।। छूटी लट लपटात वदन पर, तुटति मुक्ता मालरी।। व्रजवनिता धुनि सुनि उठिधाई, रहिय न अंग सम्भालरी।।२।। बहत न नीर समीर न डोलत, वृंदाविपिन संकेत री।। सुनी थावर अचेत चेत भये, जंगम भये अचेत री।।३।। अफल फले फल फूल भयेरी, जरे जरे भये पातरी।। उमगि प्रेमजल चल्यो शिखरपें, गर्यो गिरिनको गातरि।।४।। तृन न चरत है मृगामृगी री, तान परत जब कानरी।। सुनत गान गिरि धर्यो धरनि पर, मानो लागे बान री।।५।। सुरभी लाग दियो केहरी को, हरत श्रवण की डाररी।। ऐक भवन पुनि चढ़ि बैठे है, निरखत श्रीमुख चारूरी।।६।। खग रसना रस चाखि वदन पर, बैठे निमिस न माररी।। चाख़त ही फल परे चोंचते, रहे जू पंख पसार री।।७।। सुर नर देव असुर सब मोहे, छायो व्योम विमानरी।। "चत्रभुजदास" कहे कौन बस, या मुरली की तानरी।।८।।

श्रृंगार में राग-बिलावल बेनु बजायोरी सुंदर नंद को कन्हैया। जल-थल चल-अचल भये हे, तृन न चरत मृग-गैया।।१।। व्योम विमान सुरन छायो, गिरिराज धरन के काज, लाज तज छबि निरखत और लेत बलैया।। "उदेराज" प्रभु मदनमोहन जगजीवन जायो मैया।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग छाक के ४ पद सारंग राग के पेज ५८ पर से गाने है।

राजभोग में राग-सारंग बृन्दावन सघन कुंज, माधुरी लतान तर, यमुना पुलीन में, मधुर बाजे बांसुरी।। जबते धुनि सुनी, कान मानों लगे मैंन, बान प्रानन की कासों कहो, पीर होत पाँसुरी।।१।। व्यापो जु अनंग ताते, अंग सुधि भूल गई, कोऊ वंदो कोऊ निंदो, करो उपहासरी।। एसे "बज्राधीश" सों, प्रीति नई रीति बाढ़ी, जाके उर गड़ रही, प्रेम पुंज गासुरि।।२।।

भोग में राग-मारू कपि चल्यो सीय समोद के, पुन पायन तर लटक के।। रिपु कै कटक विकट, ताकौ चौथौ अंस पटकि के ।।२।। रथ सौ रथ भटन सौ, भट चट पटीसी चटक के।। जारि कै गढलंक, विकट रावण, मुकुट झटक कै।।२।। कितेक छैल, तंदुल से छरे, लै ले मूशल मटक कै।। गिरिसो गज, गेंद सी गहि, डारो भूमि भटक के।।३।। सुरपुर आनंद, उमंग उरसौ, आँट अटक कै।। “नंददास” बहुर्यो, नट जों उलटि, पाछो समुद्र सटक कै।।४।।

संध्या में राग-मारू देख हो कंथ रघुनाथ आयों।। छिप्यो शशि सुर अति चाह चकृत भर्यो, धूर सौं पूर आकाश छायो।।१।। तब न मान्यों कह्यो आपने मद, रह्यो देह के गर्व अभिमान बाढ्यो।। सुनव हो कंथ अब कठिन भयो छुटबो, गहे भुज बीस कर बाल गाढो।।२।। सिन्धु गम्भीर दल छांड के मुग्ध बल, तै न किनी कहूँ टेक गाढी।। बचे क्यू डूबतें माझ लाग्यों धका, लंकसी नाव द्वै टूक फड़ी।।३।। कहत “सूर” तू गिन्यौ पंछीन में, आन अचरज पर आज खेलें।। भजे क्यों उबरि है बाज हनुमान पें, मूढ़ जब जानकीनाथ मेले।।४।।

ब्यारू तथा दूध के पद नित्यानुसार

शयन में राग-कान्हरो तेरेरी वदन कमल पर नंद नन्दन आली, मुरली नाद करत गुंजार।। ललित त्रिभंगी तेरे रोग रोम रम रहे, कर राखियों उर हार।।१।। जा सुखको सनकादिक ईच्छत, सों तेरे बस भये मुरार।। “कल्याणकें” प्रभु कमलापति मिलवे को, किनहु न पायो पार।।२।।

मान में राग-बिहागरो दौरी दौरी आवत मोहि मनावत, दाम खरच कछु मोल लईरी।। (यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पियप्यारी कुंजमहल में पोढ़े।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल ८

शृंगार - मुकुट कांछनी को।

वस्त्र - फिरोंजी शुथन तथा काछनी छापा के रूपहरी कोर के, बड़ा पीताम्बर तथा श्री अंग में श्याम साटन की चोली। श्रीमस्तक पर पाग पर फिरोंजी रंग को मीना को मुकुट, ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्राम की इसमें वेणुनाद कर सभी गोपीजनों को बुला रहे है।

आभरण - माणक-मोती के, फिरोंजी मीना के हार तथा नुपुर-सोनाके वेणु वैत्र हांस-धराये गये है। नित्यानुसार भारी शृंगार धराया गया है।

मंगला में राग-बिलावल **बंशी वजावै साँवरौ हो, किहिं मिस देखन जाँउ री।।टेक।। में तोय पूछूँ हे सखीरी, कहा कुँवर कौ नाँउ री।। मोर मुकुट माथें धरै वाकौ, ललित त्रिभंगी नाँउ री।।१।। लाल काछनी पीतांबर री, पग नूपुर झनकार री।। कुंजन निर्तत साँमरौ, जहाँ मधुप करैं गुंजार री।।२।। कोमल कर कटि पट गहेरी, करत मुरली धुनी कानरी।। नाद सुनत मन ना रहै मेरों कैसे राखैं प्रान री।।३।। पचिहारी हों पियसों, मेरो कह्यौ न मानें कंत री।। परबस वाके बस परी, मेरौ लीयो चाहे अंत री।।४।। दया बिहुनै निरदई मेरौ, पीउ न जाने पीर री।। चलती बेर आडौ रहै मेरौ, कबकौ दावनगीर री।।५।। माय बाप वर खोजकैं मेरे, बेड़ी डारी पाँव री।। कमलनैन निरखे बिना मेरौ, रह्यौ न ऐसौ हावरी।।६।। इतनें कहिकें उठ चली री, ज्यों कंचुकी तजि नागरी।। "सूरश्याम" सों यों मिली जैसें, कंचन मिल्यौं सुहाग री।।७।।**

शृंगार में राग-रामकली **देखों देखोरी नागर नट, निर्तत कालिन्दी तट, गोपिन के मध्य, राजें मुकुट लटक।। काछिनी किंकणी कटि, पीतांबर की चटक, कुंडल किरण रवि, रथ की अटक।।२।। तत थेई ताता थेई, शब्द सकल घट, उरप तिरप गति, पग की पटक।। रास में श्री राधे राधे, मुरलि में एक रट, "नंददास" गावै तहां, निपट निकट।।२।।**

राजभोग आवे तब राग-सारंग **दानघाटी छाकआई, गोकुलते कावर भर, रावल की रावरे ने, राखी सब घेरा।। जान तो जबही देहों, नंदजूकी आन खेहों, भोजनकी रही कछु, चाखो एक बेरा।।१।। अति प्रवीन जान राय कनकबेला कर में लियें, वाटत मेवा मन प्रसन्न, हेर चहुंफेर।। सकलपाक परमानंद, आरोगत परमानंद, "परमानंद" टोक करत, सुबल टेरटेर।।२।।**

मंडल जोर जोर बेठोरे भैया, सब मिल भोजन कीजे।। वींजन मन रंजन ले आई, रंगीली ग्वालन बदन निरख जीजे।।१।। आपुन खात खवावत ग्वालन, फिर चाखत रसिकराय बदन निरख न अघैजे।। "हरिनारायण स्यामदास" के प्रभुकी लीला परमत बाड़ी, जाय जमुना जल पीजे।।३।।

ऐ ग्वाल मंडली में भोजन करत गुपाल।। पठई छाक जसोदा मैया, विंजन बोहत रसाल।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, लाई सुन्दर बाल।। खात खवावत हसत परसपर, तारी दे नंदलाल।।२।। रूच ऊपजत तब बतियां मीठी, करत सबे बिध ख्याल।। "रसिक" सिरोमणी गिरि की छैयां, राजत ऊर बनमाल।।३।।

भोजन करत नंदलाल, संग लिये ग्वाल बाल, करतहें ख्याल, बेठे सीतल छैया।। पातन पर धरत भात, दधि सीखरन लिये हाथ, मांगत मुसक्यात जात, सांवरो कन्हैया।।१।। बिजन बहो भांत भांत, अनुपम छबि कही न जात, रूचसो लेत फिर खात, हीर्दे सो पठई मैया।। "छीतस्वामी" गिरिवर धर, मंडल मध्य बिच सोहत, सबन को मन मोहत, मोहन निरख लेत बलैया।।२।।

राजभोग में राग-सारंग नटवर गत निर्तत है, भक्तन ऊर परसत हैं, पुलकित तन हरखत है, रास में लाल बिहारी।। बाजत ताल मृंदग, उपंग बांसुरि बीना, स्वर तरंग ग्रगृता ग्रगृता, थुंग थुंग लेत छंद भारी।।१।। कटि काछिनी पीत, सुरंग मौर मुकुट अति, सुढंग राख्यो अर्द्धभाल, ललित शीश पेंच सँवारी।। आरति वारति यशोदा माय, लेत कंठ उरलेत लगाय, देखत सुर नर मुनि और "रामदास" बलिहारी।।

आश्विन मास राग-मारू बड़ौ बालि नंदन बली, विकट बनचर महा, द्वार रघुवीर कौ बीर आयौ।। पौरितें दौरि दरबान, दशशीश सौं जाय, शिरनाय यौं कहि सुनायौ।।१।। सुन श्रवन दशवदन, सदन अभिमानकौ, नयनकी सैंन अंगद बुलायौ।। विविध आयुध धरें, सुभट सबही खरे, छत्रकी छाँय निर्भय जनायौ।।२।। देख हरि वेष लंकेश, हरहर हँस्यौ सुनहुँ, भट कटककौ पार पायौ।। देव दानव महाराज, रावण सभा कहनकों, मंत्र तहाँ कपि पठायौ।।३।। अरे रंक रावण, कहा तक तेरौ इतौ, दुहुँ कर जोर बिनती बितारों।। परम गंभीर रघुबीर, तन राम पर, बीस भुज, शीश दश बारि डारों।।४।। झटकि हाटक मुकुट, पटक पट भूमिसों, झर तरबार तुव शिर सिंघारों।। जानकीनाथ के हाथ, तेरौ मरन कहा, मतिमंद तोहि मध्य

मारों।।५।। पाक पावक करै, वारि सुरपति भरै, पवन पावन करै द्वार मेरैं।। गान नारद करै, वार सुर गुरू कहै, वेद ब्रह्मा पढ़ै पौर टेरें।।६।। यक्ष बसुकी प्रभृति, नाग गंधर्व मुनि, सकल विश्वजीत मैं किये चेरे।। अरे सुन शठ, दशकंध कों कौन भय, राम तपसी आय किये डेरे।।७।। अरे तप बली, सत्य तापेश्वरी, तप बिना कौन पाषाण तारे।। कौन ऐसै सुभट, जगत जननी जन्यौ, एकही बाण तक बालि मारे।।८।। परम गंभीर रघुवीर, दशरथ तनय शरन गये, कोटि अवगुण बिसारे।। जाहि मिल अंध, दशकंध गहि दंत तृण, तौ भलें मृत्यु मुख तें उबारे।।९।। कोप कर बाल, गहि काल लंकाधिपति, मूढ़ रिपु रामकों शीश नाऊँ।। शंभुकी शपथ, सब कुपथ कायर कृपण, श्वास आकाश बनचर उड़ाऊँ।।१०।। पर हिं भैराय, भभकंत रिपु धाय, सो कर कदन रूधिर भेरों अघाऊँ।। सुभट साजे सबै, देव दुंदुभी अभै, एकते एक रणकर दिखाऊँ।।११।। चढ़यौ रावण सुन्यौ, शीश तब शिव धुन्यौ, उमग रणरंग रघुवीर आयौ।। रामशर लागि, जनु आगि गिरि प्रज्वलित, छाँड़ि छिनु सीस नभ भानु छायौ।।१२।। रूंड भुकरूंड, धुक परत छर धरनि पर, रूधिर सरिता समर पार पायौ।। मार दशकंध, नृप बँधुकृत "सूर" प्रभु, जानकीनाथ गृह सीय लायौ।।१३।।

संध्या में राग-ईमन पूजन चलौ हों कदम वनदेवी आऔ हमारे काऊ संग।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरों देखो देखो मुरली भ्रकुटी नचावति।। सप्तरंध्र गाइनि संग गावति, उपंग सरस सर्वश्रृति धावति।।१।। उघटत शब्द अधर दोउ पियकें, अँखियाँ पलक कर तल बजावति।। अचट और अनघात अनगत, चपल करज गति भेद जनावति।।२।। कुंडल लोल रीझि सिर नावति, अलक शोभा कुसुमनि बरसावति।। बरूहा चंद्र धुकि देखत तिलक चढ़, "गोविंद"' ओर छबि पावति।।३।।

पोढ़व में राग-केदारों तुम पोढ़ो हों सेज बनाऊं।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल ९

शृंगार - पाग तुर्रा को।

वस्त्र - श्री अंग में बेंगनी सुनहरी छापा को खुला बन्द सुनहरी कोर का। श्री मस्तक पर बेंगनी सुनहरी पाग पर सोने का तुर्रा धराया गया। ठाडा वस्त्र गुलाबी तथा छापा की धराई गई है।

आभरण - हीरा-मोती-सोना के हार शृंगार हीरा-पन्ना के जड़े हुवे धराये गये। फूल की छडि तथा सोना के वेणु वैत्र धराये गये है।

मंगला में राग-रामकली **मन मृग बेध्यों मोहन नैंन बान सों।। गूढ़ भाव की सेंन अचानक, तकि तान्यो भृकुटी कमान सों।।१।। प्रथम नाद बल घेर निकट ले, मुरली स्वर सप्तक बंधान सों।। पाछे बंक चित्ते मृदु हँस के, घात करी उलटी सुठान सों।।२।। "चतुर्भुजदास" पीर यह तन की, मिटत न औषघ आनसों।। व्है सुख तबही उर अन्तर, आलिंगन गिरधर सुजानसों।।३।।**

शृंगार में राग-बिलावल **सुनरी सेन दई ग्वालनकों मोहनलाल बजायो बेनु।।** (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (छाक के पद) राग-सारंग **भोजन करत नंदलाल, संग लिये ग्वाल बाल, करतहें ख्याल, बेठे सीतल छैया।। पातन पर धरत भात, दधि सीखरन लिये हाथ, मांगत मुसक्यात जात, सांवरो कन्हैया।।१।। बिजन बहो भांत भांत, अनुपम छबि कही न जात रूचिसो लेत फिर खात, हीर्दे सों पठई मैया।। "छीतस्वामी" गिरिवरधर, मंडल मध्य बिच सोहत, सबन को मन मोहत, मोहन निरख लेत बलैया।।२।।**

कुमुदवन भली पहुंची आय।। सुफल भई है छाक तिहारी, लाल कदमतर पाय।।१।। तहां ते उठ चले मानसरोवर, संग सखा सब लाय।। बैठत तहां ठौर गिरि ऊपर, चरत चहूं दिश गाय।।२।। खेलत खात हँसत परस्पर, बातें कहत बनाय।। "रामदास" बलबल बूझनकी, कहा कहा व्यंजन लाय।।३।।

बिहारीलाल आई छाक सलोनी।। अति अद्भुत पठई चंद्रावलि, एक गांठ द्वै दोहनी।।१।। टेरत स्याम भुजा ऊंची कर, गई सुवास आग्योनी।। "कृष्णदास" गिरिधरजू को मन हर्यो, विधिना रसिक रिझोनी।।२।।

बिहारीलाल आवहू आई छाक।। गैया दूरगई है मोहन, वगदावो दे हांक।।१।। अर्जुन भोज सुबल श्रीदामा, मधुमंगल एक ताक।। खटरस खीर खांड घृत भोजन, बहु पकवान पराक।।२।। अपनी अपनी पातर लेंके, बैठे फैल फराक।। "सूरदास" प्रभु जेंवत रूचिसों, प्रेम प्रीति के पाक।।३।।

राजभोग में राग-सारंग बैठे हरि राधा संग, कुंज भवन अपने रंग, कर मुरली अधर धरे, सारंग मुख गाई।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

भोग में राग-मारू बालि नंदन बली, बिकट बनचर महा, द्वार रघुवीर कौ बीर आयौ।। पौरि तें दौरि दरबान दशशीश सौं, जाय शिरनाय, यौं कहि सुनायौ।।१।। सुन श्रवण दशवदन, सदन अभिमान कौ, नयन की सैंन अंगद बुलायौ।। विविध आयुध धरें, सुभट सबही खरे, छत्रकी छाँय निर्भय जनायौ।।२।। देख हरि वेष लंकेश हरहर हँस्यौ, सुनहुँ भट कटक कौ पार पायौ।। देव दानव महाराज रावण सभा, कहन कों मंत्र तहाँ कपि पठायौ।।३।। अरे रंक रावण, कहा तंक तेरौ इतौ, दुहूँ कर जोर बिनती बितारों।। परम गंभीर रघुबीर तन राम पर, बीस भुज शीश दश बारि डारों।।४।। झटकि हाटक मुकुट, पटक पट भूमिसों, झार तरबार तुव शिर सिंघारों।। जानकीनाथके हाथ तेरौ मरन, कहा मतिमंद तोहि मध्य मारों।।५।। पाक पावक करै, वारि सुरपति भरै, पवन पावन करै द्वार मेरैं।। गान नारद करै, वार सुर गुरू कहै, वेद ब्रह्मा पढ़ै पौर टेरें।।६।। यक्ष बासुकी प्रभति नाग गंधर्व मुनि, सकल विश्व जीत मैं किये चेरे।। अने सुन शठ दशकंध कों कौन भय, राम तापसी आय किये डेरे।।७।। अरे तप बली सत्य तापेश्वरी तप बिना, कौन वस पर पाषाण तारे।। कौन ऐसौ सुभट, जगत जननी जन्यौ, एकही बाण तक बालि मारे।।८।। परम गंभीर रघुवीर दशरथ तनय, शरन गये कोटि अवगुण बिसारे।। जाहि मिल अंध दशकंध, गहि दंत तृण, तौ भलें मृत्यु मुख तें उबारें।।९।। कोप कर बांध गहि काल लंकाधिपति, मूढ़ रिपु रामकों शीश नाऊँ।। शंभुकी शपथ, सब कुपथ कायर कृपण, श्वास आकाश बनचर उड़ाऊँ।। परहिं भैराय भभकंत रिपु धाय सो, कर बदन रूधिर भेरों अघाऊँ।। सुभट साजे सबै, देव दुंदुभी अभै, एक तें एक रणकर दिखाऊँ।।११।। चढ़यौ रावण सुन्यौ, शीश तब शिव धुन्यौ, उमग रणरंग रघुवीर आयौ।। राम शर लागि जनु आगि गिरि प्रज्वलित, छाँड़ि छिनु सीस नभ भानु छायौ।।१२।। रूंड भुकरूंड धुक परत धर धरनि पर, रूंधिर सरिता समर पार पायौ।। मार दशकंध नृप बँधुकृत "सूर" प्रभु, जानकीनाथ गृह सीय लायौ।।१३।।

संध्या में राग-मारू देख हो कंथ रघुनाथ आयों।। (यह पूरा पद पेज ६१ पर पढ़े।)

शयन में सोहत राग कान्हरो। सोहत नासीका गिरधर.. (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल १०

दशहरा का उत्सव (देहरी वन्दनमाल एवं अभ्यंग)

आज से अन्नकोट की बधाई बैठती है।

शृंगार - चीरा को

वस्त्र - सफेद रूपहरी जरी को घेरदार वागो। शुथन लाल जरी की। श्रीमस्तक पर रूपहरी जरीकी छज्जेदार पाग चीरा की तथा उस पर सादी मोर की चन्द्रिका, ठाडी लड़ मोती की। शीरपेच पन्ना मोती के कलंगी हीरा पन्ना-मणक की झड़ाऊ। शीशफूल, माणक का, अलंकार कमलाक्ष तथा नखवेशर माणक मोती की, चिबुक हीरा को। श्री अंग में शृंगार भारी वन माला। टोडर हार पन्ना को तथा माणक-मोती को, गुंजामाला तथ फूल की माला। श्रीहस्त में नखावली, मुद्रिका हीरा की, हस्तपान, पोंची, बाजुबन्द सभी माणक-मोती के। श्री चरणकमल में-नखावली, हीरा की मुद्रिका तथा पगपान, पायल-पेंजनी, जेहर सभी माणक जड़े हुवे नुपुर सोना के तथ वेणु वैत्र माणक का पेश कबज यानी ढाल-तलवर हीरा जड़े हुई, फूल की छड़ी।

ठाड़ा वस्त्र हरे रंग के श्रीजी की कन्दरा पर चोखटा हीरा जड़े हुवे, पिछवाई हरी दोनों तरफ सोनेरी कशिदा के झाड़ की। संध्या भोग के दर्शन में चंद्रिका वड़ी कर श्रीजी को जवारा धराये जाते है, तिलक करके आटे के दिवलें से आरती की जाती है उसके बाद दस माट का भोग धराया जाता है ततूपश्चात संध्या-आरती के दर्शन खुलते है।

विशेष - आज से प्रभु के सम्मुख काष्ट की गायें पधराई जाती हैं तथा शयन के दर्शन बाहर खुलते हैं।

मंगला में राग-बिलावल (झांझ मृदंग सहित) गोकुल को कुल देवता, प्यारों गिरिधर लाल।। कमल नयन घन सांवरो, वपु बाहु विशाल।।१।। वेग करो मेरे कहें, पकवान रसाल।। बल मघवा बलि लेत हैं, कर कर घृतगाल।।२।। इनके दीये बाढ़िहें, गैया बच्छ ग्वाल।। संग मिल भोजन करत, हैं जैसे पशुपाल।।३।। गिरि गोवर्धन सेइयें, जीवन गोपाल।। "सूर" सदा डरपत रहें, जाते यमकाल।।४।।

शृंगार में राग-बिलावल सात वरष को सांवरों, बोलत तुतरात।। हँस हँस कान्ह कहे, सुनो मेरी एक बात।।१।। इन्द्र न पूजा कीजिये, पूजो गिरि तात।। तुम देखत भोजन करें,

पकवान अरू भात।।२।। यह मतो निरधार कें, गोप गृहकों जात।। मृदुबानी गिरिधरन की, सुन “सूर” सिहात।।३।।

राजभोग आवे तब राग-सारंग (अन्नकुट की बधाई) अन्नकूट कोटिक भातन सों, भोजन करत गोपाल।। आपही कहत तात अपने सों, गिरि मूरति देखो ततकाल।।१।। सुरपति से सेवक इन्हीं के, शिव विरंचि गुण गावे।। इन्ही ते अष्ट महासिद्धि नवनिधि, परम पदारथ पावे।।२।। हम गृह बसत गोधन बन चारत, गोधन ही कुलदेव।। इनें छांड जो करत यज्ञ विधि, मानों भींतको लेब।।३।। यह सुन आनंदे बृजवासी, आनंद दुंदुभी बाजे।। घर घर मंगल गोपी गावें, गोकुल आन बिराजे।।४।। एक नाचत एक करत कुलाहल, एक देत करतारी।। बनिता वृंद बाँयनो बांटत, गुंजा पुआ सुहारी।।५।। तबही इन्द्र आयुस दियो, मेघन जाय प्रलय के बरखो।। यह अपमान कियो धौं कोने, ताहि प्रकटव्है परखो।।६।। सात ध्योंस जल शिला सहस्त्र, महा उपद्रव कीनों।। नंदादिक विस्मित चितवत सब, तब गिरवर कर लिनों।।७।। शक्र सकुच सुरभी संग लायों, तजी आपनी टेक।। गहे चरण गोविंद नाम कहि, कियो आप अभिषेक।।८।। महेरि मुदित वर वसन मंगाये, बोलबोल ग्वालिन दीने।। प्रभु “कल्याण” गिरिधर युग युग यों, भक्त अभय पद कीने।।९।।

राजभोग में राग-सारंग तिहारे खीरक बताई, अहों वृषभान हमारी गैया।। चकृत नेन चहुंधा चितवत, संकर्षन को भैया।।१।। सिंझा समे बागते बिछुरी, अर्धरात सुधि पैया।। वा बिन मोपे रह्यो न परत है, यों कहै कुंवर कहैन्या।।१।। सुन प्रियवचन किसोरी अटा चढ़, जाल रंघ्र व्है झांकी।। “परमानंद” चित्त करख लीयो है, चन्द बदन भ्रुव बांकी।।३।।

भोग में राग-मारू जब कुद्र्यों हनुमान उदधि... (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

जवारा धरावे तब राग-सारंग आज दशहरा शुभ दिन नीको, विजय करो पिय प्यारी पै आज।। घेरी है विकट मदन गढ़ गाढे, तौर मेड़ लालन कर हो राज।।१।। इतनी बात सुनत नंद नन्दन, विहंसि उठे दल कीनो साज।। “रसिक” प्रभु पिय रति पति जीत्यो, नुपुर किकंणी रूनझुन बाज।।२।।

आज दशहरा शुभ दिन नीकौ, जवारे पहरत गिरधर लाल।। आस-पास सब व्रज के बालक, मध्य मनोहर बाल।।१।। करत आरती मात यशोदा, बारत मोतिन माल।। “आसकरण” प्रभु मोहन नागर, के प्रेम पुंज ब्रजबाल।।२।।

भोग आवे तब राग-धनाश्री आज पयाने को दिन नीकों।। कुशल केलि कर क्रिड़त है, पूजीवे मनोरथ जीकौ।।१।। अतुलित बल अतुलित सेना में, हनुमान सिरव टीकौ।। जाम्बवन्त सुग्रीव नील नल, अंगद बाल बली को।। विजय दशमी और सींघ दाहिनो, बांयौ घर जोगिनी को।। दिशा शूल मारत पाछे ते, रावण मरण सही को।।३।। शृंगी ऋषि मुनी इष्ट करत है, जोड़ कर कोटी को।। "अग्र स्वामि" कारज सब सरिहै, उतरे भार महि को।।४।।

संध्या समें राग-मारू चढ़े हरि कनक पुरी पर आज।। कंपी धरणी थरहर्यौ अंम्बर, देख दलन कौ साज।।१।। असुर सबै पंछी ज्यों भाजै, लक्ष्मण छूटे बाज।। "सुरदास" प्रभु लंका आये, दैन विभीषण राज।।२।।

शयन में राग-केदार/मारू आज रघुपति चढ़े, लंकगढ़ लैन कों।। अवनि चंचल भई, शेष सुधि बुधि गई, कमठ की पीठ फट, मिल गई रैन कों।।१।। होत अंदोल सागर, सप्त दिगपाल भये, भयभीत अति, उड़ि चले गैन कों।। कहत मंदोदरी, सुनहुँ दशकंध पिय, लै मिलौ सीय, राजीव दल नैन को।।२।। वे तौ जगदीश, तो ईश कौ बल कहा, एक बनचर आय, जारी गयो ऐन कों।। "हरिनारायण स्यामदास" के प्रभुसों, बैर कर कंथ, पावे न सुख चेन को।।३।।

शयन में राग-अड़ानें सब गोकुल को जीवन गोपाल लाल प्यारो।। सुन्दर मुख निरखत सखी, नैन चेन पावत है, गोपी ग्वाल आंखन को तारो।।१।। रूपकी निधि काम की सिद्धि, जानत सब प्रेम की विधि, धेंनु सेंन साध के, घर आवे सवारो।। "छीत स्वामी" गिरिवर धर, अपने कर कोमल नख, राख लियो गोवर्धन भारो।।२।।

मान में राग-सारंग शुभग मुहूरत विजय दशमी को, प्रथम समागम पिय हुलास।। दूति विनती करत प्यारी सों, बेग पधारों पिय के पास।।१।। मज्जन कर आभूषण धारौं, कनक अंग पट चीर सुवास।। धीर धरौ वृषभान नंदिनी, पूरन करौ प्रीतम की आस।।२।। नवनागर संगम नवनागरी, नवसंगम बरनत "हरिदास"।। श्रीवल्लभ पदरज कृपा कों, नित्य ही नवल हृदय प्रकाश।।३।।

पोढ़वा में राग-विहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक, हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। सुन्दर बदन निहारन कारन, राख्यो है बहुत जतन कर प्यारी।।१।। कंठ लगाय भुज दे सिरहाने, अधर अमृत पीवत सुकुमारी।। तन मन मिलि री प्राण प्यारे सो, नोतन छबि बाढ़ी अतिभारी।। "कुम्मनदास" दंम्पति सोभग सीमा, जौरी भली बनी एक सारी।। नवनागरी मनोहर राधे, नवल लाल श्री गोवर्धनधारी।।३।।

आश्विन शुक्ल ११

प्रतिशृंगार कल का ही धराया गया है। श्रीमस्तक पर रूपहरी पाग छजेदार चिरा जरी का धराया गया है। पिछवाई चित्राम की श्री सुभद्राजी श्याम को जवारा धराते हुवे।

मंगला में राग-विभास चोवा में चहेल रहे हो लालन, कहों कहां गये रात दशहरा मनावन।। एकतें एक सुघर घोष नारी, तुमतौ छेल गिरिधारी, सब हिन के मनभावन।।१।। कर माँझ कर लिनौ, हंसि एक बीरा दीनौ, लै लै नाम लागे, मोहि पै गिनावन।। "धोंधी" के प्रभु बिनु सुभट ईत जनावत, बातन बतरावत जात, सखी आई समुझावन।।२।।

शृंगार में राग-बिलावल देखोरी हरि भोजन खात।। सहस्र भुजाधर उत जेंमत हैं, इत गोपनसों करत हैं बात।।१।। ललिता कहत देखहो राधा, जो तेरे मन बात समात।। धन्य सबे गोकुलके बासी, संग रहत गोकुलके तात।।२।। जेंमत देख नंद सुखदीनों, अति आनंद गोकुल नरनारी।। "सूरदास" स्वामी सुख सागर, गुण आगर नागर दे तारी।।३।।

राग-सारंग यह लीला सब करत कन्हाई।। उत जेंमत गोवर्धनके संग, इत राधासों प्रीति लगाई।।१।। इत गोपिनसों कहत जिमावो, उत आपुन जेंमत मन लाई।। आगे धरे छहों रस व्यंजन, चहूँ दिसतें अति अरग बढ़ाई।।२।। अम्बर चढ़े देवगन देखत, जय ध्वनि करत सुमन बरखाई।। "सूरश्याम" सबके सुखकारी, भक्त हेत अवतार सदाई।।३।।

राजभोग सरे तब राग-नट बिलावल आन और आन आन कहत, बिझक रहत व्रज के नरनारी।। कटु तिक्त आम्ल, खारे सलोने लोने प्रकार, खटरस सों प्रीत बाढ़ी, रससों आरोगत सुन्दर वर।।१।। गिरीराज बरन बरन, शिला सहस्त्रन, मोदक ठोर गुंजा, घेवर बाबर।। "राजाराम" के प्रभु को, जल अचवावन कारन, इन्द्र झारी भर लायो, जल धर।।२।।

राजभोग में राग-सारंग हमारों देव गोवर्धन पर्वत, गोधन जहां सुखारो।। मघवा कों बलि भाग न दीजे, सुनीयें मतो हमारो।।१।। बडरे बैठ विचार मतो कर, पर्वत कों बलिदीजे।। नंदरायको कुंवर लाडिलो, कान्ह कहे सोई कीजे।।२।। पावक पवन चंद जल सूरज, वर्तत आज्ञा लीने।। या ईश्वर को कियो होत हे, कहा इंद्रके दीने।।३।। जाके आसपास सब व्रजकुल, सुखी रहें पशुपारें।। जोरो शकट अछुते लेले, भलो मतो को टारें।।४।। मांखन दूध दह्यो घृत

घृतपक, लेजु चले व्रजवासी।। अद्‌भूत रूप धरें बलि भुगतत, पर्वत सदां निवासी।।५।। मिट्र्‌यो भाग सुरपति जब जान्यो, मेघ दीये मुकराई।। "मेहा" प्रभु गिरि कर राख्यो, नंदसुवन सुखदाई।।६।।

भोग में राग-सारंग बार-बार हरि सीखवन लागे बोलत अमृत बानी।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

संध्या में राग-हमीर हमारो कान्ह कहें सोई किजे।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

विशेषः- शयन भोग आते समय राग-कान्हरा में नित्य गोवर्धन लीला की दो बधाई गाई जाती है।

शयन में राग-केदारों जयति जयति श्री हरिदास वर्य धरणे।। वारि वृष्टि निवार घोंष आरति टार, देवपति अभिमान भंग करणे।।१।। जयति पटपीत दामिनि रूचिर वर, मृदुल अंग सामल सजल जलद वरणे।। कर अधर वेणुधर गान कलरव शब्द, सहज व्रजयुवति जन चित्र हरणे।।२।। जयति वृंदा विपिन भूमि डोलन अखिल, लोक वंदन अंबुज असित चरणे।। तरणी तनया तट बिहार नंदगोप कुमार, कहत "कुम्भनदास" त्वमसि शरणे।।३।।

मान में राग-बिहाग तोहि मिलन को बहोत करत है, मोहनलाल गोवर्धनधारी।। उत्तर बेग देहो कीन भामिनी, कहिधों कहा यह बात तिहारी।।१।। देखिरी तुं जो झरोखन के मग, तन पहरे भूमक सारी।। तन मन बसीरी प्राण प्यारे के निमिष जियतें होत न न्यारी।।२।। कहिरी सखी कहाँ हौं आऊँ, बेग बताये सूठौर विचारी।। "कुभंनदास" प्रभु वे बैठे है, जहां देखियत ऊंची चित्रसारी।।३।।

पोढ़वे में राग-विहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

आश्विन शुक्ल १२

श्रृंगार - मुकुट-काछनी का।

वस्त्र - खसखसी रंग के पटका, गुलाबी शुथन तथा काछनी सभी सोनेरी कोरकी। श्रीअंग में श्याम चोली। श्री मस्तक पर रूपहरी डांक का मुकुट धराया गया है।

मंगला में राग-भैरव मान लग्यों गिरीधर गावैं।। तत थेई तत थेई ततता थेई थेई, भैरों राग मिल मुरली बजावै।।१।। नाचत नव वृषभान दुलारी, अवधर गति में गति उपजावे।। गिरिधर पिय प्यारी की पद रज, "कृष्णदास" लै शीश चढ़ावै।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल चलहुं राधिके सुजान, तेरे हित गुण निधान, रास रच्यो कुंवर कान्ह, तट कलिदनंदिनी।। निर्तत युवति समूह, रास रंग कौतुहल, बाजत रसमूर, मुरलिका आनंदिनी।।१।। बंसीबट निकट जहाँ, परम रम्यभूमि तहाँ, सकल सुखद बहत, मलय वायु मंदिनी।। जाती ईषद विकास, कानन अतिशै सुवास, राकानिशि शरद मास, विमल चाँदनी।।२।। "कुम्भनदास" प्रभु निहार, लौचन भर घोषनारि, नखशिख सौंदर्य सीम, दुःख निकंदिनी।। विलसौ भुज ग्रीव मेल, भामिनी सुख सिंधु झेल, गोवर्धनधरण केलि, जगत वंदिनी।।३।।

राजभोग आवे तब श्री गोवर्धन लीला का पद राग-बिलावल सजी श्रृंगार चलीं व्रजनारी।। युवतिन भीरभई अतिभारी।।१।। जगमगात अंगन प्रति गेहेनो।। सबके भाव दरस हरि लेहेंनों।२।। यह मिस देखनकों सब आंई।। देखत इकटक रूप कन्हाई।।३।। ये नहीं जानत देव पुजाई।। केवल स्यामही सों लो लाई।।४।। को मग जात कहां को बोलत।। नंदसुवन सों चित नहीं डोलत।।५।। "सूर" भजें हरिकों जिहि भावें।। मिलत ताहि प्रभु तिहीं सुभावें।।३।।

राजभोग में राग-सारंग बन्यों रास मंडल अहो, वृजयुवती युथ मध्य, नायक नाचै गावै।। उघटत शब्द तत थेई ता थेई, गत में गत उपजावे।।१।। बनी श्री राधा वल्लभ जोरी, उपमा कों दीजै कोरी, लटकत हैं बांह जोरी, रीझ रिझावे।। सुर नर मुनी मोहे, जहाँ तहाँ चकित भये, मीठी मीठी तानन, लालन वेणु बजावे।।२।। अंग अंग चित्र किये, मोर चन्दा माथे दिये, काछनी काछे पीताम्बर शोभा पावे।। "चतुर बिहारी" प्यारी, प्यारे उपर वारडारी, तन मन धन, यह सुख कहत न आवे।।

भोग में राग-मालव अलाग लागन ऊरप तिरप गति, नचवत वृजललना रासै।। उघटत शब्द तत थेई तत थेई, मृगनयनी ईषद हासे।।१।। चाल चलत लजावत गावत, बांधत मदन

भ्रोंह पाशे।। चलत उरज, कटि किंकणी, कुंडल, श्रम जल कण शोभित आशे।।२।। नुपुर रूनित, क्वणित कटि मेखला, कटि तट काछे नीलन वासे।। अवधर तान मान बंधाने, मोहत विश्व चरण न्यासे।।३।। मोहनलाल गोवर्धनधारी, रिझवत छेल सुघर लासे।। अपने कंठ की पिय श्रमदल की, माला देत “कृष्ण दासे”।।४।।

संध्या में राग-मालव व्रज वनिता मध्य रसीक राधिका बनी, शरद की राति हो।। नृत्यत तत थेई गिरिधर नागर, गौर श्याम अंग कांति हो।।१।। एक एक गोपी बिचबिच माधो, बनी अनूपम भांति हो।। जय जय शब्द उच्चारत सुर मुनी, कुसुमन बरख अघाति हौ।।२।। निरख थक्यों शशि आयो शीस पर, क्यू हूँ न होत प्रभात हो।। “परमानंद” प्रभु मिले यह अवसर, बनी है आज की बात हो।।३।।

शयन भोग आते समय राग-कान्हरो। व्रज घर घर सब भोजन साजत।। सबके द्वार बधाई बाजत।।१।। शकट जोर ले चले देव बलि।। गोकुल व्रजवासी सबहीं मिलि।।२।। दधि लोंनी मधु साज मिठाई।। कहां लग कहों सबे बहुताई।।३।। घरघरतें पकवान चलाये।। निकस गांम के ग्वेंडे आये।।४।। व्रजवासी तहां जुरे अपार।। सिंधु समान पार नहिं बार।।५।। पेंडें चलन नहीं कोउ पावत।। शकट भरे सब भोजन आवत।।६।। सहस्त्र शकट चले नंदमहेर के।। ओर शकट कितने घर घर के।।७।। “सूरदास” प्रभु महिमा सागर।। गोकुल प्रगट भये हरि नागर।।८।।

राग कान्हरो इक आवत घरतें चल धाई।। एक जात फिर घर हिं समाई।।१।। एक टेरत एक दोरे आवत।। एक गिरावत एक उठावत।।२।। एक कहत आवोरे भाई।। बैल देत हें शकट गिराई।।३।। कोन काहू को काहि संभारें।। जहां तहां सब लोग पुकारें।।४।। कोऊ गावत कोऊ नृत्यत आवें।। स्याम सखन संग खेलत भावें।।५।। “सूरदास” प्रभु सबके नायक।। जो मनकरें सो करवे लायक।।६।।

शयन में राग-बिहाग बन्यों मोर मुकुट नटवर वपु, श्याम सुन्दर कमल नयन, बाँकी भ्रोंह ललित भाल, घुंघरवारी अलकें।। पीत वसन मोतीमाल, हिये पदक कठंलाल, हँसन बोलनि गावन, गडंन श्रवण कुंडल झलकें।।१।। कर पद भूषण अनूप, कोटि मदन मोह रूप, अद्भुत बदन चन्द देख, गोपी भूली पलके।। कहि “भगवान हित रामराय”, प्रभु ठाडें रास मंडल में, राधा सौं बाह जोटी, किये हियै प्रेम ललकें।।२।।

मान राग बिहाग तोहि मिलन को बहोत करत है ...(यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग नवल किशोर नवल नागरियां।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े)

आश्विन शुक्ल १३

श्रृंगार - पाग कतरा को। वस्त्र-सफेद सोनेरी टिपकी के सोनेरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। दिपावली के आगम का श्रृंगार।

मंगला में राग-भैरव लाडली नवललाल संग, रंग भरी खेले।। लालन सौं करे सैन, सखियन सों मधुरे बेन, उमग भरी दे दे तारी।।१।। पिय बिहारीलाल, ललित उर विसाल तिलक भाल, ताहि जन सकल रसन केले।।१।। सोभित सारी सूरंग, कनक नुपुर सुध अंग अंग, रंग भरी कोटि मदन पेले।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल निर्तत राधा नंद किशोर।। ताल सहचरी बजावत, बिच बिच मुरली कल घोरें।।१।। उरप तिरप पग धरत धरणि पर, मंडल फिरत भुजन भुज जोरे।। शोभा अमित विलोक "गदाधर", रीझ रीझ डारत तृन तोरे।।२।।

राजभोग आते समय (श्री गोवर्धन लीला के पद) राग-सारंग सुरपति पूजा जान कन्हाई।। बार वार बूझत नंदराई।।१।। कौन देवकी करत पुजाई।। सो मोसों तुम कहो समुझाई।।२।। महर कह्यो तब कान्ह बुलाई।। सुरपति सब देवनके राई।।३।। तुमारे हितमें करत सवाई।। जाते रहो कुशल कन्हाई।।४।। "सूर" नंद कहि भेद बताई।। भीर बहुत घर जाऊ सिखाई।।५।।

राजभोग में राग-सारंग नागरी नागर सों मिल गावत, रास में सारंग राग जम्यौ।। तान बन्धान तीन मुर्छना, दैखत वैभव काम कम्यौ।।१।। अद्‌भुत अबधि कहां लगि बरनो, मोहन मूरती बदन रम्यौ।। भज "कृष्णदास" थकित नभ उडुपति, गिरिधर कौतुक दर्प दम्यौ।।२।।

भोग में राग-नट (सारंग) नागरी नट नारायण गार्यो।। तान मान बंधान सप्त स्वर, राग सौं राग मिलायो।।१।। चरण घुंघर जंत्र भुजन पर, नीको झमक जमायौ।। तत थेई तत थेई लेत गति में, गति पति वृजराज रिझायों।।२।। सकल त्रियन में सहज चातुरी, अंग सुंगध दिखायौ।। "व्यास स्वामिनी" धन्य धन्य राधा, रास में रंग मचायौ।।३।।

संध्या में राग-गौरी गोप बधु मंडल मध्य नायक गोपाललाल, रूचिरानन बिंबाधर मुरलिका धरे।। अद्‌भुत नटवर विचित्र भेष टेक अति सुदेश, कनक कपिश काछ शिखी

शिखंड शिखरे।।१।। कुकुझाँ कुकुझाँ झनकत थोंगथोंग थोंगतकिट धिकिट धिधीकिट तकथेई उघटत रास रसभरे।। जयजय गिरिराजधरन कोटि मदन मूरति पर "हरिजीवन" बल बल व्रजपुरंदरे।।

शयन भोग आवता (श्री गोवर्धन लीला के पद) राग-कान्हरो गोवर्द्धन पूजाके दिन आये।। वच्छरा गाय देव गोवर्धन, अबकें बहुत बढ़ाये ।।१।। कहत लाल जननी बाबासों, जाइन पूजा करहें।। सब पकवान भात दधि ओदन, वाके आगें धरहें।।२।। तुम और मैया गोप ग्वाल, हम देखेंगे वाहि खात।। "श्री विट्ठल गिरिधरजुकी" बानी, दोउ हँस हँस जात।।३।।

शयन में राग-इमन लाल संग रास रंग लेत मान रसिकरवन, ग्रगृता ग्रग्रता तततततत, थेईथेई गति लिने।। सारेगमपधनी ध्वनि सुन व्रजराज कुंवर, गावत री अति जति संगति निपुण, तननननननन आन आन गति चीने।।१।। उदित मुदित शरद चंद, बंद टुटे कंचुकी के, वैभव निरख कोटि मदन हीने।। विहरत बन रास विलास, दंपति मन ईषद हास, "छीत स्वामी" गिरिवर धर रसवश तब कीने।।२।।

मान में राग-विहाग तोहि मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विराग दोऊ मिल करत भांवती बतियां।। मदन गोपाल कुँवर राधे के नखमणि अंक लिखत उर छतियाँ।।१।। तैसिय छिटक रही उजियारी पून्यों चन्द सरद की रतियाँ।। केलिरूपिणी यमुना "श्रीभट्ट" बृन्दावन फूल्यों बहुभतियाँ।।२।।

आश्विन शुक्ल १४

श्रृंगार - मुकुट-काछनी का।

वस्त्र - रूपहरी सोनेरी कोरके शुथन तथा काछनी, बड़ा पटका सफेद मलमल का सुनहरी कोरका। श्याम चोली शाटन की, श्री मस्तक पर सफेद पाग पर रूपहरी डांक का मुकुट धराया गया है। फूल व गुंजा माला, ठाड़ा वस्त्र सफेद पिछवाई चित्राम की, जिसमें रास में नाचते गोपीजनों की। रास की लीला चल रही हैं।

मंगला में राग-विभास मंजुल कर कुंज देश, राधा हरि विशद वेश, राका नभ कुमुद विहंस शरद जामिनी।। सावल युत कनिक अंग, विहरत मिल एक संग, निरद मनी नील मध्य, लसत दामनी।।१।। पीत वरन दूकूल, अनुपम अनुराग मूल, सौरभ युत वसी, नील मंद गामिनी।। किसलय दल रचत सेंन, बोलत पीय चारू बेन, मान सहत प्रतिपद, अति कूल कामिनी।। मोहन मनमथ मार, परसत कुच निहार, वे पथ जुवत वदन, नेत नेत भामिनी।। "कुंभनदास" प्रभु केल, गिरिधर सुख सिंधु झेल, सौरभ त्रीय लोक वंदी, जग पाविनी।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल आज नागरी किशोर, भांवती विचित्र जोर, कहा कहों अंग अंग, परम माधुरी।। करत केल कंठमेल, बाहुदंड गंडमंडल, परस सरस लास्य हास, रास मंडली जुरी।।१।। श्याम सुन्दरी बिहार, बाँसुरी मृदंग तार, सकल घोष नूपुरादि, किंकिणी चुरी।। देखत "हरिवंश" अलि, नृत्यत सुगंध ताल, वार फेर देत, प्राण देह सुन्दरी।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग देखोरी हरि भोजन खात।। (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग करत हरि नृत्य नवरंग राधा संग, लेत नवगति भेद चरचरी ताल के।। परस्पर दरस, रसमत भये, तत थेई थेई गति, लेत संगीत सुरसाल के।।१।। फरहरत बर्हिवर, थरहरत उपहार, भरहरत भ्रमर वर, विमल वनमालके।। खसित सित कुसुम शिर, हँसत कुंतल मानों लसत, कल झलमलात, स्वेद कण भालके।।२।। अंग अंगन लटक, मटक भृंगन भ्रोंह, पटक पटताल, कोमल चरण चालके।। चमक चल कुंडलन, दमक दशनावली, विविध विद्युत भाव, लोचन विशाल के।।३।। बजत अनुसार, द्रिम द्रिम मृदंग निनाद, झमक झंकार कटि, किंकिणी जालके।। तरल नाटक तड़ित, नील नव जलद में, यों

विराजत प्रिया, पास गोपालके।।४।। युवति जन यूथ, अगणित वदन चंद्रमा, चंद्र भयौ मंद, उद्योत तिहिं कालके।। मुदित अनुराग वश, राग रागिनी तान, गान गत गर्व, रंभादि सुर बालके।।५।। गगनचर सघन रास, मगन बरषत फूल, बार डारत रत्न, जतन भर थालके।। एक रसना "गदाधर", न वर्णत बनै चरित्र, अद्भूत कुँवर, गिरिधरन लालके।।७।।

भोग में राग-मालव चलियेजू नेंकु कौतुक देखन, रच्वौ है रासमंडल, राधे हौं आई तुम्हें लैन।। मृगमद घसि अंग लगाये, मुकुट कछनी बनाये, मुरली पीतांबर बिराजत, यह छबि मोपै कही न परै बैन।।१।। सब सखी मिलि नाचें गावें, ताल मृदंग मिलि बजावें, नृत्य करें मध्य मूरति मैन।। "सूरदास मदनमोहन" हँसत कहा हो जु, पाउँ धारिये जो पै, सुख दीयौ चाहौं नैन।।२।।

संध्या में राग-गौरी गोप बधु मंडल मध्य नायक गोपाललाल रूचिरानन बिवाधर मुरलिका धरे।। (यह पूरा पद पेज ७४ पर पढ़े।)

शयन भोग आवता राग-कान्हरो हँस हँस बात कहत मन मोहन हमारो देव गोवर्धन राई।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानों मंडल मध्य रंग भरे, श्यामा श्याम राजेरी।। धरररररररररर, मुरली घोर गाजें री।।१।। गान करत व्रजकी बाम, सप्तसुरन तीन ग्राम, अंग अंग अभिराम, मन्मथ मन लाजें री।। मंद मंद हास करें, रीझि रीझि आँको भरै, नयनन मध्य लेत भान, अति सुदेश छाजैंरी।।२।। युवती जन नृत्य करैं, स्याम ग्रीव भुजा धरैं, श्यामा संगीत उघट, रस ही रस साजैंरी।। धिधिकिटता धिधिकिटता, धिलां धिलां धिलां, धिधिकिट धिधिकिट थेई थेई, गिड़गिड़ तक बाजैंरी।।३।। रररर‌रैंन रीझ रही, ययमुना थकित भई, चचचचंद गगगगन, पपपश्चिम रथन भाजैंरी।। "कृष्णदास" प्रभु बिलास, बरखत नव रूपरास, वृंदावन वर विलास, रंग बढ़्यों आजैंरी।।४।।

मान में राग-विहागग तोहि मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग नवल किशोर नवल नागरियां।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

आश्विन शुक्ल १५

शरद पुर्णिमा रासोत्सव (देहरि, वन्दनमाल, अभ्यंग)

श्रृंगार - मुकुट-काछनी का।

वस्त्र - सुनहरी जरी के शुथन तथा काछनी दो घेर की, ऊपर सोनेरी नीचे रूपहरी, मेघश्याम चोली साटन की रेशम का बड़ा रास पटका, श्रीमस्तक पर सफेद पाग पर हीरा जड़ा मुकुट, समस्त श्रृंगार हीरा के। ठाड़ा वस्त्र सफेद पिछवाई महारास की कंदरा पर हीरा का चौकटा। सांयकाल शयन में रतन चौक में सफेद बिछात गादी तकिया, डोल तिबारी में सफेद बिछात। सिंहासन पधराकर दर्पन आरसी और समस्त रास का साज पधराया जाता है।

मंगला में राग-भेरों **मान लग्यों गिरीधर गावैं।।** (यह पूरा पद पेज ७२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **चलहुं राधिके सुजान तेरे हित गुण निधान रास रच्यो कुंवर कान्ह, तट कलिदनंदिनी।।** (यह पूरा पद पेज ७२ पर पढ़े।)

राग-सारंग **देखोरी हरि भोजन खात।।** (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

अन्नकूट के पद **यह लीला सब करत कन्हाई।।** (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग **बन्यों रास मंडल अहो वृजयुवती युथ मध्य नायक नाचै गावै उघटत शब्द तत थेई ता थेई गत में गत उपजावे।।१।।** (यह पूरा पद पेज ७२ पर पढ़े।)

भोग में राग-मालव **अलाग लागन ऊरप तिरप गति नचवत वृजललना रासै।।** (यह पूरा पद पेज ७२ पर पढ़े।)

संध्या में राग-मालव **व्रज वनिता मध्य रसीक राधिका बनी शरद की राति हो।।** (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

राग-ईमन **ग्रग्र-थुंग थुंग तित किट थुंगन, एक चरण करसों, भलें मृदंग बजावे।। दूसरे कर चरण सों, कठताल झंझंझं झपतालमें, अवधर गति उपजावे।।१।। कंठ सरस सुरहि गावे मोहन मधुर तानलावें, सकल कला पूरण, वृषभान नंदिनी पिय मन भावें।। "गोविंद" प्रभु पिय, रीझ रहे मुरझाई, दशन दशन धरकें, रहसि उरसि लपटावे।।२।।**

विजयादशमी

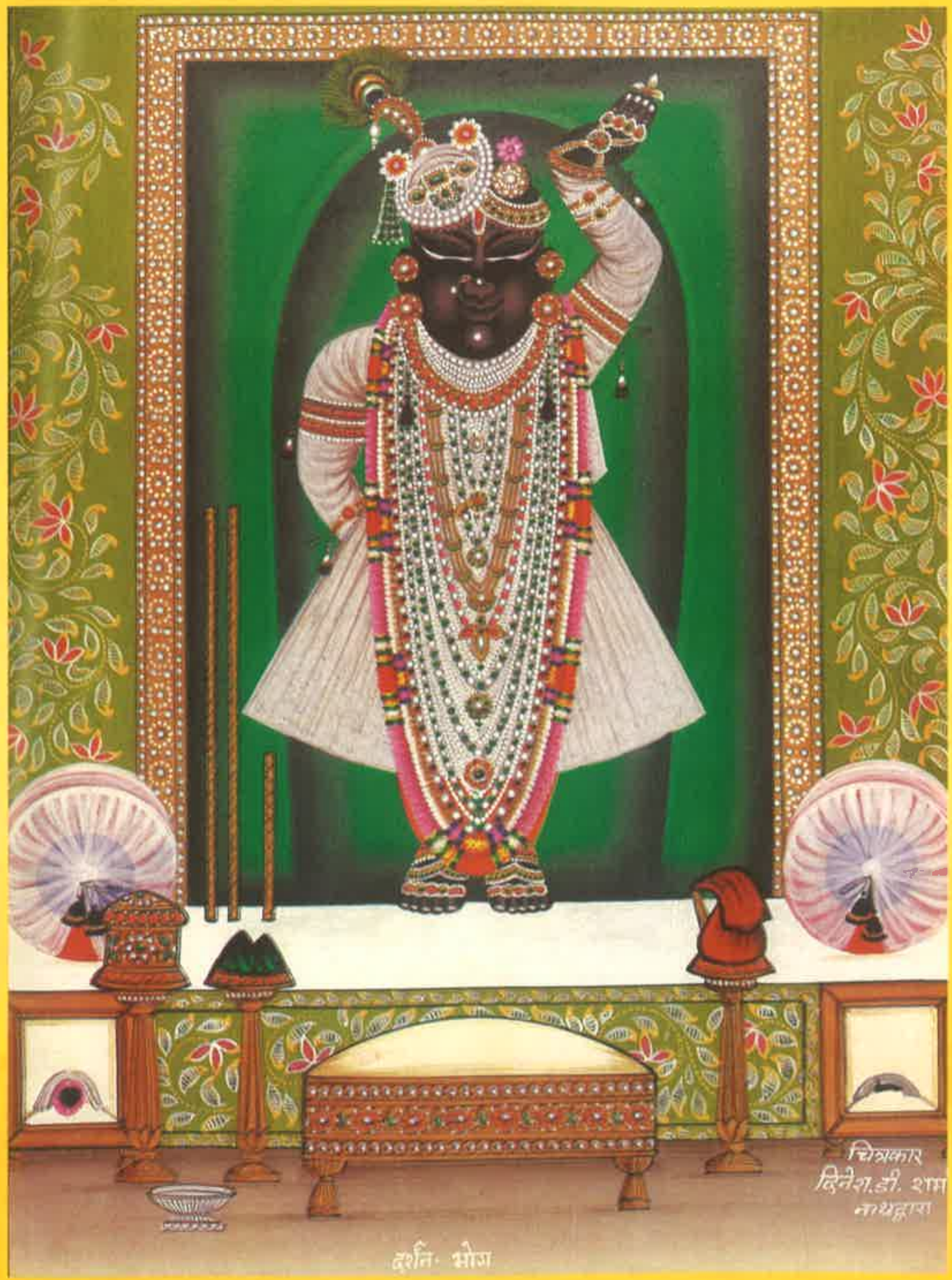
चित्रकार
दिनेश.डी. शम
नाथद्वारा
दर्शन· भोग

प.भ. श्रीमती प्रवीणा बेन एवं श्री राजेश भाई नगरा, मुंबई
का जय श्री कृष्ण

महारास

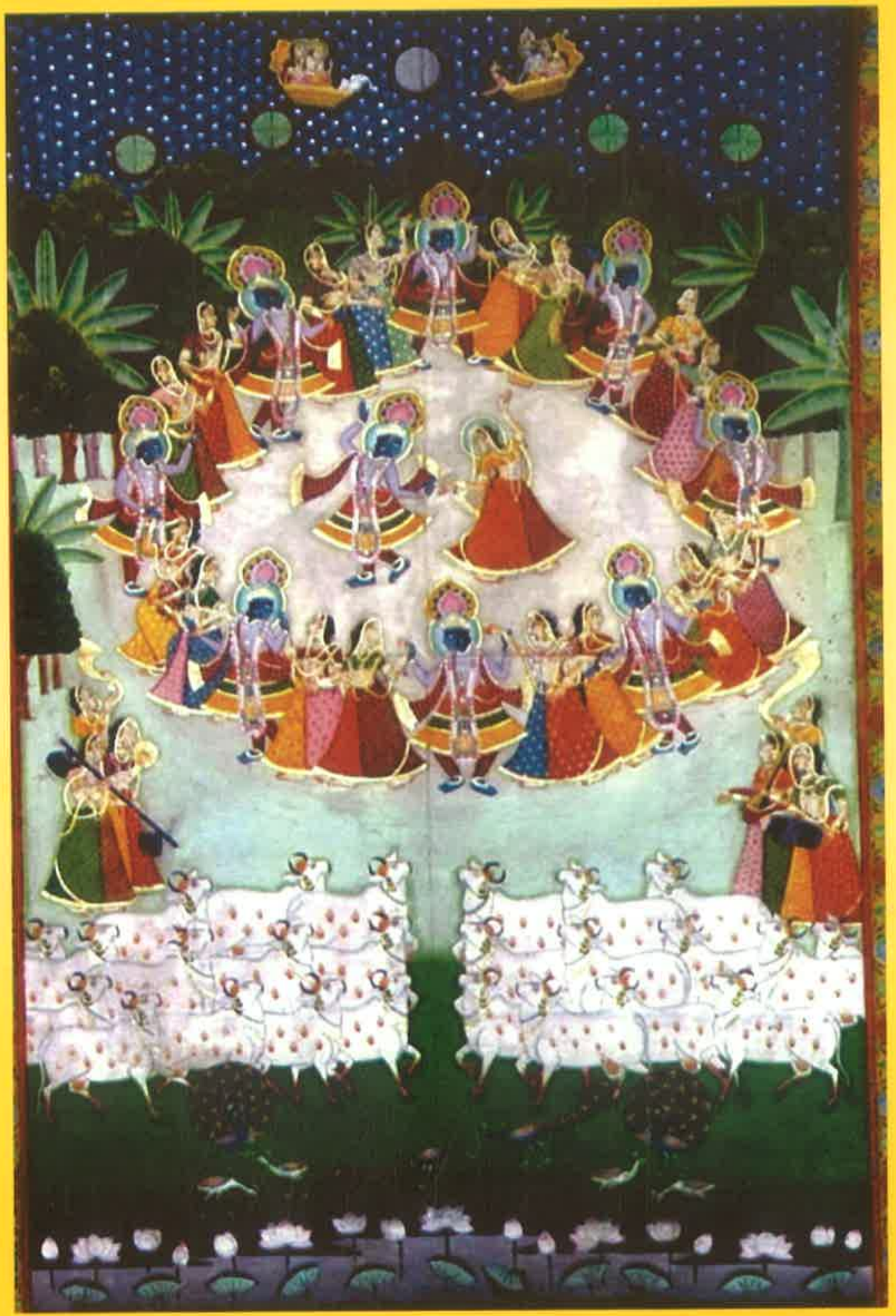

पं.भ. श्रीमती दक्षा बेन एवं श्री हेमन्त भाई ठक्कर, मुम्बई का जय श्री कृष्ण

राग-ईमन श्याम सजनी शरद रजनी, पुलिन मध्य नृत्य नाट, तांतृगता तांतृगता तिरप बंद करत कामिनी।। गिड़गिड़ा गिड़िगिड़ा, गिड़गिड़गिड़ गिड़गिड़ां धिधीकिटता लागदई झांझांझां झननननन, सुर उपंगनी।।१।। श्याम को यह नाद भावे, तांत्रगता तांत्रगता गतिहिं लावे, ततततततत शब्द लेत, कोटि कामिनी।। "कृष्णदास" यशहि गावे, कर ताथेई थेई नचावे, कांकृति कांकृति कांकृति, कांकृति करे मृदगंनी।।२।।

राग-ईमन श्याम नवल नवल वधू, कुंजन मध्य नवलकेली, चंद नवलरास रचित, शरद शर्व री।। ताल धरनी एक मृदंगनि, एक रबाब बजावे, उपंगन मध्य नायक, नांचत गावत जोरी कर्व री।।१।। तट तरंगन निकट तरूणी, कटितट मृदु चंपक वरणी, वाम दक्षण प्रीति, भाव करत गर्व री।। गिरीवरधर मदनमोहन, भूल रह्यों सकल गगन, मगन "कृष्णदास" कहत, बहूत प्रेम पर्व री।।२।।

राग-कान्हरों बन्यों मोर मुकुट नटवर वपु श्याम सुन्दर कमल नयन, बाँकी भ्रोंह ललित भाल घुंघरवारी अलकें।। (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

राग-कान्हरों निर्तत रास रंगा, रसिक रस भरे हों। सुलप संचगति लेत, ग्रग्रततत थेई थेई बाजत मृदंग।।१।। ताल झांझ किन्नरी कतर भेद, तैसीये मिली सरस सुर उपंगा।। "गोविंद" प्रभु के रसमाते युवती यूथ मधि, खसित कुसुम शिर मोतीन मंगा।।२।।

राग-अड़ानो मंडल मध्य रंग भरे श्यामा श्याम राजेरी।। (यह पूरा पद पेज ७७ पर पढ़े।)

राग-अड़ानों बंशीवट के निकट हरिरास रच्यों है, मोर मुकुट और ओढ़ें पीत पट।। श्री वृन्दावन कुंज सदन वन, सुभग पुलिन और यमुना के तट।।१।। आलस भरे दोउ जन, श्रीराधाजु और नागर नट।। "व्यास" रसिक तन मन धन फूले, लेत बलैया कर अंगुरिन चट।।२।।

राग-केदारों सुन ध्वनि मुरलि बन बाजे, हरि रास रच्यों।। कुंज कुंज द्रुमवेली प्रफुल्लित, मंडल कंचन मणिन खच्यों।१।। नृत्यत युगल किशोर बली, जन मन मिल राग केदारो सच्यों। "हरिदास" के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी, नीके आज गोपाल नच्यों।।२।।

राग-केदारों श्रीहरि वृंदावन कालिंदी तट रास रच्यो।। सरद मास मिली फुली, लख खेलन को मन कीयो, जोग माया या समीप धर उर भट।।१।। तब उडुराज दिसा प्राची मुख

आयो, अरून किरन प्रसरि निकर।। निरख विमल मंडल की सोभा, तेसोई वन कोमल कर राजत लगावत जो मनोहर।।२।। यह सुनके आई ब्रज की त्रीये, बढ़ अनंगन दियो हरकर।। एक एक गोपी पति सनमुख, और कछु देखियत नांहिन, द्रिग कुंडल लोल परस्पर।।३।। थ्रीं थ्रीं किट थुंगथुंग गिड़गिड़, तत थै थै तत थै तत थै तत थै थै थै उचरत।। पीताम्बर मालाधर नाचत श्रीगिरधर, मनमथ मनमथ के बंधत तन वारत।।४।।

राग-केदारो रेन रीझी हो प्यारे हरि को रास देख, याहीतें अधिक बढ़ गईरी गेन।। चल न सकत हरि रूप विमोही रही, एक टक आछे नक्षत्र नैन।।१।। छबिसों छूटत मानों बिचबिच तारे, हीरा के आभूषण पर वार डारों जग एन।। चंदाहू थकित भयों, देखवेके लालच रहयों, भयौ देखकें परम चेन।।२।। जौलौं इच्छा भई तौलौं नाँचें है गोपी गोपाल, अद्‌भुत गति मौपै, कहीं न परत बैन।। “नन्ददास” प्रभु को, विलास रास देखवे कुँ, मन्मथहु कों मन मथ्यौरी मैन।।३।।

राग-केदार अद्‌भुत नटभेख धरैं, यमुना तट श्यामसुन्दर, गुणनिधान गिरिवरधर, रास रंग नाचें। युवतीयूथ संगलियै, गावत केदारों राग, अब धर वेणु मधुर मधुर, सप्त स्वरन साचें।।१।। उरप तिरप लागडाट तततत तत थेई थेई, उघटत शब्दावली गति, भेद कोऊ न वांचैं।। “चतुर्भुज” प्रभु वन विलास, मोहे सब सुर आकाश, निरख थक्यों चंद को रथ, पश्चिम नहीं खांचैं।।२।।

राग-बिहाग खेलत रास रसिक रस नागर।। मंडित नव नागरी, निकर वर रूपको आगर।।१।। विकसत वनवनिता, राजत जानों शरद अमल।। राका सुभग सरोवर, मानों फूलेहें कमल।।२।। नवल किशोर सुन्दर सांवल, अंग कंचन तन व्रजबाला।। मानों कंचनमणि मर्कतमणी, वृंदावन पहेरी माला।।३।। या छबिकी उपमा कहिवे कों, एसो कवि कोन पढ्यो है।। “नंददास” प्रभुको कौतुक लख, कामको काम बढ्यों हे।।४।।

राग-बिहाग राजत रंग भीनी भामीनी, सांवरे प्रीतम संग।। निर्तत चंचल गति कही न परत दुति, लहलहान सीखी, नवधन जहां दामिनी।।१।। जुवति मंडल में, मध्य रूप गुनकी अवधि, ताते कहावे, संगीतकी स्वामिनी।। राग रंग की रानी, ततथेई की कलबानी, कछुक सीखी कोकीला की कामिनी।। “नन्ददास” रीझे तहां, अपने पौ वार्यो जहाँ, रवन रंभा अभिरामिनी।।२।।

राग-बिहाग शरद सुहाई हों यामिनी, भामिनी रास रच्यौं।। बंसीबट यमुनातट, शीतल मंद सुगंधी समीर सच्यौं।।१।। बाजत ताल मृदंग राधासंग, मोहन सरस सुगंध नच्यौं।। उरप तिरप गति लेत सुलप अति, विथकित लज्जित मदन लच्यौं।।२।। कोक-कला संगीत रस, गीतरूप मधुरता गुणन बच्यौं।। भृकुटी विलास हास रस बरखत, "व्यास" परम सुख नयन जच्यौं।।३।।

राग-बिहाग पियकों नचवन सिखवत प्यारी।। वृन्दावन में रास रच्वों है, शरदरैन उजियारी।।१।। तालमृदंग उपंग बजावत, अति प्रवीन ललितारी।। रूप भरी गुण हाथ छरी लिये, डरपत लाल बिहारी।।२।। वीणा वेणु नूंपुर ध्वनी बाजत, खग मृग बुद्धि बिसारी।। "व्यास" स्वामिनी की छबि निरखत, रीझ देत कर तारी।।३।।

राग-बिहाग (प्रथम आरती समय) वृषभान नंदिनी नाचत लालन गिरधर संग, लाग डाट उरप तिरप रास रंग राख्यों।। झपताल मिल्यों रागकेदारों सप्तस्वरन, अवधर सुघरतान गान रंग राख्यों।।१।। पाई सुख सुरति सिद्धि भरत काम विविध रिद्धि, अभिदल नवसत सुहाग हुलास रंग राख्यों।। वनिता शत-यूथ के पिय, निरख थक्यों सघन चंद, बलीहारी "कृष्णदास" सुयश रंग राख्यों।।२।।

राग-केदारों आज मोहन रची रास रस मंडली। उदित पूरण निशानाथ निरमल दिशा देख, दिनकर सुता सुभग पुलिन स्थली।।१।। बीच हरि बीच हिरणाक्ष माला रची, तरूलता पिच्छ मानों कनक कदली रली।। पवन वश चपल द्रुम डुलनसी देखियत, चारू हस्तक भेद भाँत भारी भली।।२।। चरण विन्यास, कर्पूर कुंकुम धुरि, पूरि रही दिश विदिश कुंजन बन की गली।। कुंद मंदार अरविंद मकरंद मिली, कुंज पुंजन मिले मंजु गुंजत अली।।३।। गान रस तनक बाण वेध्यों विषपान, अभिमान मुनी ध्यान जिय दलमली।। अधर गिरिधरन के लाग अनुराग मिल, जगत विजई भई मुरलीका काकली।।४।। रस भरे मध्य मंडल विराजत खरे, नंद नन्दन कुंवर वृषभान की लली। देख अनिमेष लोचन "गदाधर" युगल, लेख जिय आपने भाग्य महिमा फली।।५।।

राग-ईमन मोहनी मदन गोपाललाल की बांसुरी।। मधुरे श्रवण पुट सुनत स्वर राधिके, करत रतिराजके तापकौ नास री।।१।। शरद राका रजनी विपिन वृंदा सुखद, अनिल तन मंद अति शीतल सुवास री।। सुभग पावन पुलिन भृंग सेवत नलिन, कल्पतरू रूचिर बलवीर

कृत रास री।।२।। सकल मंडल भली जहां हरिसों मिली, वनिता वर बनी उपमा कहौं कासु री।। कूज कंचन तनी लाल मरकतमणी, उभय कलहंस "हरिवंश" बल दास री।।३।।

राग-बिहाग रासमें रसिक मोहन बने भामिनी।। सुभग पावन पुलिन सरस सौरभ नलिन, मत्त मधुकर निकर शरद की यामिनी।।१।। त्रिविध रोचक पवन ताप दिनमणि दवन, तहां ठाडे रवन संग शत कामिनी।। ताल वीणा मृदंग सरस नाचत सुधंग, एकते एक संगीत की स्वामिनी।।२।। राग रागिन जमी विपिन वरखत अमी, अधर बिंबन रमी मुरली अभिरामिनी।। लाग डाट उरप सप्तस्वरन सों सुलप, लेत सुन्दर सुभग राधिका नामिनी।।३।। ततथेई करत गतिब नूतन धरत, पगन डगमग धरत मत्त गजगामिनी।। धाय नवरंग धरी उरसि राजत खरी, उभय कलहंस "हरिवंश" घनदामिनी।।४।।

राग-बिहाग (द्वितीय आरती) वृषभान नंदिनी नाचत लालन गिरिधर संग।। यह पद पहली आरती के समय आया है। (यह पूरा पद पेज पर ८१ पढ़े।)

श्री कमल चोक में राग-केदारो पूरीपूरी पूरणमासी, पूर्‌यौ पुर्‌यौ शरदकौ चंदा।। पूर्‌यौ है मुरली स्वर केदारो, कृष्ण कला संपूरण भामिनी, रास रच्यौ सुख कंदा।।१।। तान मान गति मोहन मोहे, कहियत औरही मन मोहंदा।। नृत्य करत श्रीराधा प्यारी, नचवत आप बिहारी, उघटत थेईथेई थुंगन छंदा।।२।। मन आकर्षि लियौ बृजसुंदरी, जयजय रूचिर रूचिर गति मंदा।। सखी असीस देत "हरिवंशी", तैसेंई बिहरत श्रीवृंदावन, कुँवरिकुंवर नंदनंदा।।३।।

विशेष टिप्पणी - आज पोढ़ने के कीर्तन नहीं होते है।

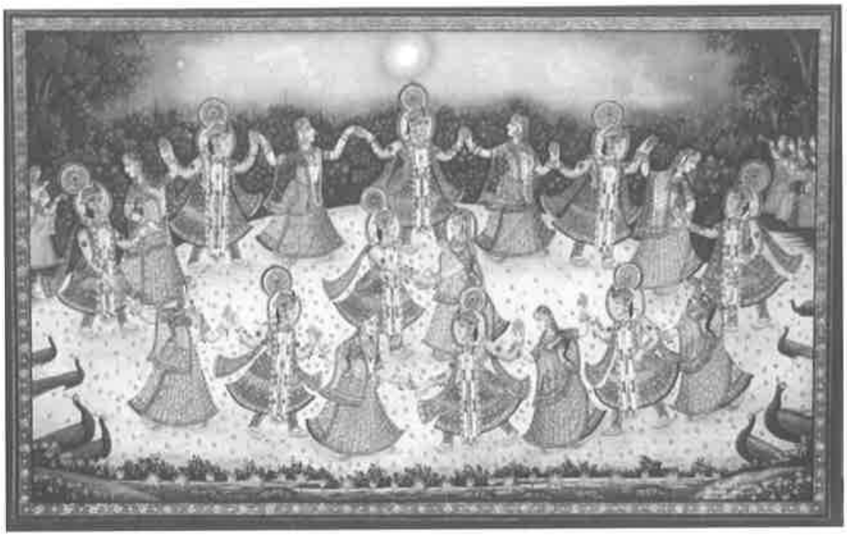

॥ उत्सव निर्णयः ॥

कार्तिक मास

१. श्री धनतेरसः- कार्तिक कृष्णा १३ को धनतेरस को त्रयोदशी उदयात् लेनी। दो त्रयोदशी हो तो पहली लेनी तथा क्षय हो तो अगली लेनी।

२. श्री रूपचतुर्दशीः- कार्तिक कृष्णा १४ को रूप चतुर्दशी को चतुर्दशी चन्द्रोदय व्यापिनी लेनी। यदि दो हो और दोनों चन्द्रोदय व्यापिनी हो तो पहली लेनी। यदि क्षय हो तो अगली लेनी।

३. श्री दीपोत्सवः- कार्तिक कृष्णा ३० (अमावस्या) दिपावली, सो अमावस्या प्रदोषव्यापिनी लेनी चाहिये। प्रदोष काल सूर्यास्त होने लगे तबसे छह घडी तक के समय को प्रदोषकाल कहते है। यदि प्रदोषव्यापिनी दो दिन हो तो पहले दिन माननी। यदि दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो भी पहले दिन माननी चाहिये।

४. श्री अन्नकूटोत्सवः- अन्नकूट को उत्सव दिपावली के दूसरे दिन मानना चाहिये। साथही उस दिन कुछ समस्या हो तो कार्तिक सुदी पूर्णिमा तक जब बने करना चाहिये।

५. श्री भाई दूज निर्णयः- कार्तिक शुक्ला दूज भाई दूज, सो दूज मध्यान व्यापिनी लेनी। मध्यान का लक्षण पहले वामन द्वादशी के निर्णय में लिखा है और मध्याह व्यापिनी न होय तो उदयात् होय उस दिन मानना।

६. श्रीगोपाष्टमी निर्णयः- कार्तिक शुक्ला अष्टमी गोपाष्टमी सो उदयात लेनी। दो अष्टमी होय तो पहली लेनी और क्षय हो तो अगली लेनी।

७. श्री प्रबोघनी निर्णयः- कार्तिक शुक्ला एकादशी प्रबोधनी सो उस दिन व्रत करना उस दिन भद्रा रहित समय में देवोत्थापन करनो। व्रत का प्रकार प्रथम एकादशी के निर्णय में लिखा है।

८. श्री गिरिघरजी को जन्मोत्सव निर्णयः- कार्तिक शुक्ला द्वादशी के दिन श्री गिरिधरजी को जन्मोत्सव। सो द्वादशी उदयात लेनी। दो द्वादशी हो तो प्रथम द्वादशी के दिन उत्सव मानना। द्वादशी का क्षय हो तो अगली में उत्सव मानना।

कार्तिक कृष्ण १

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का। शरद पूर्णिमा वाला ही श्रृंगार आज धराया गया है।

वस्त्र - जरीके, शुथन तथा कटि में काछनी उस पर सोनेरी व रूपहरी घेर नीचे। श्री अंग में चोली बादली रंग की शाटन की तथा पिताम्बर दरियाई का। श्रीमस्तक पर पाग पर हीरा जड़े हुवे मोर मुकुट का धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद रंग के तथा पिछवाई दोनों तरफ रास मंडल में खेलते हुवे धराई गई है।

आभरण - श्रीमस्तक पर ठाडिलड़ मोतीकी, शिशफूल व कुंडल हीराके। श्रीमुखारविंद पर तिलक माणक का, अलंकार, कमलाक्ष, नखवेसर माणक मोती की सामील पिरोये गये। गुंजामाला तथा फूलकी माला धराई गई है। श्रीहस्त में नखावली, मुद्रिका हीरा की, हस्तपान, पोंची, बाजु सभी हीरा-मोती के तथा श्रीचरणकमल में नखावली, पगपान, पायल, पेंजनी सभी हीरा जड़े हुवे, नुंपुर सोने के, वेणुवैय हीरा जड़े हुवे, फूल की छड़ी धराई गई है।

विशेष – श्री रास लिला सम्पूर्ण।

मगला में राग-विभास **मरगजी और कुन्दमाल, लोचन अलसात लाल, डगमगात चरण धरणि, धरत रेन जागे।। भालतें खस मोर मुकुट, भृकुटी तट आयो निकट, शिथिल चपल चंद्रिकासो, बांधी पाट तागे।।१।। अतसी कुसुम तन सुभांत, कहूंकहूं कुंकुमकी कांति, मदन नृपति पीक छाप, युग कपोलन लागे।। "छीतस्वामी" गिरिवरधर, सौरभ रसमत्त मधुप, संगम गुण-गान करत, फिरत आगे आगे।।२।।**

श्रृंगार में राग-रामकली **देखों देखौरी नागरनट, निर्तत कालिंदी तट, गोपिन के मध्य राजें, मुकुट लटक।। काछिनी किंकणी काछे, पीतांबर की चटक, कुण्डल किरण, रवि रथ की अटक।।१।। तत थेई ताता थेई, शब्द सकल घट, उरप तिरप जति, पग की पटक।। रास में श्रीराधे राधे, मुरली में एक रट, "नंददास" गावै तहाँ निपट निकट।।२।।**

राजभोग आवता रांग-सारंग **अन्नकूट कोटिक भातन सों, भोजन करत गोपाल।।** (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग **करत हरि नृत्य, नवरंग राधा संग, लेत नवगति भेद, चरचरी ताल के।।** (यह पूरा पद पेज ७६ पर पढ़े।)

भोग में राग-मालव रास विलास गहे कर पल्लव, एक एक भुज ग्रीवा मेली।। द्वे द्वे गोपी बिचबिच माधों, नर्तत संग सहेली।।१।। टूट परी मोतिन की माला, ढूंढ़त फिरत सकल ग्वारी।। विंगलित कुसुममाल कच विलुलित, निरख हंसे गिरिवरधारी।।२।। शरद विमल नभ चंद बिराजे, नर्तत नन्द किशोरा।। “परमानंद” प्रभु वदन सुधानिधि, गोपी नयन चकोरा।।३।।

आरती के समय राग-बिहाग वृषभाननन्दनी नाचत, लालन गिरधरन संग, लागडाट उरप तिरप, रास रंग राख्यो।। झपताल मिल्यों राग, केदारों सप्त स्वरन, अवधरवर सुधरतान, गान रंग राख्यों।।१।। पाई सुख सुरत सिद्धि, भरत काम विविध रिद्धि, अभिनय दल शत सुहाग, हुलास रंग राख्यों।। वनिता शत यूथको, पिय निरख थक्यों सघनचंद, बलिहारी “कृष्णदास”, सुघर रंग राख्यों।।१२।।

संन्या में राग-मालव वृज वनिता मध्य रसिक राधिका, बलि शरद की राति हो।। नृत्यत तत थेइ गिरिधर नागर, गौर श्याम अंग कांति हो।।१।। एक एक गोपी बिचबिच माधों, बनी अनूपम भांति हो।। जयजय शब्द उच्चारत सुरमुनि, कुसुमन बरख अघाती हो।।२।। निरख थक्यों शशि आयो शीशपर, क्यों हू न होत प्रभाति हो।। “परमानन्द” मिले यह अवसर, बनी है आजकी बाति हो।।३।।

मान के पद राग-केदारों आज आये मेरे धांम श्याम, माई नागर नंदकिशोर।। चंदारे तू थिर व्हे रहियों, होंन न पावें भोर।।१।। दादुर-चकोर-पपैया बोलो, बोलो बन के सब मोर।। “नंददास” प्रभु वे जिन बोलो, वारो तम चर खोर।।२।।

शयन में राग-केदारों पूरी पूरी पुरणमासी पूर्यों पूर्यों शरद को चंदा।। (यह पूरा पद पेज ८२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग दोउ मिल करत भामति बतियाँ।। (यह पूरा पद पेज ७५ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण २

दिपावली को आगम को श्रृंगार

श्रृंगार - पीले दुमाला का।

वस्त्र - पीली जरीके सोनेरी कोरके, शुथन तथा बागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पीलो दुमालो तथा उस पर मोर पिच्छ के काम का कतरा - कलंगी, ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई शाटन की इसमें गायें श्रीजी के पास खड़ी है।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार हीरा-मोती के धराये गये है।

विशेष - आज से सभी दर्शनों में गोवर्धन लीला के पद गाये जाते है।

मंगला में राग-बिलावल _गोकुल को कुल देवता प्यारों गिरिधर लाल।। (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल सात वरष को सांवरों बोलत तुतरात।। (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-सांरग अन्नकूट कौटिक भांत सो भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राग-सारंग देखोरी हरि भोजन खात।। (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राग-बिलावल पूजा सुनत बहुत सुखकीनो।। भली करी हमकों सुध दीनों।।१।। यह बानी सब मुखते कीनों।। बड़ो देव सब इनकों चीन्हों।।२।। इनही तें व्रजवास वसीनों।। हम सब अहीर जाति मति हीनों।।३।। पूजाकी विधि करत सबे मिली।। जैसी भांत सदां तैसी चलि।।४।। बिदा मांग नंद सों गृह आये।। घरन घरन यह बात चलाये।।५।। "सूरदास" गोपन की बानी।। व्रज नर-नारि सबन यह जानी।।६।।

राग-सारंग यह पूजा मोहि कान्ह बताई।। भूल्यों फिरत द्वार देवनके, त्रिभुवन पति तुमको बिसराई।।१।। आपही कृपा करी स्वप्नांतर, बालकको जो दई दिखाई।। ऐसे प्रभु कृपाल करूणामय, बालक की अति करी बड़ाई।।२।। गिरि पांयन हरिको ले डारत, हलधर कों पांयन तरलाई।। "सूरश्याम" बलराम तिहारे, इनपें कृपा करो गिरिराई।।३।।

राग-सांरग यह लीला सब करत कन्हाई।। (यह पूरा पद पेज ६२/७० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग सुनिते तात इमारों मतों, श्री गोवर्धन पूजा कीजे।। जो तुम यज्ञ रच्यो सुरपति को, सोई याहि ले दीजे।।१।। कंदमूल फल पोहोपन की, निधि जो मांगें सो पावें।। यह गिरि वास हमारो निशदिन, निर्भय गाय चरावें।।२।। बड़रे बैठ विचार मतोकर, परबत कों बलिदीजे।। विविध भांत को अन्नकूट रचि, षटरस व्यंजन लीजे।।३।। यह नग नाना रूप धरतहें, व्रजजन को रखवारो।। देवनमें यह बड़ो देवता, मोहूंकों अति प्यारो।।४।। दूध दहीके माट भराये, व्यजंन अमित अपार।। मधु मेवा पकवान मिठाई, लावो भर भर थार।।५।। नंदनंदन ही और रूपधर, आपुन भोजन कीनों।। "कैशव" प्रभु गिरिधरन लाडिले, मांग-मांग कें लीनों।।६।।

भोग व संख्या आरती में (एक ही पद) राग-नट बिलावल अपने अपने टोल कहत ब्रजवासियां।। शरद कुहू निश जान, दीपमालिका जो आई।। गोपन मन आनंद फिरत, उनमद अधिकाई।। ऐं पन थापे दीजीयें, घरघर मंगलचार।। सातवरस को सांवरो, खेलत नंददुवार।।१।। बैठ नंद उपनंद बोल, वृषभान पठाये।। सुरपति पूजा जान, तहां चल गोविंद आये।। बार-बार हाहा करें, कहो बाबा यह बात।। घरघर गोरस संचिये, कोंन देवकी जात।।२।। कान्ह तुम्हारी कुशल जान, एक मंत्र उपेहें।। खटरस व्यजंन साज, भोग सुरपति कों देहें।। नंद कहूयों चुचकारकें, जा दामोदर सोय।। वरस द्यौंसको द्यौंसहें, महामहोत्सव होय।।३।। तब हँस बोले लाल, मंत्र बहोर्यो एक कीनों।। आदि पुरूष निज जान, रेंन सपनों मोहि दीनों।। सब देवन को देवता, गिरि गोवर्धन राज।। ताहि भोग किन दीजियें, सुरपति को कहा काज।।४।। बाढे गोधन वृंद, दूध दधिको कहा लेखो।। यह परचो विधमान, नयन अपने किन देखो।। तुम देखत बल खायगो, मोंहों मांग्यो फल देय।। गोप कुशलजो चाहियें तो, गिरी गोवर्धन सेय।।५।। गोपन कियो विचार, सबन मिल सकट जो साजे।। बहु विध कर पकवान, चलें जहां बाजन बाजे।। एक वनही वनको चले, एक नंदीसुर भीर।। एकन पेडो पावही, फूले फिरत अहीर।।६।। एक उवटव्है चले, एक वनही वन छाये।। एक गावें गुण गोविन्द, प्रेम उमगे न समाये।। गोपन को सागर भयो, गिरि भयो मंदराचार।। रत्न भईं सब गोपिका, कान्ह विलोवन हार।।७।। व्रज चोरासी कोस, परे गोपन के डेरा।। लंबे चोवन कोस, जहाँ व्रजवास वसेरा।। सबहिन के मन सांवरें, देखियत सबन मंजार।। कौतुक भूले देवता, आये लोक विसार।।८।। लीने विप्र बुलाय, यज्ञ आरंभन कीनों।। सुरपति पूजा मेंट, राज गोवर्धन दीनों। नंद प्रतीत जो चाहिये, तो तुम देखत बलि खाय।।८।। प्रथमही दूध न्हवाय,

बहोरि गंगाजल ढार्यो।। बडो देवता जान, कान्हको मतो बिचार्यो।। जेसेहें गिरिराजजू, तैसो अन्नको कोट।। मग्न भये पूजा करें, नरनारी बड़ छोट।।१०।। सहस्त्र भुजा उरधरें, करें भोजन अधिकाई।। नख शिखलों अनुहार, मानों दूसरो कन्हाई।। ललिता राधासों कहे, तेरे हृदे समाय।। गहे अंगुरिया नंदकी, सो ढोटा पूजा खाय।।११।। पीत दुमालो बन्यौ, कंठ मोतिन की माला।। सुंदर सुभग शरीर, झलमले नयन विशाला।।१२।। श्यामकी शोभा गिरि भयों, गिरिकी शोभा श्याम।। जेसो परवत भातको, ढिंग भैया बलराम।।१३।। भयो भात को कोट, ओट गिरिराज छिपानों।। व्यजंन बहुत बनाय, कहाँलों नाम बखानों।।१४।। बरा बिराजे भातपे, चंदा पटतर सोय।। यज्ञ पुरूष भोजन करे, सब देवन सुख होय।।१५।। जेसी कंचनपुरी, दिव्य रत्नसों छाई।। बलि दीनी हे प्रात, छांह चली पूरब आई।।१६।। बदरोला वृषभानकी, रही विलोवन हार।। ताकी बलि उन देवता, लीनी भुजापसार।।१७।। सब सामग्री अरपी, गोप गोपिन करजोरें।। अगणित कीने स्वाद, दास बरणे कहा थोरे।।१८।। यह विध पूजा कीजिये, कह्यो सबन समुझाय।। श्याम कह्यो “सूरदास” सों, मेरी लीला सरस बनाय।।१९।।

शयन भोग आवे तब राग-कान्हरौ हमारो कान्ह कहे से कीजे।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-केदार जयति जयति श्री हरिदास वर्य धरणे।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

मान में राग-विहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ३

श्रृंगार व वस्त्र (ऐकादशी के आगमका) वस्त्र श्याम जरीके रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार, पटको तथा श्रीमस्तक पर श्याम जरीको चीरो छज्जेदार पाग तथा उसपर सोनेरी जरीके कामका जमावका कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र पीला तथा पिछवाई लाल गंगा जमनी जरीकी भरत कामकी धराई गई है।

आभरण नित्यानुसार भारी श्रृंगार धराया गया है।

मंगला में राग-बिलावल **सात वरष को संवरों बोलत तुतरात।।** (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **अपने अपने टोल कहत ब्रजवासियां।।** (यह पूरा पद पेज ८७ पर पढ़े।)

राजभोग आने पर **अन्नकूट कोटिक भांतन सो, भोजन करत गोपाल।।** (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग **हमारों देव गोवर्धन पर्वत गोधन जहां सुखारो।।** (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राग-बिलावल (यह पद भोग दर्शन से शयन तक गाया जाता है) **गोद बैठे गोपाल, कहत व्रजराजसों।। अहो तात एक बात, श्रवण दे सुनोजो मेरी।। भवन मांझ हों गयो, धरी जहां सोंज घनेरी।। में हँस माँग्यो मायपें, भोजन देरी मोहि।। कर लकुटी ले यों कह्यो, यह क्यों देहों तोहि।।१।। क्षुधित जानकें नेह, रोहिनी निकट बुलायो।। दुध प्याई चुचुकार, शीखदे कंठ लगायो।। यह बलि भुक्ते देवता, कह्यो हरें लगकान।। तातें रचि पचि करतहें, शाक पाक पकवान।।२।। यह निश्चय कर कहो, कौनसो देव तुम्हारो।। जो इतनी बलि खाय, काज कहा करे हमारो।। कहा देवको नाम हे, कोन लोकको नाथ।। इकलो ही भोजन करे, के ले अपनों गण साथ।।३।। सुनो श्याम चित लाय, देव की कहूं कहानी।। आगम निगम पुराण कहें, ऋषिवर मुनि ज्ञानि।। सब सुख निधि सुरलोक हे, कहीयत ताको ईश।। सेवत हें सब देवता, जाहि कोटि तेंतीस।।४।। जाके अनुचर मेघ, वरष जल धरणी पोषें।। अन्नादिक फल फूल निपज, परजा संतोषे।। बहु तृण उपजें पशुन कों, भरे सरोवर तोय।। देव दिवारी पूजिये, तो व्रज अति सुख होय।।५।। एक बात हों कहूं बावा, जो सांची मानो।। ऐसे अनुचर कोटि**

कोटि, कहि कहा बखानो।। अश्वमेघ शत तें लहे, इंद्रासन को भोग।। व्रजरज कण पावे नहीं, कोटि यज्ञ तप योग।।६।। सो प्रभु अबही चलो, तुम्हें हों निकट बताऊं।। मन भावे तब बोल, आपने संग खिलाऊं।। गोवर्द्धन की तरहटी, हम वच्छ चरावन जांय।। अखिल लोक के नाथ सों, छाक बांट हम खांय।।७।। ब्रह्मा शिव मुनि रटें, तनक पावे न बसेरो।। काटे विघ्न अनेक, संदा व्रज वासिन नेरो।। वेद उपनिषद में कह्यो, सो गोवर्द्धन राय।। बडरे बैठ विचार मतोकर, गोधन पूजो आय।।८।। भये नंद मनमुदित, बडे सब गोप बुलाये।। कान्ह कहें सो करो, भये सबहिन मन भाये।। शकट पूतना आदि दे, डारे विघ्न नसाय।। गिरि प्रताप चिरकालतें, थिर व्रजवास वसाय।।९।। हरख नंद उपनंद, सकल व्रज दई दुहाई।। सुरपति पूजा मेंट, राजा गोवर्द्धनराई।। आदिलोक वैकुंठलों, व्रज परिपूरण सोय।। व्रजवासिन हितकारने, आये हरि गिरि होय।।१०।। सुन व्रजवासी सकल, हरख मन करी बधाई।। कहा करेगो इंद्र, हमारो कृष्ण सहाई।। गोपी गोसुत गाय ले, ओर बालक संग लाय।। गोप चले उत्साह सों, पूजन कों गिरिराय।।११।। अगणित शकट जुराय, साज पूजाकी साजें।। कान परी नहीं सुनत, चहूंधां बाजन बाजें।। व्रजनारिनके यूथसों, चली यशोदा माय।। गोधन गाय मल्हाव हीं, उर आनंद न समाय।।१२।। चले नंद उपनंद आदि, व्रजनंद अगाऊ।। करत परस्पर ख्याल, चले मोहन बलदाऊ।। वृद्ध तरूण बारे सबे, व्रज घर रह्यो न कोय।। अपनो कुल पति पूजियें, महा महोत्सव होय।।१३।। दीनो दरशन शैल, दूरतें शीश नवाये।। निकट जाय प्रणाम करत, अघ दूर नसाये।। दीपदान दे नंदजू, रजनी मुख चहूं ओर।। गायन कान जगायकें, बूझत नंदकिशोर।।१४।। आज कूहू की राति, चलो परिक्रमा कीजे।। गिरि सन्मुख निश जाग, भोर बलि पूजा दीजे।। चले हरख गिरिराज कों, सबे दाहिनों देहि।। गोवर्द्धन गोपालकी, सब गोप बलैया लेहि।।१५।। मध्य आधि-दैविक रत्नखचित, गिरिराज बिराजें।। दीपमालिका चहूं ओर, अद्भुत छबि छाजें।। सकल निशा आनंदमें, रजनी गई विहाय।। विधिवत् पूजा कीजियें, बलि उपहार मँगाय।।१६।। गावत गीत पुनीत, सकल व्रजनारि सुहाये।। अगणित बाजे विविध, अखिल व्रजराय बजाये।। गिरिवर प्रथम न्हवावही, मानसी गंगा नीर।। अगणित कलशा हेमके, लै नावत धौरी क्षीर।।१७।। पुन चंदन उबटाय, स्वच्छ जल गिरिहीं न्हवाये।। अरगजा कुंकुम पोहोप, चरच पटपीत उढ़ाये।। धूप दीप बहु विधि कीये, कुंडवारो धर भोग।। सुख समुद्र लहेरिन बढ़्यो, इन व्रजवासिन योग।।१८।। पूजाको प्रसाद देत, ग्वालन मन भाये।। माथें टोरा बांध, पीठ थापे सरसाये।। नंदराय आज्ञा दई, आंन खिलायो गाय।। कान्ह तोकसों

यों कह्यो, धौरी पेहेलें खिलाय।।१९।। कान्ह गहें पट पीत, आन जब बोली धौरी।। हूंकत लेहेंडे
पेलि, बच्छके सन्मुख दोरी।। छुवत बच्छ अकुलाय कें, डाढ़ मेलि समुहाय।। भलीभली खेली
कहें, सब गोप श्यामकी गाय।।२०।। खेली धूमरि गांग, बुलाई काजर कारी।। औरें अगणित
झुंड, सकल गोपन की न्यारी।। सुख पयोधि लहरिन बढ्यो, रह्यो सकल ब्रज छाय।। अन्नकूट
विधिवत् रच्यो, नाना पाक बनाय।।२१।। बहु विध व्यंजन, मधुर चरपरे खाटे खारे।। बेसनके
को गिने, केईक सुकवनि के न्यारे।। तिन मध्य पूर्यो प्रेमसों, नव ओदनको कोट।। मध्य चक्र
चित्रित धर्यों, गिरि ओदनकी ओट।।२२।। बहुत भांत पकवान, नामले कोन बखानें।। गिनत
न आवे पार, परम रूचि धरे संधानें।। बासोंधी मिश्री सनी, मिलि मृगमद घनसार।।
नानाविधि मेवानके, गिनत न आवे पार।।२३।। दधि सिखरन संयाब, सेंमई पायस प्यारी।।
वरा मगोरी वरी, तिलवरी रोचक न्यारी।। पापर अति कोमल धरे, घृत नवनीत मँगाय।।
ओट्यो दुध धर्यो धोरीको, मिश्री पनो छनाय।।२४।। तुलसी दल दे नंद, पोहोप माला पहेरावें।।
सौरभ चंदन पीत, सजल शंखोदक नावें।। दुहुंकर जोरें दीन व्है, ध्यान धरत ब्रजराज।। प्रत्यक्ष
व्है भोजन करें, रूप धरें गिरिराज।।२५।। कहत गोप समुझाय, रूप गिरिराज निहारो।। जाकें
ऐसो पूत, सफल ब्रजवास तिहारो।। मोर पखौवा शिर धरे, उर राजत वनमाल।। सब देखत
भोजन करे, हो मानो श्रीगोपाल।।२६।। यथाशक्ति फल पत्र, पाक ब्रजवासी लाये।। प्रेमभक्ति
प्रतिपाल, परम रूचिसों वे खाये।। काहू अति संकोचतें, सजि धर राख्यो गेह।। मांगमांग सबपें
लियो, प्रकट जनायो नेह।।२७।। शीतल परम सुवास, सुखद यमुनोदक लीनों।। रह्यो जो शेष
प्रसाद, बांट ब्रजवासिन दीनों।। बीरीदेत सँम्हारकें, आपुन नंद कुमार।। आरोगत ब्रजराज
सांवरो, ब्रजजन लेत उगार।।२८।। महा महोत्सव मान, लीयो गिरिराज हमारो।। ब्रजवासिन
शिरछत्र, सदां गोधन रखवारो।। ब्रजरानी कर आरतो, लागत गिरिके पाय।। पटभूषण
न्योंच्छावर करकें, ग्वालन देत बुलाय।।२९।। नंदादिक ब्रज गोप सबें, जुर सन्मुख आये।।
नयन पाणि अरू ग्रीव, शीश गिरि चरण छुवाये।। रामकृष्ण के शीशपे, देव पाणि परसाय।।
आज्ञा ले घरकों चले, पदवंदन करवाय।।३०।। इंद्र उठ्यो अकुलाय, आज क्यों होत अवेरो।।
ओर बेर ब्रज जाय, लेहुं बलि भोग सवेरो।। ब्रजबलिकी सुध लेंनकों, दीने दूत पठाय।।
महामहोत्सव देखकें, कह्यो इंद्रसों जाय।।३१।। कोप इंद्र घन जोर, सबे ब्रजलोक पठाये।। चहूं
और तें घेरघेर, ब्रज बोरन आये।। मूशलधार बरखन लग्यो, ब्रज कंप्यो अकुलाय।। कह्यो
सबन ब्रजराजसों, अब को होय सहाय।।३२।। व्याकुल लख ब्रजवासि, कान्ह गोवर्द्धन धार्यो।।

वामपाणि अंगुरीन, एक नख अग्र उछार्यो।। गोप लकुटिया ले रहे, टेकी चहुँधां आय।। कोमलकर अति भारतें, मति इत उत डिगि जाय।।३३।। ले कटितें कर वेणु, धर्यो अधरन गिरिधारी।। सप्तरंध्र स्वर पूरे, घोर ऊंची दे भारी।। पर्वत दीयो उछारकें, स्वरपें रह्यो ठहेराय।। गोपनको बल देखकें, फिरि गिरि थांभ्यो आय।।३४।। सात द्योस निश परी, प्रबल अति जलकी धारें।। गिरिकी छांया सकल, गोप गोधन तृणचारें।। बूंद न काहू परसहीं, यह सुन अतुल प्रताप।। परम पुरूष यह जानकें, इंद्र बढ्यो संताप।।३५।। ले सुरभी व्रज आई, पांय हरि के शिरनायो।। तुम देवनके देव, कीयो में अपनों पायो।। अबलों में जान्यों नहीं, व्रज वृंदावन रूप।। कृपा दृष्टिसों देखियें, अखिल लोकके भूप।।३६।। गिरि धर धरणि कान्ह, पाणि सुरपति शिर धार्यो।। धेनु क्षीर अभिषेक, मान अपराध निबार्यो।। स्वर्ग लोकको राज दे, करसों थापी पीठ।। अबतें यह व्रत राखियो, व्रजपर अमृत दीठ।।३७।। इंद्र पठायो गेह, आप व्रज माया फेरी।। देव विमानन आय, वरख कुसुमन की ढेरी।। सब कोऊ गोविंदको, श्रीमुख निरखत आय।। देत दान बहु नंदजू, उर आनंद न समाय।।३८।। धाय यशोमति माय, लालकों कंठ लगावे।। वार वार जलपीवे, चूमकर नयन छुवावे।। सातवरस को सांवरो, सात द्योस इक हाथ।। गिरि धार्यो बलदेवके, सो प्रभु वैकुंठनाथ।।३९।। सब व्रजवासी लोग, कहत व्रजराज दुहाई।। जयजय शब्द उच्चार, हमारो देव कन्हाई।। दे असीस घरकों चले, ग्वाल गोप व्रजनारि।। "व्रजजन" गिरिधर रूपपे, डार्यो सर्वस्व वारि।।४०।।

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ४

शृंगार - शृंगार आज बारस के आगम का धराया गया।

वस्त्र - पीली जरीके, रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार कटि में पटको तथा श्रीमस्तक पर पाग चिरा वाली छज्जेदार पर सोनेरी वादलाकी जरीकी चंद्रिका धराई गई है, ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के एवं पिछवाई सोनेरी जरी की भरत कामकी।

आभरण - नित्यानुसार भारी सभी पन्ना व मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल **सुनोहो ग्वाल यह कहत कन्हाई।। सुरपतिकी पूजाकों मेटत, गोवर्धनकीं करत बढ़ाई।।१।। फैलपरी यह बात घर ही घर, हरि कहा जाने देव पुजाई।। हलधर कहेत सुनो भैया ग्वालों, यह पूजा हम करत सदाई।।२।। कोउ कोउ कहत करों एसेंईं, कोउ कहत काहेको भाई।। "सूरश्याम" कोउ सुन सचुपावे, कोउ बर्जत सुरपतिहिं डराई।।३।।**

राग-नट बिलावल (शृंगार से राजभोग तक एक ही कीर्तन गाया जाता है।)

गोदबैठे गोपाल कहत व्रजराजसों।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

राग-नट बिलावल (भोग से संख्या आरती तक एक ही कीर्तन गाया जाता है।)

बोल लिये सब ग्वाल, कहत गिरि पुजिये।।ध्रु।। दीप मालिका आजु, गोवर्धन लीला गाई।। नंद महोत्सव होय, चलों सब देखन जाई।। कनक थार मोतिन भरे, दीपक बरे मंजार।। सब मिल आई गोपिका, हो गावत मंगलचार।।१।।कहत.।। आप आपूही रूप बनी, सब व्रजकी नारी।। लेंहगा कंचुकी अंग बनी, बहु झूमक सारी। काजर रेख टीको, बन्यो और मोतिन के हार।। सब मिल गोपी करत है, अपनों अपनों सिंगार।।२।।कहत.।। गाम गाम ते अहिर, बोलि लिये राय नंदजू।। न्योतों दीनों आजु, बोली वृषभानचंदजू।। वृद्ध तरूणी बाला सबे, बलि बालिक संग लाई।। गोद लिये सुत सांवरों, हो कहत जसोदामाई।।३।।कहत.।। सुरपति पूजा मेटी, महागिरि कान्ह पूजावे।। लाल कहि यह बानी, बात सबके मनभावें।। अन्न तृण बहु नीपजे, बहुतजु बरखे मेह।। गाय दूध दूनों करेहे, घर घर बाढ़े स्नेह।।४।।कहत.।। नाना विध करि पाक, सबे मिल आन चढ़ाई।। खीर खाण्ड अति बहुत, महा पकवान मिठाई।। दार भात और घी घनों, दधि ओदन धरि माथ।। सब मिल पूजों गोपी, करसों लेले अपने हाथ।।५।।कहत.।। दोना भरे बनाय, बहोत विधि बरा पकोरा।। भोजन बिंजन आनी धरे, सिखरन चहुँ ओरा।। नींबू सुरन रायता, अदरक बहुत बनाय।। कैर करोंदा काचरी, हो लाई जसोदा

माय।।६।।कहत.।। खाजा गुंजा फेनी, पापर अरू अनरसों।। लुचई लपसी घेवर, बाबर बड़ी रवरसों।। दूध पेंड़ा अरू डुबका, मठा जलेबी ओट।। पकवान पंगति अवनवी, हो भलो भयो अन्नकूट।।७।।कहत.।। धूप दीप बहु आनि, महागिरि पोतों छायों।। चोवा चंदन अगर अरगजा, चरची चढ़ायों।। होम यज्ञ सबही करें, व्रजवासिन आनंद।। धनि धनि यह दिन आजु को, हो धनि धनि बाबा नंद।।८।।कहत.।। गोद लिये हरि नंद, ठाडी जसोदा रानि।। चहुं दिश धुरे निशान, धुजावर महा फहरानी।। सुरनर मुनि सब देवता, गुनि गंधर्व करे गान।। नारद शारद शेषजू हो, ब्रह्मा विष्णु समान।।९।।कहत.।। एक भुजा नंदनंदन, ठाडे कर गहि हाथा।। एक भुजा दे शीश, सकल गोपिनके माथा।। एक भुजा भोजन करें, एक भुजा गहे मात।। देखी अचरज आजुको, हो पर्वत पूजा खात।।१०।।कहत.।। व्रज वासिन सब बोलि, महागिरि पूजा कीनी।। सुरपति को बल मेटी, महागिरिकों ले दीनि।। इन्द्र कोप तबही कर्यो, दिये मेघ छटकाय।। ऐसो कौन पूजा लहे हो, देहों गोप बहाय।।११।।कहत.।। सात दिवस और रात, महागिरि कर हरि लीनों।। वृथा भये सब मेघ, गोपकों कछुवन कीनों।। इन्द्र मान सबही मिट्र्यों, मेघ पुकारे जाय।। व्रज राख्यों नंद लाडिले, हो कीनों अपनो भाय।।१२।।कहत.।। मुनि हो भैय्या ग्वाल, आजु अचरज है एकों।। कर कोमल गिरि धर्यों, ग्वाल लकुटी लै टेकों। सात बरस को सांवरों, राख लिये सब गोप।। व्रजवासिन छाया करि, हो सब सिर टोप।।१३।।कहत.।। इन्द्र करे स्तुति आय, महाप्रभु सुनों हमारी।। कामधेनु उरमाल, कान्हके आगे धारी।। तुम करता ईश्वर हरी, देहों हमारी चूक।। तुमारी गति जानी नहीं, हों अज्ञानी मूक।।१४।।कहत.।। तब बोले गिरिधरन इन्द्र, सुन बात हमारी।। तें कीनों अभिषेक, लई में मानी तिहारी।। कामधेनु ताको दई, दई कनक उरमाल।। असुर सिंहारन प्रगटियों हों, कीनों यह विध ख्याल।।१५।।कहत.।। सो जनको बड़भाग, गोवर्धनलीला गावें।। सीखे सुने विचार, भक्ति जन कोटिक पावे।। नंदगृह क्रीड़ा करी, सुख दीनों ब्रजबाल।। परब्रह्म लीला करी हों, बलि बलि दास “गुपाल”।।१६।।कहत.।।

शयन में राग-कान्हरौ यह पूजा मोहि कान्ह बताई।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ५

श्रृंगार - धनतेरस के आगम का श्रृंगार

वस्त्र - हरी जरी के शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पाग चीरा की लाल जरी की, उसपर सादी मोरकी चन्द्रिका, ठाडी लर मोती की, नित्यानुसार भारी श्रृंगार किया गया है। ठाडा वस्त्र लाल रंग का, कन्दरा पर जड़ाऊँ चोखटो तथा पिछवाई सोनेरी जरीकी, भरत काम की।

मंगला में राग-बिलावल नंदादिक ब्रज मिल बैठे हें, कछु करतहें मंत्र विचार।। इंद्र महोत्सव को दिन आयो, मंगवाये नाना उपहार।।१।। श्याम सुन्दर हंस यों जु कहत हें, तुम काहि भजत हो तात।। कोन यज्ञ यह कोन देवता, मोंसो कहो किन बात।।२।। बरस बरस प्रति नेमसों, हम देत शक्र बलि दान।। धन बरसे गौ तृणचरें, उपजे अधिक धन धान।।३।। श्रीपति श्रीमुख यों जु कहेत हैं, व्रजवासिन की और रीति।। मघवाको जु कहा हे जो, तुम जाहि डरत भय भीति।।४।। कर्म धर्म हे श्रीपुरूषोत्तम, गोवर्धन गिरिराज।। सुरभी वत्स सब तृण चरें, इन ग्वालन हित काज।।५।। तुमजो कछु कह्यो हो हमसों, सब गोकुल तुम्हारे संग।। हम पूजा विधि जानत नाहीं, और सकल सुख अंग।।६।। तुम पूजो परबत प्रेमसों, अरपो सब मिल ग्वाल।। रूपधरें बलि खायगो, बपु सुंदर बाहु विशाल।।७।। खटरस भोग शाकपाकादिक, पूवा पायस पकवान।। माँग-माँग अनुशान कियो, चढ़ गोत्र शिखर भगवान।।८।। सुरपति भजते जन्म गम्यो हे, हम कबहू नहिं देख्यो रूप।। ततकाल फल सिद्ध भयो, हम पायो इष्ट अनूप।।९।। शक सहस्त्र मुख विलख्यो, बहुत कलान कर काछ।। "विष्णुदास" प्रभुसों हट कियो, अपि न अंगुली छाछ।।१०।।

श्रृंगार में राग-बिलावल सात वरष को सांवरों बोलत है तुतरात।। (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग/बिलावल नंदहि कहति यशोदारानी।। सुरपति पूजा तुमही भुलानी।।१।। यह नही भली तुम्हारी बानी।। में गृह काज रहों लपटानी।।२।। लोभ ही लोभ रहत हो सानी।। देव काज की सुध बिसरानी।।३।। मेहेरि कहेत पुनपुन यह बानी।। पूजा के दिन पोंहोचे आनी।।४।। "सूरदास" यशोमति की बानी।। नंदहि खीज खीज पछितानी।।५।।

राजभोग में राग-बिलावल आज कहा संभ्रमहे तिहारे घर तात।। गोप सबें करत काज आनन्द न समात।।१।। हाथजोर ठाडे हरि पूछत हें आय।। मोसों यह बात कहो बावा व्रजराय।।२।। बोले नंदराय देव इंद्रहिं बलि देंहें।। वरसे जल निपजे नाज वरषलों सुख पेंहें।।३।। बहुत द्योस भये करत हें हम पूजा सबकोय।। अबजो हम छांड देंहिं तो न भलो होय।।४।। बोले हरि सुनो तात बात एक मेरी।। कर्मके बल सबें होई मिलि सुभाय हेरी।।५।। कर्मके आधीन देव कहो कहा करिहें।। ताको कछु चलिहें नहिं कर्म बिन न सरिहें।।६।। जो तुम जगदीश जान पूजतहो याहीं।। यासों हमें काज कहा गौचारन जाहीं।।७।। गिरि कानन वसतहे हम पूजें ता ईश।। सो तो द्विज देव गाय ठाकुर जगदीश।।८।। गोवर्द्धन पूजो ओर देहो विप्रन गाय।। अर्पो बलि देहो दान धेनु तृण चराय।।९।। करवाओ पाक सकल युवती जन बुलाय।। खीर आदि सूप अंत सबे विधि बनाय।।१०।। ओट्र्यो संयाव पूवा चकुलीदे आदि।। रखवाओ दूध सबें खरचो जिन वादि।।११।। पर्वतकों बलि देहो द्विज पूजि गाय खिलाय।। गिरिकी करो शकट जोर परिक्रमा जाय।।१२।। भूषण बहु मोल सबें वसन तन बनाय।। हसत खेलत गावत देखो फिर आय।।१३।। मेरो तो मतो यह सुनहो व्रजराज।। भावें तो कीजे जू मेरो यह काज।।१४।। जैसें हरि कह्यो सबन तेसेंही कीयो।। रूपबडो धरकें बलिखात दरशदीयो।।१५।। सबहिन संग पांयपरे मोहन निजरूप।। दीनी प्रतीत सबे गोकुलके भूप।।१६।। हरिस्वरूप फलले सब अपने गृह आये।। निज कर व्रजवासी हरि फेर व्रजवसाये।।१७।। कोपि इंद्र पठये मेघ बरसो दिनरात।। गिरिधर व्रजवासी सब राख लिये दुख्यात।।१८।। देख रूप आनंदमें भूख प्यास भुलाई।। वरखतहे कहां मेघ काहू न सुध पाई।।१९।। सात द्योस ठाडे हरि नेकु न पग हलायो।। ऐसो व्रजवासिन यह भाग्यनते पायो।।२०।। सुरपति को गर्व गयो रह्यो अति खिस्याई।। उघर गये मेघ सबे उदयो रवि आई।।२१।। बोले प्रभु निकसो सब बाहिर रह्यो मेह।। निडर भये फिरो सबे करो जिन संदेह।।२२।। राख्यो गिरि भूमि ऊपर भेटे व्रजवासी।। पायो अति परमानंद गोकुल सुखरासी।।२३।। प्रेमभरी व्याकुल व्हे चुंबत मुखमाई।। बारंवार बालकके करकी बलिजाई।।२४।। हरखत व्रजवासी सब आये घर फेरी।। निशदिन वे जीवत हें सुंदर मुख हेरी।।२५।। पछतानो इंद्र कामधेनु संग लायो।। अपनों अपराध पायं परी क्षमा करायो।।२६।। कीनो अभिषेक तहां गंगाजल आनी।। ऐरावत शूंढहुंतें अपने प्रभुजानी।।२७।। गोविंद यह नाम धर्यो आप भयो दास।। मेरो सब गर्व गयो पायो में त्रास।।२८।। हरिकों अभिषेक होत सवनि वेर टूट्यो।। गोविंद यह नामलेत सहजदोष

छूट्यो।।२९।। यह लीला अति अद्भुत “रसिक” होय गावे।। अन्य भजन छांड चरण हरिजू के पावे।।३०।।

भोग से संध्या आरती तक सरस लीला के पद राग-सारंग गोप समाज जुटे यमुनातट, सब मिल संमत कीनों।। सुरपति यज्ञ महोत्सव कीजे, बचन परस्पर लीनों।।१।। तिहिं अबसर व्रजपति पांउ धारे, बूझन लागे बात।। कहो संमत सब मिलकर कीनो, सांची कहो मेरे तात।।२।। सहजु सोंझ सिद्ध करकें तुम, कौंन देव बलि देत।। हमतुम कानन शैल निवासी, नहि काहूसों हेत।।३।। हमारो देव गोवर्द्धन पर्वत, सदा परम सुखदाय।। आनपरे संकट व्रजनकों, तब गिरि होय सहाय।।४।। बाल वृद्ध नरनारिनके मन, बात करत मन भाय।। बहुविध पाक संवारी मुदित मन, नग बलि दान दिवाय।।५।। यह सुन भयो क्रोध मघवाकों, मेघन दिये पठाय।। सात द्योंस जल भयो शैल ले, दारूण वृष्टि कराय।। गोपी गोप गाय और वच्छरा, सबहिन चित हरि लीनों।। मानो वृष्टि गृह कर धर राख्यो, निर्भय दान हरि दीनों।।७।। मेंटी बडी घात व्रजपरतें, शचिपति भयो खिस्यानो।। कामधेनु आगें कर आयो, ऐसो बडो अयानो।।८।। हाथ जोरकें विनती कीनी, में महिमा नहि जान्यों।। कर अभिषेक विशेष ऐरावत, कर गंगा जल आन्यों।।९।।

शयन भोग आने पर राग-कान्हरौ नंदहि कहति यशोदारानी।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भोजन करत देव भये परसन।। मांगो नंद तुमारे जो मन।।१।। भली करी तुम मेरी पूजा।। सेवक तुमतें और न दूजा।।२।। जो मांगो सोई हम देंहें।। जहां भाव ताही पें रेहें।।३।। में सेवा वश भयो तुम्हारो।। जो फल चाहो लेहुं सवारो।।४।। यह सुन चक्रत भये नरनारी।। भोजन कियो प्रथमही भारी।।५।। अब देखो मुख बात कहत हें।। एसो देव कहां त्रिभुवन हें।। कान्ह कह्यो कछु मांगो इनसों।। गिरिदेवता देत परसन सों।।७।। “सूरश्याम” देवता आप हें।। व्रजजनके त्रय हरत ताप हें।।८।।

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

छूट्यो।।२९।। यह लीला अति अद्भुत “रसिक” होय गावे।। अन्य भजन छांड चरण हरिजू के पावे।।३०।।

भोग से संध्या आरती तक सरस लीला के पद राग-सारंग गोप समाज जुटे यमुनातट, सब मिल संमत कीनों।। सुरपति यज्ञ महोत्सव कीजे, बचन परस्पर लीनों।।१।। तिहिं अबसर व्रजपति पांउ धारे, बूझन लागे बात।। कहो संमत सब मिलकर कीनो, सांची कहो मेरे तात।।२।। सहजु सोंझ सिद्ध करकें तुम, कौंन देव बलि देत।। हमतुम कानन शैल निवासी, नहि काहूसों हेत।।३।। हमारो देव गोवर्द्धन पर्वत, सदा परम सुखदाय।। आनपरे संकट व्रजनकों, तब गिरि होय सहाय।।४।। बाल वृद्ध नरनारिनके मन, बात करत मन भाय।। बहुविध पाक संवारी मुदित मन, नग बलि दान दिवाय।।५।। यह सुन भयो क्रोध मघवाकों, मेघन दिये पठाय।। सात द्योंस जल भयो शैल ले, दारूण वृष्टि कराय।। गोपी गोप गाय और वच्छरा, सबहिन चित हरि लीनों।। मानो वृष्टि गृह कर धर राख्यो, निर्भय दान हरि दीनों।।७।। मेंटी बडी घात व्रजपरतें, शचिपति भयो खिस्यानो।। कामधेनु आगें कर आयो, ऐसो बडो अयानो।।८।। हाथ जोरकें विनती कीनी, में महिमा नहि जान्यों।। कर अभिषेक विशेष ऐरावत, कर गंगा जल आन्यों।।९।।

शयन भोग आने पर राग-कान्हरौ नंदहि कहति यशोदारानी।। (यह पूरा पद पेज ९५ पर पढ़े।)

भोजन करत देव भये परसन।। मांगो नंद तुमारे जो मन।।१।। भली करी तुम मेरी पूजा।। सेवक तुमतें और न दूजा।।२।। जो मांगो सोई हम देंहें।। जहां भाव ताही पें रेहें।।३।। में सेवा वश भयो तुम्हारो।। जो फल चाहो लेहुं सवारो।।४।। यह सुन चक्रत भये नरनारी।। भोजन कियो प्रथमही भारी।।५।। अब देखो मुख बात कहत हें।। एसो देव कहां त्रिभुवन हें।। कान्ह कह्यो कछु मांगो इनसों।। गिरिदेवता देत परसन सों।।७।। “सूरश्याम” देवता आप हें।। व्रजजनके त्रय हरत ताप हें।।८।।

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ९९ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ६

श्रृंगार - रूप चौदस के आगम का।

वस्त्र - सोनेरी जरी के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग चीरा की उसपर सादे मोर की चंद्रिका। ठाड़ा वस्त्र बादली रंग के तथा पिछवाई सोनेरी भरत कामकी धराई गई है।

आभरण - भारी श्रृंगार हीरा, माणक-मोती के। नुंपुर सोना की तथा वेणु वैत्र हीरा जड़े हुवे।

मंगला में राग-बिलावल हमारी बात सुनो व्रजराज।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल गोकुल को कुल देवता प्यारों गिरिधर लाल।। (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सारंग गोवर्द्धन पूजाके दिन आये।। (यह पूरा पद पेज ७५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग बड़ड़ेन को आगें दै गिरिधर..(यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

भोग में राग-नट गिरिवर श्याम की अनुहारि।। करत भोजन अति अधिकाई, सहस्त्र भुजा पसारि।।१।। नंद को कर गहें ठाडे, यहि गिरि को रूप।। सखी ललिता राधिकासों, कहति देख स्वरूप।।२।। यह कुंडल यह माला, यही पीत पिछोरी।। शिखर शोभा श्यामकी छबि, श्याम छबि गिरिजोरी।।३।। नारि बदरोला रही, वृषभान घर रखवारि।। तहांते वह भोग अरपत, लियो भुजा पसारि।।४।। राधिका छबि देख भूली, स्याम निरखत ताहि।। "सुरप्रभु" वश भई प्यारी, कोर लोचन चाहि।।५।।

संध्या में राग-हमीर हमारो कान्ह कहे सो कीजे।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरो (सरस लिला के पद) कान्ह कह्यो नंद भोग लगावो।। गोप महर उपनंद बुलावो।।१।। नयन मुंद करजोर मनावो।। प्रेम सहित नैवेद्य चढ़ावो।।२।। मनमें खटक जिन राखो।। दीन वचन मुखतें तुम भाखो।।३।। ऐसेंही गिरि प्रसन्न अति व्हैहें।। सहस्त्र भुजा धर भोजन खैहें।।४।। "सूरदास" प्रभु आप पुजावत।। यह महिमा केसें कोउ पावत।।५।।

मान में राग-बिहाग तोहि मिलन को बहोत करत है...(यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोडवा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक..(यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ७

श्रृंगार - टिपारे का।

वस्त्र - लाल जरी के रूपहरी कोर के। श्रीमस्तक पर लाल जरी का टिपारा। उसपर मोर पिछके काम का टिपारा, चाकदार वागा, भारी श्रृंगार धराया गया है।

मंगला में राग-बिलावल नंदहि कहति यशोदारानी।। (यह पूरा पद पेज ६५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल नमो देवेंद्र दर्पहर श्रीमुरारि।। विदित अदभूत चरित्र गिरिराज उद्धरण, गो गोप गोपीजन तापहारी।। नमो नवल बाल विनोद, अखिल गोधन मोद, वाम भुज बलवारि वृष्टि टारी।। युवती मुख पद्म मकरंद लंपट मधुप, कमल लोचन कंज माल धारी।।२।। नमो सकल सौभाग्य निधि राधिका, प्राणपति घोषपति मुरलिका रव हारी।। "कृष्णदासनि" नाथ नंदनंदन कुंवर, मदनमोहन दुरित नाशकारी।।३।।

राजभोग आते समय राग-सारंग (सरस लीला के पद) कान्ह कहयो नंद भोग लगावो।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग मदन गोपाल गोवर्धन पूजत।। बाजत ताल मृदंग शंखध्वनी, मधुर मधुर मुरली कल कूजत।।१।। कुंकुम तिलक ललाट दिये, नव वसन साज आई गोपीजन।। आस पास सुन्दरी कनक तन, मध्य गोपाल बने मरकत मन।।२।। आनंद मगन ग्वाल सब डोलत, हीही धूमरि धौरी बुलावत।। राते पीरे बने टिपारें, मोहन अपनी धेनु खिलावत।।३।। छिरकत हरद दूध दधि अक्षत, देत असीस सकल लागत पग।। "कुंभनदास" प्रभु गोवर्धनधर, गोकुल करो पिय राज अखिल युग।।४।।

भोग में राग-सारंग आज कहा संभ्रमहे तुमारे घर तात।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-सारंग सुनोहो ग्वाल यह कहत कन्हाई।। (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े।)

शयन भोग आने पर राग-कान्हरौ सरल लीला श्याम कही सोई सब मानी।। तब मनमें नंद निश्चय आनी।।१।। नयन मूंद करजोर बुलाये।। भाव भक्तिसों भोग लगाये।।२।। बड़ो देव गिरिराज सुनीकें।। भोजन करो कृपा करही कें।।३।। सहस्त्र भुजाधर भोजन कीनों।। व्रजवासिन सुख नयनन लीनों।।४।। भोजन करत सबनके आगे।। सुर नर मुनि सब देखन लागे।।५।। देख थकित सब व्रजकी बाला।। देखत नंद गोप सब ग्वाला।।६।। "सूरश्याम" जिनके सुखदाई।। सहस्त्र भुजाधर भोजन खाई।।७।।

शयन में राग-कान्हरौ दोउकर जोर भये सब ठाडे।। धन्य धन्य भक्तन के चाहे।।१।। तुम भोक्ता तुमही प्रभुदाता।। अखिल ब्रह्मांड लोकके ज्ञाता।।२।। तुमकों भोजन कोन करावे।। हितके वश तुमकों को उपावे।।३।। तुम लायक हमारे कछुनाईं।। सुनत श्याम ठाडे मुसिकाई।।४।। ललिता सखी देवता चीन्हों।। चंद्रावलि राधे कहि दीनों।।५।। देव बड़ो यह कुंवर कन्हाई।। कृपा जान हरि ताहि चिन्हाई।।८।। “सूरश्याम” कहि प्रगट सुनाई।। भये तृप्ति भोजन गिरिराई।।६।।

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। तरू तमाल ढ़िंग कनकलतासी, हरिजुके प्रान राधा प्यारी।।१।। मरकत मणि नंदलाल लाडिलों, कंचन तन वृषभान दुलारी।। “सुरदास” प्रभु प्रीत निरंतर, जोरी जुगल बने बनवारी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। रंगमहल मे पर गये परदा, धरी अंगीठी सुखदाई।।१।। शीत समै ग्रीष्म ऋतु कीनी, अति सुन्दर वरदाई।। “श्रीविट्ठल” गिरिधारी कृपा निधी, पौढ़े औढ़ रजाई।।२।।

कार्तिक कृष्ण ८

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - बादली रंग की जरीके शुथन पर काछनी व बड़ा पटका, श्रीमस्तक पर माणक जड़ा सुनहरी जरी का मुकुट धराया गया है।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार किया गया।

मंगला में राग-खट बोल लिये सब ग्वाल कहेत गिरी.. (यह पूरा पद पेज ६३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल (सरस लीला) इतही स्याम गोपन संग ठाडे।। भोजन करत अधिक रूचि बाढ़े।।१।। गिरीतन शोभा श्याम विराजे।। स्याम ही छबि गिरीवर की छाजे।।२।। गिरिवर उरहि पीताम्बर धारे।। मोतिन की उरमाला भारे।।३।। अंग भूषण श्रवण मणि कुण्डल।। मोर मुकुट सिर अलके सुन्दर।।४।। छबि निरखत सब घोख कुमारी।। गोवर्धन छबि श्याम तुम्हारी।।५।। “सूर श्याम” लीला रस नायक।। जन्म जन्म भक्तन सुखदायक।।६।।

मुकुट घरे तब रास का कीर्तन राग-रामकली देखों देखौरी नागरनट, निर्तत कालिंदी तट, गोपिन के मध्य राजें, मुकुट लटक।। (यह पूरा पद पेज ६२/८४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग तुमारे खरिक बताई हो.. वृषभान हमारी गैया।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

भोग में राग-सारंग/पूर्वि धोरी धूमर, पीली पीहर, कारी काजर, कहकह टेरत।। वामभुजा मुरलीकर लिये, दक्षिण कर पीतांबर फेरत।।१।। सुन्दर नागर नट कालींदी तट, लकुट लीये गायन को हेरत।। हुंक हुंक एक वार गज शब्द धाई, “चत्रभुज” प्रभु गिरिधारी न वेरत।।२।।

संध्या में रास के कीर्तन राग-कान्हरौ बन्यों मोर मुकुट, नटवर वपु श्याम सुन्दर, (यह पूरा पद पेज ७३ पर पढ़े।)

शयन में रास के पद राग-बिहाग पियकों नचवन सिखवत प्यारी।। (यह पूरा पद पेज ८१ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि.. (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ९

शृंगार - दिपावली के आगम का।

वस्त्र - फरकसाई रूपहरी जरी के सोनेरी कोर के, शुथन लाल जरी की, वागो चाकदार रूपहरी जरी का तथा श्रीमस्तक पर कुलह पर मोरकी सादी पांच चन्द्रिका की जोड़, वेणी श्याम रेशम की, दोनों तरफ अलक धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी रंग के तथा जरी की भरत काम की पिछवाई।

आभरण - आज शृंगार भारी, हीरा-माणक-मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल **सात वरस को संवरों बोलत तुतरात।।** (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बिलावल **गोकुल को कुल देवता प्यारों गिरिधर लाल।।** (यह पूरा पद पेज ६७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग **गुर के गुंजा पुवा सुहारी।। गोवर्धन पुजत व्रजकी नारी।।१।। घर घर गोमय प्रतिमा धारी।। बाजत रूचिर पखावज थारी।।२।। गोद लिये मंगल गुण गावत।। कमलनयन को पाय लगावत।।३।। हरद दही रोचन के टिके।। यह व्रजपुर सुर लागत फिके।।४।। राती पीरी गाय शृंगारी।। बोलत ग्वाल दे दे कर तारी।।५।। "हरीदास" प्रभु कुंजविहारी।। मानत सुख त्योहार दिवारी।।६।।**

भोग में राग-सांरग **देखौ अपने नैनन को सुख, गिरिधर गोवर्द्धन पूजें हो।। सखा संग सब जोर जोर कें, मधुर मुरलि धुनि कूजै हो।।१।। आसपास सब धेनु बिराजत, रूप सबै अति सोहै हो।। रत्न जटित मकराकृत कुंडल, सिर सटकारे सोहै हो।।२।। भंवरी पांति अलकावलि मानों, लाल भाल बिच भ्राजै हो।। नासा भूषण चिबुक गाढ़ मधि, देखत बिंदुका राजै हो।।३।। कंज से नैनन अंजन दीयें, मृगमद बिंदुका राजै हो।। तिलक ललाट बन्यौ रोरी कौ, हेम आड़ विच राजै हो।।४।। दिव्य लसै कुलही सिर ऊपर, शोभा कही न जाई हो।। सीस फूल सिर मानों सोम द्वै, बैठे एक अथाई हो।।५।। कंठ बनी झगुली अति सोहै, स्वेत तास की झीनी हो।। सो सनी साक बीच जलद की, यह उपमा यों कीनी हो।।६।। बाजूबंद पहुँचियाँ मुंदरी, देखत मन चुभि जाई हो।। शेष मानों बहु कुसुमन सों, पूजि रह्यो है आई हो।।७।। बेंनी राजत अद्‌भुत कटि तट, बानी को नहिं साधै हो।। कुंडलीन मानों प्यासी व्है**

कें, देखन निकसे राधै हो।।८।। उरज लसै जराय की चौकी, देख होय मनी बाल हो।। मानों इन्दुते भई चन्द्रिका, ता मधि अंबुज लाल हो।।९।। मध्य भाग बिच क्षुद्र घंटिका, लसत लाल कें आछी हो।। विपुल सुभग अली चंदन तरू यों, लपट रही मानों छाती हो।।१०।। जंघा परसि रही अतलस की, सूथन हरी के लाल हो।। कदलि खंभ के नये गोभ मानों, उलहे दैन रसाल हो।।११।। हेम खचित गूजरी अरू जेहर, पग नूपुर की कांति हो।। आल बाल बिच परे अम्बुकन, भई है बिमल बहु पांति हो।।१२।। पग अनवट बीछिया पायल, नील मणी मन मोहे हो।। भोर भयें मानों पंकज ऊपर, भँवर पुंज के सोहे हो।।१३।। यह स्वरूप हृदय में धरियै, तन मन दुख जो जाये हो।। प्रगट करी लीला मन मोहन, “गिरिधर” के पद पाये हो।।१४।।

संध्या में राग-सारंग फूले गोप ग्वाल घर घर के, मानत है त्योहार दिवारी।। अपनी अपनी गाय शृंगार के, बलदाऊ लालन गिरिधारी।।१।। हसं हसं लाल कहत सबहिन सो, हमारों देवकी पूजा व्है है।। भात दही पकवान मिठाई, देखेगे केसे वह खै है।।२।। यह सुन गाम गाम तें ग्वालिन, गोवर्धन पूजा को आई।। गुंजा पुवा पूरि दधि खोवा, भलीभांत सो सब मिल लाई।।३।। अंगुरी गहे नंदबावाकी, अति राजत है दोऊ भैया।। मीठे मीठे वचन कहत है, देख सिहात यशोदा मैया।।४।। अति आनंद देत पहरावत, पटवस्त्र बहु मोलिक नीके।। देत असीस “श्रीविट्ठलप्रभु” को, गिरधरलाल भायते जीके।।५।।

शयन भोग ब्यारू के राग-कान्हरौ रानीजू अपने सूतही जिमावत।। (यह पूरा पद नित्य में पेज ६ पर पढ़े)

राग कान्हरौ कीजे लाल यहिबार बियारू।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १० पर पढ़े)

मान में राग-बिहाग तोहि मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ मानत पर्व दिवारी को, सुख हटरी बैठे नन्दकुंवर।। मंगल बाजे चंहुदिस, भीर बहुत अति आंगन द्वार।।१।। कुंवरी राधिका नवल वधू सब, करि आई है रूचिर सिंगार।। सोंधे भीजी कंचुकी सारी, उर पहिरे फूलन के हार।।२।। पहिलें सौदा लेहु तुम हमपें, तब लीजो दाऊपें जाय।। नीकें देहों रूगट न खैहों, ऐसें कहत लला मुसिकाय।।३।। हँस हँस जात राय नंदरानी, हँसत भान सब गोप गुवाल।। चुंबत बदन अहो ये घातें, कापे

सीखे हो नंदलाल।।४।। झगरौ करत, भरत आनंद सों, चंद्रावली व्रजमंडल नारि।। "श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल" सों, रंग करत सब गोप कुमारि।।५।।

राग-कान्हरौ दीपदान दे हटरी बैठे, नवललाल गोवर्धनधारी।। दोहरी पांत बनी दीपक की, व्रजशोभा लागत अतिभारी।।१।। तैसेही बने नंदके नंदन, तैसी बनी राधिका रानी।। गृह गृहतें आई व्रजसुन्दरी, मात जसोदा देख सिरानी।।२।। भांत भांत पकवान मिठाई, ले ले गोद सबन की नावत।। आरति करत देत नोछावर, फिर फिर मंगलगीत गवावत।।३।। उठकर लाल खिरक में आये, टेर टेर सब सखा बुलाये।। "श्री विट्ठल गिरिधरनलाल" ने, सब गायन के कान जगायें।।४।।

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण १०

शृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - सफेद सोनरी टीपकी के सोनेरी कोर का शुथन तथा वागो घेरदार। कटि में पटको। श्रीमस्तक पर सफेद पाग छज्जेदार सोनेरी टिपकी की ठाड़ी लड़ मोती की तथा मोर पीछ के काम का कतरा। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई सफेद सोनेरी काम की। आज से गादी-तकीया पर सफेदी नही आती है।

आभरण - भारी शृंगार हीरा पन्ना के तथा सोनाके धराये जाते है।

नोटः- आज से किर्तन मगला से राजभोग तक गोवर्धनपूजा के, भोग संध्या में गाय खिलाने के, शयन भोग आने पर हटड़ी के पद तथा शयन में दीपमालिका के पद आते है।

मंगला में राग-बिलावल **पूजा विधि गिरिराज की नन्द लाल बतावें।। झुंडन झुंडन गोपिका मिल मंगल गावे।।१।। गंगाजलसों न्हवाय के दूध धौरीकों नावें।। विविध वसन पहराय के चंदन चरचावें।।२।। धूप दीप करि आरतो बहु भोग धरावें।। तिलक कियो बिरा दिये माला पेहेरावे।।३।। खिरक चले बहुरे बड़े मिल गाय खिलावे।। फिर गिरिधर भोजन कियों सुख “सूर” दिखावें।।४।।**

शृंगार में राग-बिलावल **गोकुल गोधन पुजहीं, गिरधर नंदराई।। नर नारी सब हुलसि हें, पूजे सुखपाई।।१।। खीर खांडि दधि भात लै, पकवान बनाई।। कुंडवारो भरि ले चली, शुभ मंगल गाई।।२।। रई दोहनी कर लिये, दई लालें आई।। हँसी हँसी देव न्हवावही, दुही दुही सब गाई।।३।। गाय खिलावें आपुनी, कूके किलकाई।। “श्री विठ्ठलगिरिधरन” की, बलि बलि बलि जाई।।४।।**

राजभोग आते समय राग-सारंग **अन्नकूट कोटिक भातन सों भोजन करत गोपाल।।** (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग **बड़ड़ेन को आगें दै गिरिधर, श्री गोवर्धन पूजन आवत।।** (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

भोग में राग-सारंग **श्याम खिरक के द्वार करावत, गायन को सिंगार।। नाना भांत सिंग मंडित किये, ग्रीवा मेले हार।।१।। घंटा कंठ मोतिन की पटियां, पीढ़िन को आछे**

ओछार।। किंकिणी नूंपुर चरण बिराजत, बाजत चलत सुढ़ार।।२।। यह विध सब व्रज गाय सिंगारी, शोभा बढ़ी अपार।। “परमानंद” प्रभु धेनु खिलावत, पेहेरावत सब ग्वाल।।३।।

संध्या में राग-सारंग बड़े खिरकमें धूमरि खेलत।। मोहनलाल खिलावत रंगभर, गगन गरज घंटा ध्वनि पेलत।।१।। उसर जात व्रजराज लाडिले, धेनु डाढ़ जब मेलत।। “नंददास” प्रभु मुदित नंदरानी, ही ही रस सागर में झेलत।।२।।

शयन में राग-हमीर देखो इन दीपन की सुन्दराई।। जानों घनमें विधुमंडल राजत, तम निश परम सुहाई।।१।। नंदराय अगणित पांति रची, अभ्दुत युक्ति बनाई।। विविध सुगंध कपूर आदि दे, धृत परिपूरणताई।।२।। घर घर मंगल होत सबनके, उर आनन्द न समाई।। “कुंभनदास” प्रभु धेनु खिलावत, गिरिधर सब सुखदाई।।३।।

राग-कान्हरौ सुरभी कान जगाई खिरक बल, मोहन बैठे राजत हटरी।। पिस्ता द्राख बदाम छुहारे, खुरमा खाजा गुंजा मठरी।।१।। घरघर ते नरनारी मुदित मन, गोपी ग्वाल जुरे बहु ठटरी।। टेर टेर ले देत सबनकों, ले ले नाम बुलाय निकटरी।।२।। देत असीस सकल गोपीजन, जसुमति देत हरख बहु पटरी।। “सूर” रसिक गिरिधर चिरजीवों, नंदमहरको नागर नटरी।।३।।

मान में राग-विहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण ११

शृंगार - चिरा-कतराको।

वस्त्र - श्याम जरी के शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पाग चीरा वाली उसपर सोनेरी जरी के काम का कतरा, ठाड़ा वस्त्र पिले रंग के व पिछवाई लाल रंग की सोनेरी रूपहरी भरत काम की। दोनों तरफ झाड़ की पिछवाई व लकड़ी की गायें श्रीजी के सामने नित्य आती है।

आभरण - नित्यानुसार मध्य का शृंगार माणक-मोती का धराया गया है।

मंगला में राग-बिलावल गोकुल गोधन पुजही गिरधर नंदराई।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बिलावल पूजा विधि गिरिराज की नन्द लाल बतावें।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-सांरग यह लीला सब करत कन्हाई।। (यह पूरा पद पेज ६२/७० पर पढ़े।)

देखोरी हरि भोजन खात।। (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राजभोग सरे तब नित्य आन और आन आन कहत बिझक रहत व्रज के नरनारी।। (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग गोवर्धन पूजन चलेरी गोपाल।। मत्त गयंद देख जिय लज्जित, निरख मन्द गति चाल।।१।। व्रजनारी पकवान बहुत कर, भरभर लीने थाल।। अंग सुगंध पहर पट भूषण, गावत गीत रसाल।।२।। बाजे अनेक वेणु रवसों मिल, चलत विविध सुर ताल।। ध्वजा पताका छत्र चमर, करत कुलाहल ग्वाल।।३।। बालक वृंद चहुं दिश सोहत, मानों कमल अलिमाल।। "कुम्मनदास" प्रभु त्रिभुवन मोहन, गोवर्धनधर लाल।।४।।

भोग में राग-सारंग बिफर गई धुमर और कारी।। कूकत ग्वाल बछरवा लीने, वदन पिछोरी डारी।।१।। तबतो हुंकहुंक सन्मुख व्हे, भली भांत संभारी।। पूंछ उठायकर दौरी, दोऊ कुंवर भरे अंकवारी।।२।। भीर खीरक के अटा अटारी, ठाड़ी है व्रजनारी।। "परमानंददास" देखे बनी आवे, नवललाल गिरीधारी।।३।।

संध्या में राग-सारंग गाय खिलावत शोभा भारी।। गौरज रंजीत वदन कमलपर, अलक झलक घुघरारी।।१।। नखसिख प्रति बहुमौलिक भूषण, पेहेरत सदा दिवरी।। फैलरही है खरिक सभा पर, नगन रंग उजियारी।।२।। श्रमकण राजे भाल गंड भ्रुव, ये छबि पर बलीहारी।। श्रवतहें री अंचल चंचल, सब चढ़त हें अटन अटारी।।३।। भीर बहुत अति जात की भई, मड़हन पर व्रजनारी।। सेंनन में समझावत सघरी, धनधन निरखन हारी।।४।। रहे खिलाय घूमरी धोरी, गुनन काजर कारि।। “नंददास” प्रभु चले सदन जब, एक बार हुंकारी।।५।।

शयन में राग-कान्हरों दीपदान दे हटरी बैठे नवललाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण १२

श्रृंगार - चीरा पाग व सुनहरी चंद्रिका को।

वस्त्र - पीरोंजी रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार, कटि में पटका, श्रीमस्तक पर पाग चीरा की छज्जेदार तथा उस पर सोनेरी बादला की चंद्रिका, ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के व पिछवाई सोनेरी जरी के भरत काम की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार पन्ना-मोती तथा सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल पूजा विधि गिरिराज की... (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल गोकुल गोधन पुजही.. (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-सारंग यह लीला सब करत.(यह पूरा पद पेज ६२/७० पर पढ़े।)

राजभोग सरे तब एवं राजभोग में राग-सारंग गोवर्धन पूजा को आये, सकल ग्वाल ले संग।। बाजत ताल मृदंग शंखध्वनि, बीना पटह उपंग।।१।। नवसत साज चलीं व्रज तरूणी, अपने अपने रंग।। गावतगीत मनोहर बानी, उपजत तान तरंग।।२।। अति पवित्र गंगाजल लेकें, डारत आनंदकंद।। ता पाछें ले दूध धोरीको, ढारत गोकलचंद।।३।। रोरी चंदन चर्चन करके, तुलसी पोहोप माल पहरावत।। धूप दीप विचित्र भांतिनसों, पीत वसन उपर ले उढ़ावत।।४।। भाजन भर भरकें कुनवारो, लेले गिरिको भोग धरावत।। गाय खिलाय गोपाल तिलक दे, पींठ थाप शिरपेंच बंधावत।।५।। यह विधि पूजा करके मोहन, सब व्रजकों आनंद बढावत।। जयजय शब्द होत चहुंदिशते, "गोविंद" विमल विमल यश गावत।।६।।

भोग में राग-सारंग गाय खिलावत शोभा भारी।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-सारंग नीकि खेली गोपाल की गैया।। कूके देत ग्वाल सब ठाडे, यहजु दिवारी नीकी भैया।। नंदादिक देखत हें ठाडे, यहजु पाहुनी नीकी पैया।।१।। बरस द्योंस लो कुशल कुलाहल, नाचो गावों करो बधैया।। धौरी धेनु सिंगारी मोहन, बड़रे वृषभ सिंगारे।।२।। "परमानन्द" प्रभु राय दामोदर, गोधन के रखवारें।।३।।

शयन में राग-ईमन आई व्रज वधु मनहरण धरन दीपमालिका।। लसत कनक थाल कर कमलन मध, नंदमहर घर घरन।।१।। काज मोतिन के चौंक पुराये, गावत मंगल गीत जुवती जन।। "नंददास" की प्रभु छबि निरखत, फूली फिरत मन ही मन।।२।।

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है.. (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन... (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण १३

(घनतेरस का उत्सव)

श्रृंगार - चीरा चन्द्रिकाको।

वस्त्र - हरी जरीके शुथन तथा वागा चाकदार, श्रीमस्तक पर पाग चीरा छज्जेदार उसपर मोर की चन्द्रिका सादी तथा ठाड़ा वस्त्र लाल, कन्दरा पर हीरा जड़ा चोखटा तथा पिछवाई सोनेरी जरीकी भरत कामकी तथा दोनों तरफ झाड़वाली धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार हीरा-माणक-मोती के तथा सोनाके धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल गोकुल गोधन पुजही गिरधर नंदराई।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल यशोदा मदन गोपाल बुलावे।। धनतेरस आवो मेरे प्यारे, ले ऊछंग हुलरावें।।१।। हरि जरी वागों बहु भूषन, रूचि सों बहुत धरावें।। "व्रजपति" की मुख शोभा निरखत, रोम रोम सुख पावे।।२।।

राजभोग में राग-सारंग गोवर्धन पूजाकर गोविंद, सब ग्वालन पहिरावत।। आओं सुबल सुबाहु श्रीदामा, ऊँचे ले ले नाम, बुलावत।।१।। अपने हाथ तिलक करि, चंदन अरू अंगनि लपटावत।। बसन विचित्र सबनि के माथें, विधि सों बांधि बनावत।।२।। भाजन भरि भरि दे कुण्डवारों, तबहीं ताहि पठावत।। "चत्रभुज" प्रभु गिरधारी फिरिपाछे, धौरी धेनु खिलावत।।३।।

भोग में राग-सांरग बाबा के संग गाय खिलावत, बलदाऊ लालन गिरधारी।। हीही गोरी भोरी टोरी, सुरभी सुरंग मधुर मृदुलारी।।१।। आगे आवत जात पिछोरी, हुरक हुरक लेत हुंकारी।। देत अचानक फूंक निकट व्हे, भाजत चोंक झुकी बछरारी।।२।। ईह दिश राजा भान खिलावत, उतही खिलावत गोप गुवाल।। बीच खिलावत कुंवर लाडिलो, अतिही दुलारेहें नन्दलाल।।३।। जानत गाय खिलाय लर्डेते, जसुमति बांटत नवल बधाई।। "श्रीविट्ठलगिरिधर" पहलें ही, अपनी गाय खिलाई।।४।।

संख्या में राग-सारंग गाय खिलावत शोभा भारी।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ दीपदान दे हटरी बैठे.. (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग तोहि मिलन को बहोत करत है... (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक.. (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक कृष्ण १४
(रूप चतुर्दशी)

श्रृंगार - पाग चीरा को।

वस्त्र - फरकसाई सोनेरी जरी के शुथन तथा वागो घेरदार, श्रीमस्तक पर पाग चिरा की छज्जेदार पर सादा मोरकी चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र वादली रंगके तथा पिछवाई सोनेरी जरीकी भरत कामकी धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार भारी शृंगार हीरा-पन्ना-मोती के तथा नुपुर सोना के धराये गये है।

विशेष - आज श्रीनाथजी राजभोग से लेकर संध्या के दर्शन तक कांच की बंगले/हटड़ी में बिराजे है।

मंगला में राग-बिलावल पूजा विधि गिरिराज की नन्द लाल बतावें।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-देवगंधर न्हवावत है सुतकों नन्दरानी।। मानत पर्व रूप चौदस को, तिलक उबटनो कर हरखानी।।१।। वस्त्र लालजरी आभूषण, पहरावत रूचिसों मनमानी।। मेवा ले चले गाय सिंगारन, "व्रजजन" देख देख विहसानी।।२।।

राजभोग आते समय राग-सारंग/बिलावल कान्ह कहयो नंद भोग लगावो।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग बड़ड़ेन को आगें दै गिरिधर, श्री गोवर्धन पूजन आवत।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

भोग में राग-सारंग कान जगावत चलेरी कन्हाई।। गिरिधर सिंघद्वार व्हे टेरत, सखा मंडली सनमुख धाई।।१।। विविध शृंगार पहरी पट भूखन, प्रफुलित उर आनन्द न समाई।। रूचिर गैल गोवर्धन की, खेलत हँसत सबें सुखदाई।।२।। टेरत धूमरी गांग बुलाई, डाढ़ मेली आतुर व्है धाई।। सावधान सब भोर खेलन को, "चत्रभुजदास" चली सिर नाई।।३।।

संध्या में राग-सारंग खेली बहोखेली गांग बुलाई घूमर धौरी।। बछरा पर उपरैना फेरत, डाढ़ मेलिकें दौरी।।१।। सन्मुख जाइ कूक मारत है, गोसुतकों भरि कोरी।। धों धों करत लकुटि करलीने, मुख पर झारी पिछोरी।।२।। आनन्द मुदित गोपाल ग्वाल सब, घेरी करत इकठौरी।। "चत्रभुज" प्रभु गिरिधर या ब्रज में, जुग-जुग राज करोरी।।३।।

शयन में राग-कान्हरो आज अमावस दीपमालिका, बड़ी परवनी है गोपाल।। घर घर गोपी मंगल गावे, सुरभी वृषभ सिंगारों लाल।।१।। कहत जसोदा सुनो मनमोहन, अपने तात की आज्ञा लेह।। बारो दिपक बहुत लाडिले, कर उजियारो अपने गेह।।२।। हँस व्रजनाथ कहत मातासों, धौरी धेनु सिंगारो जाय।। "परमानंददास" को ठाकुर, जाई भावत है निसदिन गाय।।३।।

राग-कान्हरों आज कुहुकी रात माधौ, दिपमालीका मंगलचार।। खेलों द्युत सहित संकर्षन, मोहनमूरति नन्द कुमार।।१।। कहत यशोदा सुनो मनमोहन, चंदन लेप शरीर करो।। पान फूल चोवा दिव्य अम्बर, मणिमाला ले कण्ठ धरो।।२।। गो क्रीडन पुनी काल्ह होयगो, नन्दादिक देखेगें आय।। "परमानन्ददास" संग लीने, खिरक खिलावत धौरी गाय।।३।।

मान में राग तोय मिलन को बहोत करत है मोहनलाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

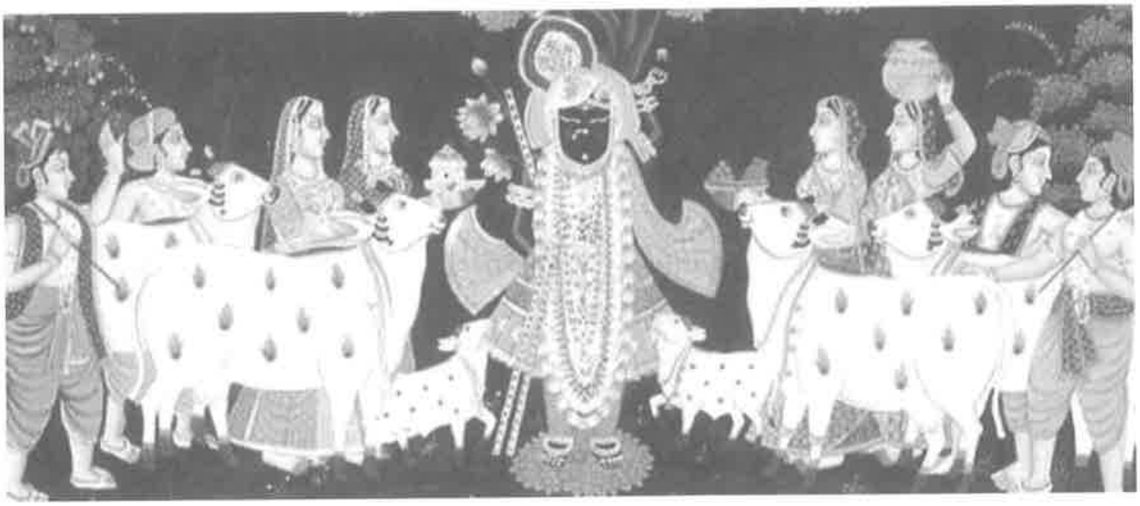

कार्तिक कृष्ण ३०

(दीपोत्सव)

श्रृंगार - कुल्हे चन्द्रिका का।

वस्त्र - फरकसाई रूपहरी जरी के सोनेरी कोर के, शुथन लाल जरी की, वागो चाकदार रूपहरी जरी का तथा श्रीमस्तक पर कुलह पर मोरकी सादी पांच चन्द्रिका की जोड़, वेणी श्याम रेशम की, दोनों तरफ अलक धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी रंग के तथा जरी की भरत काम की पिछवाई।

आभरण - आज श्रृंगार भारी, हीरा-माणक-मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल गोकुल गोधन पुजहीं, गिरधर.(यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

अभ्यंग समय राग-देवगंधार आज न्हावों मेरे कुंवर कन्हैया, मानी है कान्ह दिवारी।। अति सुगन्ध केसर उबटनो, नये वसन सुखकारी।।१।। कछु खाओ पकवान मिठाई, हों तुम उपर वारी।। कर श्रृंगार चले दोउ भैय्या, तृण तोरत महतारी।।२।। गोधन गीत गावत तिहुंपुर में, घर घर मंगलचारी।। "कृष्णदास" प्रभुकी यह लीला, गिरिगोवर्धनधारी।।३।।

राग-बिलावल बल न्याहे ऐसे लालन न्हैये।। उबटे अंग कित फिरत हो धाये, कमलनयन बल जैये।।१।। न्हाओ न तातो पानी सीयरो, समोई कनक कुंड़ी भरि कबको सिरैये।। कर श्रृंगार नवल बानिक बन, जोई भावे सोई खैये।।२।। वारने गई महतारी कुंवर पर, गाय खिलावन बाबा संग जैये।। "मानदास" कुलदेवता मनावत, फूली महेरी आनन्द न समैये।।३।।

राग-देवगंधार न्हात बलदाऊ कुंवर कन्हाई।। अति सुगंध केसर कस्तुरी, जलसों घोर मिलाई।।१।। रत्नजटित आभूषण वस्त्र, व्रजरानी पेहेराये।। अति आनन्द निहारत फिर फिर, आछी भांत बनाये।।२।। यह दिन दीपमालिका को सुख, मानत है नंदलाल।। फूले गोप ग्वाल सब मानत, और सकल व्रजबाल।।२।। अपने संग सखा सब लीने, खिरक खिलावत गाय।। राजत है "गिरीधर श्रीविट्ठल", सब मन हुलास बढ़ाय।।३।।

राग-बिलावल घरि एक छांडों तात बिहार।। राम कृष्ण तुम दोऊ भैया, आवो बैठो करो श्रृंगार।।१।। यशोमति कहत हे आज अमावस, दीपमालिका मंगल नाम।। घर घर बालक सबे श्रृंगारे, सुनो श्यामघन राम।।२।। खेलेंगी गाय गुवाल नाचें सब, गोपी गावें गीत।। "परमानंददास" यह मंगल, वेद पुराण पुनीत।।३।।

राग-बिलावल/सारंग यह दीवारी वरस दीवारी, तुमकों नित्य नित्य आवो।। नंदराय नंदरानी यह ढोटा, पूजें अति सुख पावो।।१।। पुजवो मनोरथ सब व्रजजनके, देव पितर पुजावो।। "श्रीविट्ठलगिरिधरन" संगले, गोधन पूजन आवो।।२।।

अभ्यंग एंव श्रृंगार में राग-बिलावल आज दिवारी बड़ों पर्व घर।। कहत जसोदा सुनहु लाल तुम, ले लकुटी खेलों अपने कर।।१।। प्रथम न्हाओं आछे सोंधेसों, गुही बेनी अंजन देउ नटवर।। सूथनलाल तासकी झगुली, धरों चंद्रिका सुभग शिस पर।।२।। पाछे पहेर विविध आभूषण, मुरली लो मेरे मुरलीधर।। देउ भाल मृगमदको बिन्दुका, जो कोउ द्रष्टी न लगे तेरे पर।।३।। खेलों तुम मेरे आंगन दोउ, हों देखो अपने आनन पर।। पान फूल मेवा मिश्रीसों, झोरी भर ग्वालन देउ सुन्दर।।४।। सुभग स्वरूप नंदलालको, मोहित होत देखी सब सुरनर।। यह विध कहत नंदजुकी रानी, सुन सुन वारत सर्वस्व "गिरिधर"।।५।।

राग-बिलावल गोदबैठे गोपाल कहत व्रजराजसों।। (यह पूरा पद पेज ८६ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-सारंग अन्नकूट कोटिक भातन सों भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राजभोग सरे राग-नट बिलावल आन और आन आन कहत बिझक रहत व्रज के नरनारी।। (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राजभोग दर्शन में राग-सारंग गुर के गुंजा पुवा सुहारी (यह पूरा पद पेज १०२ पर पढ़े।)

भोग में राग-सारंग बड़ड़ेन को आगें दै गिरिधर, श्री....(यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

संध्या में राग-सारंग कान जगावत चलेरी कन्हाई।। (यह पूरा पद पेज १११ पर पढ़े।)

राग-सारंग खेली बहोखेली गांग बुलाई घूमर धौरी।। (यह पूरा पद पेज १११ पर पढ़े।)

राग-सारंग दीपदानदे श्याम मनोहर, सब गायनके कान जगावत।। गांग बुलाई धूमर धौरी, ऊँचे लेले नाम बुलावत।।१।। होउ सचेत भोर खेलनकों, दोरी आवत नेंक सुनावत।। सनमुख जाय फूंक मारतहें, मुख पर फेर पिछोरी धावत।।२।। मुदित गोपाल ओर ग्वाल मिल, जाको बछरा ताहि मिलावत।। "चत्रर्भुजप्रभु" गिरिधरन डाढ़ सुन, हँस गावत करताल बजावत।।३।।

राग-सारंग खिरक खिलावत गायन ठाढ़े।। इत नंदलाल ललित लरिका उत, गोप महाबल गाढ़े।।१।। सुन निज नाम नेंचुकी निकसी, बल बछरा जब काढे।। अपनी जननीके

जानू लाग, पय पीवत नवल अखाड़े।।२।। नृत्यत गावत वसन फिरावत, गिरीकी शिखर पर चाढ़े।। "छीतस्वामी" हम जबतें वसे व्रज, शैल सकल सुख बाढ़े।।३।।

राग-सारंग गाय खिलावत शोभा भारी।। (यह पूरा पद पेज १०८ पर पढ़े।)

रतन चौक में हड़डी में बीराजे तब राग-हमीर देखो इन दीपन की सुन्दराई।। (यह पूरा पद पेज १०६ पर पढ़े।)

राग-हमीर आज दिपत द्विय दीपमालिका।। मानो कोटि रवि कोटि चंद छबि, विमल भई निशि कालिका।।१।। गजमोतिनके चौक पुराये, बिचबिच वज्र प्रवालिका।। गोकुल सकल चित्रमणि मंडित, शोभित झाल झमालिका।।२।। पहर श्रृंगार बनी राधाजू, संग लियें व्रज बालिका।। झलमल दीप समीप सोज भर, कर लियें कंचन थालिका।।३।। पाये निकट मदनमोहन पिय, मानो कमल अलि मालिका।। आपुन हँसत हँसावत ग्वालन, पटक पटक दे तालिका।।४।। नंदभवन आनंद बढ्यो अति, देखत परम रसालिका।। "सूरदास" कुसुमन सुर बरखत, कर अंजुलि पुट मालिका।।५।।

राग-ईमन/कान्हरौ दीपमालिका करन आई, व्रजबधु मनहरनि।। कंचन थाल लसत कमलनकर, नंदमेहर घर घरनि।।१।। गजमोतिनके चोक पुराये, गावत मंगल गीत जुवती गन।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, निरख हरख प्रफुल्लित तन मन।।२।।

राग-कान्हरौ आज अमावस दीपमालिका बड़ी परवनी है गोपाल।। (यह पूरा पद पेज ११२ पर पढ़े।)

आरती के समय राग-कान्हरौ दीपदान व्रजराज देत दोऊ, ढोटनकों गोद बैठारी।। दीपदान की होत आरती, मंगल गावत सब व्रजनारी।।१।। दीपदान शोभित भवनन पर, धरत फिरत खिरकनमें ग्वाल।। लाल कहत बावा तुम देखो, जानो पहराई कंचन माल।।२।। यह त्योहार दिवारीको सुख, मानत नंद गोप व्रज लोग।। नानाभांतके करत रहत हें, अपअपने मन भाये भोग।।३।। हटरी भरत नंदजूकी रानी, मेवा सब पकवान मिठाई।। हँसत हँसत गृह गृहकी सुंदरि, सौदा करन लालसों आई।।४।। देखत फूलत माय-बाबा दोऊ, अनगिनती नोछावर वारी।। हटरी बैठे यों राजत हें, "श्रीविट्ठलगिरिधारी"।।५।।

श्री नवनीत प्रियाजी, श्रीनाथजी के पास पधारे उस समय कमल चोक में ध्रुव बारी के सामने बैठकर कीर्तन समाज हटड़ीके कीर्तन राग कान्हरों में गाते है। आज मान व पोढ़ने के कीर्तन नहीं होते हैः-

राग-कान्हरौ (हटड़ी के कीर्तन) सुरभी कान जगाई खिरक बल मोइन बैठे राजत हटरी।। (यह पूरा पद पेज १०६ पर पढ़े।)

राग-कान्हरौ लाल माई बैठे राजत हटरी।। रानीजू साज संम्हार धर्यो, बलराम कृष्णको बटरी।।१।। लडुवा गूंजा पकवान बहुत कर, भरभर थार धरीहें मठरी।। गृह गृहतें गोपी सब आई, भीरभई तहां ठटरी।।२।। तोलतोल के देत सबनकों, भाव अटल कर राख्यो अटरी।। "रसिकप्रभुके" नयनन लागी, श्रीवृषभान कुंवरीकी रटरी।।३।।

राग-कान्हरौ दीपदान दे हटरी बैठे, नन्दबावा के साथ।। नाना विध के, मेवा आने बांटत अपने हाथ।।१।। शोभित सबें शृंगार बनावत, ओर चंदन दिये माथ।। "नंददास" प्रभु सगरिन आगे, गिरिगोवर्धननाथ।।२।।

राग-कान्हरौ दीपदान दे हटरी बैठे, नवललाल गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०४ पर पढ़े।)

राग-कान्हरौ गिरिधर हटरी भली बनाई।। दीपावली हीरा मणि राजत, देखें हरख होत अति भाई।।१।। अनेक भांत पकवान बनाये, अति नौतन व्यंजन सुखदाई।। सुन्दर भुषण पहेरे सुन्दरि, सौदा करन लालसों आई।।२।। सावधान व्है सौदा कीजे, जौ दीजें तो तोल पुराई।। राखो चित चंचल नहिं कीजे, ग्वालिन हँस मुसकाई।।३।। कैसें बोली बोलति ग्वालिन, कहत यशोदामाई।। "परमानंद" हँसी नन्दघरनी, सबे बात में पाई।।४।।

दीपावली

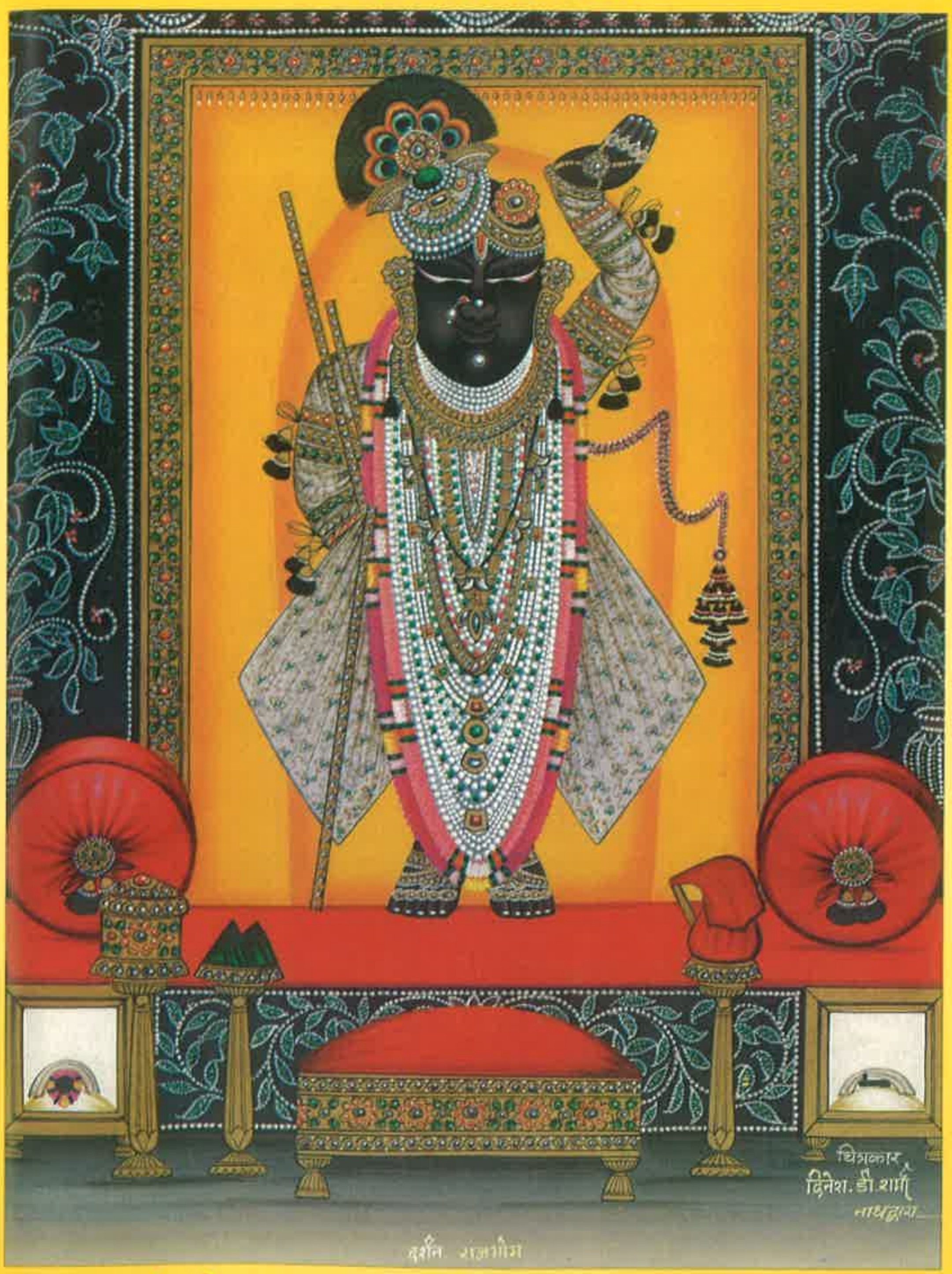
चित्रकार
दिनेश. डी. शर्मा
नाथद्वारा
दर्शन राजभोग

प.भ. श्रीमती वृजललना स्व. श्री भगवान वल्लभ जोशी, उदयपुर
का जय श्री कृष्ण

अन्नकूट उत्सव

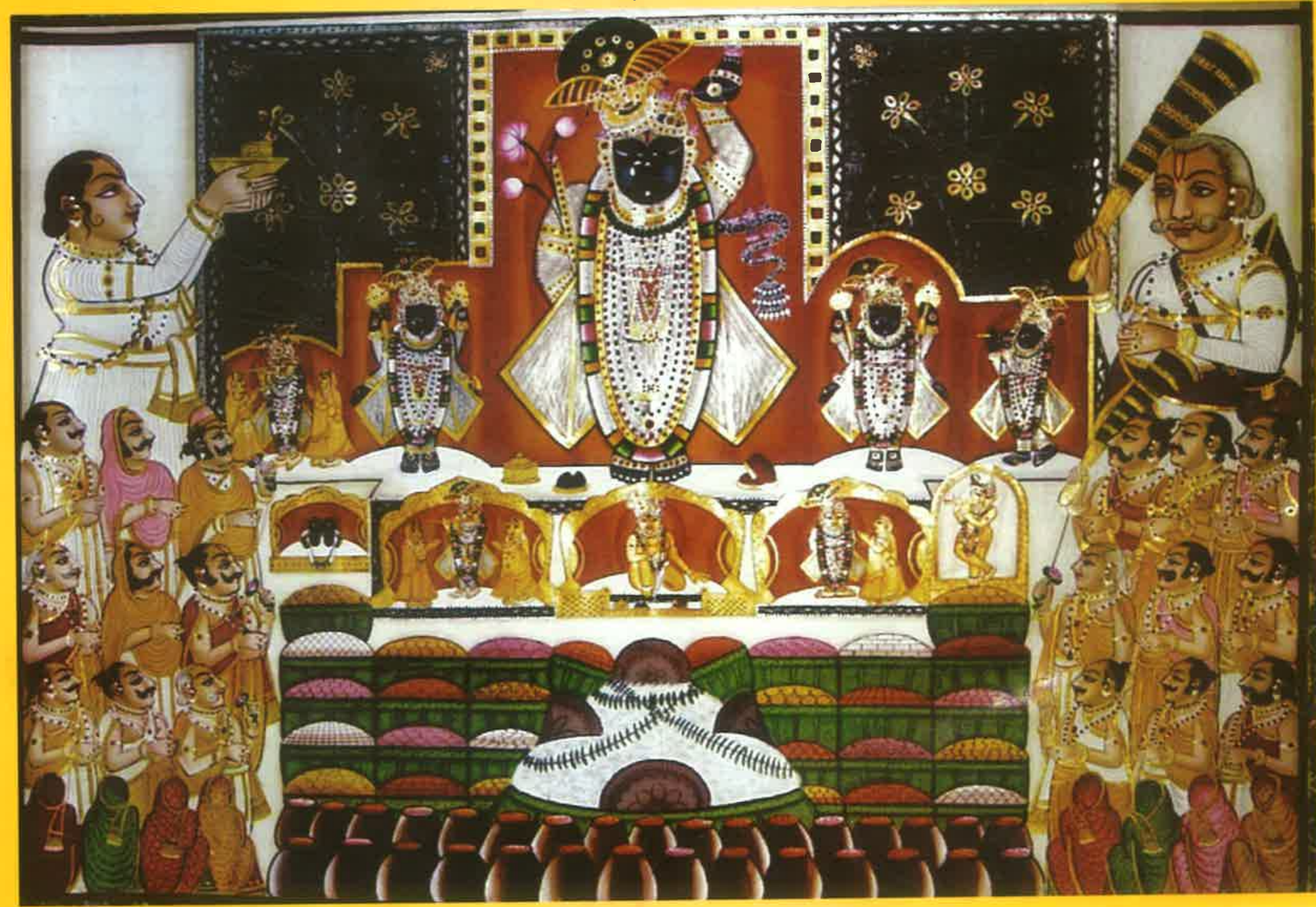

डॉ. श्री विजय जोशी एवं श्रीमती डॉ. सुषमा जोशी, उदयपुर का जय श्री कृष्ण

कार्तिक शुक्ल १

(श्री अन्नकूटोत्सव)

श्रृंगार - कुल्है जोड़ गऊकर्णको। दीपावली का पूरा श्रृंगार धराया हुआ मंगला से ही रहता है। मंगला के दर्शन होते है। राजभोग के दर्शन बाहर नहीं कराये जाते है। पिठिका पर लाल दगल धराया जाता है।

मंगला में दाग-बिलावल गोकुल गोधन पुजही गिरधर नंदराई।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल पूजा विधि गिरिराज की नन्द लाल बतावें।। (यह पूरा पद पेज १०५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग बडडेन को आगें दै गिरिधर, श्री गोवर्धन पूजन आवत।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

अन्नकोट में गाये जाने वालें कीर्तनों का क्रम

राग-सारंग गोवर्धन पूजन चलेरी गोपाल।। (यह पूरा पद पेज १०७ पर पढ़े।)

राग-सारंग बडडेन को आगें दै गिरिधर, श्री गोवर्धन पूजन आवत।। (यह पूरा पद पेज ६० पर पढ़े।)

ग्वालों को पहरावें तथा कुण्डवारा दे तब का पद राग-सारंग गोवर्धन पूजाकर गोविंद सब ग्वालन पहिरावत।। (यह पूरा पद पेज ११० पर पढ़े।)

राग-सारंग खिरक खिलावत गायन ठाड़े।। (यह पूरा पद पेज ११४ पर पढ़े।)

गोवर्धन पूजा करके श्रीलालन श्रीजीपास पधारे तब कीर्तन राग-सारंग गोवर्धन पूजो गोकुलराई।। बल समेत तब सखा चले जुर, खिरक खिलावत गाई।।१।। नये नये नाम लेत सुरभिनके, नेरें लई बुलाय।। देत कूंक वछरा गहि मोहन, पीतांबरहि फिराय।।२।। मेली डाढ़ बुलाई काजर, सन्मुख आई धाय।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरन खिलावत, हँसकर ताल बजाय।।३।।

अन्नकोट के भोग आने पर राग-सारंग गोधन पूज सबै रंग भीनें।। सहस्त्र भुजा गिरिधरन दूसरो, जेवत श्याम सखन संग लीने।।१।। उमडे सुन सुन बालवृद्ध सब, अगणित शाक पाक धृतकीने।। जो कोऊ सकुच रही गुरूजन की, बाँह पसार तेऊ लीने।।२।। जय जयकार भयों चहुँदिशतें, भामिनी मिल गावत स्वर झीने।। "चत्रभुज" प्रभु गिरिधरन सदा व्रज, राज करो भक्तन सुख दीने।।३।।

राग-सारंग अन्नकूट कोटिक भातन सों भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राग-सारंग आन और आन कहत बिझक रहत ब्रज के नारीनर। यह पद (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

अन्नकोट के दर्शन समय गाये जाने वाले पद

राग-सारंग अन्नकूट कोटिक भातन सों, भोजन करत गोपाल।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

राग-सारंग देखोरी हरि भोजन खात।। (यह पूरा पद पेज ७० पर पढ़े।)

राग-सारंग यह लीला सब करत कन्हाई।। (यह पूरा पद पेज ६२/७० पर पढ़े।)

राग-सारंग गोपन सों यों कहत कन्हाई।। जोहों कहत रहयो भयो सोई, स्वपनांतर की प्रकट जनाई।।१।। जो मांग्यो चाहो सो मांगों, पावोगे मन भाई।। कहत नंद हम ऐसी मांगें, चाहतहें हरिकी कुशलाई।।२।। करजोरें व्रजपतिजु ठाडे, गोवर्धनकी करत बडाई।। ऐसो देव हम कबहू न देख्यो, सहस्त्र भुजाधर खात मिठाई।।३।। जय जय शब्द होत चहुदिशतें, अति आनंद उरमें न समाई।। "सूरश्याम" को नीकें राखे, कहत महेर हलधर दोऊ भाई।।४।।

राग-नट बिलावल गिरिवर श्याम की अनुहारि।। (यह पूरा पद पेज ९८ पर पढ़े।)

इन्द्रमान भंग के पद राग-मालव जयजय लाल गोवर्धनधारी, इन्द्र मानभंग कीनो।। वाम भुजा राख्यो गिरि नायक, भक्तनको सुख दीनो।।१।। सात द्योंस मघवा पचि हार्यो, गो सुत शृंग न भीनो।। "कृष्णदास" गिरिधर पिय आगें, पांय पर्यो बलहीनो।।२।।

राग-मालव जय जय जय मोहन बलवीर।। जय जय इन्द्र मान मदभंजन, श्रीगोवर्धन उद्धरण धीर।।१।। जय जय जय गोकुल दुख मोचन, जय जय जय वर भेख आभीर।। मणिगण आभरण लसत पीत पट, जय जय घनश्याम शरीर।।२।। जय जय अद्भुत चरित्र मनोहर, श्रीराधा रसगुण गंभीर।। "कृष्णदास" प्रभु सब विध समरथ, अद्भुत यश गावत मुनिकीर।।३।।

राग-मालव जित्यो जित्यो हो यशोदा को नन्दन, मघवा वृष्टि निवारी।। वाम बाहु राख्यो गिरिनायक, गोकुल आरति टारी।।१।। इन्द्र खिस्याय जोर कर विनवे, मैं अपराध

कियो भारी।। तुम दयाल करूणा निधि माधो, हृदय भये हितकारी।।२।। बाल विनोद बाल लीलारस, अद्भुत केलि बिहारी।। “कष्णदास” व्रजवासी बोलत, लाल गोवर्धनधारी।।३।।

राग-मालव सामरे बल गई हे भुजन की।। क्यों गिरि सुबल धर्यो कर कोमल, बुझति हों गति तनकी।।१।। इंद्र रिस्याई वरख्यों व्रज ऊपर, तेहू तो हठि हारें।। भेटत ग्वाल कहेत हँस भैया, तें हम भले उबारे।।२।। हरद दूब अक्षत दधि कुंकुम, हरस यशोदा जाई।। कर सिर तिलक चरण रज वंदित, मानों रंक निधि पाई।।३।। परस चरण कमल व्रज सुंदरि, हरख हरख मुसकाई।। फिरफिर दरशन करत याही मिस, मनकी प्रीति दुराई।।४।। “सूरदास” सुरपति जिय कंपन, सुरभी संगले आयो।। तुम दयाल अवगति अविनाशी, में कछु मरम न पायो।।५।।

राग-अड़ानों सब गोकुल को जीवन गोपाल प्यारो।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

राग-अड़ानों सुर राज आज पायन पर्यो, गिरिधरन अपनो कर्यो।। तज गज व्रजरज लोटत आयो, सुरभी उपहार लायो, वदन निरख मगन भयो, कनक दंडलों धरनी ढ़र्यो।।१।। तब गोपाल भये कृपाल, पीताम्बर पहरायो, कान्ह अभय कर शीश धर्यो।। “हरि नारायण श्यामदास” के प्रभु के, चरण शरण रहेत सदांही, सब विधि अनुसर्यो।।२।।

राग-अड़ानों राजें गिरिराज आज, गाय गोप जाके तर, बानिक बिचित्र बनी, धरें भेख नटवर।। लियो हे उठाय, व्रजराजके कुंवर वर, अरग थरग राख्यो मुरलीकी फूंक पर।।१।। बरसे प्रलयके पानी, बूंद न जात बखानी, वज्रहूतें अति भारी, तारे टूटे तर तर।। तापर के खग मृग, चातक चकोर मोर, बूंद न काहूपें परी, भयोहे कौतुक भर।।२।। प्रभुजु की प्रभु ताई, इन्द्रहु की जड़ताई, मुनि हसें हेर हेर, हरि हसें हर हर।। “नंददास” प्रभु, गिरिधारीजू को हांसी खेल, इन्द्र को गर्व गार्यो, भयो हे दूवर धर।।३।।

राग-अड़ानों लाल आज गिरि कैसे धर्यों कर।। एक कर कटीधरी, दूजे करपर गीरि, सब ए व्रजकुल, राख्यों अपनी छाँहि तर।।१।। पीत पट फरत हैं, घेरत हैं धेन-वृंद, हरखत वार वार, भुज की लटक पर।। कबहुं मुरली ले धरत, कमल मुख बीच बीच, गावत हे लेत सप्तसुर।।२।। सुरराज हार मानी, लायो है गंगा को पानी, हरि को न्हवाय, गाय सुरभी भेंटकर।। “नंददास” प्रभुजु के, सुन्दर बदन पर वारत, आरती मात तात, नैनन नीर धर।।३।।

राग-कान्हरौ कान्ह कुंवर के कर पल्लव पर, मानों गोवर्धन नृत्य करें।। ज्यों ज्यों तान उठत मुरली में, त्यों त्यों लालन अधर धरे।।१।। मेघ मृदंगी मृदंग बजावत, दामिनी दमक मनों दीप जरे।। ग्वाल तालदे नीके गावें, गायन के संग स्वरजु भरे।।२।। देत असीस सकल गोपीजन, बरषाको जल अमित झरे।। यह अद्भुत अवसर गिरिधरको, "नंददास" के दुःख हरे।।३।।

राग-कान्हरौ/अड़ानो मत गिरि गिरे गोपाल के कर तें।। अरे भैया ग्वाल लकुटीया टेको, अप अपने करके बल तें।।१।। सात द्यौस मूशलधार बरख्यों, बूंद न परी एक जलधर तें।। गोपी ग्वाल नंदसुत राखे, बरस बरस हार्यो अंबर तें।।२।। अंतरिक्ष जल जर्यो शिखर पर, नंदनंदन को कोप अनल तें।। "परमानंद" प्रभु राखि लियों व्रज, अमरापति आयो पायन पर तें।।३।।

राग-कान्हरौ/अड़ानों अब नेंक हमहि देहु कान्ह गिरिवर।। तुमे लियें बडी वार भई हे, दुख उठे कोमल कर।।१।। मति डिगपरे दबें सब व्रजजन, भयोहे हाथ पर अतिही भर।। तब केसें यह वदन देख हें, ताते जीयमें बड़ोही डर।।२।। जान सखन को हेत मोहनराय, दीयो नवाय नेंक अपनों कर।। "नंददास" प्रभु भुज लटकि गई, तब हँसें नागर नगधर।।३।।

श्रीद्वारकाधीश, श्री विट्ठलनाथजी, श्रीनवनीत प्रियाजी पधारे तब राग-सारंग पूजके घर आये, गोवर्धन।। जननी यशोदा करत आरती, मोतीन चोक पुराये।।१।। मंगल कलश विराजत, द्वार वंदन वार बंधाये।। "लालदास" गिरिधर गिरि पूज्यो, भये भक्तन मन भायो।।२।।

सभी स्वरूप अपने मंदिर में पधारनें के बाद भोग-संध्या आरती में राग-कान्हरौ कान्ह कुंवर के कर पल्लव पर मानों गोवर्धन नृत्य करें।। (यह पूरा पद ऊपर पढ़े।)

शयन भोग आवे तब राग-कान्हरौ हँस हँस ब्यारू करत गुपाल।। खटरस व्यंजन करत रोहनी, लाय धरत व्रजबाल।।१।। बीच धरी कंचन की थारी, लाय परोस्यो भात।। प्रभु "कल्याण" बलराम श्याम को जिमावत जसोदा मात।।२।।

शयन दर्शन में राग-अड़ानों राजें गिरिराज आज, गाय गोप जाके तर, बानिक बिचित्र बनी, धरें भेख नटवर।। (यह पूरा पद ऊपर पेज ११८ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक, हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल २

(भाई दूज)

श्रृंगार - चिरा चन्द्रिका का।

वस्त्र - लाल रंग के खीनखाप के शुथन तथा वागा घेरदार कटि में पटका लाल जरी का, पाग चीरा पर सादी मोरकी चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र वादली रंग के तथा पिछवाई मोती के झाड़की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष - आज श्रीजी को राजभोग धरने के बाद भाईदूज का तिलक किया गया है। झालर घन्टा तथा शंख बजाया गया है। आजसे इन्द्रमान भंग के कीर्तन किये जाते है। सात दिन राजभोग में खिचड़ी आरोगाई जाती है।

मंगला में राग-बिलावल (झांझ नही बजते है) गिरिपर कोपिकें उठ्यो इन्द्र रिस्याय।।धु.।। अपनेजु व्रतके काज कारण, मनमें अति अकुलाय।। पठये जो सुरपति दूत तब, तहां गये दोरे धाय।। देखकें व्रजराज लीला, कहो हमसों आय।।१।। एक सांवरोसो नंदढोटा, कछु कही न जाय।। उन मेटकें पूजा तिहारी, इहि गिरिहिं लुटाय।। श्रवण सुन सुरराज कोप्यो, भयो अपने भाय।।२।। काट बन्धन देउ सबके, लगो गिरिसों जाय।। उमड़ेजु मधवा चहूं दिसतें, व्रजे देऊँ बहाय।। देखकें परमाण उनको, कहो हमसों आय।।३।। सप्त निशदिन मान एको, करी अति अकुलाय।। नीर और समीर दोनों, बहे बहुत बनाय।। देख धीरज धरे न कोऊ, कहा भई यादोंराय।।४।। बूंद पाहनके समान, बरखत जानो ताहि।। ग्वाल गोपी गौ बछरा, रहे सबन सकुचाहि।। तबतो न मान्यो कहयो उनको, हे कोउ अबे सहाहि।।५।। देखकें मनको अँदेसो, लियो गिरि जो उठाय।। धर्यो नखके अग्र तब, यशोमति जु मनहि सिहाय।। देहु लकुटी चहुं ओरन, मति कहूं डिग जाय।।६।। सप्त सागर जल सुदर्शन, लियो सकल समाय।। भीजे नहि पाषाण पोहोमी, सलिल सरल सुभाय।। गतिमति हरी सब इन्द्रकी, मद जु लोचन छाय।।७।। हारमान कें चूक अपनी, करों कौन उपाय।। जान्यो नहीं परमाण तुम्हारो, रह्यो भ्रम जो भुलाय।। गयो मद सब उतरकें तब, मिल्यों हे शिरनाय।।८।। तब कियो सनमान हरिजू, इन्द्र छूवे पाय।। पीठ थापकें कियो अपनो, दियो मन जो बढ़ाय।। “केशवदासकें” प्रभुकी लीला, ते सदा गुण गाय।।९।।

श्रृंगार में राग-बिलावल यातें जिय भावे सदा, श्री गोवर्धन धारी।। इन्द्र कोपते नंदकी, आपदा निवारी।।१।। जो देवता अराधिये, सो हरि को भिखारी।। आन देव कित सेईये, बिगरे उपकारी।।२।। दुःसाशन के कोपतें, द्रोपदी उबारी।। “परमानन्द” प्रभु सांवरों, भक्तन हितकारी।।३।।

तिलक होय तब राग-बिलावल आज दुज भैया की कहियत, कर लिये कंचन थार के।। करो तिलक बहिन सुभद्रा, बल और श्री गोपाल के।।१।। आरती करत देत न्योछावर, वारत मुक्ता माल के।। “रामदास” प्रभु अपनी जानके, पट्ट परसत जब भाल के।।२।।

राजभोग आवे तब राग-आसावरी (गृह भोजनके) लाडिले गोपाल हमारे भोजन किजें।। बहोत भांत पकवान बनाये, खटरस बीजन लीजें।।१।। सद्य धृत खीचड़ी खीर और खोवा, स्याम सलोने लीजें।। आछे बरा खाटे और मीठे, एक कोरो ऐक भीजें।।२।। साज समाज ग्वाल ले आये, बांट सबन को दीजें।। “आसकरन” प्रभु मोहन नागर, पान्यो पछावर पीजें।।३।।

(व्रजभक्तन के घर भोजन के) आज गोपाल पाहुने आये, निरखे नयन अघाय री।। सुन्दर वदनकमल की शोभा, मो मन रह्योहे लुभाय री।।१।। के निरखुं के टहल करू, एको नही बनत उपाय री।। जैसे लता पवन वश द्रुमसुं, छुटत फिर लपटाय री।।२।। मधुमेवा पकवान मिठाई, व्यंजन बहुत बनाय री।। रागरंग में चतुर “सुर” प्रभु, कैसे सकूं रिझाय री।।३।।

राजभोग में राग-सारंग अब न छांडो चरणकमल, महिमा में जानी।। सुरपति मेरों नाम धर्यो, लोक अभिमानी।।१।। अबलों में जानत नहीं, ठाकुर हे कोई।। गोपी ग्वाल राख लिये, मेरी पत खोई।।२।। ऐरावत कामधेनु, गंगाजल आनी।। हरिको अभिषेक कियो, जय जय जय सुरबानी।।३।। बारंवार प्रणाम करत, गोवर्धन धारी।। “परमानंद” गोप भेख, लीला अवतारी।।४।।

भोग में राग-नट कहेंधो मेरे बारे हो लाल, गोवर्धन केसें उठाय कर लीनों।। एकही हाथ अकेले ही ठाडे, नेक बलदाऊ न दीनों।।१।। चुंबत भुज चांपत उर लावत, अचरा प्रेम जल भीनों।। “गोविंद” प्रभु सपूत लरकाई तें, सब व्रजजन सुख दीनों।।२।।

संध्या में राग-हमीर/सोरठ देखो माई बदरनकी बरियाई।। कमलनयन गिरि भार धर्यो कर, यह जु अधिक झरलाई।।१।। जाके वाम बाहुबल वसिये, तासों कहा वस्याई।। ठाकुरसों सेवक सरवर करे, इन बातन पत जाई।।२।। “सूरदास” प्रभुसों कोंन दूसरों, जिहि बन कुंवर कन्हाई।। अब मघवा जो जोर करत हे, फिरपाछें पछिताई।।३।।

शयन में राग अड़ानों सुरराज आज पायन पर्यो, गिरिधरन अपनो कर्यो।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ३

शृंगार - चीरा कतरा का श्रृंगार।

वस्त्र - श्याम जरी के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग चीरा वाली पर जरी के काम का कतरा तथा ठाड़ी लड़ मोतीकी। पिछवाई श्याम जरी की, ठाड़ा वस्त्र लाल तथा वेणुवेत्र पोपटी रंग की मिनाकी तथा फूल की छड़ी धराई गई है, लीला इन्द्रमान भंग की चलरही है।

आभरण - माणक मोती के तथा हार पोपटी रंग के शृंगार अच्छा धराया गया है।

मंगला में राग-बिलावल याते जिय भावे सदा गोवर्धनधारी।। इंद्र कोपते नंद की आपदा निवारी।।१।। जो देवता आराधियें सो हरि को भिखारी।। अन्यदेव कित सेईयें गिरे आपकारी।।२।। दुःशासन के क्रोधतें द्रोपदी उबारी।। “परमानंद” प्रभु सांवरों भक्तन हितकारी।।३।।

शृंगार में राग-बिलावल सब मिल पूछें, गोवर्धन क्यों धर्यो।। कहो कृष्ण एसो डर काको, क्यों मधवा पायन पर्यो।।१।। सोई मंत्र किन हमही सिखाओ, हम करें तुम्हारी सेवा।। “परमानंद” ऐसो ठाकुर तज, कित आराधत देवा।।२।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के कीर्तन) राग-आशावरी गोद बेठाय जिमावत मैया।। सुओदन घृतसानि जसोदा, श्रीमुख मेलत कुंवर कन्हैया।।१।। आसपास व्रजके सब लरिका, संग के सखा बलभैया।। खेलत खात हँसत लाडिलों, जसुमति लेत बलैया।।२।। रूचि अपनीसों भोजन कीनो, कछु पियो कर घैया।। “रसिक” सुहेत बिरी आरोगत, जे पठाइ नंदरैया।।३।।

राजभोग में राग-सारंग व्रजजन लोचनही को तारो।। सुन यशोमति तेरो पूत सपूतो, कुल दीपक उजियारो।।१।। धेनु चरावन जात वृंदावन, तब होत भवन अति भारो।। घोष सजीवन मूर हमारो, छिन इत उत जिन टारो।।२।। सात ध्योंस गिरीराज धर्यो कर, सात बरस को बारो।। “गोविन्द” प्रभु चिरंजीयो रानी तेरो सुत, गोप वंश रखवारो।।३।।

भोग में राग-मालव सामरे बल गई हे भुजन की।। (यह पूरा पद पेज ११९ पर पढ़े।)

संध्या में राग-मालव जय जय जय मोहन बलवीर।। (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानों लाल आज गिरि कैसे धर्यों कर।। (यह पूरा पद पेज ११९ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग तोय मिलन को बहोत करत है.. (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग वे देखो बरत झरोखन दीपक.. (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ४

श्रृंगार - ग्वाल पगा का श्रृंगार किया गया है।

वस्त्र - अमरसी जरी तास के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार। सुनहरी काम की मोर शिखा धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई अमरसी रंगकी जरितास की धराई गई है।

आभरण - गुलाबी मीना, हीरा मोती के तथा सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल व्रजपति अपुनें न बिसारेगो।। आरत कोप इन्द्र जल वरस्यों, गिरिधर कान्ह उबारेगो।।१।। दावानल तें जरत उबारे, जल प्रवाहतें टारेगो।। गोपी-ग्वाल-बाल मुख चाहत, सुरभी गोप संभारेगो।।२।। बिष जल पीवत मरत उबारे, सुरपति सोच निवारेगो।। "मेंहा" प्रभुकी सरन सकल व्रज, क्यों अनाथ कर डारेगो।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल करत है भक्तन की जो सहाय।। दीनदयाल देवकी नंदन, समरथ जादो राय।।१।। हस्त कमल छाया निस्तारन, मुदित निसान बजाय।। सकल भवन में हरख, घोख गोवर्धन लियो है उठाय।।२।। कृपा पयोधर चतुर चिंतामनी, ऐसो बिरद् कहाय।। "परमानंद दास" पशु पालक, वेद विमल जस गाय।।३।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के कीर्तन) राग-असावरी हरी भोजन करत विनोदसों।। कर कर कोर मुखारविंद में, देत यशोदा मोदसों।।१।। मधु मेवा पकवान मिठाई, दूध दह्यों घृत ओदसों।। "परमानंद" प्रभु भोजन करत है, भोग लग्यों संखोदसों।।२।।

राजभोग में राग-घनाश्री माधोजु राखों अपुनी ओट।। वे देखो गोवर्धन उपर, उठे हें मेघ के कोट।।१।। तुमजो शक्रकी पूजा मेटी, वेर कियो उन मोट।। नाहिन नाथ महातम जान्यो, भयो हे खरे तें खोट।।२।। सात ध्योंस जल वर्ष सिरानों, अचयो एक ही घोंट।। लियो उठाय गरूवों गिरि कर पर, कीनो निपट निघोट।।३।। गिरि धर्यो तृणावर्त मार्यो, जीयो नन्दको ढोट।। "परमानंद" प्रभु इन्द्र खिस्यानों, मुकुट चरणतर लोट।।४।।

भोग में राग-नट गिरिवर श्याम की अनुहारि।। (यह पूरा पद पेज ६८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-कल्याण/मल्हार आज कछु बदरन अंबर छायो।। नंद को लाल हठीलो मोहन, तापर इंद्र चढ़ आयो।।१।। तब गिरीधर पीय बुद्धि उपाई, नख पर शैल उठायो।। गोपी ग्वाल सब राख लिये है, "कुम्भनदास" यश गायो।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ/अड़ानो अब नेंक हमहि.. (यह पूरा पद पेज १२० पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन..(यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ५

श्रृंगार - टिपारा को।

वस्त्र - बदामी रंग के जरी तास के रूपेरी कोरके। शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर मोर पिछ के काम का टिपारो धरायों है। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई चित्राम की जिसमें प्रभु ने श्रीगिरिराजजी को श्रीहस्त पर उठाये रखा है। नीचे श्रीनन्द बाबा तथा गोपी ग्वाल गायें आदि खड़े है।

आभरण - नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल लीला लाल गोवर्धनधर की।। गावत सुनत अधिक रूचि उपजत, रसिक कुंवर श्रीराधावर की।।१।। सात द्योस गिरिवर कर धार्यों, मेट तृषा पुरंदर दर की।। व्रजजन मुदित प्रताप चरण तें, खेलत हँसत निशंक निड़र की।।२।। गावत शुक शारद मुनि नारद, रटत उमापति बलबल कर की।। "कृष्णदास" द्वारें दुलरावत, मांगत जूठन नन्दजूके घर की।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल आवो रे आवो भैय्या ग्वालों, या पर्वत की छैय्या।। नाचो गावो करो बधाई, सुखेन चरावों गैय्यां।।१।। जिन तुमरो पकवान जो खायो, सोई रक्षा करि हें।। "परमानन्ददास" को ठाकुर गिरिगोवर्धन धरि हें।।२।।

राजभोग आवे तब (गृह भोजन के पद) राग-घनाश्री जेंवत कान्ह करत किलकारी।। भर बुकटा मेलत मुख भीतर, कर पकरत महतारी।।१।। फूक फूक दूध मुख लावत, डारत बाहं उछारी।। तैसें ही चपल हरत सबको मन, "श्रीविट्ठलगिरिधारी"।।२।।

राजभेग में राग-घनाश्री महाबल कीनों हों बृजनाथ।। इत मुरली उत गोपिन सों रति, इत गोवर्धन हाथ।।१।। उत बालक पय पान करावत, इत सुरभी तृण खात।। उतहि चरत बछरा अपने रस, ग्वाल बजावत पात।।२।। कोप्यो इन्द्र महाप्रलय को, झर लायो दिन सात।। "परमानंद" प्रभु राख लियो ब्रज, मेट इन्द्रकी घात।।३।।

भोग में राग-नट मेरे लाडिले गोपाल गिरि कर धार्यों।। इन्द्र कोप हम उपर कीनो, पठये रीसाय मेघ वार्यों।।१।। सात ध्योंस मुशलधार वरख्यो, एको पल न बीच पार्यों।। गोपी

ग्वाल गोप गो सुत सब, आप बल राख गर्व गार्यो।।२।। छांड्यों अभिमान अमरापति अपनो, बिगार जीयमें बिचार्यो।। “कुम्भनदास” प्रभु शैल धरनके, पर्यो पायन हार्यो।।३।।

संध्या में राग-कल्याण/बिलावल करत है भक्तन की जो सहाय।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानों लाल आज गिरि कैसे धर्यों कर।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक, हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६९ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ६

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - श्याम जरी की बुंटीके रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग चीरा वाली पर रूपहरी जरीके कामका दोहरा कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सिन्दुरी रंगके तथा पिछवाई श्याम बुंटी की रूपहरी कोर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल गोविन्द गोकुल की मणी मेरे।। या लगाय रही हो तन में, दुख विसरत है तेरे।।१।। जाके गर्व बढ़्यो सोई सुरपति, रह्यो सात दिन घेरे।। जाके हित कान गोवर्धन धार्यो, सुभग भुजा कर डेरे।।२।। जाके जसुमति गर्भ बखानत, निगम नित बहोत टेरे।। सोई हरि “सूर” शरन शीश धर, पायो जतन घनेरे।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल सब मिल पूछें गोवर्धन क्योंधर्यो।। (यह पूरा पद पेज १२४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग करत है भक्तन की जो सहाय।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

रांग-सारंग अब न छांडो चरणकमल माहेमा में जानी।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े।)

भोग में राग-मालव/नट केहेधों मेरे बारे हो लाल गोवर्धन केसें उठाय कर लीनों।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े।)

संख्या में राग-कल्याण/बिलावल करत है भक्तन की जो सहाय।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानों लाल आज गिरि कैसे धर्यों करा।। (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग राधेजु के प्राण गोवर्धनधारी।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी।। (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ७

श्रृंगार - दुमाला व भीमशाही कतरा।

वस्त्र - गहरा गुलाबी बुंटियों का, शैलाके-सुथन तथा वागो चाकदार, श्रीमस्तक पर दुमाला पर सोनेरी जरीके बादला का भीमशाही कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र वादली रंग के तथा पिछवाई गुलाबी रंग की शैलाकी धराई गई है। आभरण नित्यानुसार धराये गये है।

विशेष - श्रीनाथजी आज श्रीगोपी वल्लभ में कुनवारो आरोगते है। आज श्रीगिरिराजजी को उठाने के सात दिन पूरे हुवे।

मंगला में राग-बिलावल गोपी ग्वाल पुकारन लागे, शरण तिहारी राखो जू।। बादर जुरजुर गाजन लागे, भली होय सो भाखो जू।।१।। ईन्द्र कोप हम उपर कीनो, मेघ समूह पठाये जू।। मूशलधार बरखत सेना पर, रिपु समान उठ धाये जू।।२।। जिन डरपो हों नाथ तिहारो, हँसहँस कहत मुरारी जू।। अनायास छत्र ज्यों छाया, पर्वत लियो उखारी जू।।३।। सात ध्योंस अपनो सों कीनों, मधवा रह्यो खिस्याई जू।। "परमानंद" कहें गोपीजन, केसें बेनु बजाई जू।।४।।

श्रृंगार में राग-बिलावल चिरंजीयो लाल गोवर्धनधारी।। सात द्योंस जल निवारी, या ढोटा पर वारी।।१।। देवराज प्रतिज्ञा मेटी, गोप भेख लीला अवतारी।। नल कुबेर मणिग्रीव उबारे, बालक दशा पूतना मारी।।२।। देत असीस सकल गोपीजन, राज करो व्रंदावन चारी।। "परमानंद" दासको ठाकुर, अनुदिन आरती हरत हमारी।।३।।

राजभोग में राग-सारंग हांहां हो हठिले हरि, जननी को कह्यो कर, मेह तों बरष गयों, अब गिरि धरणी धर।। देखोरे पिराई बांह, सात द्योंस कीनी छांह, अतिही कठीन कूट, छतनां ज्यों राख्यो धर।।१।। श्रमित यशोदामाय, बईयां चूंमत धाय, करोरे सहाय सबे, आंकों लेत भर भर।। कुल के देव मनावें, दानकों द्विज बुलावे, जोई मागे देहि ताहि, ओर रहे पांय पर।।२।। आनंदे सब ग्वाल गोप, इन्द्र कहा कियो कोप, जियोरी कन्हैया तेरो, जाके राज थिर कर।। "मानदास" सुरपति, जिन कीनी एसी मति, कामधेनु आगें लाय, रह्यो चरणन तर।।३।।

भोग में राग-मालव जित्यो जित्यो हो यशोदा को.. (यह पूरा पद पेज ११८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-अड़ानों लाल आज गिरि.. (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानों सुरराज आज पायन पर्यो.. (यह पूरा पद पेज ११६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन.. (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ८

श्री गोपाष्टमी उत्सव

श्रृंगार - मुकुट कांछनी का।

वस्त्र - लाल साटन के सुनहरी तथा रूपहरी कोरके शुथन लाल, कटि में कांछनी, नीचे घेरा हरा व ऊपर लाल, श्री अंग में चोली बादली रंग की शाटन की, बड़ा पटका लाल साटन दरियाई का बिना कोरका। श्रीमस्तक पर पाग व हीरा जडेला मुकुट धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई चित्रामकी गाय चराने की। आज के दिन प्रभु प्रथम गौ-चारण को पधारे थे। तीन दिन तक इसी प्रकार की पिछवाई आती है।

आभरण - भारी श्रृंगार माणक-मोती-हीरा के धराये गये है।

मंगला में राग-देवगंधार प्रथम गौचारण को दिन आज।। प्रातकाल उठ यशोदा मैया, कीनो हे सब साज।।१।। विविध भांत बाजे बाजत हैं, रह्यो घोष सब गाज।। गावत गीत मनोहर बानी, तज गुरूजन की लाज।।२।। लरिका सकल संग संकर्षण, वेणु बजाय रसाल।। आगे धेनु चले "गोविंदप्रभु", नाम भयो गोपाल।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल प्रथम गौ चारण चले कन्हाई।। माथे मुकुट पीताम्बर की छबि, वनमाला पहराई।।१।। कुंडल श्रवण कपोल बिराजत, सुन्दरता बनी आई।। घरघर तें सब छाक लेत हें, संग सखा सुखदाई।।२।। आगे धेनु हांक सब लीनो, पाछे मुरली बजाई।। "परमानंद" प्रभु मनमोहन, ब्रजबासिन सुरत कराई।।३।।

राजभोग आवें तब राग-सारंग छाक को भई अवार, नहिं छकहारी, मोही भूख लगी भारी, कैसे रहूँगो।। ए गैया मेरे मन चहियाँ, दूहूँगी बलदाऊ भैया, दूध ही पी रहूँगो।।१।। बाबासों कहा कहौ, मैया सुध भूल गई, मथत दधि मधुर मधुर, मानहूँ रहूँगो।। "श्रीविट्ठल गिरिधरन" कहत दाऊ सों, तेरो कह्यो त्योंही करूँगो।।२।।

राजभोग में राग-सारंग निके निके री गोपाल माई, चलत देखियत नीके।। मध्य गोपाल मंडली मोहन, कांधे धर लिये छींके।।१।। बछरा हांक किये सब आगे, सेली आप बनाये।। मानो कमल सरोवर तजकें, मधुप उनींदे आये।।२।। वृंदावन प्रवेश अघ मर्दन, बालक लीला भावे।। प्रेम समुद्र लोक त्रय पावन, जन "परमानंद" गावे।।३।।

भोग में राग-पूर्वि आगे गाय पाछें गाय, इत गाय उत गाय, गोविंद को गायन में बसवों ही भावे।। गायनके संग धावे, गायनमें सचुपावे, गायनकी खुररेन ले अंग लपटावे।।१।। गायनसों व्रजछायो, बैकुंठ बिसरायो, गायनके हेत गिरिकर ले उठावे।। “छीतस्वामी” गिरधारी, विट्ठलेश वपुधारी, ग्वारीया को भेस कीयें, गायनमें आवे।।२।।

संध्या में राग-गौरी लटकत चलत युवती सुखदानी।। संध्या समये सखा मंडल में, सोभित तन गौरज लपटानी।।१।। मोर मुकुट गुंजा पीरो पट, मुख मुरली गुंजन मृदुबानी।। “चर्तुभुज प्रभु” गिरिधारी आये बनते, ले आरती वारत नंदरानी।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ धैनन को ध्यान निश दिन मेरे ही मोहन को, अपने कहत गौरी गायन आई री।। आनन उजारी वनवारी हो संभार लाऊं, वा वन रहुंगो तोंलो बाबाकी दुहाई री।।१।। कजरारी कंठीवारी, मखतुल फोंदावारी, झांझरी झुनकारी प्यारी मो मन भाई री।। “हरिनारायण श्यामदासके” प्रभु, देखे हो तो झुक रही, चींरजीओ री कन्हाई री।।२।।

मान में राग-बिहाग बोलत काहे न नागरी बेना।। तोही मिलनकों बहुत करत हें, गिरिधारीलाल कमलदल नेना।।१।। जबतें द्रष्टि परी मोहन की, बिसर्यों गोचारन सुख सेना।। रटत “सूर” राधे राधे कहि, कहूं बनमाला कहूं उपरेना।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़ रहो घनश्याम बलैया लेहों, पोढ़ रहो घनश्याम।। अतिश्रम भयो बन गौचरावत, घोंस परी है धाम।।१।। सीयरी ब्यार झरोकन के मग, अति शीतल सुख धाम।। “आसकरन” प्रभु मोहन नागर, अंग अंग अभिराम।।२।।

नोटः- दशमी तक मान व पोढ़ने में उपरोक्त पद ही गाये जाते है।

कार्तिक शुक्ल ९

(अक्षय नवमी)

श्रृंगार - दिपावली का ही भारी श्रृंगार।

वस्त्र - रूपहरी जरी फरकशाही सोनेरी कोरके वागो चाकदार, शुथन लाल जरी की, श्रीमस्तक पर कुल्हे रूपहरी जरी की सुनहरी कोरकी, पांच मोर चन्द्रिका का जोड़ धराया गया है।

आभरण - भारी हीरा, मोती, माणक आदि के। ठाडे वस्त्र सिन्दुरी रंग के पिछवाई चित्राम की गायों की धराई गई है।

मंगला में राग-बिलावल प्रथम गौचारण को दिन आज।। (यह पूरा पद पेज १३० पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल सुनरी सेनदई ग्वालनकों मोहनलाल बजायो बेनु।। (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

भाजभोग आते समय (छाक के पद) राग-सारंग भयो मध्यान छाक की बिरियां, बंशीवट बैठे है नंदलाल।। अपनी अपनी गैया छैया, ले आये ग्वाल।।१।। ग्वाल मंडली मध्य बिराजत, भोजन करत परस्पर नवल बने गोपाल।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, सब सुख सागर राजत कुंवर रसाल।।२।।

राजभोग में राग-सारंग सोहत लाल लकुटी कर राती।। सूथन कटि चोलना अरूण रंग, पीताम्बर की गाती।।१।। ऐसे गोप सब बन आये, जो सब श्याम संगाती।। प्रथम गुपाल चले जु वच्छ ले, असीस पढ़त द्विज जाती।।२।। निकट निहारत रोहिनी जसोदा, आनंद उपज्यों छाती।। "परमानंद" नंद आनंदित, दान देत बहु भांती।।३।।

भोग में राग-गौरी आवत कान्ह बने गोप बालक संग, नेचुकी खुररेन छुरित अलकावली।। भ्रोंह मनमथ चाप बंक लोचनबाण, शीश सोमित मत्त मयुर चन्द्रावली।।१।। उदित उडुराज सुन्दर शिरोमणी, बदन निखत फूली नवयुवती कुमुदावली।। अरूण सकुचत अधर बिम्बफल उपहसत, कछुक प्रकटित होत कुन्द दशनावली।।२।। श्रवण-कुंडल तिलक-भाल वेसर-नाक, कंठ कोस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली।। रत्न हाटक जटित उरसि श्रमकन पात, बीज राजत सुभग झलक मुक्तावली।।३।। वलय कंकण बाजु आजानु भुज, मुद्रिका करतल विराजत रूचिर नखावली।। क्वणित कर भूषण मोहित अखिल विश्व, गोपिका जन मनसि

ग्रथित प्रेमावली।।४।। कटितट क्षुद्र घंटिका जटित हीरामनि, अंबुज वलित मृंग रोमावली।। कब हुक चलत भक्तहित जान पिय, गंड मंडित रूचिर भ्रमरावली।।५।। पीत कोशेय परिधान सुन्दर, अंगचलत नुपुर बजत गीत शब्दावली।। हृदय “कृष्णदास” गिरिधरनलाल की, चरण नखचंद्रिका हरत तिमिरावली।।६।।

संध्या में राग-गौरी नंदनंदन नवलकुंवर व्रजवर, सोभाग्य सीम वदन, रूप निरखत सखा, नयनन मनहरत री।। स्याम श्वेत अति प्रवीण, वंक चपल चितवनी, मानों शरदकमल ऊपर, खंजन द्वे लरत री।।१।। अलकावलि मधुप पात, अंग-अंग छबि कहिं न जात, निरख सुंदरवदन मदन, कोटि पांय परतरी।। “कुंभनदास” प्रभु गिरिधर, श्यामरूप मोहनी, दिव भू पाताल युवती, सहजें वश करत री।।२।।

शयन में राग-अड़ानों कैसें कैसें गैया चराई मेरे गिरधर।। गोरज मुखते झार जसोदा, लेत बलैयां फेरकर।।१।। कहां रहे तुम धाम छांह मध्य, घन बरख्यों बल समेत सुन्दर बर।। “नंददास” प्रभु कहत जननी सों, हम न डरे देखि बादर।।२।।

मान में राग-बिहाग बोलत काहे न नागरी बेना।। (यह पूरा पद पेज १३१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़ रहो घनश्याम बलैया लेहों पोढ़ रहो घनश्याम।। (यह पूरा पद पेज १३१ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल १०

श्रृंगार - चीरा चंद्रिका को।

वस्त्र - लाल जरी के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार, कटि में पटको। श्रीमस्तक पर पाग चीरा वाली पर सादी मोरकी चन्द्रिका धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार पन्ना मोती, सोना के छोटा श्रृंगार किया गया है। ठाड़ा वस्त्र पीला तथा पिछवाई सोनेरी जरी की, गौ चारण की लीला दर्शायी गई है।

मंगला में राग-बिलावल गोविंद चले चरावन गैया। हरखि हरखि कें आजु भलो दिन, कहत यशोदा मैया।।१।। उबट न्हवाय बसन भूषण सज, विप्रन देत बधैया। करि शिर तिलक आरती वारत, फिर फिर लेत बलैया।।२।। "चत्रभुजदास" छाक छींके सज, सखन सहित बलभैया।। गिरिधर गमन देखी अंक भरि, मुख चूम्यो नंदरैया।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल मैय्यारी मैं गाय चरावन जैहों।। तू कहि महरि नंदबाबासों, बड़ो भयो न डरेहों।।१।। श्रीदामा दे आदि सखा सब, ओर हलधर संग लैहों।। दह्यों भात कांवरी भरि लैहों, भूख लगे तब खैहों।।२।। बंसीवटकी शीतल छैया, खेलतमें सुख पैहों।। "परमानंददास" संग खेलों, जाय यमुनामें नैहों।।३।।

राजभोग आवता राग-सारंग (छाक के पद) अकेली बन बन डोलत रहि।। गाय चरावत कर रहे हरि, काहु नैन कहि।। बड़े सवारे नीकसे घरते, दुपहरि धाम सही।।१।। इतनो बड़े वचन सुनत मनमोहन, नागर विदा लई।। "परमानंददास" को ठाकुर, गोकुल रतन वई।।३।।

राजभोग में राग-सारंग गोपाल माई कानन चले है सवारें।। छीके कांध बांध दधि ओदन, गोधन के रखबारे।।१।। प्रात समय गोरंभन सुनकें, गोपन पूरे शृंग।। बजावत पत्र कमलदल लोचन, जानो उड़ चले भृंग।।२।। करतल वेणु लकुटिया लीने, मोरपंख शिर सोहे।। नटवर भेष बन्यो नंदनंदन, देखत सुरनर मोहे।।३।। खग मृग तरू पंछी सचुपायों, गोपवधु बिलखानी।। बिछुरत कृष्ण प्रेमकी वेदन, कछु "परमानंद" जानी।।४।।

भोग में राग-पूर्वि धोरी धूमर पीली पीहर कारी काजर कहकह टेरत।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी झुक रही सुन मुरली की टेर।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन कहां केसें खेले लालन, बात कहो मोसों बनकी।। आओ उछंग सांवरे मोहन, गोरज पोछुं बदनकी।।१।। देखो कमलबदन कुम्हिलानो, ओरई दसा भई या तनकी।। "रसिक" प्रीतमसों कहत नंदरानी, बलबल छगन मगनकी।।२।।

मान में राग-बिहाग बोलत काहेन नागरी बेना।। (यह पूरा पद पेज १३१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़ रहो घनश्याम बलैया लेहों पोढ़ रहो घनश्याम।। (यह पूरा पद पेज १३१ पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल ११

(देव प्रबोधिनी एकादशी का उत्सव)

देव प्रबोधिनी एकादशी का उत्सव देहरी बन्दनमाल। वस्त्र सुनहरी जरीके शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर श्री गोकुलनाथजी वाली हीरा की माणक जड़ाऊ कुल्हे पर पाँच मोरकी चंद्रिका का जोड़ धराया गया है। ठाड़ी लर माणक मोती की पान माणक को, शीरपेच, शिश फूल हीरा, पन्ना व माणक मोती के कुण्डल तथा वेणी श्याम, हीरा-मोती की धराई गई है।

श्री चरण कमल में मोजड़ी हीरा-माणक जड़ी, कड़ा, पायल, पेंजनी धराये गये है। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम, श्रीजी की कंदरा पर हीरा जड़ेला चोखटा धराया गया है। पिछवाई भरत कामकी धराई गई है। भारी श्रृंगार दिपावली जैसा किया गया है।

मंगला में राग-बिलावल गोविंद तिहारों स्वरूप निगम, नेती नेती गावें।। भक्त हेत श्याम सुन्दर, देह धरि आवें।।१।। योगी मुनी ध्यानी ज्ञानी, स्वपने नहीं पावें।। नंदघरनी ताहि, कपि ज्यो ले नचावें।।२।। गोपीजन प्रेम आतुर, संग लागी बोलें।। मुरली को नाद सुनी, ग्रह तजी वन डोलें।।३।। श्रुति स्मृति वेद पुराण, कहत मुनी विचारी।। "परमानंद" प्रेम कथा, सबहिन तें न्यारी।।४।।

अभ्यंग होय तब राग-देवगंधार करमोदक माखन मीश्री लै, कुंवरके संग डोलत नंदरानी।। (यह पूरा पद पेज ४४ पर पढ़े।)

राग-बिलावल आवों गोपाल सिंगार बलाऊं।। विविध सुगंधन करो उबटनो, पाछे उष्ण जल लैजु न्हवाऊं।।१।। अंग अंगोछ गुहुं तेरी बेनी, फूलन रूच-रूच माल बनाऊं।। सुरंग पाग जरतारी चीरा, रत्नखचित शिरपेच बंधाऊं।।२।। वागो लाल सुनेरी छापो, हरी इजार चरणन विरचाऊं।।। पटुका सरस बेंगनी रंगको, हँसुली हार हमेल बनाऊं।।३।। गजमोतिन के हार मनोहर, वनमाला ले उर पहराऊं।। ले दर्पण देखो मेरे प्यारे, निरख निरख उर नयन सिराऊं।।४।। मधुमेवा पकवान मिठाई, अपने करले तुम्हें जिमाऊं।। "विष्णुदास" को येही कृपाफल, बाललीला हों निशदिन गाऊं।।५।।

राग-देवगंधार कहा ओछी व्हैहै जात।। सुन यशुमति तुम बडरन आगें, जो छिन एक बितात।।१।। अति नीको सतभाव भलाई, जो या तनते कीजे।। माय बापको नाम लिवावत, लोक मांझं यश लीजे।।२।। सास ननद और पार परोसन, हँस बहु भांत कह्यो।। तौहू मोहि

तिहारे घर बिन, नाहिन परत रह्यो।।३।। बोल लेहो संकोच करो जिन, जब तुम सुतहि न्हवावो।। "श्रीविट्ठलगिरिधनलाल" कों, मोहिपें उबटावो।।४।।

राग-बिलावल पीतांबर को चोलना, पहरावत मैया।। कनकछाप तापर धरी, झीनी एक तनैया।।१।। लाल इजार चुनायकी, और जरकसी चीरा।। पहुँची रत्न-जरायकी, उर राजत हीरा।।२।। ठाडी निरख यशोमति, फूली अंग न समैया।। काजर ले बिंदुका दियो, व्रजजन मुसकैया।।३।। नंदबाबा मुरलीदई, कह्यौ ऐसें बजैया।। जोई सुने ताको मनहरे, "परमानंद" बल जैया।।४।।

राग-बिलावल सुभग शृंगार निरख मोहनको, ले दर्पणकर पियहि दिखावे।। आपुन नेक निहारिये बलजाऊं, आजकी छबि कहू कहत न आवें।।१।। भूषणवसन रहे फबि ठांई-ठांई, अंग-अंग छबि चितहि चुरावें।। रोम-रोम प्रफुल्लित व्रजसुंदरि, फूलन रचिरचि माल बनावें।।२।। अंचलवार करत न्योंछावर, तनमन अति अभिलाष बढावें।। "चतुर्भुजप्रभु" गिरिधरकों स्वरूप सुधा, पीवत नयनपुट तृप्ति न पावें।।३।।

राग-बिलावल नन्दभवनको भूषण माई।। यशोदा को लाल वीर हलधरको, राधारमन सदा सुखदाई।।१।। इंद्रको इंद्र देव देवनको, ब्रह्मको बह्म अधिक अधिकाई।। कालको काल ईश ईशनको, वरूण को वरूण महावरदाई।।२।। शिवको धन संतनको सर्वस्व, महिमा वेदपुराणन गाई।। "नंददास" को जीवन गिरिधर, गोकुल मंडन कुंवर कन्हाई।।३।।

राग-बिलावल माईरी जा दिन तें, सुन्दर वदन निहार्यों।। बहुत करिब ते मन मथकर पचहारी, निकस्यो नाहि निकार्यो।।१।। माता पिता पति बंधु संगीजन, दुसाह बिलोक काको करि डार्यों। लोकलाज कुल कान जान, जीय सब काहु को कहिबो सिर धार्यो।।२।। होंनी होय सों होय करम बस, सजनी या जीयको सो चाव चाख्यो।। दासी भई दास "परमानंद", भलो सोच श्रम अपनो जस भाख्यो।।३।।

राग-बिलावल ये दोऊ नागर ढोटा री माई, कोन गोपके ढोटा।। ईनकी बात कहों सखी तोसों, गुनन बड़े दिसत के छोटा।।१।। अग्रज अनुज सहोदर दोउ, गौर स्याम छब ता सिर चोटा।। "संतदास" बल उभै मुरत की, लीला ललित रस बोरत मोटा।।२।।

राग-बिलावल सुनरी सेनदई ग्वालनकों.. (यह पूरा पद पेज ५० पर पढ़े।)

शृंगार में राग-बिलावल सुभग शृंगार निरख मोहनको.. (यह पूरा पद ऊपर पढ़े।)

राजभोग आवे तब (सवेरे मण्डप होय तो गृह भोजन के कीर्तन गाये जाते है।)

राग-घनाश्री लालको मीठी खीर जो भावे।। बेला भर भर लावत यशोदा, बूरो अधिक मिलावे।।१।। कनिया लिये यशोदा ठाडी, रूचिकर कोर बनावे।। ग्वालबाल वन चरन के आगे, जूठे हाथ दिखावे।।२।। व्रजरानी जो चहूंधा चितवत, तनमन मोद बढ़ावे।। “परमानंददासको” ठाकुर, हँस हँस कंठ लगावे।।३।।

राजभोग में राग-सारंग जाकों वेद रटत ब्रह्मा रटत, शिव रटत शेष रटत, नारद शुक व्यास रटत, पावत नही पाररी।। ध्रुवजन प्रहलाद रटत, कुंतीके कुंवर रटत, द्रुपदसुता रटत, नाथ अनाथन प्रतिपालरी।।१।। गणिका गज गीध रटत, गौतम की नार रटत, राजनकी रमणी रटत, सुतन दै दै प्याररी।। “नंददास” श्रीगोपाल, गिरिवरधर रूपजाल, यशोदाको कुंवरलाल, राधा उरहाररी।।२।।

(सांयकाल मण्डप हो तो छाक के पद गाये जाते है) राग-सारंग छाक लेआई ग्वालिन गोरी।। (यह पूरा पद पेज ३८ पर पढ़े।)

भोग में राग-मालव (अष्टपदी) प्रलय प्रयोधि जले धृतवासनिवेदं।। विहित विहित्र चरित्र मखेदं।। केशव धृत मीन शरीर जय जगदीशहरे।।१।। क्षिति रति विपुलतरेतव तिष्ठति पृष्ठे।। धरणि धरण किणचक्र गरिष्ठे।।२।। केशवधृत कच्छप रूप जय जगदीशहरे।।२।। वसति दशन शिखरे धरणि तव लग्ना।। शशिनिकलंक कलेवनिमग्ना।। केशवधृत सूकर रूप जय जगदीशहरे।।३।। तव कर कमल वरे नख मद्भूत श्रृंगम।। दलित हिरण्यकशिपु तनु भृंगं।। केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीशहरे।।४।। छलयसि विक्रमणेबलिमद्भुत वामन।। पद नख नीरज नितजन पावन।। केशव धृत वामन रूप जय जगदीशहरे।।५।। क्षत्रिय रूधिर भये जगदपगदपापं स्नपयसिपयसि शमित भवतापं।। केशवधृत भगृपति रूप जय जगदीशहरे।।६।। वितरसिदिक्षुरणे दिक्पति कमनीयं, दशमुखमौली बलिंरमणियं।। केशवधृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे।।७।। वहसिवपुषि विषदेवसनं जलदाभं।। हलहतिभीतिमिलित यमुनाभं।। केशवधृत हलधर रूप जय जगदीशहरे।।८।। निंदसियज्ञ विधेरहहश्रुतिजातं।। सदयहृदय दर्शित पशुघांत।। केशवधृत शुद्ध शरीरं जय जगदीशहरे।।९।। म्लेच्छनिवहनिधनेकलय सिकरवालं धूमकेतु मिवकिमपिकरालं।। केशवधृत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे।।१०।। “श्री जयदेव” कवेरिदमुदित मुदारंगं।। श्रृणु सुखदं शुभदं भवसारं।। केशवधृत दशविधरूप जय जगदीशहरे।।११।।

संध्या में राग-मालव पद्म धर्यों जन ताप निवारन।। चक्रसुदर्शन धर्यौ कमलकर, भक्तनकी रक्षा के कारन।।१।। शंख धर्यौ रिपु उदर विदारन, गदा धरी दुष्टन संहारन।। चारों भुजा चार आयुध धरे, नारायण भुवभार उतारन।।२।। दीनानाथ दयाल जगत गुरू, आरति हरन भक्त चिंतामनि।। "परमानंददास" कौ ठाकुर, यह औसर औसर छाँडो जिनि।।३।।

(पंचामृत के समय) देव दीवारी शुभ एकादशी, हरि प्रबोध कीजेहो आज।। निद्रा तजो उठो हो गोविंद, सकल विश्व हित काज।।१।। घर घर मंगल होत सबनके, ठोर ठोर गावत व्रजनारी।। "परमानंद" दासको ठाकुर, भक्त हेत लीला अवतारी।।३।।

श्रीजी के तिलक के समय राग जागे जग जीवन जगनायक।। कीयो प्रबोध देवगण जबहीं, उठे जगत सुखदायक।।१।। जा प्रभुकी प्रभुताई, भारी शिव ब्रह्मादिक पायक।। कमलादासी पांय पलोटे, निपुण निगमसे गायक।।२।। जहां जहां भीर परे भक्तन पे, तहां तहां होत सहायक।। "परमानंद" प्रभु भक्त वत्सल, हरि जिनके मनवच कायक।।३।।

शयन में राग-कान्हरौ चरनकमल बंदो जगदीश, जे गोधन के संग धाये।। जे पदकमल धूर लपटाने, कर गहि गोपिन के उर आये।।१।। जे पद कमल युधिष्ठर पूजत, राजसूयमें चलि आये।। जे पद कमल पितामह भीष्म, भारत देखन ते आये।।२।। जे पदकमल शंभु चतुरानन, हृदय कमलके अन्तर राखे।। जे पद कमल रमा उर भूषण, वेद भागवत जे भाखे।।३।। जे पदकमल लोकत्रय पावन, बलिराजाकी पीठ धरे।। ते पदकमल दास "परमानंद", गावत प्रेम पियूष भरे।।४।।

मान में राग-बिहाग तोहि मिलन को बहोत करत है.. (यह पूरा पद पेज ७१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल १२

(श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरघर जी का उत्सव)

श्रृंगार - घेरदार वागा पर सेहरा को श्रृंगार।

वस्त्र - सुनहरी जरीके, रूपहरी कोरके शुथन तथा घेरदार वागा, कटि में केसरिया पटको, श्रीमस्तक पर केसरिया पाग व हीरा-माणक तथा मोती का सेहरा धराया गया है।

आभरण - श्रृंगार भारी तथा हीरा-पन्ना-माणक के धराये गये। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम, पिछवाई सुनहरी जरीकी भरत काम की, दोनों तरफ झाड़ खड़े है। आज श्री विट्ठलनाथजी के महाराज श्री की रीत के अनुसार यही श्रृंगार करते है।

मंगला में राग-भेरों भोर भये यशोदाजू बोले, जागो मेरे गिरधर लाल।। रत्न जटित सिंघासन बैठो, देखन को आई व्रजबाल।।१।। नियरे आय सुफेती खेंचत, बहोर्यो हरि ढांपत बदन रसाल।। दूध दही माखन बहु मेवा, भामिनी भर भर लाई थाल।।२।। तब हरखत उठ गादी बैठे, करत कलेउ तिलक दे भाल।। दे बीरा आरती उतारत, "चत्रभुजदास" गावे गीत रसाल।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल न्याय दिन दुल्हे हो नंदलाल।। रीझ बिकाय जहां बसे मोहन, नव दुलही व्रजबाल।।१।। शिथिल चाल अति डगमगी हो, वसन मरगजे गात।। शोभित हें अति रसमसे मानों, व्याह भयो जागे रात।।२।। नयन ललोहें घूम रहेहें, चितवन चित हर लेत।। कहि "भगवान हितरामराय" प्रभु, हंसन बधाई देत।।३।।

राग-बिलावल ललिता जू के आज बधायो श्री वृंदावन ब्याह रचायो।।टेक।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

राजभोग आवे तब राग-आशावरी श्री वृषभान सदन भोजन को, नंदादिक सब आये हो।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी दिन दुल्हों मेरों कुंवर कन्हैया।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट तू बनरा रे बानि-बनि आया मो मन भाया सुख उपजाया।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

राग-सारंग (देवगंधार) जय श्रीवल्लभ राजकुमार।। पर पाखंड कपट खंडन कर, सकल वेद धुरी धार।।१।। परम पुनीत तपोनिधि पावन, तन शोभित जीत मार।। निजमुख सुदृढ़ सुकृत कर, हरि पद नवधा भक्ति प्रचार।। दुरित दुरे अचेत प्रेत गति, हतित पतित उद्धार।।२।। नहीं मति नाथ कहांलौं वरणुं, अगणित गुण गणसार।। “छीतस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, प्रकट कृष्ण अवतार।।३।।

संध्या में राग-गौरी राधा प्यारी दुलहन जु को दुल्हा देखोरी वृज लटकत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग न छूटे मोहन डोरना अहो, कसी बांध्यो गिरिधरजु के पाणि।। प्रथम व्याह विधि व्हे रहीहो, कर कंकण चारू बिचार।। हँस हँस कस कस ग्रंथ बनावत, नवल निपुण व्रजनार।।१।। बडे होय इत खोलियो हो, सुनो घोष के राय।। कर जोरो हाहा करो, के छूवो कुंवरि के पाय।।२।। यह न होय गिरिवरको धरनों, सुनों हो कुंवर गोपीनाथ।। बहुत कहावत अपन पे, कांपन लागे हाथ।।३।। सहज शिथिल करपल्लव हरी, लीनो छोर संवार।। किलक हँसी सखी श्याम की, अब छोरो हो सुकुमार।।४।। तुम किन अब करो सहाय, सखी हो छोड़ो अधिक सयान।। छोरन देउं कुंवरीको कंकण, के बोलो वृषभान।।५।। कमल, कमल कर वरणियो, पाणि पियाके लाल।। अब कवि कुल सांचे भये, तब भये कुटिल नाल।।६।। ज्यों ज्यों छूटे डोरना, त्यों बढ़े प्रेम की डोर।। देख दुहुन की रीति सखीरी, हँसत सबे मुखमोर।।७।। लीला ललित मुकंदचंद की, करो रसीक रसपान।। यह जोरी अविचल वृंदावन, बलबल दास “कल्याण”।।८।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। सीत समें प्यारी प्रीतय दोऊ, पोढे ओढ रजाई।।१।। विविध भांति के परदा, चहुंदिश अगीठी धराई।। “आसकरण” प्रभुमोहन नागर, सोभा बरनी न जाई।।२।।

कार्तिक शुक्ल १३

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - लाल शैलाके रूपहरी कोरके, सुनहरी बुटीका शुथन तथा वागो घेरदार, कटि में पटका। श्री चरण कमल में मोजड़ी लाल साटन की, हरा मीनाके नुंपुर धराये गये है। ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई लाल शैलाकी रूपहरी कोरकी धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हरे मीना तथा सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल न्याय दिन दुल्हे हो नंदलाल।। (यह पूरा पद पेज १४० पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली भले आये भोर गिरवरधरण।। अरूण नयन जृंभात आलस, धरत डगमग चरण।।१।। पाग लटपटी बसन पलटे, अटपटे आभरण।। शिथिल अंग अंग देखियत हे, निशा के जागरण।।२।। नव प्रिया याम चारो, पल न पाये परण।। "चर्तुभुज" प्रभु जीत रतिरण, कियो रति-पति शरण।।३।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के) राग-घनाश्री भोजन को बोलत महतारी।। बल समेत आवो मेरे मोहन, बैठे नन्द परोसी थारी।।१।। खीर सीरात स्वाद नही आवे, वेग ग्रास तुम लेहो मुरारी।। हितवत चित्त नीकें कर जेंवो, पाछे कीजे केली बिहारी।।२।। अहो अहो सुबल श्रीदामा, बैठों नेक करो मनुहारी।। "परमानंददास" को जीवन, मुख व्यंजन दे जाहुं बलहारी।।३।।

राजभोग में राग-घनाश्री मेरी अंखियन के भूषण गिरधारी।। बलि बलि जाऊं छबिली छबि पर, अति आनन्द सुखकारी।।१।। परम उदार चतुर चिन्तामणी, दरस परस दुखहारी।। अतुल प्रताप तनक तुलसी दल, मानत सेवा भारी।।२।। "छितस्वामी" गिरिवरधरन विहस जस, गावत गोकुल नारी।। कहा बरनो गुननाथ नाथके, श्रीविट्ठल हृदय बिहारी।।३।।

भोगमें राग-पूर्वि सोहत लाल पाग सांकरे पेचन चोकरीं, और सोहत मौतिन अवतंस लटकन मनमथ हरन।।१।। सुरत श्रमित शिथिल अति लोचन, निर्तत भुव्ररस भरी।। "गोविन्द" प्रभुप्यारी संग बैठे, निविड़ निकुंज दरी।।

संध्या में राग-गौड़ी टेढ़ी हेरी आली टेढी अलक लट, लटकत अति लसत पगीयां लटकत।। टेढ़ी चाल चलत युवतिन संग, टेढी भृकुटी भ्रंग भटकत।।१।। टेढ़ि तान मुरलीमें

बजावत, टेढ़ि लकुट लिये गायन हटकत।। “नंददास” प्रभु टेढ़ि जुवती देख, लेत बलैया कर मटकत।।२।।

शयन समय में राग-अड़ानों मैं जब देखेरी गोपाललाल, मोहनी मुरत नंदलाल, तनमनधन न्योछावर करन कों ले गई।। सुन्दर रूप उजागर नागर, ताकि छबि चित्त चितेरेने लिख लई।।१।। गरे सोहे गुंजामाल, ताते मोहि ब्रजवाल, एसी छबि निहारी मगन भई।। “नंददास” प्रभु, कौन मंत्र पढ़ डार्यो, मुरली अधर धरी, बजावे मधुरे नई।।

मान में राग-कान्हरौ लालन मनाये न मानति लाडिली, प्यारी तिहारी अति कोप भरी।। तिहारी सौं अनेक जतन, छलबल करि मैं किए, मान तोहु अब घटत नाहिन, त्यों त्यों अति सतरात, रहत है खरी।।१।। साम दाम दंड भेद, एकौ नहीं चित चुभित, तापर हौं पाँयन परि, दंत तृन धरी।। नाहिन कछु और उपाव, आन बन्यो यह दाव, “गोविन्द” प्रभु आपुन चलिये, तुम्हें देखतही वाको मान, छूटि जैहें तिहि धरी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

कार्तिक शुक्ल १४

(गो.ति. श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव)

श्रृंगार - कुल्हे घेरा का।

वस्त्र - पीला कीनखापके शुथन तथा वागा चाकदार, श्रीमस्तक पर माणक की जड़ाऊ कुल्हे पर सुनहरी बादला का घेरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र हरा तथा पिछवाई पीली कीनखाप की हांसीया की धराई हैं।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-माणक-मोती तथा सोने के भारी श्रृंगार धराया गया है।

विशेष - आज शयन में रीत का श्रृंगार केसरी पाग पर, एक मोर की एक चंद्रिका धराई गई है, इसी रीत के कीर्तन गाये जाते है।

मंगला में राग-भेरों भले आये भोर गिरवरधरण।। (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-आशावरी क्रीड़त मणीमय आंगन रंग।। पीत ताफ की झगुली बनी है, कुल्हे लाल सुरंग।।१।। कटि किंकणी घोष विस्मित सखी, धाय चलत बल संग।। गौसुत पूंछ भ्रमावत कर गहि, पंकराग सोहे अंग।।२।। गज मोतिन लर लटकन शोभित, सुन्दर लहर तरंग।। “गोविंद” प्रभु के जू अंग अंग पर, वारों कोटि अनंग।।३।।

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-धनाश्री चलहु गोपाल बोलत महतारी।। परोसे थार धरे मग चितवत, नयनन आसुं डारी।।१।। विविध भांत पकवान मिठाई, मेवा मिश्री ठानी।। “रामदास” प्रभु रसिक छबीलो, व्रजयुवतिन सुखदानी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग (बधाई) श्री वल्लभ नंदन रूप अनूप, स्वरूप कह्यो नहीं जाई।। प्रकट परमानंद गोकुल बसत हैं, सब जगत के सुखदाई।।१।। भक्ति-मुक्ति देत सबन को, निजजन को कृपा प्रेम बरखत अधिकाई।। सुखद एक रसना कहाँलौं बरनौं, “गोविन्द” बलिबलि जाई।।२।।

भोग में राग-नट आज बने बजराज कुंवर, बेठे सिंघद्वार निकस, अंग अंग नव नव छबि, वरणी न जाई।। अलक तिलक नासिका, कपोल लोल कुंडल छबि, देखत लजावत कोटि कोटि रवि, अरूण अधर दशनन में झांई।।१।। लटपटी बीच पाग लालके, पीत कुल्हे भर गुलाल, लटकत शीश शेहरो बन्यो, शोभा अधिकाई।। “गोविंद” प्रभु की बानिक देख, विथकित सब व्रजजन मन, रूप रास गिरिवरधर, सुन्दर मणिराई।।२।।

संध्या में राग-कान्हरौ राखी हों अलक बीच चंपकली गनगनी।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शयन समय (रीत का पद) राग-बिहाग लाल बने रंग भीने।। गिरिधरलाल बने रंग भीने।।१।। पिय के पाग, केसरी सोहे।। देखत रति पति को मन मोहे।।२।। सोहे तापर एक चन्द्रिका प्यारी।। अपने हाथ संवारी।।३।। पियके अरून नयन मन भाये।। प्यारी बहु विध लाड लडाये।।४।। पियके पीक कपोल विराजे।। अधरन अंजन रेख छाजे।।५।। पियके उरसी मरगजी माला।। बोलत शिथिल वचन नंद लाला।।६।। छबि पर "नंददास" बलिहारी।। अंग अंग राचे कुंजबिहारी।।७।।

मान में राग-बिहाग पिय तोहे नैनन ही में राखों।। तेरी एक रोम की छबि पर, जगत वार सब नाखों।।१।। भेंटो सकल अंग सांवल सों, अधर-सुधा रस चाखों।।२।। "रसिक" प्रीतम संगम की बातें, काहुसों नहीं भाखों।।३।।

पोढंवा में राग यह ऋतु नीकी लागत सीत की।। अंकन दे पिय प्यारी पौढ़े, बात करत रस-रीत की।।१।। बन गई एक रजाई भीतर, होत परस्पर जीत की।। "गदाधर" प्रभु हेंमत मनावत, चाह बढ़ी नव प्रीत की।।२।।

कार्तिक शुक्ल १५

श्रृंगार - छोटा मुकुट पान वाला।

वस्त्र - रूपहरी जरीके शुथन तथा वागो चाकदार, पाग पर हीरा झड़ेहुवे पान वाला मुकुट धराया गया है। ठाडा वस्त्र पतंगी रंग के, पिछवाई श्याम मखमलकी रूपहरी जरीके भरत कामकी, जिसमें तीन तिबारी व तारा चंदा है। आज तुलसीजी की माला धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-मोती-रेशम व सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-खट आज नंदलाल मुखचंद नैनन निरख, परम मंगल भयों भवन मेरे।। कोटी कंदर्प लावण्य एकत्र कर, वारूँ तबही जब नेक हेरे।।१।। सकल सुख सदन हरषित बदन गोपवर, प्रबल मदन दल संग घेरे।। कहो कोऊ कैसेहू नहिं सुध बुध बने, "गदाधरमिश्र" गिरिधरन टेरे।।२।।

राग-खट भोर भये देखो गिरिधर को कमल मुख।। मंगल आरती करो प्रात ही, नयन निरखत होत परम सुख।।१।। लोचन विशाल छबि संचि हृदय में धरो, कृपा अवलोकवे को चाख भृकुटी रूख।।२।। "चत्रभुज" प्रभु गिरिधर आनंद निधि, दूर करहों सब रैन को विरह दुःख।।२।।

श्रृंगार में राग-खट व्रजराज को लाल ठाड़ो सखी, ललित संकेत बट निकट सोहे।। देखरी देख अनिमेष या वेषको, मुकुट की लटक त्रिभुवन जू मोहे।।१।। स्वेद कण झलक कछु झुकीसी पलक, प्रेमकी ललक रस रास किये।। धन्य बडभाग वृषभान नृप नंदिनी, राधिका अंस पर बाहु दिये।।२।। मणिजटित भूमि पर नवलता रही झूम, कुंज छबि पूंज बरनी न जाई।। नंदनंदन चरण परस हित जान, यह मुनीन के मनन मिल पांत लाई।।३।। अद्भूत रूप सकल व्रजभूप यह, मदनमोहन बिना कछु न भावे।। धन्य हरि भक्त जिनकी कृपातें, कृष्ण गुण "गदाधरमिश्र" गावें।।४।।

राजभोग आवता राग-सारंग आज गोपाल पाहुने आये निरखे नयन अधायरी।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी गोवर्धन गिरि पर ठाड़े लसत।। चहुंदिश धेनु धरनी धावत, तब नव मुरली मुख लसत।। मोर मुकुट बनमाल मरगजी, कछुक फूल सिर खसत।।

नव उपहार लिये वल्लभ त्रिय, निरख दृगंचल हसत।।२।। "छितस्वामी" वश कियो चाहत है, संग सखा गुण ग्रसत।। झूठे मिसकर इत उत चाहत, श्रीविट्ठल मन बसत।।३।।

भोग में राग-मालव जाऊंगी वृन्दावन भेटोंगी गोपालें।। देखोगी नैन भर श्याम तमाले।।१।। कालिंदी तट चारत धेनु।। संग सखा बजावत मृदु बेनु।।२।। मोरमुकुट गुंजा अवतंस।। देश बसत कूँजत कलहंस।।३।। "परमानंद" प्रभु त्रिभुवन पाल।। लीला सागर गिरिधरलाल।।४।।

संध्या में राग-गौरी देखन देत न बैरिन पलकें।। निरखत वदन लाल गिरिधर को, बीच परत मानों वज्र की सलकें।।१।। बनतें जू आवत बेनु बजावत, गौरज मंडित राजत अलकें।। माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल, ललित कपोलन पर झलकें।।२।। ऐसे मुख देखन को, कहा कियो यह पूत कमल कें।। "सूर" सब जड़न की यह गति, मीन मरत भाये नहीं जल कें।।३।।

शयन में राग-बिहाग अरी मैं रतन जतन कर पायों।। उघरे भाग्य आज सखि मेरे, रसिक सिरोमणि आयो।।१।। आवत ही उठकें दे आदर, अपने ढ़िग बैठायो।। मुख चुंबनदे अधरपान कर, भेंट सकल अंग लायो।।२।। अद्भुत रूप अनूप स्यामको, निरखत नयन हियो सिरायो।। निसदिन यही अपने ठाकुर को, "रसिक" गूढ़ यश गायो।।३।।

मान में राग-नायकी सरस बनी, प्यारी सरस बनी।। झगमग ज्योत जडावको गहनो, ऐसी बनी जैसे हीराकी कनी।।१।। दुलरी ऊपर तीलरी सोहे, बीच बीच पदक मनी।। "सूरदास" प्रभु प्यारी मुख निरखत, ये छबि कापें जात गनी।।२।।

पोढ़वा में राग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

॥ उत्सव निर्णयः ॥

मार्गशीर्ष मास

क्र. सं	तिथी	उत्सव, मनोरथ का विवरण
१.	मार्ग शीर्ष कृष्णा१	श्री गोपमासारम्भ, १ व्रतचर्या
२.	४	श्री छः स्वरूप को उत्सव। तिलकायत श्री दाऊजी महाराजकृत।
३.	७	श्री गो. ति. श्री १०८ श्री गोविंद लाल जी महाराज को उत्सव (१८७४)
४.	८	श्री गुसाईजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्द राय जी को उत्सव। (१५८८)
५.	१३	श्री गुंसाईजी के सातवें लालजी श्री घनश्याम जी को उत्सव (१६२८)
६.	मार्गशीर्ष शुक्ला ७	श्री गुंसाईजी के चतुर्थलालजी श्री गोकुलनाथजी का उत्सव (१६०८) श्री परमानंददासजी का उत्सव (१५५०)
७.	८	श्री सातस्वरूप को उत्सव। श्री गावेर्द्धनेशजी महाराज कृत।
८.	९	श्री गुंसाईजी के उत्सव की बधाई।
९	१५	श्री गोपमास समाप्ति। छप्पन भोग।

विशेषः-

बधाई एवं उत्सव के दिन मान के पद नहीं होते है।

मार्गशीर्ष कृष्ण १

(गोपमास)

श्रृंगार - पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र - लाल शाटन फूलेवर के सोनेरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। श्री मस्तक पर लाल-पाग पर सादी मोरकी चंद्रिका, ठाडीलर मोती की, शीरपेच, शीश फुल, कर्णफूल सभी पन्ना व मोती के। तिलक माणक का, अलंकार कमलाक्ष, नकवेशर माणक मोती के। वेणुवैत्र लालसफेद मीना के, ठाडा वस्त्र सफेद, पिछवाई लाल साटन की, फूलेवर की सोनेरी कोरकी।

विशेष – आजसे मंगला-श्रृंगार में वृतचर्या के कीर्तन गाये जाते हैं।

मंगला में राग-रामकली/विभास (अष्टपदि) **व्रजानंदकंदम व्रजानंदकंदम। घोषपति भाग्य भुविजातम्। रसिक वरगोपिका पीत-रसमाननं तव जय तु ममदृशि सुजातम्।।ध्रु.।। रूचिरदरहास गलदमलपरि मललुब्ध मधुपकुलमुखकमल सदनम्।। अमृत चयगर्व निर्वासना धरसी धुपाय यमनोजाग्नि शमनम्।।१।। स्मित प्रफटित चारूदंत रूचिवदन, विधुकौमुदी हृत निखिलतापे।। विलस ललिते हृद्यकनक-कलशये, मरकत मणिरिव दुरापे।।२।। सुभग सुमुखी कंठनिहित निजबाह रतिमत्त गजराज इवरूचिरम।। विरहविरानलं चारू पुष्करचलन शीकरैरूपशमय सुचिरम्।।३।। अरूण तरला पांग शरनिहित कुल-वधू, धृतितव विलोचन सरोजम्।। ममवदन सुषमासरसि-विलसतु सततमल, सगतिनिर्जित मनोजम्।।४।। नंदगेहाल वालोदिल स्त्रीराग से कसंवृद्ध-सुरवृक्षम्।। व्रजवरकुमारिका बाहु हाटकलता सततमाश्रयतु कृतरक्षम्।।५।। व्रजश्लाध्य गुणरसिकता गुणगोपनातिशय रूचिरालाप-लीलम्।। तादृगीक्षण जनितकुसुम शरभाव भरयुवतिषु प्रकटतर निखिलम्।।६।। रूचिकौमार चापल्य जय व्रीडया, वल्लवी हृदयगृह गुप्तं।।७।। प्रकटयन्निजन खरशरचयरैशम शरमिंह जयसिहृदय भावितम्।।८।। घोषसीमंतिनी-विद्युदुद्य वेणुकल निनदगर्जितस्तवमिह सततं।। वचनकरूणा कूतदृष्टि वृष्टि रंगन वजलदमपि कुरू सुहासितं।।९।।**

श्रृंगार में राग-रामकली **हरि यश गावत चली व्रज सुन्दरी, नदी यमुना के तीर।। लोचन लोल बांह जोटी कर, श्रवणन झलकत हीर।।१।। बेनी शिथिल चारू कांधे पर, कटिपट अंबर लाल।। हाथन लिये फूलन की डलियां, उर मुक्तामणि माल।।२।। जलप्रवेश कर मज्जन**

लागी, प्रथम हेमके मास।। जेसे प्रीतम होय नंदसुत, व्रत ठान्यो यह आस।।३।। तबते चीर हरे नंदनंदन, चढ़े कदम की डारि।। “परमानंद” प्रभु वर देवें कों, उद्यम कियो है मुरारि।।४।।

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-घनाश्री सुतहि जिमावत यशोदामैया।। सानत कोर मधुर मृदु मीठो, दै मुख लेत बलैया।।१।। खेलनको उठ उठ भाजत हैं, राखत हें बोहोरैया।। आवो चिरैया आवो खुमरैया, ग्वालिन लेत बलैया।।२।। तुम जेवों मिल संग लालके, बहुविध ख्याल खिलैया।। “श्रीविट्ठलगिरिधर” माता की, प्रीति कहीं नहिं जैया।।३।।

राजभोग में राग-टोडी/ललित आये अलसाने सरसानी में, जाने जु लाल।। ढरक पाग अर्धसीस लटपटी, महावर लाग्यों गाल।।१।। नैना अरूण भये रंगराते, सुन सुन हो स्याम तमाल।। बेन बोलत कछु मुख नहीं आवत, “गोविन्द” हाल बिहाल।।२।।

भोग में राग-पूर्वि सोहत लाल पाग, साँमरे पेचन चोकरी।। सुंदर कर केसन बिच राखी, सुग्रथित कुंद करी।।१।। सुरति श्रमित अति सिथिल, लोचन नितर्त भुव रसभरी।। “गोविन्द” प्रभु प्यारी संग बैठे, जहाँ निबिड़ निकुंज-दरी।।२।।

संध्या में राग-गौडी झुक रही सुन मुरली की टेर।। (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग पिय तोहे नैनन मे ही राखो।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी लालन मनाये न मानति लाडिली प्यारी तिहारी अति कोप भरी।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण २

श्रृंगार - ग्वालपगा को

वस्त्र - केशरिया शाटन का, रूपहरी कोर का, शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पिरोंजा जड़ा हुआ ग्वालपगा पर जरी के काम की मोरशिखा। ठाड़ीलड़, पिरोजा मोती को, शीशफूल, कर्णफूल सभी पिरोंजा व हीराके।

ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई साटन की केसरिया रंग की, रूपहरी कोरकी।

श्रीनाथजी आज गोपी वल्लभ में कुनवारा आरोगते हैं।

मंगला में राग-रामकली हरि यश गावत चली व्रज सुन्दरि नदी यमुना के तीर।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली ग्वालिन मांगत बसन आपने।। सीतकाल जल भीतर ठाडी, आवत नही दयाने।।१।। तुम व्रजराज कुमार प्रबल अति, कौन परी यह बाने।। हम सब दासी तिहारी "व्रजपति", तुम बहु निपट सयाने।।२।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-आसावरी जेंवत नंद कान्ह बलभैया।। कनकथार षटरस बहु व्यंजन, माखन दूध मिठैया।।१।। उठ भाजत सुत केलि चाव लख, प्रफुल्लित यशुमति मैया।। "व्रजाधिश" प्रभु सुख व्रजजन को, दृगन सुधा वरखैया।।२।।

राजभोग में राग-आसावरी चलरी सखी नंद गांव जई बसीये।। खिरक खेलत व्रजचंदसो हँसिये।।१।। वसे बठेन सबे सुख माई।। एक कठिन दुःख दूर कन्हाई।।२।। माखन चोरे दुरि दुरि देखूं।। जीवन जन्म सुफल कर लेखूं।।३।। जलचर लोचन छिनछिन प्यासा।। कठिन प्रीति "परमानंददासा"।।४।।

भोग में राग-पूर्वि हार्के हटक हटक, गाय ठठक ठठक रही, गोकुलकी गली सब सांकरी।। जारी अटारी झरोखन मोखन, झांकत दूर दूर, ठोर ठोर ते परत कांकरी।।१।। चंपकली कुंदकली वरषत रसभरी, तामें पुनः देखियत लिखे हैं आंकरी।। "नंददास" प्रभु जहीं जहीं, द्वारे ठाडे होत तहीं तहीं, वचन मांगत लटक लटक जात, काहूसों हाँ करी काहूसों ना करी।।२।।

संध्या में राग-पूर्वि टेर हो टेर कटंब चढ, दूर जात हें गैया।। तुम्हारी टेर सुनत बगदेंगी, पाछे पीजे घैयाँ।।१।। झटकत रई पतूखी फारत, द्यावत नंद दुहैयां।। हमतें बहुत तिहारे गोधन, हसत कहा हो भैया।।२।। आज हमारी घिरत न घेरी, उतहीकों जात है गैया।। "रामदास" प्रभु पर हूँकत आंई, हेरी देत कन्हैया।।३।।

शयन में राग-नायकी जान्यो प्रीतके मरम।। मुखकी मोसों जियकी औरन सों, पायो है तिहारो भरम।।१।। ऐसी है कौन बाल जिन रसबस कर लिने, जानियत हियके नरम।। "स्यामदास" के प्रभु माई भली कीनी, भोरे आये चतुर परम।।२।।

मान में राग-नायकी लालन मनाये न मानति लाडिली प्यारी तिहारी अति कोप भरी।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखीयन रूचि रूचि सेज बनाई।। मणिमय जटित पर्यंक कनक के, मुक्तन की अधिकाई।।१।। पोढे श्री सहित सुंदरवर, झलमल दीप झरोखन झांई।। "मानदास" बलजाय सहेली, मिले हैं पीया-प्रीतम सुखदाई।।२।।

मार्गशीर्ष कृष्ण ३

श्रृंगार - पागकतरा को।

वस्त्र - सफेद साटन के फुलेवर के रूपहरी कोरके शुथन तथा पागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग पर पिरोजी वस्त्र के कामका कतरा धराया गया है। ठाडा वस्त्र लाल रंग के तथा पिछवाई सफेद साटन की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार सोने-चांदी तथा माणक मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-रामकली ग्वालिन मांगत बसन आपने।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली मोहन देहों वसन हमारे।। जाय कहों व्रजपतिजू के आगें, करत अनीत ललारे।।१।। तुम व्रजराजकुमार लाडिले, और सबहिन के प्राण पियारे।। “गोविंदप्रभु” पिय दासी तिहारी, सुंदर वर सुकुमारे।।२।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-घन्याश्री भोजन करतहें गोपाल।। षटरस धरे बनाय यशोदा, साजे कंचन थाल।।१।। करत विचार निंहारत सुतमुख, चंचलनयन विशाल।। जो भावेसो लेहो मेरे मोहन, माधुरी मधुर रसाल।।२।। जो सुख सनकादिक को दुर्लभ, दुरि देखत व्रजबाल।। “परमानंद दास” को ठाकुर, चिरंजीयो नंदलाल।।३।।

राजभोग में राग-आशावरी सुनि मेरो वचन छबिली राधा।। तैं पायो रस सिन्धु अगाधा।।१।। जे रस निगम नेति नेति भाख्यो।। ताकौ तैं अधरामृत चाख्यो।।२।। शिव-विरंचि के ध्यान न आवै।। ताको कुंजनि कुसुम बिनावै।।३।। तृ वृषभानु गोप की बेटी।। मोहनलाल को भावतें भेटी।।४।। तेरो भाग्य मोहि कहत न आवे।। कछुक रस “परमानंद” गावै।।५।।

भोग में राग-नट लालन नहिंन री काहूके बस के।। बावरी भईरी त्रिया उनसों मन अरूझायों, वे तो सदाई अपने रस के।।१।। निरख परख देख जियको भरम गयो, कामिनी वृदन के मनन कस के।। यद्यपि कछु मोहनी “गोविंद” प्रभु पें, युवती सभा में वदत यश के।।२।।

संध्या में राग-गौरी टेढ़ी हेरी आली टेढी अलक लट, लटकत अति लसत पगीयां लटकत।। (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े।)

शयन में राग-नायकी वारौं मीन खंजन आलीके दृगन पर, भ्रमर मन।। अति ही सलोने लोने, अति ही सुढार ढारे, अति कजरारे भारे, बिन ही अंजन।।१।। स्वेत असित कटाक्षन तारे, उपमाको मृग ही कंजन।। “परमानंद” प्रभु रस बस कर लीने, प्यारी जू के मनके रंजन।।२।।

मान में राग-नायकी रूसनों न कर प्यारी रूसवो निवार।। कबकी हों ठाडी तोसो अरज करत हौं, रैन रही घड़ी चार।।१।। मेरो कह्यों तू मान सुहागिन, अति सुंदर सुकुमार।। “गोविंद प्रभुसों हिलमिल भामिन, तन मन जोबन वार।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

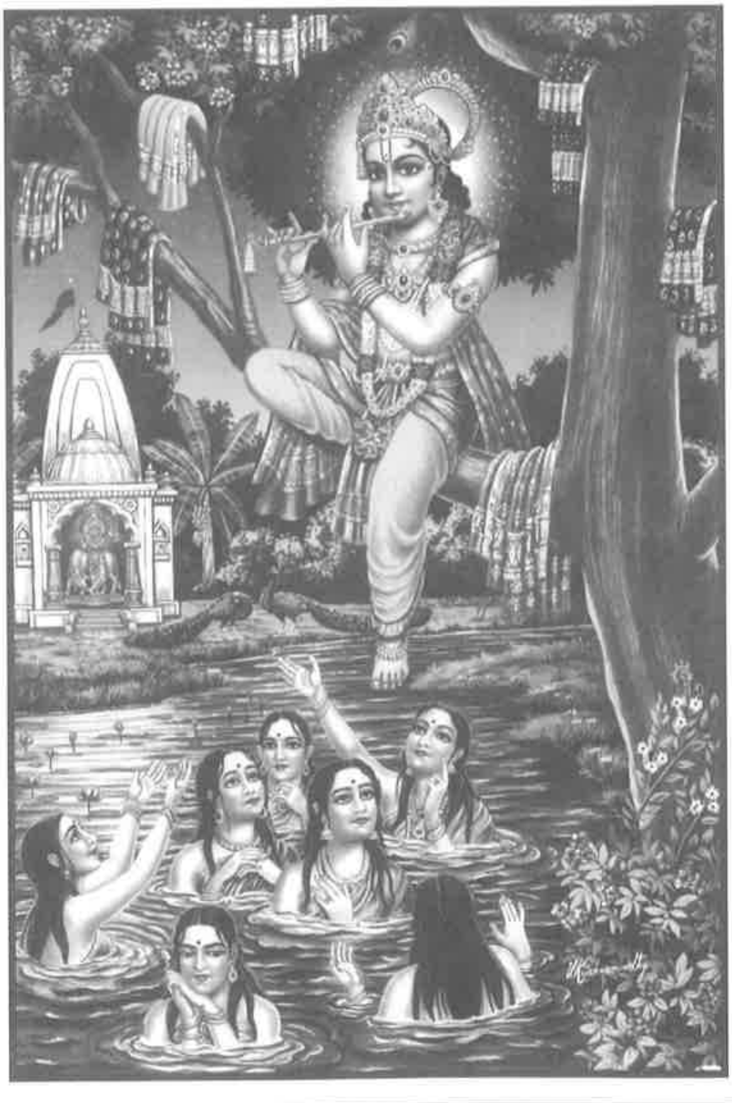

मार्गशीर्ष कृष्ण ४

छह स्वरूप को उत्सव

(गोस्वामी तिलकायत श्री दाऊजी महाराज कृत)

(देहरी बंदन माल)

श्रृंगार - दुमाला को।

वस्त्र - सुनहरी जरीके शुथन तथा वागो चाकदार, रूपहरी जरी का पटका, श्रीमस्तक पर सुनहरी जरी के काम का कतरा, मोरशिखा धराई गई है।

आभरण - हीरा, पन्ना व मोती का भारी श्रृंगार किया गया। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई लाल सुनहरी भरतकाम की बड़े बुंटे की धराई गई है।

मंगला में राग-रामकली/विभास (अष्टपदी) ब्रजानंदकंदम् ब्रजानंदकंदम।। घोषपति भाग्यभुवजातम्।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली देहों वृजराज हमारी आंगी।। नातर रंग बिरंग होयगो, केइ बेरिया हम मांगी।।१।। बृजके लोग कहा कहेंगे, देख परस्पर नागी।। खरे चतुर हरि हो अंतरगत, रेन परी कब जागी।।२।। सकल सूत कंचनके लागे, बीच रत्नन की धागी।। "परमानंदप्रभु" दीजिये न काहे, प्रेम सुरंग रंग पागी।।३।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-आशावरी हरी भोजन करत विनोदसों।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

राजभोग में (बधाई) जय श्रीवल्लभ राजकुमार।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वी आगे गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय. (यह पूरा पद पेज १३१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी माई बंसीकी भनक कान परन लागी, बीर बनवारी ब्रज आवन को भागी।। सुरभी हुंकार ग्वार टेर सुनियन लागी, खूरनकी रेनु नभ उझगन लागी।।१।। आँखियाँ फरकन लागी छतियाँ धरकन लागी, ग्रह ग्रहतें गोपी दौरन लागीं।। "छितस्वामी" गिरधारी मुख देखन को, तू तो चल आली मेरे मोहन लागी।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ सिर सोने के सूतन सोहत, पाग पेचन ऊपर नग लगे।। रतनारे भारे ढरारे नयनन, देखत मूर्छित मेंन जगें।।१।। मुखकी मंजुलताई बरनी न जाई, चंचलता देखी दूर भगे।। "नंददास" प्रभु नंदरानी छबि निरखत, वार पीवत पानी, जिन काहुकी दृष्टि लगे।।२।।

मान में राग-बिहाग पिय तोहे नैनन मे ही राखो।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग वे देखो बरत झरोखन दीपक.. (यह पूरा पद पेज ६६ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ५

(आज पाछली रात का श्रृंगार कहा जाता है)

श्रृंगार - जरी की पाग व मोर चन्द्रिका।

वस्त्र - गुलाबी शाटन के रूपहरी कोर के शुथन तथा घेरदार, श्रीमस्तक पर लाल जरी की पाग पर मोर पिछ की सादी चन्द्रीका धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार भारी श्रृंगार धराया गया है। हीरा, मोती, सोना के आभरण तथा श्री चरण कमल मोजड़ी गुलाबी साटन की धराई गई है। ठाडा वस्त्र पीला साटन के तथा साटन की पिछवाई इसमें केला व फूल के झाड़ की कढ़ाई है।

मंगला में राग-रामकली देहों वृजराज हमारी आंगी।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-खट पाछली रात परछाही पातन की, लालजू रंग भीने डोलत द्रुमद्रुम तरन।। बने देखत बने लगत अद्भुत मने, जोत की सोत में निकस रही सब घरन।।१।। कृष्ण के दरस को अंग के परस को, महा आरति मान चली मज्जन करन।। नूपुर ध्वनि सुनत चकृत व्है थकि रही, पर गयो दृष्टि गोपाल सांवल बरन।।२।। जरकसी पाघ पर मोर चंद्रिका बनी, कमलदल नयन भुव बंक छबि मनहरण।। धाई सब गहन को रस-बचन कहन को, भामिनि बनी अति छबि सुधारत चरण।।३।। रोम रोम रम रहयो मेरो मन हर लियों, नाहिं बिसरत वाकी झुकन में भुजभरन।। कहे "भगवान हितरामराय" प्रभु सों मिली, लोकलाज भाज गई प्राण परवस परन।।४।।

राजभोग आते समय राग-टोड़ी परोसत गोपी घुंघट मारे।। कनक लतासी सुंदर सीमा, आई हें ज्योंनारे।।१।। झनक मनक आंगन में डोलत, लावण्य मोर सवारें।। नंदराय नन्दरानी ते दुरि, लालें भलें निहारे।।२।। घर की सोज मिलाय थार में, आगे ले जब धारे।। परम मिलनियां मोहनजू की, हांसी मिष हुंकारे।।३।। रूचिर काछिनी जटित कोंधनी, जूरो बांह उघारें।। "परमानंद" अवलोकन कारण, भीर बहुत सिंहद्वारे।।४।।

रोग-टोड़ी चित्र सराहत चितवत मुरमुर, गोपी बहुत सयानी।। टक झक में झुक वदन निहारत, अलक संवारत पलक नमारत, जान गई नंदरानी।।१।। पर गये परदा ललित तिबारी, कंचनथार जब आनी।। "नंददास" प्रभु भोजन घर में, उरपर कर धर्यो वे उतते मुसकानी।।२।।

राजभोग में राग-टोड़ी कछु अब कहीं न जाई, तेरी उनकी बिकट बात।। आन आन प्रकृति कैसें बनि आवे, जो तू डार तो हैं री वे पात पात।।१।। अब कहा कहत सोई जाई कहौं प्रीतमसों, छाँडि दे री इत उतकी पाँचसात।। अब एते पर "गोविन्द" प्रभु पिय सुमुखि, मनाई लैहें बातनि भयो प्रात ।।२।।

भोग में राग-पूर्वी उत्तर देहौं कहा जाय पियसों, हो आई आंथमेकी।। अर्द्धनिसा बीती, हौं हारी तू जीती, कोटिक कही तोसों, तेरे भायें बूंद तये की।।१।। तासों कहा कहिये री आली, अपनी बुध ताहि ना सिखयेकी।। "सूरदास" मदनमोहन कबके ठाड़े मग जोवत, तू तो बैठी छाँह छये की।।२।।

संध्या में राग-गौरी आज वृजराज को कुंवर बनते देखोरी, आवत अधर मधुर रंजत बेन।। मधुर कलगान निज नाम सुन श्रवण पुट, परम प्रमुदित बदन फेर हुंकत धैन।।१।। मुकुट की लटक उर चटक पट पीतकी, कुटिल अलकावली गोपद रेन।। ग्वाल लालन जान करत कोलाहल, सिंध दल ताल धुन रचित संचत चैन।।२।। मधु विधुतन नैन मंद हँसन बैन, प्रगट अंकुरत गोपी निकर मन मैन।। कह "गदाधर" जु ए न्याय ब्रज सुंदरी, विमल बनमाल के बीच चाहत ऐन।।३।।

शयन में राग-नायकी सुनरी सखी तेरो दोष नहीं, मेरो पिय रसियारी।। नवल लाल को सब कोउ चाहत, कौन कौनके मन बसियारी।।१।। एकनसों नयना जोरे एकनसों भ्रोंह मरोरें, एकन सों मुख हँसियारी।। "कृष्णजीवन लछीराम" के प्रभु माई, संग डोलत पूरण शशियारी।।२।।

मान में राग-नायकी जान्यो प्रीतके मरम।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग नींकी ऋतु लागत हैं अति सीत की।। अंस भुजा दे पोढे पिय प्यारी, बात करत रस रीत की।।१।। बन गई एक रजाई भीतर, होत परस्पर जीत की।। "गदाधर" प्रभु हेमन्त मनावत, चाह बढ़त नव प्रीत की।।२।।

मार्गशीर्ष कृष्ण ६

श्रृंगार - टीपारा को।

वस्त्र - लाल रूपहरी कोर के शुथन तथा वागो चाकदार, श्री कंठ में पीला रूमाल सोनेरी धोरा का धराया गया है। श्रीमस्तक पर रूपहरी जरी के काम का टिपारा तथा ठाड़ा वस्त्र हरा व पिछवाई सोनेरी जरी की भरत काम की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा, माणक मोती तथा आखिर में गुलाबी मीना की कमल की माला धराई गई है।

लिला – श्रीगिरीराज जी की लीला तथा व्रतचर्या की चल रही है।

मंगला में राग-रामकली अहो हरि हमहारी तुम जीते।। नागरनट पट देहो हमारे, कांपत है तनसीते ।।१।। कानन कुंडल मुकुट बिराजत, कान्ह कुंवरके हौं वारी।। हाहा खात पैयां परत हों, अब हौं चेरि तुम्हारी।।२।। तब तेरो अंबर देहोंरी सजनी, जलतें होय सब न्यारी।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलनकों, तुम जीते हम हारी।।३।।

श्रृंगार में राग-रामकली निर्तत मोहन रसिक सखन संग (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-घनाश्री लाडिले गोपाल हमारे भोजन किजे।। (यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आसावरी विमल कदब छांह तर, ठाडे हैं पिय भानुसूता तट।। शीश टिपारो कटि लाल काछनी, उपरना फरहरात पीत पट।।१।। पारिजात अवतंस रूरत है, शीश सेहरों बनी अलक लट।। विमल कपोल कुंडल की शोभा, मंद हास जीते कोटि मदन भट।।२।। वाम कपोल वाम भुजपर धर, मुरली बजावत तान विकट बट।। "गोविंद" प्रभु के जू श्रीदामा प्रभृति, सब करत प्रशंसा जय नागर नट।।३।।

भोग में राग-पूर्वि नाचत गावत बनते आवत, लाल टिपारो सिस रहयों फबि।। घन-तन वसन दामिनी मानों, कुण्डल किरण निरख मोहे रवि।।१।। "हित हरिवंश" और शोभानिधि, गौरज मंडित अलकन की छबि।। स्यामधाम सरस्वती सकुच रही, या बानिक बरणत को कवि।।२।।

संध्या में राग-गौरी अग्र तक तक ध्रुं ध्रुं ध्रुंदनन, वर आवत गोधन संग।। लाल कांछनी कटि, किंकणी पगनूपुर झझं झझंनन, पित टिपारों सीर खरोई सुरंग।।१।। उरप तिरप चंद चाल मुरलीका, मृदंग ताल संग मुदित गोपग्वाल, गावत तान तरंग।। व्रजजन सब हरख निरख, जय जय कहि कुसुम वरषत, "गोविंद" प्रभु पर वारूं कोटि अनंग।।२।।

शयन में राग-अड़ानों तेरी भ्रौंह की मरोरन तें ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयों भयेजू स्याम वाम।। तेरी मुसकान देख दामिनी-सी कौंध जात, दीन व्है याचत प्यारी लेत राधे आधो नाम।।१।। ज्यों ज्यों नचायो चाहो तैसे हरि नाचत बल, अब तो मया कीजे चलिये निकुंज धाम।। "नंददास" प्रभु बोलों तो बुलाय लाऊँ, उनको तो कल्प बीते तेरी घरी याम।।२।।

मान में राग-नायकी रूसनों न कर प्यारी रूसवो निवार।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ७

(गो.ति. श्री गोविन्द लाल जी महाराज श्री का जन्म उत्सव)

श्रृंगार - कूल्है-पाग का।

वस्त्र - पतंगी साटन के सुनहरी कोर के शुथन तथा वागो घेरदार, कटि में पीला पटका, सुनहरी कोर का। श्रीमस्तक पर छोर वाली कुल्हे की पाग पर रूपहरी कोर की गोलचन्द्रिका धराई गई।

आभरण - स्थाई श्रृंगार-माणक मोती सोना के नुंपुर व वेणुवैत्र सोना के। ठाडा वस्त्र मेघश्याम तथा लाल पिछवाई जिसमें भरत काम में महल, गाय तथा गोपीजन कला करते दिखाये गये है।

विशेष – राजभोग से संध्या आरती तक सोने के बंगले में श्रीजी बिराजे। श्री नवनीत प्रियाजी सांय काल श्रीजी की गोद में पधार कर बिराजे। भोग-संध्या के दर्शन शामील हुवे। थारकी आरती की गई। गोपीवल्लभ में जलेब़ी तथा सखडी में पांच भात आरोगाये गये।

मंगला में राग-रामकली देहों वृजराज हमारी आंगी।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-खट कुल्हे की पाग सिर पेच अति जग-मगे, चमक रही चन्द्रिका बारे।। लाल ढ़िग मटुक भूर भ्रोहकी चटक पर, मोतीलर भाल मानों उदित तारें।।१।। सघन घन कांति तन जटित भूखन दिपत, निरखी गिरिधरन दुःख द्वंद्व टारे।। काछ कछि मल्ल "हरिराय" बेनी गुंही, पीत पट फरहरन फबल भारे।।२।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-घनाश्री जेंवत नंद कान्ह बलभैया।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

राजभोग में (बधाई) राग-सारंग वल्लभ नन्दन रूप अनूप, सरूप कह्यों नहिं जाई।। प्रगट परमानंद गोकुल बसत है, सब जगत के सुख दाई।।१।। भक्ति-मुक्ति देत सबनको, निजजन को कृपाप्रेम बरखत अधिकाई।। सुखद एक रसना कहाँ लौं बरनौं, "गोविंद" बलि बलि जाई।।२।।

भौग और संध्या आरती राग-मारू आज कहुंतें या गोकुल में, अद्भूत बरखा आई हो।। मनिगन हेम हीर धाराकी, ब्रजपति अति झर लाई।।१।। बानी बेद पठत द्विज-दादुर, हिये हरखि हरियारे।। दधि-धृत नीर-क्षीर नानारंग, बहि चले खार-पनारे।।२।। पटह-निसान

तिलकायत गोस्वामी श्री गोविन्दलालजी महाराज

प.भ. श्रीमती जयाबेन एवं श्री दिनेशभाई मंकोड़िया, कांदीवली, मुम्बई
का जय श्री कृष्ण

मार्गशीर्ष कृष्ण सप्तमी का श्रृंगार

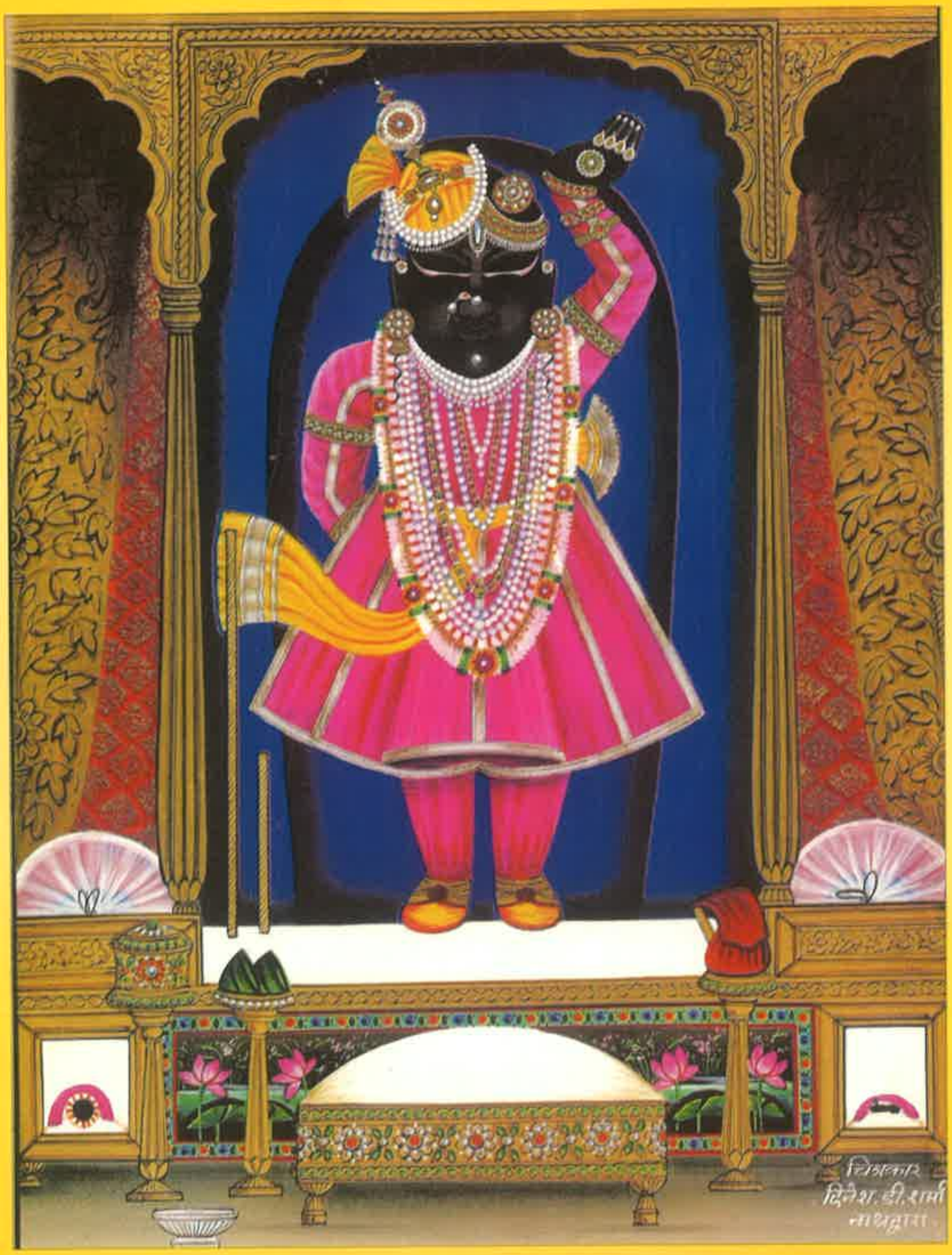
चित्रकार
दिनेश डी. शर्मा
नाथद्वारा

प.भ. श्रीमती मथरीबाई स्व. श्री मदनलालजी पारीख, उदयपुर
का जय श्री कृष्ण

भेरी-सहनाई, महा गरजकी घोरे।। मागधसुत वद चातक पीक, बोलत बंदी भौरे।।३।। भूषण बसन अमोल नंदजू, नर नारिन पहिराये।। साखा फल दल फूलन मानों, उपवन झालर लाये।।४।। आनंद भरी नाचत व्रजनारी, पहिरें रंगबिरंगी सारी।। बरन-बरन बादरन लपेटी, विद्युत न्यारी न्यारी।।५।। दरिद्र दावानल बुझे सबनके, याचक सरोवर पूरे।। बाढ़ी सुभग सुजसकी सरिता, दुरित तीर तरू चूरे।।६।। उल्ह्यो ललित तमाल बाल एक, भई सबन मन फूल।। छाया हित अकुलाय "गदाधर", तक्यौं चरनको मूल।।७।।

श्री गोपाल लाल गोकुल चले हो, बलि बलि तिंहिं काल।। मोद भरे वसुदेव गौद लैं, अखिल लोक प्रतिपाल।।१।। अरून उदयतें ज्यों तम फुटत, खुली गये कुटिल कपाट।। महाबेग बल छाँड़ी आपुनों, दीन्हीं जमुना बाट।।२।। भोर भये जैसे कुमुदिनी मूँदति, कंसादिक भय मोहे।। संतजननके मन-अंबुज पर, फुली डहडहे सोहे।।३।। बार बार फुही बरखावति, अंबुद अंबर छायौ।। अपुनो निज वपु सेस जानिके, बूँद बचावन आयौ।।४।। परमधाम जगधाम स्याम, अभिराम श्रीगोकुल आये।। "नंददास" आनंद भयो ब्रज, हरखित मंगल गाये।।५।।

शयन में राग-बिहाग पिय तेरी चितवनही में टोना।। तन-मन-धन बिसर्यो जबही तें, देख्यों स्याम सलोना।।११।। ढिंग रहवे कूँ होय विकल मन, भावत नाहिंन भौना।। लोग चवाव करत घरघर प्रति, धर रहिये जिय मौना।।२।। छूट गई लोकलाज सुरपति की, और कहा अब होना।। "रसिकप्रितम" की बानिक निरखत, भूल गई गृह-गोना।।३।।

मान में राग-बिहाग अरी मैं रतन जतन कर पार्यो।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ८

आजश्री गुंसाईजी के द्वितीय लालजी श्री गोविंद रायजी का उत्सव।

(देहरी बन्दनमाल)

श्रृंगार - कुल्है घेराको।

वस्त्र - केसरिया साटन के, रूपहरी कोरके शुथन तथा वागे चाकदार। माणक की कुल्हैं पर सोनेरी बादला का घेरा, ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम साटन के तथा पिछवाई केसरिया रूपहरी किनारी की। चौखण्डी लाल हांसीया की धराई गई है।

आभरण - भारी श्रृंगार।

विशेष - आज जलेबी अरोगाई जाती है।

मंगला में राग-रामकली मोहन देहों वसन हमारे।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-आशावरी क्रीड़त मणिमय आंगन रंग।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (गृह भोजन) राग-सारंग आज हमारे भोजन कीजे।। बहुत भांत पकवान मिठाई, षटरस व्यंजन लिजे।।१।। सद्य घी खिचरी और खोवा, स्याम सलाने लीजे।। उर्द के बरा दही में बोरे, कछु कोरे कछु भीजे।।२।। संग समान सखा बुलावहु, बांट सबनको दीजे।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, पान्यों पछावर पीजे।।३।।

राजभोग में राग-सारंग गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ, श्री वल्लभ गुन गिने न जाई।। भुवकी रेनु तरैया नभकी, घनकी बूंदें परति लखाई।।१।। जिनके चरन-कमल रज-वंदित, संतन होत सदा चित चाई।। "छीतस्वामी" गिरीधरन श्री विट्ठल, नंदनदन की सब परछाँई।।२।।

भोग में राग-नट आज बने बजराज कुंवर बेठे सिंघद्वार निकस, अंग अंग नव नव छबि वरणी न जाई।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-ईमन लाडिले लाल की बन्दसि, कहीं न परे हो।। कुलह चंपक-भरी अति सुंदर, और लटपटी पाग रही आधे सिर धसि।।१।। बरूनी पीत पहरें छूटें बंद अरगजा, मोजें सोभा स्याम उरसि।। "गोविंद" प्रभु सुरति सिथिल दंपति, प्रेम-गलित बैठे अब कुंजमहल तें निकसि।।२।।

शयन मे राग-अडाना (केदार) तेरी हों बलि बलि जाऊँ, गिरिधरन छबिले।। कुल्हे छबिली पाग छबीली, अलक छबिली तिलक छबिलो, नयन छबिले प्यारी जूके रंग रंगीले।।१।। अधर छबिले बेन छबिले, हो अति सरस सुरीले।। "गोविंद" प्रभु नखसिख, अंगोअंग लालन रसीलें।।२।।

मान में राग-बिहाग अरी मैं रतन जतन कर पायों।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीष कृष्ण ९

श्रृंगार - मोती के वागा को श्रृंगार।

वस्त्र - श्याम मखमल पर मोती के काम किया हुआ घेरदार वागा, मोती की पाग पर मोती के काम का कतरा धराया गया है। ढाड़ा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई श्याम रूपहरी छापा की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार मोती सोना के।

विशेष – शीतकाल में श्रीनाथजी मंगल भोग में नवीन चार सामग्री आरोगते है।

मंगला भोग में राग-रामकली हों बल बल जाऊं, कलेऊ लाल कीजे।। खीर खांड घृत अति मीठो हे, अबकी कोर बस लीजे।।१।। बेनी बढ़े सुनों मनमोहन, मेरो कह्यों पतीजे।। ओट्र्यो दूध सद्य धोरीको, सात घूंट भर पीजे।।२।। वारने जाऊं कमलमुख ऊपर, अंचरा प्रेमरस भीजे।। बोहोरस्यो जाय खेलो यमुनातट, "गोविंद" संग कर लीजे।।३।।

श्रृंगार में राग-ललित राधा प्यारी ! तु रस-रंग भरी।। मैं जानी यह फौज मदन की, लूट लई सगरी।।१।। अटपटे भूषण रगमगी अंगिया, अलकावली बिथुरी।। "कृष्णदास" प्रभु गिरधर पिय संग, रतिरस केली करी।।२।।

मंगला में राग-बिभास (श्लोक) विधु मधुरानन मानद, मनसीज मानद, गोपी नैन चकोर पानद।।१।। राधा लोचन कुवलय मोदन किमूवरद, अंजन रजनी तारागणा वृत, अधरामृत स्यंद प्रकटिता।।२।।

राजभोग आवता (गृह भोजन के पद) लालको मीठी खीर जो भावे।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आसावरी मोती तेहु ठोर सबरारे।। जबहि तेरे गई चितवत उत, जब नंदलाल पधारे।।१।। अर्ध पोवत में श्याम मनोहर, निकसे आय सँवारे।। आधी लट कर लेव चली है, जित ब्रजनाथ सिधारे।।२।। दास "चतुर्भुज" प्रभु चित चौर्यो, गेहके काज बिसारे।। गिरिधर लाल भेंट बनमें, तृन तोर सबै व्रत डारे।।३।।

भोग में राग-पूर्वी तेरो कहा लिये जात, मोंसो क्यों न बोले री नंद के लाला।। छांड दे अंचल होत हे गहरू, जानत हों ऐसी बाला।।१।। मुरली बजावत मोही रिझावत, तापर गावत तान रसाला।। "धोंधी" के प्रभु हाथ दूर राखो, टुटेगी मोतिन माला।।२।।

संध्या में राग-गौरी/केदारो घुंघट में मोहन मुख जोवे।। चंदबदनी मृगलोचनी राधे, मानों मोतिनकी लर पोवै।।१।। आधे वदन दुराई छबीली, गिरिधर के मन मोहै।। ज्यों ससि बिंब बादरते निकस्यो, छिनु ढांप्यो घन सोहै।।२।। निरख गोपाल थकित भये ठाडे, यह चतुर अति कोहै।। “गोविन्द” प्रभु दोहिनी भूले, भौं-मटकी कर दोहै।।३।।

शयन में राग-कान्हरौ आज बनी वृषभान कुंवरी, कहे दूती अंचल वारत, तृन तोरत कहत, भलेजू भले भामा।। वदनजोति कंठ पोती, छोटी छोटी लर मोतीनकी, सदा सिंगार हार कुच बिच, अति सोभित है मोलसरी दामा।।१।। एक रसना गुनरूप, कैसेंक बरनौं बिसद कीरति, अंग-अंग पिय अति प्रबीन, पिय मन अभिरामा।। “गोविंद” बलि सखी कहें, रचिपचि विरंची कीनी, स्याम रमनको, माई तू ही है स्यामा।।२।।

मान में राग-कान्हरौ/नायकी हों तोसों अब कहा कहो आलीरी, कौन बेर की बिलावत ही मोही।। नवलनागर नवल कुंज, कबके निस जागत हें, प्रीति की तो अब रही न कछूं, इतनी सकुच नाहिन तोहि।।१।। कहा आयुष होत है मोकों, तुमतो सुहाग के भर आवेस बसोई।। मोहि कहा तेरोई प्राणप्रितम सुख पावें, सोई तो करोरी आली, “गोविन्द” प्रभु अपने कंठ राखति पोई।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ॠतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १०

श्रृंगार - पाग कतरा का। (हरी घटा)

वस्त्र - हरा रंग की साटन के, बिना कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। हरी रेशम कामका दोहरा कतरा तथा ढाड़ा वस्त्र हरा, पिछवाई हरी। श्रीतुलसीजी की माला, तथा हरा पिस्ता की सामग्री आरो गाई गई।

आभरण - पन्ना, हीरा मोती के, गुंजा माला, मोजड़ी हरी शाटन की धराई गई है।

मंगला में राग-रामकली हरि यश गावत चली व्रज सुन्दरि नदी यमुना के तीर।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली वसन हरे सब कदम चढ़ाये।। सोलह सहस्त्र गोप कन्यन के, अंग आभूषण सहित चुराये।।१।। अति बिस्तार नीप तरू तामें, लै-लै जहाँ-तहाँ लटकाये।। मणि आभूषण डार डारन प्रति, देखत छबि मनहीं अटकाये।।२।। नीलांबर पाटंबर सारी, श्वेत, पीत चुनरी अरूणाये।। "सूरस्याम" युवतिन ब्रत पूरण, को कदंब डार फल पाये।।३।।

राजभोग आते समय राग-खट भोजन भयो भावतें मोहन।। तातोई जेवों आगे मोहन।।१।। खीर खांड खिचरी संवारी।। मधुर महेरी गोपन प्यारी।।२।। राजभोग लह्यो भात पसाई।। मूंग मरेरी हींग लगाई।।३।। सध्य माखन कुं सीधे तायो।। धृत सुगंध कचोरन नायो।।४।। सुरत कर लई सरस तरोई।। सेम सेंगरी छमक जरोई।।५।। पापर बरी अचार परम सुच।। अदरख और निंबुवन व्है हे रूच।।६।। भरता भटा खटाई दीनी।। भाजी भली भांत रच कीनी।।७।। साक चना चुका चौराई।। सरसों और सुवा सरसाई।।८।। बथुवा भली भांत रच रांध्यो।। हींग लगाय लैजु दध सांध्यो।।९।। धोई परवर फांक करी चुन।। टेंटी ढ़ेंढस छोंक लऐ पुन।।१०।। बहुरी ओर ककोरा फोरे।। कचरी चार चखे हे सारे।।११।। भले बनाय करेला भीने।। लोन लगाय तुरत तर लीने।।१२।। फूले फूल सहजना छोंके।। उन रूच होय नाज के ओके।।१३।। फल करील करोंदा उत्तम।। करी अगस्त करी अमृत सम।।१४।। अरबी अवली दई खटाई।। जेवन खटरस जात जताई।।१५।। पेठा बोत प्रकार जो कीने।। तिन सों स्वाद हरि ने लीने।।१६।। सुन्दर रूप रतालु रातो।। तरके लियो अब ही यह तातो।।१७।।

खीरा राम तुरैया तामें।। अरूच नरूच अंकुर जीय जामें।।१८।। ककड़ी ओर कचरी
कचनारो।। सरस नींबुवन स्वाद संवारो।।१९।। केउक भांत के सकोरा लीने।। दिव्य करे हरदी
रंग भीने।।२०।। पनो बहु न्यारो, रायता पकोरी।। डुबकोरी मुंग की सुंठकोरी।।२१।। बरी
बरा ओर बरन बोत विध।। खाटे खारे मीठे पे नीध।।२२।। खटी कढ़ी विचित्र बनाई।। जेंवत
बोत वार रूच आई।।२३।। अमृत सम रहे रस ता गर।। जेवन लागे अतसे नागर।।२४।।
रोटी रूचर कनक बेसन कर।। अजमायन सेंधो मिलायो धर।।२५।। अबही अंगाकरी तुरत
बनाई।। ते लज लज ग्वालन संग खाई।।२६।। पुरीस पुर कचोरी कोरी।। अति उज्जवल
देखियत सोरी।।२७।। लुचई ललित लापसी सोहे।। सहज सुवास स्वाद मन मोहे।।२८।। माल
पुवा माखन मध कीने।। राहु ग्रसत रविसम रंग जीने।।२९।। सेवन लाडु लागत नीके।। सेव
सुंवारी घेवर घी के।।३०।। गुंजा गुंथे गाल मसुरी।। मेवा मिली के पुरन पुरी।।३१।। ससी
सम सुंदर सरसई दरसे।। उपर कनी अमृत मानों बरसे।।३२।। बोहोत जलेव जलेबी बोरी।।
नाहन घटत सुधाते थोरी।।३३।। फैनी फेन मीली पे संग।। मीश्री मीलत भई एक रंग।।३४।।
खोवा सुही अधर व्हे राखे।। सोई मधुर मीठे रस चाखे।।३५।। बासोंदी सीखरन अत सोंधी।।
मीले मीरच मेटत चक चोंधी।।३६।। साज्यो दह्यो परम रूचिदाई।। ता उपर पुनी मधुर
मलाई।।३७।। छाछ छबीली धरी धुंगारी।। छिर व्हे उठत छिर की न्यारी।।३८।। थार कटोरा
जटत रतन के।। भरे सब सोजन विविध जतन के।।३९।। ईतने जतन जसोदा कीने। तब
मोहन बालक संग लीने।।४०।। बैठे आय हँसत दोऊ भैय्या।। प्रेम मुदित परोसत हें
मैय्या।।४१।। पनवारो पहेले परोसायो।। तब आपुन कर कोर उठायो।।४२।। जेंवत रूच
अधको अधकैया।। भोजन हु बिसरत नहीं गैय्या।।४३।। मेहर मुदित मन लाड़ लड़ावे।। सो
सुख कहाँ देवकी पावे।।४४।। सीतलकर कपूर सरचयो।। सो मोहन नीके रूच अचयो।।४५।।
धर त्रृष्टी गढ़ुवा जल लाई।। चरू भर्यो धर खरच लियोई।।४६।। पीरे पान पुराने बीरा।।
खात भये धुति दांतन हीरा।।४७।। मृगमद कन कपूर कर लीनो।। बांट बांट सबहिन को
दीनो।।४८।। चन्दन और अरगजा आन्यो।। अपने कर बलके उर सान्यो।।४९।। ता पाछे
आपुन हु लगायो।। उबर्यो बहुत सो सखन हु पायो।।५०।। देख यशोमति बहोत सुख पावे।।
यह लीला सुरनर मुनि गावे।।५१।। “सुरदास” देख्यो गिरिधारी।। बोलदई हँस जूठन
थारी।।५२।। यह ज्योनार सुने और गावे।। सो निज भक्ति अभै पद पावे।।५३।।

राजभोग में राग-आसावरी मेरो माई ! हरि नागरसों नेह।। एक बेर कैसे छूटत है, पूरब बढ़्यो सनेह।।१।। अंग-अंग निपुन बन्यो जदुनंदन, स्याम बरन सब देह।। जबतें दृष्टि परे नंदनंदन, तबतें बिसर्यों गेह।।२।। कोउ निंदो, कोउ बंदौ, मो मन गयो संदेह।। सरिता सिंधु मिली “परमानंद”, भयो एकरस नेह।।३।।

भोग में राग-पूर्वि गैया गई दूर टेरेजू कान। जो ऊँचे चढ़ टेर सुनावहु, सब बग देंगी मेरे जान।।१।। वृंदावनमें चरत हरित तृन, चौंकि चमकि टेर परी कान।। दूधधार धरनी सिंचत आई, “गोविंद” प्रभु जहाँ करत मधुपान।।२।।

संध्या में राग-गौरी हरि मारग जोवत भई साँझ।। दिनमनि अस्त भयो गोधूरक, आवत बने मंडली माँझ।।१।। बाजत बेन रेनु तन-मंडित, बनमाला उर लोचन चारू।। बरूहा-मुगट स्त्रवन गुंजामनि, बनज धातुकौ तिलक सिंगारू।।२।। गोपी-नैन-भृंग-रस-लंपट, सादर करत कमल मधुपान।। बिरह तापमोचन “परमानंद”, मुरली मनोहर रूपनिधान।।३।।

शयन में राग-ईमन जब जब देखौं जाय हरि को वदन, तब नयना मेरे मोपें न आवहीं।। ऐसे रूप लालची ललचाय रहे मानों, ज्यों बिछुरे जलचर जल पावहीं।।१।। रूपके रिझोने नयना रस में मिल मग्न भये, अब सखी हमसों न बतरावही।। “मुरारीदास” प्रभु एते पर निठुर भये, अपनी ओट दुरावहीं।।२।।

मान में राग-बिहाग राधेजुको प्रान गोवरधनधारी।। तरून तमाल ढिंग कनकलतासी, हरिजुके प्रान राधिका प्यारी।।१।। मरकत मणि नंदलाल लाडिलों, कंचन तन वृषभान दुलारी।। “सूरदास” प्रभु प्रीत निरंतर, जोरी जुगल बने बनवारी।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग आँगन में हरि सोय गयेरी। हरे हरे देउ जननी मिलिके, सेज सहित तब भवन लहेरी।।१।। कहति रोहिनी इन्हें न जगाओ, खेलत डोलत हार गयेरी।। बार बार जृंभात साँवरो, बदन देख बिस्मितजु भये री।।२।। कहत नंद ये कछु न जाने, गायन के संग श्रमित भयेरी।। “सूरदास” बलराम स्याम तब, ब्रजरानी संग पोढ़ रहेरी।।३।।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११

श्रृंगार - कुल्हे-पगा को श्रृंगार।

वस्त्र - गुलाबी शाटन के शुथन तथा वागो चाकदार। जरि के कामका कतरा टिपारे को साज। कुल्हे पर पगा धराया गया है। ढाडा वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई साटनकी, झाड के वस्त्र कामकी धराई गई है।

आभरण - मध्य का श्रृंगार, हीरा-मोती सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-रामकली अहो हरि हम हारी तुम जीते।। (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली ग्वालिन मांगत बसन आपने।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आशावरी/घनाश्री चलहु गोपाल बोलत महतारी।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी खिरक खन आछे बड़ूड़े बगर।। नव तरूनि नव तरूलित मंडित, अगनित सुरभी मगन डगर।।१।। जहाँ तहाँ दधिमंथन घमरके, प्रमुदित माखन चोर लंगर।। मागधसुत बंदी चारण जस, राजत सुरपुर नगरी नगर।।२।। दिन मंगल दीनी बंदनमाला, भवन सुवासित धूपअगर।। "हरिदास" कुँवर गुनमहिमा, सागर मसि अवनी कगर।।३।।

भोग में राग-पूर्ति हरि यश गावत चली व्रज सुन्दरि नदी यमुना के तीर।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

संध्या में राग-मौड़ी मोहन देहों वसन हमारे।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग अरि हौं श्याम रंग रँगी।। रीझवे काई रही सुरत पर, सुरत माँझ पगी।।१।। देख सखी एक मेरे नैनन में, बैठ रह्यो करी भौन।। धेनु चरावत जात बृंदावन, सौं धौं कनैया कौन।।२।। कौन सुने कासों कहै सखी, कौन करे बकवाद।। तापें "गदाधर" कहा कही आवे, गूंगो गुड़को स्वाद।।३।।

मान में राग-बिहाग आवत जात हों हार परीरी।। ज्यों ज्यों प्यारो विनती कर पठवत, त्यों त्यों तुं गढ़ मान चढ़ीरी।।१।। तिहारे बीच परे सोई बावरी, हों चौगान की गेंद भईरी।। "गोविन्द" प्रभु को बेग मिल भामिनी, सुभग यामिनी जात बही री।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १२

श्रृंगार - पाग-चीरा के।

वस्त्र - मेघश्याम साटन के शुथन तथा वागो घेरदार, उस पर लाल साटन की फतवी धराई गई है। श्रीमस्तक पर लाल जरी का चीरा पर मोर पिछ के काम का कतरा तथा ठाडा वस्त्र सफेद रंग के, पिछवाई मेघश्याम शाटन की रूपहरी कोर की।

आभरण - हीरा-मोती-सोना के हार धराये गये है।

विशेष – आज द्वाद्वशी की चोकी की सामग्री गोपीवल्लभ भोग में आरोगाई है।

मंगला में राग-खट

नंदनंदन वर गिरिवरधारी। देखत रीझी धोख कुमारी।।
मोरमुकुट पीताम्बर काछे। आवत देखे गायनी पाछे।।
कोटिइन्दु छबि बदन बिराजे। निरखि अंग प्रति मनमथ लाजे।।
श्रुति कुंडल-छबि रवि नहीं तुले। दसन दमक-द्युति दामिनी भूले।।
नैनकमल मृग-सावक मोहे। सुक-नासा पटतरको को है।।
अधर-बिंब-फल पटतर नाहीं। विद्रुम अरू बंधूक लजाही।।
देखत रीझी रही ब्रजनारी। देह-गेहकी सुरति बिसारी।।
यह मनमें अनुमान कियो तब। जप-तप-संजम-नेम करें अब।।
बार-बार सविताहिं मनावें। नंदनंदन पति देहुँ सुनावें।।
नेम-धर्म तप-साधन कीजै। शिवसों माँगि कृष्णपति लीजै।।
वर्ष दिवसको नेम लेई सब। रूद्रहिं सेवहु मन-बच-क्रम अब।।
दृढ बिस्वास बरतकों कीन्हो। गौरी-पति-पूजन मन दीन्हो।।
खट-दस-सहस्त्र जुरी सुकुमारी। ब्रत साधति नीके तन गारी।।
प्रात उठे जमुना-जल खोरे। सीत-उष्ण कहु अंग न मोरे।।
पति के हेत नेम तप साधे। संकर सों यहि कहि आराधै।।
कमलपत्र मालूर चढावे। नैन मूँदि यह ध्यान लगावे।।
हमको पति दीजै गिरिधारी। बडे देव तुम हो त्रिपुरारि।।
और कछु नहि तुमसों मागें। कृष्ण-हेत यह कहि पा लागें।।
ऐसेहि करत बहुत दिन बीतै। प्रभु अंतरजामी मन चीते।।
एक दिवस आपुन आये तहँ। नवतरूनी अस्नान करत जहँ।।

बसन धरे जल-तीर उतारी। आपुन जल पैठी सुकुमारी।।
कृष्ण-हेत अस्नान करे जहँ। सबके पाछें आपुन व्है तहँ।।
भींजत पीठ प्रीति अति बाढ़ी। चकृत भई जुवति सब ठाढी।।
देखे नंदनंदन गिरिधारी। ब्रतफल प्रगट भये बनवारी।।
सकुचि अंग जब पैठि लुकावें। बार बार हरि अंकमें लावे।।
लाज नहीं आवत है तुमको। देखत बसन बिना सब हमको।।
हँसत चले तब नंदकुमार। लोगनि सुनवति करति पुकार।।
हार चीर ले चले पराई। हाँक दई कहि नंद-दुहाई।।
डारि बसन-भूषन तब माँगे। स्याम करन अब ढीठौ लागे।।
भागे कहाँ बचौगे मोहन। पाछे आय गईं तुव गोहन।।
तनकी सुध-सुम्हार कछु नाहीं। बसन-अभुषन पहिरति जाहीं।।
चीर फटे कंचुकी-बंद छूटे। लेत न बनत हार-लर टूटे।।
प्रेमसहित मुख खीझति जाहीं। झूठ ही बारबार पछिताही।।
गई सबे तिय नंदमहर घर। जसुमति पास गई सब धरधर।।
देखो महरि स्यामके ये गुन। ऐसे हाल करे सबके उन।।
चोली चीर हार बिखराये। आपुन भाग इतहिंको आये।।
जमुना-तट कोऊ जान न पावे। संग सखा लिए पाछै धावै।।
तुम सुतकौ बरजहु नंदरानी। गिरिधर भली करत नहिं बानी।।
लाज लगत इक बात सुनावत। अंचल छोरि हियो दिखरावत।।
यह देखत हँसि उठीं जसोदा। कछु रिस कछु मनमें मोदा।।
आई गये तिहि समय कन्हाई। बाँहें गहि लै तुरत दिखाई।।
तनक-तनक कर तनक अंगुरियाँ। तुम जोबनभरी नवल बहुरियाँ।।
जाहुँ घरही तुमकौं मैं चीन्ही। तुम्हरी जात जान मैं लीन्ही।।
तुम चाहत सो इहाँ न पैहों। और बहुत ब्रज-भीतर लैहों।।
बारबार कहि कहा सुनावत। इन बातन कछु लाज न आवत।।
देखहु री ये भाव कन्हाई। कहाँ गई तबकी तरूनाई।।
महरि तुमहि कछु दूषन नाहीं। हमको देखि-देखि मुसुकाहीं
इनके गुन कैसे कोऊ जाने। औरे करत और धरि बानै।।

देन उरहनो तुको आई। नीको पहिरावनि हम पाई।।
चली सबै जुवती घर-घरको। मनमें ध्यान करति हैं हरिको।।
बरष-दिवस तप पूरन कीन्हें। नंद-सुवनको तन-मन दीन्हे।।
प्रात होत जमुना फिरि आई। प्रथम रहे चढ़ि कदम कन्हाई।।
तीर आई जुवती भई ठाढी। उर-अंतर हरि-सों रति बाढी।।
कह्यो चलो जमुना-जल खोरें। अंग अंग आभूषन छोरें।।
चोली छोरे हार उतारे। करसों सिथिल केस निरबारें।।
इत-उत चितवन लोग निहारे। कह्यो सबन अब चीर उतारें।।
बसन आभूषन धरे उतारी। जल-भीतर सब गई कुमारी।।
माघ-सीतको भीत न माने। खट-रूतुके गुन सम करि जाने।।
बार-बार बूडे जल माँहीं। नेकहु जलको डरपति नाहीं।।
प्रातहि तें इक जाम नहाहीं। नेमधर्म ही में दिन जाहीं।।
इतने कष्ट करे सुकुमारी। पतिके हेत गोवर्धनधारी।।
अति तप करत देखि गोपाला। मनमें कह्यो धन्य ब्रजबाला।।
हरि अंतरजामी सब जानी। छिन छिनकी बहु सेवा मानी।।
व्रतफल इनहि प्रगट दिखरावौ। बसन हरी ले कदम चढावौ।।
तन-साधन तप कियो कुमारी। भज्यो मोहि कामातुर नारी।।
सोरह सहस्त्र गोपकुमारी। सबके बसन हरे बनवारी।।
हरत बसन कछु बार न लागी। जल-भीतर जुवती सब नागी।।
भूषन-बसन सबै हरि ल्याए। कदम-डार जहँ-तहँ लटकाए।।
ऐसो नीप-बृच्छ बिस्तारा। चीर-हारधों कितक हजारा।।
सबै समाने तरूवर डारा। यह लीला रची नंदकुमारा।।
हार-चीर मान्यो तरू फूल्यों। निरखि स्याम आपुन अनुकूल्यो।।
नेम सहित जुवति सब न्हाई। मनमन सविता विनय सुनाई।।
मूंदे नैन ध्यान उर धारे। नंदनंदन पति होहि हमारे।।
रवि करि विनय शिवही मन लीनो। हृदय माँझ अवलोकन कीन्हो।।
त्रिपुर-सदन त्रिपुरारि त्रिलोचन। गौरीपति पसुपति अघमोचन।।
गरल असन अहि-भूखन धारी। जटा धरन सिर गंगा प्यारी।।

करति विनय यह माँगत तुमसों। करहु कृपा हँसिके आपुनसों।।
हम पावे सुत-जसुमतिको पति। यहै देहु करि कृपा देव, रवि।।
नित्यनेम करी चली कुमारी। एक जाम तनको हिम गारी।।
ब्रजललना कह्यौ नीर जुडाई। अति आतुर ह्वै तटको धाई।।
जलतें निकलि तरूनि लव आई। चीर-आभूषन तहाँ न पाई।
सकुचि गई जल-भीतर धाई। देखि हँसत तरू चढे कन्हाई।।
बार-बार जुवती पछिताहीं। सबके बसन आभूषन नाहीं।।
ऐसी कौन सधनि ले भाग्यो। लेतहु ताही विलंब न लाग्यो।।
माघ तुषार जुवति अकुलाहीं। ह्यों कहँ नंद-सुवन तो नहीं ।।
हम जानी यह बात बनाई। अंबर हरि लै गये कन्हाई।।
हौं कहूँ स्याम बिनय सुनि लीजै। अंबर देहु कृपा करि जीजै।।
थरथर अंग कँपत सुकुमारी। देखि स्याम नहि सके सम्हारी
इहीं अंतर प्रभु बचन सुनायो। ब्रतको फल दरसन सब पायो।।
कहा कहत मोसों ब्रजबाला। माघ-सीत कत होत बिहाला।।
अंबर जहाँ बलाऊँ तुमको। तो तुम कहा देहोंगी हमको।।
तन-मन अर्पन तुमको कीन्हो। जौ कछु हुतौ सु तुमको दीन्हो।।
और कहा लेहों जू हमसो। हम माँगति हैं अंबर तुमसों।।
यह सुनि हँसे दयाल मुरारी। मेरो कह्यो करो सुकुमारी।।
जलतें निकसी सबै तट आवहु। तबहि भले अंबर तुम पावहु।।
भुजा पसारि दीन ह्वै भाषहु। दोउ कर जोरि-जोरि तुम राखहु।।
सुनहु स्याम एक बात हमारी। नगन कहुँ देखिये न नारी।।
यह मति आपु कहाँधों पाई। आज सुनि यह बात नवाई।।
ऐसी साध मनहीमें राखहु। यह बानी मुखतें जनि भाखहु।।
हम तरूनी तुम तरून कन्हाई। बिना बसन क्यों देह दिखाई।।
पुरूषजाति तुम यह कहँ जानो। हाहा यह सुखमें जनि आनो।।
तौ तुम बैठ रहो जलहीं सब। बसन-अभूषन नहि चाहत अब।।
तबहि देहूँ जल बाहर आवहु। बाँह उठाई अंग दिखरावहु।।
कत हौ सीत सहत सुकुमारी। सकुचि देहू जलहीमें डारी।।

फर्यो कदमब्रत करनि तुम्हारे। अब कहँ लज्जा करति हमारे।।
लेहु न आई अपुने ब्रतको। मैं जानत या ब्रतके धतको।।
नीके ब्रत कीन्हों तनु गारी। ब्रत ल्यायो धनि मैं गिरिधरी।।
तुम मन-कामनि पूरन करिहौं। रासरंग रचि-रचि सुख भरिहौं।।
यह सुनिकै मन हर्ष बढायौ। ब्रतको पूरन फल हम पायौ।।
छाँडहु तुम यह टेक कन्हाई। नीर माँहि हम गई जडाई।।
आभूषन सब आपुहि लेहु। चीर कृपा करि हमको देहु।।
हा-हा लागैं पाई तिहारें। पाय होत हैं जाडनि गारे।।
आजूहीतें हम दासी तुम्हारी। कैसे दिखावें अंग उघारी।।
अंग दिखाए ही अंबर पैहों। नातरू ऐसे ही दिवस गँवैहों।।
मेरे कहे निकसि सब आवहु। थोरेंहि हमकौ भलौ मनाबहु।।
मुँहचँही तरूनी मुसकानी। यह आपुन थोरी करी जानी।।
जो तुम कहौ सु तुमको सोहै। आज तुम्हारी पटतर को है।।
हमरी पत सब तुम्हरै हाथा। तुमही कहो ऐसी ब्रजनाथा।।
तप तनु गार कियो जिहि कारन। सो फल लग्यौ नीप-तरू डारन।।
आवहु निकसि ले पट भूषन। यह लागै हमकों सब दूषन।
अब अंतर कत राखति हमसों। बारबार कहत हौं तुमसों।।
गोपिनि मिलि यह बात बिचारी। अब तो टेक परे बनवारी।।
चलहु न जाई चीर अब लेहीं। लाज छाँड उनको सुख देहीं।
जलतें निकसि तीर सब आई। बारबार हरि हरखि बुलाईं।।
बैठि गईं तरूनि सँकुचानी। देहु स्याम हम अतिहिं लजानी।।
छाँडि देहु यह बात सयानी। वैसेहि करो कहि जो बानी।।
कर कुच-अंग ढाँक भई ठाडी। वदन नँवाई लाज अति बाढी।।
देहु स्याम अंबर अब डारी। हा-हा दासी सबै तुम्हारी।।
ऐसे नहि बसन तुम पावहु। बाँहै उठाई अंग दिखराबहु।।
कह्यो मान जुवतिन कर जोरे। पुनिपुनि जुवती करति निहोरे।।
धन्य धन्य कहि श्रीगोपाला। निहचै ब्रत कीन्हों ब्रजबाला।।
आवहु निकट लेहु सब अंबर। चोली हार सुरंग पाटंबर।।

निकट गई सुनिके यह बानी। तरूनी नगन अंग अकुलानी।।
भूषन बसन सबनिको दीन्हौ। तिनके हेत कृपा करि हरि दीन्हौ
चीर-अभूषन पहिरे नारी। ए कह्यो तबहि ऐसे बनवारी।।
तब हँसि बोले कृष्ण मुरारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी।।
तुमही हेत यह वपु व्रज धार्यो। तुम कारन वैकुंठ विसार्यो।।
अब व्रत करि तुम तन नही गारो। में तुमते कछु होतन न्यारो।।
मोहि कारन तुम अतितप साध्यो। तन मन करि मोको आराध्यो।।
जाहु सदन अब सब व्रजबाला। अंग परसि मेरे जंजाला।।
जुवतिनि विदा दई गिरिधारी। गई घरन सब घोष कुमारी।।
वस्त्र हरन लीला प्रभु किन्हौ। व्रज तरूनिनि व्रज को फल दीनो।।
यह लीला श्रवननि सुनि भावै। औरनि सिखवे आपुन गावे।।
"सूरश्याम" जन के सुखदाई। दृढ़ताई में प्रगट कन्हाई।।

श्रृंगार में राग-रामकली देहों वृजराज हमारी आंगी।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-सारंग भोजन करत पिय अरू प्यारी।। रंग महल में धरी अंगीठी, परदा परे सुखकारी।।१।। दोऊ परस्पर लेत देत हें, बहु विध कर मनुहारी।। "रसिक" प्रितम प्रभु की यह लीला, डारत तन मन वारि।।२।।

राजभोग में राग-टोड़ी/ललित आये अलसाने सरसानी में..(यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

भोग में राग-नट रूप देख नैना पलक लागे नहीं।। गोवर्धनधर के अंग अंग पर, दृष्टि परत चित्त रहत तहीं तहीं।।१।। कहारी कहों अंग अंग की बानिक, चित्त चोर्यो मांग दही।। "कुंभनदास" प्रभु के मिलन की सुंदर बात, सखियन सो कही।।२।।

संध्या में राग-गौरी देखन देत न बैरिन पलके।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानों पिय तोहे नैनन मे ही राखो।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग/कान्हरौ तैं जू नीलपट ओट दियौ री।। सुनहु राधिका स्याम सुंदर सों, बिनहि काज अति रोष कियौ री।।१।। जलसुत बिंब मन हूँ जल राजत, मनहुँ सरद ससि राहु लियौ री।। भूमि घिसन किधौं कनक खंभ चढ़ि, मिलि रस ही रस अमृत पियौं री।।२।। तुम अति चतुर सुजान राधिका, कत राख्यौ भरि मान हियौ री।। "सूरदास" प्रभु अंग अंग नागरि, मनहु काम कियो रूप बियौ री।।३।।

पोढ़वा में राग-बिहाग नींकी ऋतु लागत हैं अति सीत की।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण १३

(श्री गुसाईजी के सातवें लालजी घनश्यामजी का उत्सव)

श्रृंगार - कुल्हे जोड़ का।

वस्त्र - लाल साटन बिना कोर के शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर पन्ना की जडाउ कुल्है पर सादा मोर पिछ की चंद्रिका, ठाड़ा वस्त्र-पीला रंग के, पिछवाई लाल साटन की।

आभरण - हीरा-मोती-माणक का भारी श्रृंगार किया गया।

मंगला में राग-रामकली बनत नहीं यमुनाजी को नहिवो।। सुंदर श्याम घाट पर ठाडे, कहो कौन विधि जयवो।।१।। कैसे वसन उतार धरें हम, कैसें जलही समयवो।। नंदनंदन हमको देखेगे, कैसें करके न्हयवो।।२।। चोली चीर हार ले भाजत, सों कैंसे कर पयवो।। अंकन भर भर लेत "सूरप्रभु", काल्ह न यहि मग अैवो।।३।।

पाग-रामकली अहो हरि हमहारी तुम जीते।। (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-घनाश्री जेंवत कान्ह करत किलकारी।। (यह पूरा पद पेज १२६ पर पढ़े।)

तथा राग-घनाश्री जेंवत नंद कान्ह बलभैया।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

राजभोग में (बधाई) राग-सारंग जयति रूक्मणीनाथ पद्मावती प्राणपति विप्रकुल छत्र आनंदकारी।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट आज बने बजराज कुंवर बेठे सिंघद्वार निकस अंग अंग नव नव छबि वरणी न जाई।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-कान्हरौ राखी हों अलक बीच चंपकली.. (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शयन में राग कान्हरौं आज की बानिक कही न जाय।। रही धसि पाग लाल आधे सिर, कुल्हे चम्पक, तापर हीरा लटकाय।।१।। बरूनी पीत पहरे, छूटे बंद अरगजा, मोजें तन, बिंबित श्याम झांई।। दरसनीय वनमाल, तिलक देखि विथके, कोटि मदन, और "गोविन्द" बल बल जाई।।२।।

मान में राग-बिहाग मोहन मुखारविंद पर, मनमथ कौटिक वारों री माई।। जहीं जहीं अंगन दृष्टी परत है, तहीं तहीं रहत लुभाई।।१।। अलक, तिलक, कुंडल, कपोल छबि, एक रसना मोपें वरणी न जाई।। "गोविंद" प्रभुकी सुन्दर वानिक पर, बल बल रसिक चुडामणि राई।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीष कृष्ण १४

शृंगार - दुरंगी पाग का।

वस्त्र - हरी शाटन का, रूपहरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार, हरी व गुलाबी दो रंग की पाग पर सोनेरी जरी के कामका जमाव का कतरा धराया गया है।

आभरण - गुलाबी मीना के तथा सोना के धराये गये। ठाडा वस्त्र लाल तथा पिछवाई हरी शाटन की रूपहरी कोर की धराई गई है।

मंगला में राग-रामकली बनत नहीं यमुनाजी को नहिवो।। (यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली वसन हरे सब कदम चढ़ाये।। (यह पूरा पद पेज १६५ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-घनाश्री देखोरी गोपाल कहां हे खेलत।। के गायन संग गये अगाऊ, के खिरक बछरूवन मेलत।।१।। कहत यशोदा सखियन आगें, परोस धरी हे थारी।। भोजन आन करो दोऊ भैया, बालक सहित मुरारी।।२।। ऐसी प्रीति पिता माताकी, पलक ओट नहीं कीजे।। बारंबार दास "परमानंद", हरि की बलैया लीजे।।३।।

राजभोग में राग-टोडी लाल संग रति मानि में जानी, कहे देत नैना रंग भोंए।। चंचल अंचल में न समात इतरात रूप, उदधि मानों मीन महावर धोए।।१।। पलक पीक जगमगात दृग मानिक, मानों जराय लिये प्रेम पार पोए। "नंददास" प्रभु सुखके लोभ लालची, जानत हैं निस नेक न सोए।।२।।

भोग में राग-नट सुरंग दुरंग सोहत पाग, कुरंग लाल कैसे लोयन लोने।। कपोल विलोकन में झलकें, कुल कुंडल कानन कोने।।१।। रंग रंगीले के अंग सबे नवरंग, ऐसे पाछे भये न आगे होने।। "नंददास" सखी मेरी कहां बस चले, काम के आये टटावक टोने।।२।।

संध्या में राग-गौरी/कल्याण सोहत शीश दुरंगी पाग।। मोतिन के अवतंस लटकत, रतन पेच मधि भाग।।१।। मृगमद तिलक अलक कुंडल द्युति, नकमोती अधरन सों लाग।। गोवर्धनधर की सुन्दरता निरखें, "कृष्णदास" बड़भाग।।२।।

शयन में राग-नायकी सुनरी सखी तेरों दोष नहीं, मेरों पिय रसीया।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी जान्यो प्रीतके मरम।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-नायकी यह ऋतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष कृष्ण ३०

(श्यामघटा)

श्रृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - श्याम पाग पर रूपहरी जरीके काम का कतरा, श्याम साटन का बीना कोरका शुथन तथा वागो घेरदार, ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई भी श्याम साटन की बीना कोर की धराई गई।

आभरण - हीरा मोती के भारी श्रृंगार धराया गया है। दगल भी श्याम रंग का धराया गया है।

मंगला में राग-रामकली आप कदम्ब चढ़ देखत श्याम।। वसन आभूषण सब हर लीने, बिना वसन जल भीतर वाम।।१।। मुदित नयन ध्यान धर हरिकों, अंतरयामि लीनी जान।। बार बार सब तासों मांगत, हम पावें पति स्याम सुजान।।२।। जलतें निकस आय तट देख्यो, भूषण चीर तहां कछु नाहीं।। इत उत हेर चकित भई सुंदरी, सकुच गई फिर जल माहिं ।।३।। नाभि पर्यंत नीरमें ठाढ़ी, थर थर अंग कंपत सुकुमारी।। को ले गयो बसन आभूषण, "सूरस्याम" उर प्रीति बिचारी।।४।।

श्रृंगार में राग-बिलावल जैसो श्याम नाम, तैसो तन मन सब कियो, भली कीनी श्याम, आज मेरे मन भाये हो।। लागत कछु अरूण, अधर बिम्ब अब, निके लागो लाल, कजरा रंगाये हो।।१।। तेसौई नीलपट, चटक पीतपट, निपट कपट दूर कियो, कुन्दन व्है आये हो।। "नंददास" प्रभु, तन मन भये श्याम, धन्य वह भाम, जिन कजरा रंगाये हो।।२।।

राजभोग आते समय राग-आसावरी नंद भवन में कान्ह अरोगत।। जसुमति लाई खटरस भोजन।।१।। आसन चौकी आगे धर।। जमुना जल मेल्यो झारी भर।।२।। कनकथार में हाथ घुमावे।। सत्रे से भोजन तहाँ आयें।।३।। लै लै धरत सबन के आगे।। मात परोसति जो हरि मांगे।।४।। खीर खांड घृत भावन लाडु।। ऐसे होई अमृत खांडु।।५।। ओर लेओ कछु सुत ब्रजराजा।। लुचई लपसी घेवर खाजा।।६।। पेठा पाक जलेबी पेड़ा।। गोंद पाक तीन तीगोनी दोडा।।७।। गुंजा अलची पाक अमरती।। सीरा सन्यो लेओ ब्रजपति।।८।। छील धरे खरबुजा केला।। धरत नवभांत कियो मुख भेला।।९।। दाडम दाख गिरी चीरोंजी।। पिंड बदाम लेत रूच सोंजी।।१०।। बेसन पुरी सुखपुरी लीजें।। आछो दुध कमल मुख पीजे।।११।। मैय्या आरे ले कें किन प्यावे।। धोरी को पय अति मोहि भावे।।१२।। बेलाभर हलधर को दीनो।। पीवत पाय अस्तुत बलि कीनो।।१३।। ग्वाल सखा सबहिन पे अचयो।। नीके ओर जसोदा

रचयो।।१४।। दोना मेवा धरे हें जुवां।। होंस होय तो लाऊं पुवा।।१५।। मीठे अति कोमल हे नीके।। ताते तुरत चबोरे घी के।।१६।। झीनी सेवई इन्दरसे प्यारे।। ले आऊं जेवों मेरे प्यारे।।१७।। हलधर कह्यो लावरी मैय्या।। मोकों देत नही, लेत कन्हैया।।१८।। जसुमति हरख भरी ले परोसति।। जेंवत है अपनी रूच सों अति।।१९।। कान्ह मांगी शीतल जल लीनो।। भोजन मध्य नीर ले पीनो।।२०।। भात पसार रोहिनी ले आई।। घी ऊ सुगंध तुरत दे ताई।।२१।। नीलवती चांवर देव दुर्लभ।। भात परोसे माता सुरलभ।।२२।। तुवर मुंग उर्द चना दार।। कनक बरण धरे फटकर पछार।।२३।। रोटी बाटी पोरी डोरी।। एक कोरी एक घी में बोरी।।२४।। खायो ध्यों भरि सोक कचोरा।। कछु भांग्यो कछु फेंटा छोरा।।२५।। मीठे तेल चनाकी भाजी।। एक मकुनी दे मोहि साजी।।२६।। मीठे चरपरे उज्वल कोर।। होंस होय तो मांगो ओर।।२७।। मंगोरा पतोरा पनोरा पकोरा।। एक कोरे भीजे गुरबडा।।२८।। बाबर बरी मीथोरी फूल्योरी।। कूरबरी काचरी ओर पिठोरी।।२९।। बनकोरा पीडरे साच चीडा।। पीय पीडाबु कोमल भींडा।।३०।। बोहोत मिरच दे कीनो मोना।। बेसन के दस बीसक दोना।।३१।। चौराई लाल लाल ओर पोई।। मध्य मेल निवा जो निचोई।।३२।। रचत रतालु लोन के पागी।। कढ़ी गुपाल दुसरे मागी।।३३।। सरसों मेथी सुवा पालक।। बथुवा रांध लियो जो उतालक।।३४।। हींग हरद मिरच दे तले।। अदरक आम आंवरे मिले।।३५।। सालन सकल पुर सुवासित।। स्वाद लेत सुन्दर हरि ग्रासत।।३६।। अम्ब आद दे सबे संधाने।। सब चाखें गोवर्धन राने।।३७।। कान्ह कहेत हों मात अघानो।। अब मोंकु सीतल जल आनो।।३८।। उज्जल पान कपूर कस्तुरी।। आरोगत मुखकी छबि रूरी।।३९।। चंदन अंग सबन के चरय्यो।। जसुमत यह सुख जात न परख्यो।।४०।। मांगी जुठन 'सूर' जेवन लीनो।। बांट प्रसाद सबन को दीनों।।४१।। जनम जनम बाढ़्यो जूठन को।। चेरो नंद महर के घर को।।४२।।

राजभोग में राग-आशावरी माई मेरे स्याम लग्यों संग डोले।। जहीं जहीं जाऊँ तहिं आड़ो ही आवे, बिना बुलायें बोलें।।१।। कहा करौं ये लोभी नैना, बस किनें बिना मोलें।। "हितहरिवंस" जानि हितकी गति, हँसि घुंघट पट खोलें।।२।।

राजभोग में राग-टोड़ी कहूँ उमड़े कहुँ घुमड़े फिरत हों पिय, कहुँ बरसत, कहुँ उघरी जात।। कहुँ दमकत चमकत चपला, जो एक ठौर न ठहेरात।।१।। स्यामघन के लच्छन तुम पे सब, स्याम घन मेह नेह आडंबर वृथा जात।।"मुरारीदास" प्रभु पियके वाम चरण पूजिये, को कही सके इनकी बात।।२।।

भोग में राग-नट झूठी मीठी बतियन हो लालन, मनुहार करन आये।। कहा कहिये तेरे हृदय की सुंदरताई, जैसे तन स्याम तैसेई हो मन, तातें ब्रजयुवतिन मन भाये।।१।। कित सकुचत पिय खरे नीके लागत, प्रान पिया के रंग छाये।। धन्य धन्य ते त्रिया कौन सुकृत कीने, सो "गोविन्द प्रभु पिय पाये।।२।।

संध्या में राग-पूर्वी गोवर्धन चढ़ि टेरी हो, गाँग बुलाई धूमरी धौरी।। स्याम जलद गंभीर गरज अति, मंद मंद और मधुर-मधुर सुर, सुनत स्रवन फेरी होरी।।१।। दूध धार धरनी पर सिंचति, धाई सबै पूँछ फेरी फेरी।। "गोविन्द" प्रभु को मुखारविंद देखि, हूँकी सब आसपास घेरी।।२।।

शयन में राग-बिहाग अरि हौं श्याम रंग रँगी।। (यह पूरा पद पेज १६८ पर पढ़े।)

मान में राग-ईमन झमकि चल राधे तोपें श्याम बुलावें।। तो बिन मोहन पान न खात, कौन मंत्र पढ़ि साधे।।१।। निस बासर तेरो ध्यान धरत हैं, बिरह अग्नि तन बाँधे।। "सूरदास" प्रभु रसिक सिरोमनि, तो बिनु मोहन आधे।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहागरो पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १

श्रृंगार - सेहरा को।

वस्त्र - अमरसी साटन का रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो चाकदार, पटका केसरी झालर का, दुमाला ऊपर सेहरा पिरोजा मोती का, श्री चरणार वृंदो में केसरी मोजाजी। ठाडा वस्त्र मेघश्याम, पिछवाई अमरसी साटने जरी भरत कामकी चवरी के लग्न मंडप की, वेणी श्याम हीरा मोती की धराई गई है। आभरण नित्यानुसार हीरा मोती सोना के भारी श्रृंगार किया गया।

मंगला राग-रामकली अति तप करत घोष कुमारी।। कृष्ण पति हम तुरत पावें, काम आतुर नारी।।१।। नयन मुदित दरस कारण, श्रवण शब्द विचार।। भुजा जोरत अंकभर हरि, ध्यान धर अंकवार।।२।। सरद ग्रीष्म नाहि देखत, करत तप तनु गार।। "सूरप्रभु" सर्वज्ञ स्वामी, देख रीझे नार।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल न्याय दिन दुल्हे हो नंदलाल।। (यह पूरा पद पेज १४० पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आशावरी श्री वृषभान सदन भोजन को, नन्दादिक सब आये जु हो।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-जेत श्री राधेजु नव दुलही, दुल्हे हो मदन गोपाल।। मानो तरून तमाल मिलि, नौतन कनकबेल उलही।।१।। रूप भूप युवराज बिराजत, बेष किशोर एक सूलही।। "मदनमोहन" पिय स्यामसुंदर पति, जो जिय चाह हुती सो लही।।२।।

भोग में राग-सारंग दिन दुल्हों मेरों कुंवर कन्हैया।। (यह पूरा पद पेज ४८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी राधा प्यारी दुलहन जु को दुल्हा देखोरी वृज लटकत।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग अरी चल दुल्हे देखन जाय।। सुंदर स्याम माधुरी मूरति, सखियाँ निरख सिराय।।१।। जूरी आई ब्रजनारी नवेली, मोहन दिस मुसकाय।। मोर बन्यो सिर कानन कुंडल, मरवट मुखहि सुहाय।।२।। पहिरें बसन जरकसी भूषन, अंग अंग सुखदाई।। तैसी बनी बरात छबिली, जगमग रंग चुचाई।।३।। गोपसभा सरोवर में फूले, कमल परम लपटाई।। "नंददास" गोपिन के दृग अलि, देखन को अकुलाई।।४।।

मान में राग-बिराग मनावत हारपरीरी माई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद पेज १२ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल २

श्रृंगार - चीरा कतरा का।

वस्त्र - रूपहरी जरिके शुथन तथा वागो घेरदार, पाग रूपहरी जरी की चीरा वाली, चन्द्राकार कतरा तथा ठाड़ी लड़ व अलक धराई गई हैं। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई जरी की, जिसमें दूज का चँद्रमा दर्शाया है। दोनों तरफ गोपियां निलाम्बर ओढ़ी हुई। इसी भाव का कीर्तन राजभोग में गाया जाता है।

आभरण - हीरा मोती सोना के भारी श्रृंगार किया गया है।

मंगला में राग-खट आज नंदलाल मुखचंद नैनन निरख, परम मंगल भयों भवन मेरे।। (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली चमक आयों चन्द सों मुख, कुंजते जब निकसी।। सुंदर सांवरों किशोर, मोहन लाग रहे चकोर, ललितादिक कुमुदावलि, निरख नयन विकसी।।१।। पहिरे तन श्वेत सारी, मानो शरद उजियारी, मानों सुधा सिंधु मध्य, दामिनी धंसी।। कहत “भगवान हितरामराय” प्रभु, प्यारी वश कीने, कुंजबिहारी छबि निरख, मंद हंसी।।२।।

राजभोग आवता राग-धन्याश्री देखोरी गोपाल कहां हे खेलत।। (यह पूरा पद पेज १७६ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-टोड़ी आधों मुख नीलांबर सों ढाँप्यों, बिथुरी अलकें सोहें।। एक दिशा मानों मकर चाँदनी, घन बिजुरी मन मोहें।।१।। कबहुँ करपल्लब सों केस निवारत, निकसत ज्यों ससि जोहें।। “सूरदास” मदनमोहन ठाड़े निहारत, त्रिभुवन में उपमा को है।।२।।

भोग में राग-नट बसो मेरे नयनन में दोऊ चंदा।। गौर बरन वृषभान-नंदिनी, स्याम बरन नंदनंदा।।१।। रूप लुभाय रहे श्रीगोकुल में, है दोऊ आनंदकंदा।। कहे “श्रीभट” प्रेम अरूझे, नाहि सुरजत दृग फंदा।।२।।

संध्या में राग-गौरी चन्द्रमा नटवारी मानों, सांझ-समे वनतें आवत, नृत्य करन।। उडुगन मानों पहोप, अंजुरी अंबर अरून बरन।।१।। नंदीमुख सनमुख व्है वाम, देव मनावन विध्नहरन।। “नंददास” प्रभु गोपिनके हित, बंसी धरी गिरिधरन।।२।।

शयन में राग-ईमन बन ठन कहां चले, ऐसी को मन भाई, सांवरे से कुँवर कन्हाई।। मुख सोहे जैसे दूजको चंदा, छिपछिप देत दिखाई।।१।। चले ही जाऊ नेक ठाडे रहोगे, किन ऐसी सीख सिखाई।। "नंददास" प्रभु अब न बनेगी, निकस जाय ठकुराई।।२।।

मान में राग-केदारो बैठी पियको बदन निहारे।। लावण्य रूप पर वारवार, तन-मन धन-जोबन वारे।।१।। कबहुक निकट जाय प्रीतम के, पगिया पेच सुधारें।। कबहुक चुंबन करत कपोलन, हेर चंद्र उजियारें।।२।। कबहुक पिबत अधर सुधारस, भेटत अंग उघारे।। "रसिक" प्रीतम के संगम प्यारी, पूरब बिरह बिसारें।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋृतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ३

श्रृंगार - ग्वाल-पगा को।

वस्त्र - पीली साटन के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागों चाकदार, श्रीमस्तक पर मीना के काम का ग्वाल पगा पर रेशम कामकी मोर शिखा धराई गई है। ढ़ाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई पीली साटन की रूपहरीकोर की।

आभरण - पन्ना-मोती तथा मीना के धराये गये। मोजड़ी पीली साटन की।

मंगला में राग-रामकली नीके तप कियो तन गार।। आप देखत कदंब पै चढ़, मान लई मुरार।।१।। बरस भर कित नेम संयम, इन कियो मोहि काज।। कैसेहु मोको भजे कोऊ, मोहि बिरद की लाज।।२।। ध्यान व्रत इन कियो पूरन, सीत तप तन बारि।। काम आतुर भजें मोकों, नव तरूणी व्रजनारि।।३।। कृपानाथ कृपाल भये तब, जान जनम की भीर।। "सूर" प्रभु अनुमान कीनो, हरूं इनकी पीर।।४।।

श्रृंगार में राग-रामकली ग्वालिन मांगत बसन आपने।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-सारंग तेरे पैयाँ लागूँ गिरिधर भोजन कीजै।। उलटत-पलटत झगुलिया भींजै, खीजत खिजाने सुंदर तन छीजै।।१।। फेनी बाबर खुरमा खाजा, गूंजा मिश्री लडुआ लीजै।। बाँट देत सब ग्वालबाल को, "परमानंद" जननी-कर लीजै।।२।।

राजभोग में राग-सारंग ठाड़े री खरिक माई कौन को किसोर।। साँवरे बरन मनहरन बंसीधरन, कामकरन कैसी मति जोर।।१।। पवन परस जात चपल होत देख, पियरे पटको चटकीलो छोर।। सुभग साँवरी छोटी घटातें निकसी आई वे, छबीली घटाकों जैसो छबीलो छोर।।२।। पूछत पाहुनी ग्वार हा हा हो मेरी आली, कहा नाउं को है चितबित चोर।।"नंददास" जहिं चाहिं चकाचौंधी आय जाय, भूल्यों री भवन गमन भूल्यों रजनी-भोर।।३।।

भोग में राग-पूर्बि धोरी धूमर पीली पीहर, कारी काजर कहकह टेरत।। (यह पूरा पद पेज १०१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी मैय्या यातें भई अबेर।। आवत भाज गई इक गैया, जाय धँसी बन फेर।।१।। दौरे ग्वाल सब वाके पाछे, पकरन की कर आस।। चढ़ कदंब पीतांबर फेर्यो,

आय गई मो पास।।२।। मैं चुचकार पीठ कर फेर्यो, लहड़े लई लगाय।। बतियाँ सुन "रसिक प्रीतम" की, मन फूली जसुमति माय।।३।।

शयन भोग आते समय (ब्यारु के पद) राग-कान्हरौ अरी मेरो मीठे बोलो मीठे लाल।। मीठी बात कहे सुत सुनिये, भई स्याम तजी ख्याल।।१।। मीठो करि ब्यारू संग ले, हिलीमिली सब ब्रजबाल।। मीठो दूध मिठाई दधि ले, धरत मीठो भात रसाल।।२।।

शयन में राग-नायकी जान्यो प्रीतके मरम।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी रूसनों न कर प्यारी रूसवो निवार।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहागरो सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ४

श्रृंगार - पंचरंगी पाग का।

वस्त्र - सफेद साटन के सोनेरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार कटि में पटको श्रीमस्तक पर सोनेरी जरी काम की गोल चन्द्रीका व पंचरंगी पाग।

आभरण - मोती, निलम व हरा मीना के धराये गये है। तथा मोजड़ी हरी साटन की वेणु वेत्र मीनाके तथा ठाडा वस्त्र हरा तथा पिछवाई सफेद साटन की धराई गई है।

मंगला में राग-रामकली मोहन देहों वसन हमारे।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली हारि मानी नाथ, अम्बर दीजे।। नंदनंदन कुंवर रसिकवर मन हरन, सुनहु गिरिवरधरन नीति कीजें।।१।। सकल व्रजनागरी दासी तुम्हारी सदा, तन-मांझ सीत अति होत भींजे।।२।। "छितस्वामी" अमित गुन गननि आगरे, बिनती करति सबै मानी लीजें।।३।।

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-आसावरी हरी भोजन करत विनोदसों।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-टोड़ी अब ही डार देरे ईंडुरिया मेरी, पंच रंग पाटकी।। हा हा खात तेरे पैया परत हौं, इतनो लालच मोहि मथुरा नगर के हाटकी।।१।। जो न पत्याउँ जाय किन देखौ, मनमोहन है जू नाटकी। "मदनमोहन" पिय झगरो कौन बढ्यो, सो देखेंगी लुगाई बाटकी।।२।।

भोग में राग-कल्याण लाल की रूप माधुरी, नयन निरख नेक सखीरी।। मनसिज मनहरन, हंस साँवरो सुकुमार, नखसिख अंग उमग, सौभाग्य सीमा न कहीं हो।।१।। अटपटि सुरंग पाग, ढ़रक रही वामभाग, चंपकली कुटिल अलक, बिच बिच रखी।। आईयत दृग अरून दंपति, लोलकुंडल मंडित कपोल, अधर अरूण दंपतिकी, छबि क्यों हूँ न जात लखी।।२।। अद्‌भूत भुजदंड मूल, पीन अंस सानुकूल, कनक कपीस दुकुल, नखसिख दामिनी दरषी।। उरपर मंदारहार, मुक्ता लख रस सुढार, मत्त द्विरद गति त्रियनकी, देह दसा करषी।।३।। मुकुलित वय नवकिसोर, वचन रसन चितके चोर, मधुरित पिय साथ, नूतन मंजरी चरखी।। नटवर "हरिबंस" गान, रागिनी कल्यान तान, सदन देख स्वरन कल, इते पर मुरलिका बरखी।।४।।

संध्या में राग-कल्याण मेरे तो कान्ह, है री प्राण सखी, आन ध्यान नाहिन मनके, सुख के करण।। लटपटी पचरंग पाग, ढरक रही वाम भाग, कुंकमको तिलक भाल, नयनकमल घनस्याम बरन।।१।। भृकुटि कुटिल ललाट लोल, रत्नजटित कुंडल लोल, मानों ससी प्रकट भयो, उदय कियो जुगल तरनि।। प्रभु "कल्याण", गिरिधर की छबि, निरखत मगन भई, मोहि लई मन भाई, मुरली अधर धरनी।।२।।

शयन में राग-नायकी वारौं मीन खंजन आलीके, दृगन पर भ्रमर मन।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी सुनरी सखी तेरों दोष नहीं, मेरों पिय रसीया।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ५

श्रृंगार - टिपारा को

वस्त्र - लाल साटन के रूपहरी कोर के शुथन तथा वागो चाकदार, श्रीकंठ में रूमाल अंगुरी रंग का सुनहरी कोर का। ठाडा वस्त्र पीला रंग का तथा पिछवाई लाल साटन की सुनहरी कोर की।

आभरण - श्रीमस्तक पर टिपारो जड़ाऊ पन्ना को ऊपर रेशम कामको साज, माणक मोती सोना को तथा पिरोजा के नुंपुर तथा लहरदार मीना की वेणुवैत्र धराई गई है।

मंगला में राग-रामकली **हारि मानी नाथ! अम्बर दीजे।।** (यह पूरा पद पेज १८५ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-रामकली **निर्तत मोहन रसिक सखन संग,** (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-घनाश्री **सुतहि जिमावत यशोदामैया।।** (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-टोड़ी **विमल कदब छांह तर ठाडे हैं पिय भानुसूता तट।।** (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वि **नाचत गावत बनते आवत लाल टिपारो सिस रहयों फबि।।** (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी **अग्र तक तक ध्रं ध्रु ध्रुदनन, वर आवत गोधन संग।।** (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

शयन में राग-अहानों **तेरी भ्रौंह की मरोरन तें, ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयों भयेजू स्याम वाम।।** (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

मान में राग-अडानों **तुम पहिलें तो देखो आय, मानिनी की शोभा लाल, पाछें तो मनाय लीजें, प्यारे हो गोविंदा।। कर पर धर कपोल, रहीरी नयन मूंद, कमल बिछाय मानो, सोयों सूख चंदा।।१।। रिस भरी भ्रोंह तापर, भ्रमर बैठे अरबरात, इंदु तर आयो, मकरंद अरविंदा।। "नंददास" प्रभु ऐसी, काहेंकुं रूसैये बल, जाको मुख देखेतें, मिटत दुःख द्वंदा।।२।।**

पोढ़वा में राग-बिहाग **सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।।** (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ६

श्रृंगार - हीरा की पाग का।

वस्त्र - गहरा गुलाबी साटनके सुनहरी कोरके। सुनहरी फूलके शुथन तथा वागो घेरदार, पिछवाई गुलाबी साटनकी हरा रंग के हाँसिया वाली सुनहरी कोर की। श्रीमस्तक पर हीरा जड़ी पाग पर रूपहरी जरी कामकी गोल चंद्रिका धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-मोती व सोने के धराये गये है।

विशेष – आज मंगल भोग में बेंगन भात आरोगाये जाते है।

मंगला में राग-रामकली जलतें निकस तीर सब आवहु।। जैसे सविता सों कर जोरे, तेसे हि जोर दिखावहु।।१।। नव बाल हम तरूण कान्ह तुम, कैसे अंग दिखावहिं।। जलतें सब बांह टेक के, देख हु श्याम रिझावहु।।२।। ऐसे नहीं रीझों मैं तुमकूँ, ऊँचे बांह उठावहु।। “सूरदास” प्रभु कहत हरि, चोली वस्तर तब पावहु।।३।।

श्रृंगार में राग-रामकली देहों वृजराज हमारी आंगी।। (यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (गृह भोजन के पद) राग-आसावरी हरी भोजन करत विनोदसों।। (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-जोनपुरी/आसावरी माई री लाल आये री मेरे ही महल, तनमनधन सब वारौं।। हों बल गई सखी आजकी आवन पर, पलकन सों मग झारों।।१।। अति सुकुमार पद करन सरि, कंकरगुन सब टारौ।। “नंददास” प्रभु नंदनंदन सों, ऐसी प्रीत नित धारौं।।२।।

भोग में राग-नट रूप देख नैना पलक लागे नहीं।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी देखन-देत न बैरिन पलके।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

शयन में राग-नायकी सरस बनी, प्यारी सरस बनी।। जगमग ज्योंत जड़ाव को गहनों, ऐसी बनी जेसे हीरा की कनी।।१।। दुलरी ऊपर तीलरी सोहे, बीच बीच पदक मनी।। “सूरदास” प्रभु प्यारी मुख निरखत, ये छबि कापे जात गनि।।२।।

मान में राग-नायकी सुनरी सखी तेरो दोष नहीं, मेरो पिय रसियारी।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग नींकी रीतु लागत हैं अति सीत की।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ७

चतुर्थलालजी श्रीगोकुलनाथजी का उत्सव (देहरी बंदनमाल)

श्रृंगार - कुल्हे जोड़ का।

वस्त्र - लाल सोनेरी छापा के शाटन के शुथन तथा वागो चाकदार, श्री गोकुलनाथजी वाली, सिद्ध कराई गई हीरा-माणक की जड़ाऊ कुल्हे पर पांच मोर की चंद्रिका की जोड़ धराई गई है। आभरण हीरा-पन्ना-माणक-मोती के भारी श्रृंगार धराया गया है।

श्री चरण कमलों में मोजड़ी श्री गोकुल नाथजी वाली हीरा-माणक जड़ी हुई धराई गई है। ठाडा वस्त्र मेघश्याम, पिछवाई लाल सुनहरी जरी की दोनों तरफ झाड़ वाली धराई गई तथा सामग्री जलेबी की धराई गई है।

मंगला में राग-देवगंधार **बोहोरि कृष्ण फिर गोकुल प्रकटे, श्री विट्ठलनाथ हमारे।।**

(यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **श्री गोकुल युग युग राज करों। यह सुख भजन प्रताप तेजतें, छिन इत उत न टरो।।१।। पावन रूप दिखाय महाप्रभु, पतितन पाप हरो। विश्व विदित दीनी गति प्रेतन, क्यों न जगत उद्धरों।।२।। श्रीवल्लभकुल कमल अमल रवि, यश मकरंद भरो।। "नंददास" प्रभु षट्गुण संपन्न, श्रीविट्ठलेश वरो।।२।।**

राजभोग आते समय राग-रामकली (बधाई) **सुनोरी आज नवल बधायो है।। श्री वल्लभ गृह प्रकट भये, पुरूषोत्तम जायो है।।१।। नयनन कौ फल लेऊ सखी, भयौ मन कौ भायो है।। गिरिधर लाल फेर प्रगटे है, भाग्यनतें पायो है।।२।। मणि माला, वंदन माला, द्वार द्वार बंधायो है।। श्री गोकुल में घरन घरन प्रति, आनंद छायो है।।३।। द्विज कुल चंद उदित सब विश्व कौ, तिमिर नसायो है।। भक्त चकोर मगन आनंदित, हियो सिरायो है।।४।। महाराज श्रीवल्लभ जी, दान देत मन भायो है।। जो जाके मन हुती कामना, सो तिन पायो है।।५।। जाके भाग्य फले या कलिमें, तिन दरशन पायो है।। कर करूणा श्री गोकुल प्रकटे, सुखदान दिवायो है।।६।। मर्यादा पुष्टि पथ थापनकों, आपतें आयो है।। अब आनंद बधायो हैरी, दुःख दूर बहायो है।।७।। रानी धन्य धन्य भाग्य सुहाग भरी, जिन गोद खिलायों है।। "रसिक" भाग्य तें प्रकट भये, आनंद दरसायो है।।८।।**

राजभोग में राग-सारंग श्री विठ्ठलेश चरण चारू, पंकज मकरंद लुब्ध, गोकुल में सकल संत, करत है नित्य केली।। पावन चरनोदक जहाँ, संतन हित सलिल बहत, त्रिविध ताप दूर करत, वदन वृंद मेली।।१।। भूतल कृष्णावतार, प्रकट ब्रह्म नर आकार, सींचत हरि भक्ति सुधा, धर्मी धर्म वेली।। “छीतस्वामी” गिरिवरधर, लीला निज फेर करत, धेंनु दोहत ग्वालन संग, हातपाट सेली।।२।।

भोग में (ढाढ़ी) राग-मालव/मारू याचक जन गोवर्धनधर को, वल्लभद्वार वर भावे।। यदुकुल दीप को, दे असीस पहुँचावे।।१।। जमुना पुलिन सुभग वृन्दावन, व्रज गोकुल सुधि पाई।। गिरि चरनाट सुरसुरि के तट, वल्लभ गृहजु बधाई।।२।। पुरूषोत्तम जाके गृह प्रगटे, ढ़ाढ़ी तासुं कहाऊँ।। जो कछु चरित्र किये अरू करिहैं, साख वेद मत गाऊँ।।३।। मच्छ कच्छ वाराह नृसिंह, वामन भृगु रघुराई।। हलधर बुद्ध कलंकी रूप धर, प्रकटे कृष्ण सुखदाई।।४।। नंदरायके भवन प्रकट भये, बालक रूप मुरारी।। बकी आदि दुष्ट सब मारे, पंच अविद्या टारी।।५।। महामेघ बरखत गोकुलमें, लीला गिरि कर लीने।। सुरपति मान उतारी रसिकवर, गोप अभयपद दीने।।६।। बंसीवट-तट रसिक सिरोमनि, मुरली मधुर बजाई।। प्रेम पुंज गोकुलकी नारी, श्रवन सुनत उठ धाई।।७।। युवति-युवति प्रति रूप-रूप धर, रास रमन रति ठानी।। मंडल मध्य प्रगटे पुरूषोत्तम, संग श्रीराधारानी।।८।। वृन्दावन रससुख की परमित, शेष रूद्र नहि जाने।। बानी ब्रह्मा पार नहीं पावे, कवि कुल कहा बखाने।।९।। बोल अक्रूर कंसयों भाख्यो, काज हमारो कीजे।। रामकृष्ण पोहोंचाय मधुपुरी, बोल यहाँ लों लीजे।।१०।। सुफलक सुत सुन हरख भयो अति, प्रेमसहित व्रज आयो।। हरि हलधर ठाडे गोकुल में, दरस परस सुख पायो।।११।। ज्यों दीपकसों दीपक जोरे, भक्ति हेतु विचार्यो।। संकर्षण संग आय मधुपुरी, प्रथम रजक सठ मार्यो।।१२।। तोर्यो धनुष कुवलिया मार्यो, रंगभूमि चल आये।। दसविध रूप धर्यो पुरूषोत्तम, नाना भाँत दिखाये।।१३।। मारे मल्ल भोजवंस मर्‌द्यो, कंस केस गहि मार्यो।। मात पिताको आनन्द दीनो, सब विधि ताप निवार्यो।।१४।। चरन परस वसुदेव देवकी, उग्रसेन नृप कीनो।। यादव वंस उद्योत कियो है, पांडव सुध जु लीनो।।१५।। दुर्योधन की सभा द्रौपदी, अंबर हरत उबारी।। असरन सरन दिखाय बिरूद जग, करूनासिंधु मुरारी।।१६।। जरासंघकी सेना वध कर, पुरी द्वारिका वासी।। सोरह सहस्त्र एक सौ आठें, रानी भोग विलासी।।१७।। पवनज ते मागध मरवायो, नृप बंधनतें छोरे।। राजा सकल बंदतें छूटे, चरन परस कर जोरे।।१८।। राजसूय यज्ञ कराय

चैद्य हत्यो, जोति थान पोहोंचायो।। अवभृथ स्नान कराय युधिष्ठिर, कीर्ति बहु जग छायो।।१६।। बिनु श्रम कौरवसेन संहारी, अर्जुनको यस दीनो।। ब्रह्मअस्त्रतें जरत परीक्षित, राख दयानिधि लीनो।।२०।। सतयुग त्रेता द्वापर सुरहित, वसुधा भारत उतार्यो।। कलियुग जीव अनाथ जानके, गिरिधर द्विजवपु धार्यो।।२१।। श्रीविट्ठलनाथ प्रकट पुरूषोत्तम, भक्तन कों सुखदायक।। कर्म धर्म थापेंगे भुव पर, व्रजपति गोकुलनायक।।२२।। श्रुतिपथ प्रकट करेंगे श्रीमुख, मायामत सब खंडे।। निज स्वरूपकी सेवा करकै, अर्थ भागवत मंडे।।२३।। प्रेमलक्षणा दे दासन को, भजनानंद बतावे।। नाम देय सिर परस कमलकर, अनेक जीव सुख पावे।।२४।। सात पुत्र व्हैहैं हरि समसर, सकल ब्रह्म यदुराई।। वल्लभनाथ तिहारे सुतकी, कीर्ति बहु जग छाई।।२५।। सुन यश सुतको लछमन नंदन, ढ़ाढ़ी निकट बुलायो।। कंचनथार भरे मुक्ताफल, भक्ति वसन पहरायो।।२६।। मनवांछित फल बहुविध दीनो, कियो अजाची ढ़ाढ़ी।। "मानिकचंद बलि बलि उदारता, प्रीति निरंतर बाढ़ी।।२७।।

संध्या में राग-ईमन वल्लभ राजाधिराज राजत रजधानी।। सुन सुन जे शरन आये, गर्वित अभिमानी।।१।। अतुलित बल तेज प्रताप, चहुँ चक्र बसानी।। "वृंदावन चंद" माला, राखी जगजानी।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ रूनन झूनन बाजे नुपूर, वल्लभ खेलत है गृह आंगन।। कंठ बघना सोहे लिलाट लटकन, स्याम वृंदन सोहे भोंह पर।।१।। बाल बिनोद करत जु हरख मन, वार वार डारी भैया दतियन उपर।। "वृंदावन" चंद को हरख मुख निरखत, यह सुख नांहि तिहूँपुर।।२।।

मान में राग-बिहाग तेरी हो बलि बलि जाऊँ गिरिधरन छबिले।। (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ८

गोस्वामी तिलकायत महाराज कृत सात स्वरूप का उत्सव

(देहरी वन्दन माल)

शृंगार - कुल्हे जोड़ का श्रृंगार।

वस्त्र - लाल खीन-खाप के छोटी बुंटि के शुथन तथा बागो चाकदार, कुलह हीरा जड़ी हुई पर सोनेरी बादला को घेरो। ठाड़ा वस्त्र हरा, पिछवाई लाल सुनहरी भरत कामकी-चोकड़ी के बीच में कांच के फूल की धराई गई है। भारी श्रृंगार किया गया है।

मंगला में राग-बिलावल श्री गोकुल युग युग राज करों। (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल धन्य गोकुल जहां गोविंद आये।। धन्य धन्य नंद सुमंगल निसदिन, धन्य जसुमति जिन गोद खिलाये।।१।। धन्य यह बालकेली जमुनातट, धन्य वन सुरभी वृंद चराये।। धन्य यह समय धन्य यह लीला, धन्य यह बेनु अधर धरि गाये।।२।। धन्य यह चरण सदा सुखकारी, संत जनन के हृदे रहाये।। धन्य "सूर" उखल धन्य गोपी, जाके हेत गोपाल बंधाये।।३।।

राजभोग आते समय (बधाई के पद) राग-देवगंधार श्री वल्लभ गृह आज बधाई।। जय जय शब्द होत पुर विथन, घर घर आनंद माई।।१।। मंगल कनक कलश शुभ मंगल, मोतिन चोक पुराई।। हरद दूध अक्षत रोरी, जहां तहां ते लाई।।२।। सुरनर मुनिजन कौतुक भूले, शुकमुनि कीरती गाई।। "विष्णुदास" गिरिधरन श्रीविट्ठल, गोकुल प्रगटे आई।।३।।

राजभोग में राग-सारंग विहरत सातों रूप धरे (यह पद कार्तिक विद ३६ को आया है।)

भोग में राग-नट सब मिल गावों गीत बधाई।। श्री लक्ष्मण गृह प्रगट भये हैं, श्री वल्लभ सुखदाई।।१।। उघरे भाग्य सकल भक्तन के, पुष्टि भक्ति प्रकटाई।। यशोमति सुत निज सुख देवेको, मुख मुरति प्रकटाई।।२।। अति सुन्दर विधुवदन विलोकत सकल शोक विनसाई।। कहत फिरत सबहिन सों, फूले आनंद उर न समाई।।३।। श्री भागवत अर्थ प्रगट करणको, भाग्यन देई हे दिखाई।। भई न कबहुँ व्हे नहि ऐसी, जैसी अब निधि पाई।।४।। सदा बिराजो शीश हमारे, यह मुरती मन भाई।। चरण रेणु सेवक को सेवक, दास "रसिक" बल जाई।।५।।

संध्या में राग-कल्याण नातर लीला होती जुनी।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन गये पाप ताप दूर देखत..(यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

मान में राग-विहाग मोहन मुखारविंद पर..(यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ९

श्री गुंसाईजी की बधाई (लालघटा) देहरी बन्दनमाल

शृंगार - पागकतरा को।

वस्त्र - लाल साटन के बीना कोरके। शुथन तथा वागो घरेदार। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर रेशम का कतरा। ठाड़ा वस्त्र, पीछवाई लाल साटन की, मोजड़ी लाल।

आभरण - माणक मोती के। नुंपुर सोना के वेणुवैत्र लाल-सफेद।

विशेष – बधाई श्रीठाकुरजी, श्री महाप्रभुजी तथा श्री गुंसाईजी की गाई जाती है। मंगला के बाद झांझ-मृदंग से कीर्तन गाये जाते है तथा सांयकाल संध्या तक झांझ बजते है बादमें तानपुरा से शयन तक कीर्तन किये जाते है।

मंगला में राग-देव गंधार **आज गृह नन्द मेहेर के बधाई।। प्रातःसमें मोहन मुख निरखत, कोटि चंद छवि छाई।।१।। मिलि व्रजनागरी मंगल गावत, नंद भवन में आई।। देत असीस जियो तेरो सुत, कोटिक वरस कन्हाई।।२।। नित आनंद बढ़त वृंदावन, उपमा कही न जाई।। "सूरदास" धन्य धन्य नंदघरनी, निरखत हियो सिराई।।३।।**

शृंगार में राग-देवगंधार **अहो व्रज भयो महरि के पूत, जब यह बात सुनी।। सुनि आनंदे सब लोग, गोकुल गणित गुनी।। व्रज पूरब पूरे पुन्य रूपी, कुल सुथिर थुनी।। ग्रह लग्न नक्षत्र बलि सोधि, कीनी वेद धुनी।।१।। सुनि धाईं सब व्रजनारि, सहज सिंगार कियें।। तन पहरें नौतन चीर, काजर नैन दियें।। कसि कंचुकी तिलक लिलाट, शोभित हार हियें।। कर कंकण कंचन थार, मंगल साज लियें।।२।। वे अपने अपने मेल, निकसीं भांति भलीं।। मानों लाल मुनिन की पांति, पिंजरन चूर चलीं।। वे गावें मंगलगीत, मिलि दश पांच अली।। मानों भोर भयौ रवि देखी, फूली कमल कलीं।।३।। उर अंचल उड़त न जान्यौ, सारी सुरंग सुहीं।। मुख मांड्यो रोरी रंग, सेंदुर मांग छुहीं।। श्रम श्रवनन तरल तरौना, बेनी शिथिल गुही।। शिर बरषत कुसुम सुदेश, मानो मेघ फुहीं।।४।। पीय पहलें पौहोंची जाय, अति आनंद भरी।। लई भीतर भवन बुलाय, सब शिशु पाँय परीं।। एक बदन उघारि निहारत, देत असीस खरी।। चिरजीयौ यशोदानंद, पूरन काम करी।।५।। धन्य धन्य दिवस धन्य रात्र, धन्य यह पहर घरी।। धन्य धन्य महरिजूकी कूँख, भागि सुहाग भरी।। जिन जायो एसौ पूत, सब सुख फलन फरी।। थिर थाप्यो सब परिवार, मनकी शूल हरी।।६।। सुनि ग्वालन गाय बहोरि, बालक**

बोलि लिये।। गुहि गुंजा घसि वनधातु, अँग अँग चित्र ठये।। शिर दधि माखन के माँट, गावत गीत नये।। संग झांझ मृदंग बजावत, सब नंद भवन गये।।७।। एक नाचत करत कुलाहल, छिरकत हरद दही।। मानों बरखत भादोंमास, नदी घृत दूध बही।। जाको जहीं जहीं चित्त जाय, कौतुक तहीं तहीं।। रस आनंद मगन गुवाल, काहू बदत नही।।८।। एक धाय नंदजूपै जाय, पुनि पुनि पाँय परैं।। एक आप आपुहिं माँझ, हँसि हँसि अंक भरैं।। एक अंबर सबही उतारि, देत निशंक खरैं।। एक दधिरोचन ओर दूब, सबनके शीश धरैं।।९।। तब नंद न्हाय भये ठाड़े, अरू कुश हाथ धरैं।। नांदीमुख पितर पुजाय, अंतर सोच हरैं।। घसि चंदन चारू मँगाय, विप्रन तिलक करैं।। वर गुरूजन द्विजन पहराय, सबनकें पाँय परैं।।१०।। गन गैया गिनी न जाय, तरून सुबच्छ बढ़ी।। नित चरैं यमुनाजूके काछ, दूने दूध चढ़ी।। खुर रूपे तांबे पीठ, सोने सींग मढ़ी।। ते दीनी द्विजन अनेक, हरखि असीस पढ़ी।।११।। तब अपने मित्र सुबंधु, हँसि हँसि बोलि लिये।। मथि मृगमद मलय कपूर, माथें तिलक किये।। उर मणिमाला पहराय, बसन विचित्र दिये।। मानों बरषत मास अषाढ़, दादुर मोर जिये।।१२।। बर बंदी मागध सूत, आंगन भवन भरै।। ते बोलैं लै लै नाम हित, कोऊ ना बिसरै।। जिन जो जाँच्यौ सो दीनी, रस नंदराय ढरै।। अति दान मान परधान, पूरन काम करै।।१३।। तब रोहिनी अंबर मंगाय, सारी सुरंग घनी।। ते दीनी बधून बुलाय, जैसी जाय बनी।। वे अति आनंदित बहोरि, निज गृह गोप धनी।। मिलि निकसीं देत असीस, रूचि अपुनी अपुनी।।१४।। तब घरघर भेरि मृदंग, पटह निसान बजे।। वर बांधी वंदनमाल अरू, ध्वज कलश सजे।। तब ता दिनतें वे लोग, सुख संपति न तजे।। सुनि "सूर" सबनकी यह गति, जे हरि चरन भजे।।१५।।

राजभोग आते समय राग-आसावरी जुरि चली हैं बधावन नन्द मेहेर घर, सुन्दर ब्रजकीबाला।। कंचन थार हार चंचल छबि, कही न परत तिहिं काला।।१।। डहडहे मुख कुमकुम रग रंजित, राजत रसके ऐना।। कंजन पर खेलत मानो खंजन, अंजन युत बने नैना।।२।। दमकत कंठ पदक मणि कुंडल, नवल प्रेम रंग बोरी।। आतुर गति मानो चंद उदय भयो, धावत तृषित चकोरी।।३।। खसि परत सुमन सीसन तें, उपमा कहा बखानों।। चरन चलन पर रिझि चिकुर पर, बरखत फूल मानो।।४।। गावत गीत पुनित करत जग, जसुमति मंदिर आई।। बदन विलोकि बलैया ले ले, देत असीस सुहाई।।५।। मंगल कलश निकट दीपावली, ठांय ठांय देखि मन भूल्यों।। मानों आगम नंदसुवन को, सुवन फुल व्रज फुल्यों।।६।। तापाछें गन गोप ओपसों, आये अतिसें सोहें।। परमानंद कंद रस भीनें, निकर

पुरंदर कोहें।।७।। आनंदघन ज्यों गाजत राजत, बाजत दुंदुभी भेरी।। राग रागनी गावत हरखत, बरखत सुखकी ढेरी।।८।। परमधाम जगधाम श्याम, अभिराम श्री गोकुल आये।। मिटि गये द्वंद "नंददासन" के, भये मनोरथ भाये।।९।।

राजभोग में राग-आशावरी धन्य यशोदा भाग्य तिहारों, जिन ऐसो सुत जायों हो।। जाको दरस परस सुख उपजत, कुल को तिमिर नसायो।।१।। विप्र सुजन चारन बंदीजन, सबे नंद गृह आये।। नोतन सुभग हरद दूब दधि, हरसित सीस बंधाये।।२।। गर्ग निरूप कीये शुभ लच्छन, अवगत है अविनाशी।। "सूरदास" प्रभुको यश सुनिके, आनंदे ब्रजवासी।।३।।

भोग में राग-घनाश्री श्री वल्लभ गृह आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज १९२ पर पढ़े)

संध्या में राग-गौरी श्री लक्ष्मण नन्दन जय जय जय।। भक्त हेत प्रकटै पुरूषोत्तम, मनवांछित फल निजजन दे।।१।। शुक मुख द्रवित सुधारस मथके, गूढ़भाव दश विधि करले।। मायावाद करी दर्प दल, दैवी जीवन दान अभै।।२।। परिक्रमा मिस परसि पूत कृत, भूतल तीरथ राज सबें।। वसो निरंतर मेरे जीयमें, "दास गोपाल" पदांबुज द्वे।।३।।

शयन में राग-कान्हरौ श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे।। अंग अंग प्रति भावनके भूषण, वृंदावन संपति अंग अंगे।।१।। चटक मटक गिरिधरजू की न्याई, एन मेन वृजराज उछंगे।। "पद्मनाभ" देखे बनि आवे, सुधि रही रास रसाल भ्रुवभंगे।।२।।

मान में राग-कान्हरौ। लालन मनाये न मानति लाडिली, प्यारी तिहारी अति कोप भरी।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १०

श्रृंगार - फेंटा कतरा को

वस्त्र - पीली शाटन के रूपहरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर फेंटा पर रेशम का कतरा। ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के तथा पिछवाई पीली साटनकी भरत काम के फूल की। मोजड़ी केसरियां धराई गई है।

आभरण - माणक-मोती के धराये गये हैं।

मंगला में राग-देव गन्धार बोहोरि कृष्ण फिर गोकुल.. (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल धन्य गोकुल जाहां गोविंद आये. (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (बधाई गाई जाती है) राग-सारंग श्रीवल्लभ गृह सदा बधाई।। जाके गृह प्रकटे श्रीविट्ठल, ताके महानिधि पाई।।१।। भक्ति भागवत कथा कीर्तन, महा महोत्सव प्रगट गुंसाई।। कल्पवृक्ष फल फलित मनोहर, नंद सुवन वसत सदाई ।।२।। परम भजन पुरूषोत्तम लीला, प्रकट ब्रह्मादिक गाई।। लाल गोवर्धनधरकी पद रज, "परमानंददास" बल जाई।।३।।

राजभोग में राग-सारंग गायन सों रति गोकुल सो रति, गोवर्धन सों प्रीति निवाही।। श्री गोपाल चरण सेवा रति, गोप सखा सब अमित अथाई।।१।। गो वाणी जो वेदकी कहियत, श्री भागवत भले अवगाही।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्री विट्ठल, नंदनंदन की सब परछांई।।२।।

भोग में राग-गौरी श्री विट्ठल प्रभु नमो नमो।। भक्त हेत प्रगटे पुरूषोत्तम, गोपी नाथानुज नमो नमो।।१।। श्री गिरीधर सुरनर मुनि वंदित, श्रुति छंदन जे नमो नमो।। प्रेम समुद्र सकल गुण पुरण, राज शिरोमणी नमो नमो।।२।। श्री गोविंद कृपाल कृपानिधि, रसिक शिरोमणि नमो नमो।। अति सुन्दर वर भूषण भूषित, निजजन पोषित नमो नमो।।३।। श्री बालकृष्ण गोकुलपति रघुपति, जय जय यदुपति नमो नमो।। श्री धनश्याम लाल वर सुन्दर, अखिल भुवन पति नमो नमो।।४।। यह अवतार भक्त हितकारण, अधम उद्धरण नमो नमो।। "जन भगवान" जाय बलिहारी, श्रीवल्लभ कुल नमो नमो।।५।।

संध्या में राग-गौरी हौं चरणात पत्र की छैय्या।। कृपासिंधु श्रीवल्लभनंदन, बह्योजात राख्यो गहि बहियां।।१।। नव नखचंद शरद मंडल छबि, हरत ताप स्मरत मन महियां।। "छितस्वामी" गिरीधरन श्रीविट्ठल, सुयश बखान सकत श्रुति नहियां।।२।।

शयन में राग-नायकी आज धन्य भाग्य हमारे, (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

मान में राग-कान्हरौ लालन मनाये न मानति लाडिली, (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल ११

श्रृंगार - कुल्है पान (छोटा मुकुट) को।

वस्त्र - गहरा गुलाबी शाटन के टिपकीवाले, रूपहरी कोर के, शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर हीरा-पन्ना-माणक जड़े छोटा मुकुट तथा श्रीकंठ में गाती का लालजरीका पटका धराया गया है। मोजड़ी लाल साटन की तथा ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम व पिछवाई जरीकी भरत काम की।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-माणक व सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-परज/बिलावल **सुनोरी आज नवल बधायो है।।** (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **नन्दराय के नवनिधि आई।। माथें मुकुट श्रवण मणि कुंडल, पीत वसन अरू चारि भुजाई।।१।। बाजत बीन मृदंग शंख धुनि, धसि अरगजा अंग चढ़ाई।। दधि पिवत और चंदन छिरकत, रपटि परत हैं लेत उठाई।।२।। अक्षत दूब लियै चढ़ बडे, द्वारन बंदनमाल बंधाई।। "सूरदास" सब मिले परस्पर, दान देत न नंद अघाई।।३।।**

राजभोग आते समय (बघाई) राग-देवगंधार **व्रजजन गावत गीत बधाये।। श्रीविट्ठलनाथ प्रकट पुरूषोत्तम, गोकुल गृह जब आये।।१।। धन्य धन्य यह धरी मुहूरत, प्रान-जीवन धन पाये।। धन्य धन्य मंगल रूप नाथको, दरसत कलह नसाये।।२।। गोवर्धनधर सुन आनंदित, आतुर सनमुख धाये।। मिलत करत ओसेर पाछिली, नयन नीर भर आये।।३।। अति आनंद भवन भवनन प्रति, मुदित निसान बजाये।। घर घर मंगल होत सबनके, मोतिन चोक पुराये।।४।। श्री वल्लभनंदन विरह निकंदन, परस सकल सुख पाये।। दस "चतुर्भुज" प्रभु यह मंगल, प्रेम के पुंज छवाये।।५।।**

राजभोग में राग-आसावरी **देखो अद्भुत अविगत की गति, कैसो रूप धर्यो है हो। तीन लोक जाके उदर बसत हैं, सो सूपके कोने पर्यौ है हो।।१।। नारदादि ब्रह्मादिक जाकों, सकल विश्व सर सांधें।। ताकौ नार छेदत व्रज जुवति, बाँटी तगासों बांधे।।२।। जा मुखको सनकादिक लोचत, सकल चातुरी ठाने।। सोई मुख निरखत महरि जसोदा, दूध लार लपटाने।।३।। जिन श्रवनन सुनी गजकी आपदा, गरूडासन बिसराये।। तिन श्रवनन के निकट यशोदा, गाये और हुलराये।।४।। जिन भुजान प्रहलाद उबार्यौ, हरनाकुस उर फारे।।**

तेई भुज पकरि कहत व्रजगोपी, नाचों नैक पियारे।।५।। अखिल लोक जाकि आस करत हैं, सो माखन देखी अरें हैं। सोई अद्भुत गिरिवर हूँ ते, भारे पलना मांझ परे हैं।।६।। सुरनर मुनि जाकौ ध्यान धरत हैं, शंभु समाधिन टारी।। सोई प्रभु “सूरदासको” ठाकुर, गोकुल गोप बिहारी।।७।।

भोग में राग-नट वृज में श्री विट्ठलनाथ विराजे।। जिनको परम मनोहर श्रीमुख, देखत ही अघ भाजे।।१।। जिनके पद प्रताप तेजतें, सेवक जन सब गाजे।। “छितस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, प्रकट भक्त हित काजें।।२।।

संध्या में राग-गौरी श्री विट्ठल प्रभु नमो नमो।। (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन श्रीवल्लभ नंदन के गुण गांऊ, सदा मन अंग सरोजन।। पाऊं प्रेम प्रसाद ततछिन, धाऊं गोपाल गहे चित भोजन।।१।। नाऊं सीस लडाउं लालन, आयो शरन यहीजु प्रयोजन।। “छीतस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, उपर वारों कोटि मनोजन।।२।।

मान में राग-कान्हरौ लालन मनाये न मानति लाडिली, प्यारी तिहारी अति कोप भरी।। (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १२

शृंगार - पाग कतरा को

वस्त्र - हरी साटन के बिना कोर के शुथन तथा वागो घेरदार तथा लाल बन्द धराये है। श्रीमस्तक पर लाल पाग पर मोर पिछ के कामका दोहरा कतरा धराया गया है। ठाडा वस्त्र सफेद तथा पिछवाई हरी साटन की लाल हांसियां की कोर की। आज श्री विट्ठलनाथजी की तरफ से श्रृंगार आता है। आभरण हीरा-मोती के धराये गये है। वेणुवैत्र हरा-सफेद मीना की धराई गई है।

मंगला में राग-देवगन्धार **अब के द्विजवर के सुख दीनों।। तबकें नंद यशोदानंदन, व्हे हरि आनंद कीनो।।१।। तब कीनो गोपाल रूप, अब वेद स्मृति दृढ़ चीनो।। "छित-स्वामी गिरिधरण श्रीविट्ठल, भक्ति सुधारस भीनो।।२।।**

श्रृंगार में राग-बिलावल **नन्द नन्दन वृंदावन चंद।। जदुकुल नभ तिथि दुत्तीय देवकी, प्रगटे त्रिभुवन चंद।।१।। जठर कुहूते वृद्ध वारूणी, दिस मधुपुरी सुछंद।। वसुदेव शंभु सीस धरि आन्ये, गोकुल आनन्दकंद।।२।। व्रज प्राची जसोदा राका-निश, शरद ऋतु नंद।। उडगन सहित सखा संकर्षण, तम कुल दनुज निकंद।।३।। गोपीजन चकोर चीत बांध्यों, पल निवारी दुख द्वद्वं।। "सूरदास" कला षोठस निधि, परिपूरण परमानंद।।४।।**

राजभोग आते समय (बधाई) राग-देवगंधार **भक्ति गोकुलतें प्रगट भई।। पहेलें करी श्रीवल्लभनंदन, तब ओरन सिखई।।१।। चार्यो वरन सरन कर अपने, विधिसों बांटी दई।। श्री विट्ठलनाथ प्रताप तेजतें, तीन्यो ताप गई।।२।। अब देखतही जीव प्रेत व्हे, तिनहुं मांगी लई।। अब उद्धरे कहत अपने मुख, पत्रि लिख पढ़ई।।३।। श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल गिरिधर, तीन्यो एक सही।। नव प्रकार आधार "नारायण", घोष लोक निवही।।४।।**

राजभोग में राग-आशावरी **गावौं गावौं मंगलचार बधावौं नन्दके।। आवौ आंगन कलश साजिकें, दधिफल नूतन डार।।१।। उरसों उर मिलि नंदराय, गोप सबै निहार।। मागध सूत बंदीजन मिलिकें, द्वार करत उच्चार।।२।। पायौ पूरन आस करि सब, मिलि देत असीस।। नंदरायकौ कुंवर लाडिलौ, जीवौं कोटि बरीस।।३।। तब व्रजराज आनंद मगन मन, दीजे वसन मंगाय।। ऐसी शोभा देखिकें जन, "सूरदास" बली जाय।।४।।**

भोग में राग-नट जोपें श्री विट्ठल रूप न धरतें।। तो केसेंके घेर कलियुग के, महापतित निस्तरते।।१।। सेवारीति प्रीति व्रजजनकी, श्रीमुखतें बिस्तरते।। श्री विट्ठलनाम अमृत जिन लीनों, रसन सरस सुफलते।।२।। कीरति विशद सुनी जिन श्रवनन, विषय विष परहरते।। "गोविंद" बल दर्शन जिन पायो, उमग उमग रसभरते।।३।।

संध्या में राग-गौरी तिलक तिलंगना हो।। त्रिभुवन वंदना हो।। भव भयभंजना हो।। कलिमल खंडना हो।। प्रकटे श्रीवल्लभ महाराज।। पुष्टि भक्ति दृढ़ प्रकट करनकों, श्रीलक्ष्मण सुत द्विजराज।।१।। माधव मास कृष्ण एकादशी, अमल उदित रविवार।। प्रकट भये द्विजराज कुल दीपक, वदन अग्नि अवतार।।२।। दैवीजन कलियुगमें हुतेजे, ते सब किये सनाथ।। भवसागरमें बहें जातहें, राखे निजगहि हाथ।।३।। पूरण पुरूषोत्तमकी लीला, प्रकट करी रसमूल।। हरिसेवा सोंपी करूणाकर, मुक्ति नाहिं समतूल।।४।। मायावाद खंड खंडनकर, निगम सुवचन प्रकाश।। श्रीभागवत सुधारस बरखत, सुफल कियो निजदास।।५।। अपने जान अभयपद दीने, ऐसे परमकृपाल।। आरती हरण चरण अंबुज पर, बलबल "दास गोपाल"।।६।।

शयन में राग-कान्हरौ गांऊ श्रीवल्लभ नन्दन के गुण, (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १४

केसरिया घटा-श्रृंगार

श्रृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - केसरिया शाटन के, बिना कोर के शुथन तथा वागो घेरदार। पाग पर केसरिया रेशम के कामका कतरा धराया गया है।

आभरण - नित्यानुसार सोने के धराये गये हैं।

मंगला में राग-बिलावल नन्द नन्दन वृंदावन चंद।। (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल **सुखद स्वरूप श्री विट्ठलेश राय।।** (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

राजभोग आवता (बधाई) रामकला **श्री वल्लभ नंदन रूप अनूप स्वरूप कह्यो नहीं जाई।।** (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-परज **सुनोरी आज नवल बधायो है।।** (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट **वृज में श्री विट्ठलनाथ विराजे।।** (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी **हौं चरणात पत्र की छैय्या।।** (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े)

शयन में राग-नायकी **सुधर सहेली सब मील आवों, गावों मंगल गीत।। पुत्र भयो श्रीवल्लभ प्रभु कें, जिन चाख्यो नवनीत।।१।। आंगन मोतिन चोक पुरावो, चीतों भीत पछित।। सोंधे कुंकुम उबट न्हवावो, पहरावो पट पित।।२।। पौष असित नौमि को शुभदिन, लगे सरस जहाँ सीत।। "श्री विट्ठल गिरिधारी" कृपानिधि, बाजे बजावो जीत।।३।।**

मान में राग-नायकी **जान्यो प्रीतके मरम।।** (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग **नींकी रीतु लागत हैं अति सीत की।।** (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

मार्गशीर्ष शुक्ल १५

छप्पन भोग का उत्सव

(देहरी बन्दनमाल तथा अभ्यंग स्नान)

श्रृंगार - गऊकर्ण टिपारा को।

वस्त्र - सुनहरी जरी को शुथन तथा बागो चाकदार, सुनहरी जरी का टिपारो पर सुनहरी बादला को घेरो तथा उसकी आजु बाजु में रूपहरी जरी के गऊकर्ण धराये गये है।

मंगला में राग-परज सुनोरी आज नवल बधायो है।। (यह पूरा पद पेज १८९ पर पढ़े।)

छप्पन भोग श्रृंगार में राग-बिलावल सुभग श्रृंगार निरख मोहनको, ले दर्पणकर पियहि दिखावे।। (यह पूरा पद पेज १३७ पर पढ़े।)

छप्पन भोग में राग-खट आज हमारें जैवों मोहन, सोई किजे नन्दरानी जू।। कहा भवन में दूरि जो रहो हो, धर्यो दध ओदन पानी जू।।१।। बड़ी बेरकी उठी बहुबेटी, कोई भोरी कोई स्यानी जू।। बहू विध बिंजन खारे अरू मिठे, ले आई मन मानि जू।।२।। कहेत रोहनी यशोदा आगे, प्रेम लपेटी बानी जू।। सेनन में सब समुझ समुझ के, मन ही मन मुसक्यानी जू।।३।। बलदाऊ की टेर लेत है, कह कह मधुरी बानी जू।। "कुंभनदास" प्रभु भोजन महिमां निगम न जात बखानी जू।।४।।

राजभोग आते समय राग-आसावरी भोजन करत नवल पिय प्यारी, नवल बैठी गोप कुंवर की पांति।। ललित तिबारी पटा रतन के, झारी जल कंचन की भांति।। मानिक थाल विशाल धरे बहु, बेला बेली नाना भांति।।१।। खट रस व्यंजन धरे तिनके मधि, देखे जिनके नयन सिरात।। लपटत झपटत सखन संग मिल, देखत यशोदा मन मुस्कात।।३।। अष्टसिद्धि नव निधि तहाँ दासी, तहाँ उठावत जूठन मन इतरात।। देखत यह सुख सुं सुरपुरवासी, भये न व्रजजन आँख चुचात।।४।। जेती सुख संपति व्रजजनकी, पल पल छिन छिन वे गिनत न जात।। "गोवर्धन" गिरधर प्रसाद को ब्रह्मा हू की मति ललचात।।५।।

राग-आसावरी जसोदा एक बोल जो पाऊँ।। रामकृष्ण दोऊ तुम्हरे सुतको, सखन सहित जिमाऊँ।।१।। जो तुम नंदरायजी सों सकुचो, तो हौं उन्हें सुनाऊँ।। जो पे आज्ञा देहों कृपाकर, भोजन ठाट बनाऊँ।।२।। जब वाके घर गये स्यामघन, अपुनों भवन बताऊँ।। "परमानंददास" प्रेम भर उमगी, घर बैठें पहुंचाऊँ।।३।।

राग-आसावरी कहत प्यारी राधिका अहीर।। आज गोपाल पाहुने आये, परोसी जिमाउँ खीर।।१।। बहुत प्रीति अंतर गति मेरे, पलक ओट दुख पाऊँ।। जानत जाऊँ संग गिरिधर के, संग मिले गुन गाऊँ।।२।। तिहारो कोऊ बिलग न माने, लरिकाई की बात।। "परमानंद" प्रभु भवन हमारे, नित उठ आवो प्रात।।३।।

राग-आसावरी आज गोपाल पाहुने आये, निरखे नयन..(यह पूरा पद पेज १२२ पर पढ़े।)

राग-आसावरी/सारंग बैठी गोप कुंवर की पांति।। ललित तिबारी पटा रतन के, झारी जल कंचन की भांति।।१।। मानिक थाल विशाल धरे बहु, बेलाबेली नाना भांति।। खटरस विंजन धरे तिनके मधि, देखत जिनके नयन सिरात।।२।। पायल करत रोहिनी फिर फिर, अति आनंद मन मांझ सिरात।। लपटत झपटत सखन संग मिली, देखी यशोदा मुसकात।।३।। अष्ट सिद्धी नवनिधि दासी, तहां उठावत जुठन मन इतरात।। देखत सुखसूं सुरपुरवासी, भये व्रजजन आंख चुचात।।४।। जेती सुर सम्पति सब व्रजजन की, पल-पल छिनु-छिनु वे गिनत न जात।। "गोवर्द्धनेस" गिरिधर प्रसाद कों, ब्रह्माहु की मति ललचात।।५।।

राग-आसावरी श्रीवृषभान सदन भोजनकों, नंदादिक...(यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

भोग सरे तब राग-घनाश्री अचवन कीजिये कृपा निधान।। यमुनोदक कंचन झारी, भर लाई चंद्रावली सुजान।।१।। पनवारों भक्तनकों दीजे, नारद तुंबर गान।। जेंवत युगल उठे जो परस्पर, गावत जन "कल्याण"।।२।।

राजभोग में राग-सारंग जयति रूक्मणीनाथ पद्मावती प्राणपति (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट नातर लीला होती जुनी।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-ईमन गये पाप ताप दूर देखत दरस परस. (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

शयन में राग-विहाग प्रकट व्हे मारग रीति दिखाई।। परमानंद स्वरूप कृपनिधि, श्री वल्लभ सुखदाई।।१।। कर श्रृंगार गिरिधरन लालको, जब कर वेणु गहाई।। ले दर्पण सन्मुख ठाडे व्हे, निरख निरख मुसिकाई।।२।। विधि भांत सामग्री हरिकों, करि मनुहार लिवाई।। जल अचवाय सुगंध सहित मुख, बीरी पान खवाई।।३।। कर आरती अनोसर पटदे, बैठे निजगृह आई।। भोजन कर विश्राम छिनक ले, निजमंडली जु बुलाई।।४।। करत कृपा निज दैवी जीवन पर, श्रीमुख वचन सुनाई।। वेणुगीत पुन युगलगीत की, रस बरखा बरखाई।।५।। सेवा रीति प्रीति व्रजजन की, जनहित जग प्रगटाई।। "दास" शरण हरि वागधीश की, चरण रेणु निधि पाई।।६।।

मान में राग-विहाग मोहन मुखारविंद पर, मनमथ....(यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-विहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पौष मास का भावात्मक टिप्पण

पौष निर्दोष सुख कोष सुन्दर मास, कृष्ण नौमी सुभग नवघरी दिन आज श्रीवल्लभ सदन प्रकट गिरिवरधरन, चारू विधु वदन छबि श्रीविट्ठलराज (विष्णुदास)

पौष तथा अधिक मास इसे पुष्टिमार्ग ने रस पोषक, पुष्टिकर अनुग्रह मास कहा है। पौष मास में स्वयं पुरूषोत्तम स्वरूप श्रीविट्ठलवर गुसाईंजी प्रकट हुवे है। सो यह मास पुरूषोत्तम मास की तरह इस मार्ग में कहा गया है। इस माह में मकर व धन संक्रान्ति भी आती है। इस माह में शीत काल अच्छी लगती है तथा अनुकुल भोजन सामग्री तथा वस्त्र श्रीजी को धराये जाते है वह उत्साह तथा उमंग देने वाले होते हैं।

पुष्टिमार्ग में वार्ता साहित्य के आधार पर संसारासक्ति के दोषी को अंगीकार कर निर्दोष किये। जैसे श्मसान में भोजन करने वाले के झूठन से कोढ़ मीट गया। एक बाई को बेटा ठग से वैष्णव बना। इस प्रकार अनके दोषी व्यक्तियों को गुरू के द्वारा कृपा करने दीक्षा देने व शरण में लेकर कृतार्थ किये है। अतः पुष्टि मार्ग में अधिक मास मल मास न होकर “धनुर्मास” कहा जाता है।

अथ श्री विट्ठलनाथ जन्मोत्सव निर्णयः- पौष कृष्णा नवमी श्री गुसाँईजी को जन्मोत्सव। सो नवमी उदयात् लेनी और दोय नवमी होय तो पहली नवमी के दिन उत्सव मानना और नवमी का क्षय हो तो विद्धा नवमी के दिन उत्सव मानना।

साभार

श्रीवल्लभपुष्टि प्रकाश

पौष कृष्ण ९

गोस्वामी तिलकायत श्री दाऊजी महाराजश्री का जन्म दिवस

(देहरी वन्दनमाल)

श्रृंगार - किरीट मुकुट तथा खोंप, चाकदार वागा, आभारण हीरा मोती के, बंगला आवे

वस्त्र - लाल शाटन के रूपहरी कोर के शुथन तथा वागो चाकदार, हीरा जड़ा हुवा क्रीट मुकुट (छोटा मुकुट) धराया गया है।

ठाडा वस्त्र मेघ श्याम रंग के, पिछवाई केशरिया भरतकामकी इसमें तिलकायतश्री तथा बहुजी दोनों बाबाश्री, बेटीजी खड़े है।

आभरण - श्रीमस्तक पर ठाडीलड़ मोतीकी शीशफुल, कुंडल हीरा जड़े हुवे, वेणी श्याम हीरा-मोती की, चिबुक हीरा का। मुखारवृंद पर तिलक हीराको, अलंकार, कमलाक्ष, नखवेसर हीरा मोतीको, चिबुक हीराको तथा मुखारवृंद के दोनों तरफ श्याम अलक धराई गई है।

श्रीअंग में श्रृंगार चरणावृंद सुधी को, हांस, हार हीरा-पन्ना-माण-मोती सहित मीनाके, कमलकीमाला, गुंजामाला तथा फूलकीमाला धराई गई है।

श्रीहस्तमें नखावली मोतीपड़ाकी, मुद्रिका, हस्तपान, पोंची, बाजुबन्द आदि सभी हीरा-मोती के। श्रीचरणकमलमें मोझड़ी हीराकी, कड़ा, पायल, पेंजनी, जेहर सभी हीराजड़े हुवे। नुंपुर सोनोके, वेणुवेत्र हीरा जड़े हुवे।

विशेष - श्रीनाथजी आज राजभोग से उत्थापन तक कांचके बंगले में बिराजे। भोग से शयन में मेवा-इलायची के बंगला में बिराजे। सखड़ी में पांच भात सुबह राजभोग में आरोगाये तथा सायंकाल अधकी के विविध प्रकार की सामग्री आरोगाई गई है।

मंगला में राग-बिलावल (चोखड़ा) **पोष कृष्णा नौमी जब आई।। प्रगटे श्री विट्ठलनाथ गुसांई।। श्री लक्ष्मण सुत वल्लभ राई।। सुनतही फूले अंग न माई।।टेक।। फूले अंग न माय श्रीवल्लभ, लिये व्रजजन बोलके।। अति आतुर बधाये आये, ध्यान मुनिजन खोलके।। बहुत आदर किये सबहिन, दिये सबहिन मानजू।। "दास माधो" प्रभु प्रगट भये, श्री गोकुलके भानजू।।१।। श्रीवल्लभ प्रभू स्नानजू कीनो।। आचमन करिके तिलक जो दीनों।। पूजाकी विधि ठानी।। बोलत मुनिजन अमृतबानी।।टेक।। बोलत मुनिजन अमृतबानी, गौत्र उच्चार जो कीनो।। वेद विधि सों मंत्र पढ़के, देव पूजन कीनो।। सूत मागध मुनि गंधर्व, करत**

प्रमुदित गानजू।। “दास माधो” प्रभु प्रकटभये, श्रीगोकुल के भानजू।।२।। चंदन भवन लिपाये।। आंगन मोतिन चोक पुराये।। द्वारन वंदनवार बंधाई।। कंचन कलश ध्वजा फहराई।।टेक।। कंचन कलश ध्वजा फहराई, होत जय जय कारजू।। व्यास श्री शुकदेवजू मिल, करत वेद विचारजू।। सिद्धि शारद नारदादिक, करत निरमल गानजू।। “दास माधो” प्रभु प्रकट भये, श्रीगोकुलके भानजू।।३।। घर घरतें आवत व्रजनारी।। अंग नंग नवसत साज शृंगारी।। हाथन कंचन थार सवाँरी।। मंगल कलश शीश पर धारी।।टेक।। मंगल कलश जो शीशन लीने, गावत मंगल गीतजू।। भई आतुर दरस कारन, अंतर उपजी प्रीतजू।। निरख लाल निहार प्रमुदित, वारत तनमन प्राणजू।। “दासमाधो” प्रभु प्रकटभये, श्रीगोकुलके भानजू।।४।। दान देत श्रीवल्लभ सबहिन।। जेसे पाये काहु न कबहिन।। देत असीस सकल जे आये।। मनवांछित फल सबहिन पाये।।टेक।। मनवांछित फल सबहिन पाये, कहत जय जयकारजू।। दानको फल हमही दीनो, कृपाकरी अपारजू।। चले अपने धामको सब, करत बहुत बखानजू।। “दासमाधो” प्रभु प्रकटभये, श्री गोकुलके भानजू।।५।।

श्रृंगार में राग-बिलावल प्रगटे श्री विट्ठलनाथजु, जग भयो उजियार।। पौष कृष्ण नौमी दिना, प्रभु लियो अवतार।१।। निरख पूरण चंद्रमा, कुमुदिनी विकसानी।। सरिता सिंधु सरोवर, भयो उज्जवल पानी।।२।। भक्तन मन आनंद भयो, गावें मृदृ वानी।। चढ़ विमान सुर देखहीं, जय जय सुखदानीं।।३।। गोकुलमें आनंद भयो, सब करत कलोले।। नरनारी मिल गावहीं, लज्या पट खोले।।४।। कलियुगमें द्वापर कियो, सब जीव उद्धारें।। गुण अवगुण प्रभु ना गिने, कीये एक सारे।।५।। सेवारीति दिखाय कें, निरभय करिडारें।। योग यज्ञ जप तप नहीं, या कलियुग भारें।।६।। बहे जात जीव देखके, राखें गहि बांही।। “कृष्णदास” अपनों कियो, चरणनकी छांही।।७।।

राजभोग में राग-सारंग पौष निर्दोष सुखकोस सुन्दर मास, कृष्ण नौंमी शुभग नवघरी दिन आज।। श्रीवल्लभ सदन प्रकट गिरिवरधरण, चारू विधु वदन छबि श्री विट्ठलनाथ।।१।। भीर मागध भई, पढ़त मुनिजन वेद, ग्वाल गावत नवल बसन भूषन साज।। हरद केसर दही कीचके पार नहिं, मानों सरिता बही नीर निर्मल गाज।।२।। घोख आनन्द त्रिय वृन्द मंगल गावें, बजत निर्दोष रस पुंज मृदुध्वनी बाज।। “विष्णुदास” श्रीहरि प्रगट द्विज रूपधरि, निगम पथ दृढ़ थापि भक्ततपोषण काज।।३।।

गोस्वामी तिलकायत श्री दाउजी (तृतीय)

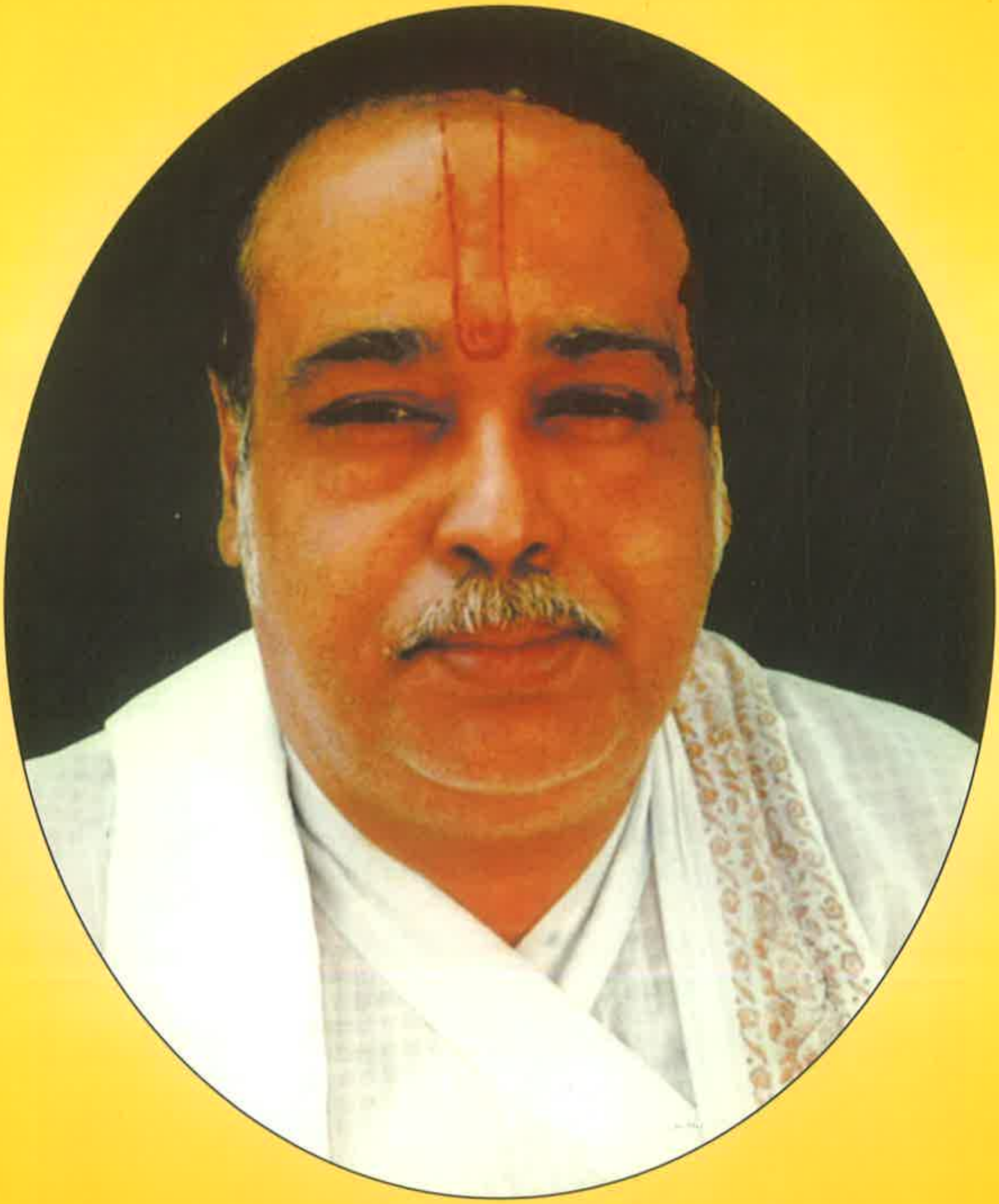

प.भ. श्रीमती रुक्मिणीबाई बालकृष्णदासजी पारख ट्रस्ट, उदयपुर
का जय श्री कृष्ण

पौष कृष्ण एकम का श्रृंगार

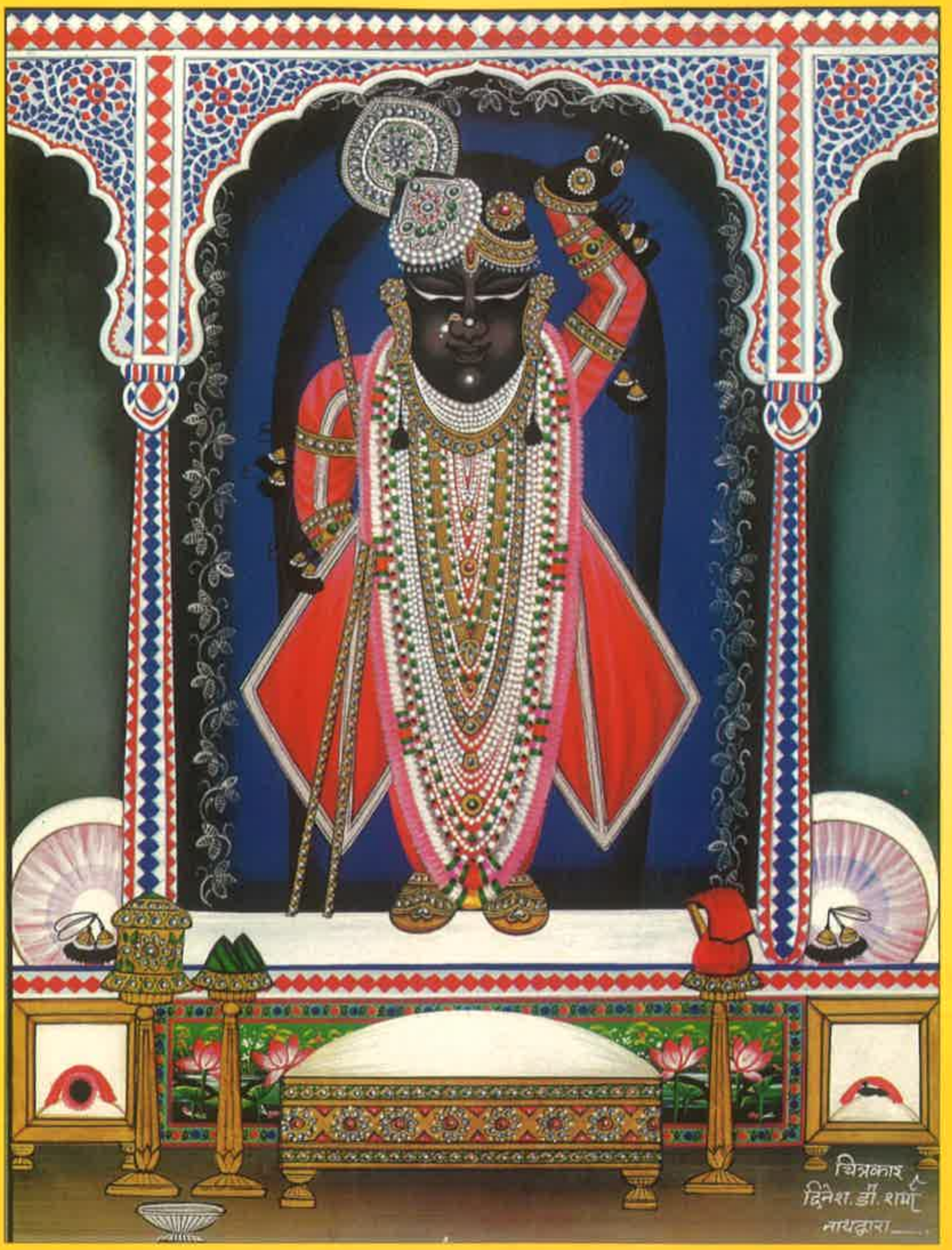
चित्रकार
दिनेश डी. शर्मा
नाथद्वारा

प.भ. श्री डॉ. श्याम एस लोढ़ा, 501, न्यू हेवन सिटी अमेरिका एवं
श्री मदनमोहनजी शर्मा, से. 11, उदयपुर का जय श्री कृष्ण

भोग में राग-गौरी रानीजू जायो है मोहन पूत, बधावों वृजराजके।। ऐक नार सुहाग सुन्दर, ऐक धोख कूवार।। सजन प्रीतम नाम ले ले, देत परस्पर गार।।१।। पुत्र मानो भये घर घर, नाचत ठाम ही ठाम।। नंद द्वारे भेट ले ले, उमग्यो हे गोकुल ग्राम।।२।। साथीये श्यामा धरत द्वारें, सात सीक बनाय।। ऐक जुवती मुदित व्हे व्हे, परत जसोदा जू के पाय।।३।। ऐक मंगली मंगल गावे, लीला गावें ग्वाल।। ऐक माखन दूध दधि ले, छिरकत फिरत हे बाल।।४।। एक हेरी दे दे नांचें, ऐक भेंटत धाय।। ऐक काहु बदित नांहिन, ऐक खिलावत गाय।।५।। ऐक नार सुहाग सुन्दर, एक जोवन जोर।। ऐक काहु वदित नांहिन, ऐक हंसत मुख मोर।।६।। कृष्ण जन्म सुन प्रेम सागर होत घोष बिलास, देख ब्रज की संपदा जन फूले "माधोदास"।।७।।

संध्या में राग-नायकी (आरती सन्मुख) जन्म लीयो शुभ लग्न विचार।। कृष्ण पक्ष भादों निस आठे, नक्षत्र रोहिणी और बुधवार।।१।। शंख चक्र गदा पद्म बिराजत, क्रीट कुंडल और मणि उजियार।। मुदित भये वसुदेव देवकी, "परमानंद दास" बलिहार।।२।।

शयन दर्शन में राग-नायकी सुधर सहेली सब मील आहों गावों मंगल गीत।। (यह पूरा पद पेज २०१ पर पढ़े।)

राग-कल्याण श्री वल्लभलाल के गुण गाऊं।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग पिय तोहे नैनन मे ही राखो।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण २

श्रृंगार - पाग गोलचंद्रिका का।

वस्त्र - पीली साटन के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार। पीली पाग पर सोनेरी जरी कामकी गोलचन्द्रिका तथा लुमक सोनेरी वादलाकी, ठाड़ा वस्त्र पंतगी रंगके तथा पिछवाई पीली शाटनकी रूपहरी कोरकी टिपकी वाली तथा मोजड़ी पीली साटन की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा, माणक, मोती व सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल प्रगटे श्री विट्ठलनाथजु जग भयो उजियार।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-देवगंधार बोहोरि कृष्ण फिर गोकुल प्रकटे श्री विट्ठलनाथ हमारो।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-देवगंधार नैनभर देखों श्री नंदकुमार।। जसुमति कूँख चन्द्रमा प्रगट्यौं, या व्रजको उजियार।।१।। बन जिन जाऊ आज कोऊ, गो गाय गुवार।। अपने अपने भेष सबै मिलि, लावौ विविध सिंगार।।२।। हरद दूब अच्छत दधि कुमकुम, मंडित करो दुवार।। पूरो चौक विविध मुक्ताफल, गावौ मंगलचार।।३।। चहुँ वेदधुनि करत महामुनि, होत नछत्र बिचार।। उदयो पुन्यको पुंज साँवरो, सकल सिद्धि दातार।।४।। गोप बधू निरखि आनंदित, सुंदरताकौ सार।। "दास चतुर्भुज" प्रभु सब सुखनिधि, गिरिधर प्रान आधार।।५।।

श्रृंगार में राग-बिलावल आज नंदजु के द्वारे भीर।। गावत मंगल गीत सबे मिल, प्रगटे हें बलवीर।।१।। एक आवत एक जात बिदा व्है, एक ठाढ़े मदिर के तीर।। एकन कुं गउदान देत हे, एकन कुं पहरावत चीर।।२।। एकन कुं फूलमाल देत हे, एकन कुं घसी चंदनीर।। "सूरदास" तव नवनिथि पाई, धन्य जसोदा पुण्य शरीर।।३।।

राजभोग आवे तब राग-देवगंधार चहूं युग वेद वचन प्रति पार्यो।। धर्मग्लानि भई जबही जब, तबतब तुम वपु धार्यों।।१।। सत्ययुग श्वेत वराहरूप धर, हिरण्याक्ष उर फार्यो।। त्रेता रामरूप दशरथ गृह, रावण कुल जू संहार्यो।।२।। द्वापर व्रज बूडततें राख्यो, सुरपति पायन पार्यो।। कंसादिक दानव सब मारे, बसुधा भार उतार्यो।।३।। कलियुग श्रीवल्लभ गृह प्रकटे, मायावाद निवार्यो।। "माणिकचंद" प्रभु श्रीविट्ठल, पुरूषोत्तम रूप निहार्यो।।४।।

राजभोग में राग-सारंग दक्षण गति चरण अति सुखद, हेमन्त ऋतु पोष शुभ मास, मध्य पक्ष अंध्यारों।। द्योष नौमी युगल याम, गत वृष लग्न वार भृगु, योग शुभ हस्त तारो।।१।। धन भुवन देव गुरू, सहज बैठ्यों राहु सुभग सुत, भवन मध्य वार निधि वारो।। शुक्र शनि भौम जाह मित्र, तनु पुष्टिकरि भानु युत, बुध वसु ग्रह सारो।।२।। धर्मको केतु यह हेतु, सुख देत हें तरण भव, जलधिको सेत भारो।। भक्त दुख दमन द्विजराज, वल्लभ सुवन प्रकट, व्रजईश यशुमति दुलारो।।३।।

भोग में राग-गौरी हों चरणात पत्र की छैंयां।। कृपा सिंधू श्री वल्लभ नंदन, बह्यो जात राख्यो गही बहियांग।।१।। नव नखचंद्र शरद मंडल छबि, हरत ताप सुमिरत मन महियां।। “छितस्वामी” गिरिधरन श्रीविट्ठल, सुयश बखान सकत श्रुति नहीयां।।२।।

आरती में श्री लक्ष्मण कुल चंद उदित जग उद्योतकारी।। मात इल्लमा पूरन राका उड़गन, निजजन समान पोषत पियूस, बचन हरियश उजियारी।।१।। करूणामय निस्कलंक, मायावाद तिमिर हरन, सकल कला पूरन, द्विजवर वपुधारी।। बलि-बलि बलि “माधोदास”, चरण कमल को निवास, भयो चकोर लोचन छबि, निरखत गिरिधारी।।२।।

संध्या में राग-कान्हरौ भक्ति सुधा बरखत ही प्रगटे, श्रीवल्लभ द्विजराज।। माधो मास कृष्ण एकादशी, प्रिय पुनीत दिन आज।।१।। करूणावंत अतुल सुख सागर, संग लिये सकल समाज।। बंधु कुमुद अनुचर चकोरके, भये मनोरथ काज।।२।। आनंदरूप जगतके भूषण, लसत सबन शिरताज।। “विष्णुदास” गुण गणित थकित भये, पंडित पावत लाज।।३।।

शयन में राग-अड़ानों चलो मेरे लाडिले हो, पायन पेंजनी के चाय।। रतन जटित की गढ़ाई, याहि लालच पहराई, ठुमक ठुमक पग धरो, मनमोहन लेहों बलाय।। आजको दिन सुहावनो, बलि जाऊ लला मेरे, आंगन खेलिये धाय।। करोगी सर्वस्व न्योंछावर “नारायण”, देहोंगी विप्रन गाय।।

मान में राग-नायकी तू मोहि कित लाईरी यह गली।। जो जिय डरपत ही सोई भई, आगें ठाडे मोहन अब, कैसें जैवो मेरी माई।।१।। रसन दसन धर करसूं कर मीड़त, दूतीसों खीजत, आनन्द उर न समाई।। “गोविंद” प्रभु की तेरी हिलमिल बातें, हों सब जानत भली कीनी, भले नग सों भेंट कराई।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ३

(रूपहरी घटा)

श्रृंगार - रूपहरी घटा पाग कतरा को।

वस्त्र - रूपहरी जरी के बिना कोर के, शुथन तथा वागो घेरदार, रूपहरी जरी की चीरा वाली पाग तथा उसपर रूपहारी जरी के काम का कतरा। चरण कमल में मोजड़ी रूपहरी जरी की ठाड़ा वस्त्र रूपहरी जरी के तथा पीछवाई रूपहरी जरी की बीना कोर की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार

मंगला में राग-बिलावल आज नंदजु के द्वारे भीर।। (यह पूरा पद पेज २०८ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-बिलावल प्रगटे श्री विट्ठलनाथजु जग भयो उजियार।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (बघाई-१) राग-देवगंधार भयो श्री वल्लभ गृह अवतार।। पौष कृष्ण नोमी प्रभु प्रगटे, हस्त नक्षत्र भृगुवार।।१।। द्विज बुलाय सब किये वेद ध्वनी, वरस्यों जयजयकार।। लक्ष्मण नन्दन महा मोदसों, देत हे दान अपार।।२।। युवतिजन सब हिलमिलके, अति गावत मंगलचार।। "व्रजपति" जगमें प्रगट भये हे, भक्तन प्राण आधार।।३।।

(बघाई-२) राग-देवगंधार जे जन शरण आये ते तारे।। दीन दयाल प्रकट पुरूषोत्तम, श्री विट्ठलनाथ ललारे।।१।। जितनी रवि छायाकी कणिका, तितने दोष हमारे।। तुमारे चरण प्रताप तेजतें, तेऊ ततक्षन टारे।।२।। माला कंठ तिलक दे माथे, शंख चक्र वपु धारें।। "माणिकचंद" प्रभुके गुण ऐसे, महापतित निस्तारे।।३।।

(बघाई-३) राग-बिलावल जबते श्री विट्ठलनाथजू नयन भर देखे।। जन्म सुफल भयो आपनो, करी कृपा विशेखें।।१।। कलियुग जान प्रकट भये, करूणा विस्तारी।। भजनानंद दिखायकें, भक्तन हितकारी।।२।। सगुन ब्रह्म स्थापन किये, दे श्रुति सब साखी।। "माणिकचंद" प्रभु सर्वदा, भक्तन पत राखी।।२।।

राजभोग में राग-सारंग जयति रूक्मणीनाथ पद्मावती प्राणपति विप्रकुल छत्र आनंदकारी।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट कृपा सिधुं श्रीविट्ठलनाथ।। हस्त कमल निस्तारे, जे हुते अधम अनाथ।।१।। बाधा कछु न रही अब तनमें, भये सुदृढ़ सनाथ।। "चतुर्भुज" प्रभु सदा बिराजो, श्रीगिरिवरधर साथ।।२।।

संध्या में राग-गौरी श्रीलक्ष्मणकुल चंद उदित, जग उद्योतकारी।। मात इलम्मा विमल राका, उडुगण निजजन समाज, पोषत पीयुष वचन, हरि यश उजियारी।।१।। करूणामय निष्कलंक, मायावाद तिमिर हरण, सकलकला पूरण मन, द्विज वपुधारी।। बलबल "माधोदास", चरणकमल किये निवास, भयो चकोर लोचन छबि, निरखत गिरिधारी।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ श्रीविट्ठलनाथ चंन्द उग्यो जगमें, भक्त चाँदनी छाय रही।। अंधकार जाके मन मिट गये, सो तो पिया मन भाई लई।।१।। निश दिन नाम जपत रटत या मुखतें, श्री वल्लभ विट्ठलेश कही।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, अब जो भई सो कब न भई ही।।२।।

मान में राग-बिहाग बैठी पियको बदन निहारे।। (यह पूरा पद पेज १८२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग यह ऋतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पोष कृष्ण ४

श्रृंगार - दोहरे वागाको।

वस्त्र - साटन के बिना कोरके, शुथन हरी तथा नीचे केसरिया ऊपर हरा रंग का चाकदार दो वागा धराये गये है। पाग हरी केसरिया खीडकी की तथा मोजड़ी केसरिया शाटन की, ठाड़ा वस्त्र लाल रंग का तथा पिछवाई हरी व केसरिया शाटन की।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-मोती तथा सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-खट यह नित नेम यशोदाजू मेरो, तिहारे लाल लड़ावन कों।। प्रातः समय उठि पलना झुलाउं, शकटभंजन जस गावन को।।१।। नाचत कृष्ण नचावत गोपी, कर कठताल बजावन को।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, निरख वदन सचु पावन को।।२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल (पलना) हालरो हुलरावे माता।। बलि बलि जाउं घोष सुखदाता।।१।। अति लोहित कर चरन सरोजें।। जे ब्रहमादिक मनसा खोजें।।२।। जसुमति अपनो पुन्य विचारे।। वारवार मुख कमल निहारे।।३।। अखिल भुवनपति गरूड़ागामी।। नन्द सुवन "परमानन्द" स्वामी।।४।।

राजभोग आते समय (बधाई) राग-सारंग जो वसुदेव किये पूरन तप, सो फल फलित श्रीवल्लभ देह।। जे गोपाल हुते गोकुलमें, ते अब आन बसे निजगेह।।१।। जे वे गोपवधूहीं व्रजमें, सो अब वेद ॠचा भई जेह।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, तेई एई एई तेई कछु न संदेह।।२।।

राग-सारंग गो वल्लभ गोवर्धन वल्लभ, श्रीवल्लभ गुन गिने न जाई।। भूवकी रेणु तरैया नभकी, घनकी बूंदे परत लखाई।।१।। जिनके चरण कमल रज वंदित, संतत होत सदा चित्त चाई।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, नन्दनन्दनकी सब परछांई।।२।।

राग-सारंग केसरकी धोती कटि केसरी उपरना ओढ़े, तिलक मुद्रा धर ठाड़े मंदिर गिरिधर के।। दोउनकी प्रीति कछु काहूपे न कही जात उत नन्दनन्दन इत वल्लभ परके।।१।। करके श्रृंगार आज लाडिले गोपालजूको लेत हे बलाय वारवार दोउ करके।। वेउ मुसिकात जात फूले न समात गात कहे "हरिदास" में निहारे द्रग भरके।।२।।

राजभोग में राग-सारंग श्री विट्ठलेश चरण चारू, पंकज मकरंद लुब्ध, गोकुलमें सकल संत, करत हें नित केली।। पावन चरणोदक जहां, संतन हित सलिल बहत, त्रिविध ताप दूर करत, वदन ईंदु मेली।।१।। भुतल कृष्णावतार, प्रगट ब्रह्म नराकार, सींचत हरि भक्ति सुधा, धरणि धर्म बेली।। “छितस्वामी” गिरवरधर, लीला सब फेर करत, धेनु दुहत ग्वालन संग, हाथ पाट सेली।।२।।

भोग में राग-नट/देवगंगधार श्रीविट्ठल मंगल रूप निधान।। कोटि अमृत सम हँस मृदुबोलन, सबके जीवन प्राण।।१।। करूणासिंधु उदार कल्पतरू, देत अभय पद दान।। शरन आयेकी लाज चहुंदिश, बाजे प्रकट निशान।।२।। तुम्हारे चरन कमलके मकरंद, मन मधुकर लपटान।। “नंददास” प्रभु द्वारे रटत हें, रूचत नाहि कछु आन।।३।।

संध्या में राग-ईमन श्री लक्ष्मण वर बृह्मधाम, काम मुरति पुरूषोत्तम, प्रकट भये श्रीवल्लभ प्रभु, लीला अवतारी।। रसमय आनंदरूप, अनुपम गुण ग्रन्थभरे, वचन सुधा सींचत नित्य, निजजन सुखकारी।।१।। भजन पंथ कमल भानु, अमल भावदान करत, व्रजपति रस रास केलि, विहरत मनुहारी।। नवल लाल पिया गिरिधर, दृढ़करि कर गहत ताहि, जे जन इन शरन आये, चरण छत्र धारी।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ परम कृपाल श्री वल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथें।। (यह पूरा पद पेज ५४ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकि रूसनों न कर प्यारी रूसवो निवार।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग यह ऋृतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ५

श्रीगुसांईजी के उत्सव का आगम का शृंगार

(देहरी वन्दनमाल)

शृंगार - कुल्हे जोड़ का।

वस्त्र - केशरिया साटन का, लाल गोट का शुथन तथा वागो चाकदार, कुल्हे केसरी रूपहरी कोर पर मोर पिछका जोड़, सादा हीराको पान, गोटी पन्ना की तथा नित्यानुसार भारी शृंगार हीरा-पन्ना के धराये गये है।

ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम रंगके श्रीजी के कंदरा पर हीरा का जड़ाऊ चोखटा धराया गया है। पिछवाई रेशमी लाल सुनहरी चोडा पट्टा कोरकी धराई गई है।

मंगला में राग-रामकली प्रेंख परियंक शयनम् चिरविरह तापहर मति रूचिर मीक्षणं प्रकटूय प्रेमायनं।।ध्रु.।। तनु तर द्विज पंक्ति ललितानि रसितानि तव दीक्ष्य गायकीनां।। ईयद्र्वाधि परमेत द्राशया सम भवज्जीवितं तावकीनां।।१।। तोकता वपुषित पराजते दशितु मद माननी मानहरणं।। अग्रिमें वयसि किमु भाविका मेऽपि निज गोपिका भावकरणं।।२।। व्रज युवति हृद्य कनकाचला नारोहु मुत्सुकं तव चरणयुगलं।। तेनु महुरून्न मनमभ्यास भिवनाथ सपदि कुरूते मृदुल मुदुलं।।३।। अधिगोरोचना तिलककमलकोद्रग्रथित विविध मणि मुक्ताफल विरचितं।। भूषणं राजते मुग्धतामृतभरस्यदिं वदनेंदु रसित।।४।। भ्रुतटे मातृरचिताजन बिन्दु रतिशयति शोभया दृग्दोषमपनयन् स्मरधनुषि मधुपिवन्नलिराज इव राजते प्रणयि सुखमुपनयन्।।५।। वचन रचनोदार हास सहज स्मितामृत चयै रार्ति भह मपनयन्। पालय सदास्मान स्मदीय श्री विट्ठले निजदास्य मुपनयन्।।६।।

शृंगार में राग-आशावरी तुम व्रजरानी के लाला।। अहो दधि मथति सुहाई के लाला।।ध्रु.।। दिव्य कनक कौ पालनों लाल, रतन जटित नगहीर।। गजमोतिनके झूमिका लाल, ऊपर दक्खिन चीर।।१।। घुटुरूवन चलत सुहावने लाल, पग नूपुरकौ नाद।। कटि किंकिनी रूनुझूनु करें लाल, सुनत जननी अहलाद।।२।। आधे आधे बचन सुहावने लाल, सुनत जननी मन मोद।। मुख चुंबत स्तनपान दै लाल, लै बैठारति गोद।।३।। कुल्हे सुरँग सिर ताफताकी लाल, झगुली पीत सुदेश।। कंठ बघना कर पोहोंचियाँ लाल, शोभित सुंदर वेश।।४।। तिलक खुल्यौ गोरोचना लाल, घूँघरवारे केस।। न्हाँनी न्हाँनी दतियाँ द्वै दूधकी लाल, देखियत हँसत सुदेश।।५।। काजर लोचन आँजिकैं लाल, भोंह मटुक दै ईठ।। अपनौ लाल काहू देखन न

देहौं, जिन कोऊ लावौ डीठ।।६।। प्रथम हनी तुम पूतना लाल, शकट भंजन त्रन मारि।। यमला अर्जुन तारिकें लाल, अब किन छाँडो आरि।।७।। मेरे लाल की मैया ब्रजनारी, बाप गोकुलराज।। धनि धनि तुमारे बलभद्र भैया, करत सकल सुख काज।।८।। मेरे लालकी गैया अति बाढ़ी, चरन वृंदावन जाई।। पान्यौ पीवे नदी यमुना कौ, अंजन खरि वे खाई।।९।। मेरे लाल हो प्यारे लाल तुम, कंस मारि गढ़ लेहु।। मथुरा फेरौ व्रजराज दुहाई लाल, गोप सखन सुख देहु।।१०।। लिये उठाय व्रजराज गोदकरि, दै उगार हृदें लाय।। बहोरि लिये जननी गोद करि, अस्तन चले हैं चुचाय।।११।। कहत यशोदा सुनौ मेरे "गोविंद", लेहुँ कनियाँ चढ़ाय।। जों झूलौ तो पालनें झुलाऊँ, नातर आँगन बैठि खिलाय।।१२।।

राजभोग आते समय (बधाई-१) राग-सारंग सदा वृज ही में करत बिहार।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

(बधाई-२) राग-सारंग श्रीविट्ठलेश चरणकमल, पावन त्रैलोक्य करण, दरसपरस सुन्दर वर, वार वार वंदे।। समरथ गिरिराजधरण, लीला निज प्रकट करण, संतन हित मानुष तनु, वृंदावन चंदे।।१।। चरणोदक लेत प्रेत, ततक्षण ते मुक्त भये, करूणामय नाथ, सदा आनन्द निधि कंदे।। वारने "भगवानदास", विहरत सदा रसिकराय, जयजय यश बोल बोल, गावत श्रुति छंदे।।२।।

राजभाग आवता (बधाई-३) राग-कान्हरौ वृज में श्री विट्ठलनाथ विराजे।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग पौष निर्दोष सुखकोस सुन्दर मास, कृष्ण नौंमी शुभग नवघरी दिन आज।। (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

भोग में राग-धनाश्री बधावो श्रीवल्लभरायकें, गृह प्रकटे विट्ठलनाथ।।ध्रु.।। तैलंगतिलक श्रीलक्ष्मणसुत गृह, जन्म लियोहे आय।। पुरूषोत्तम वासों कहियत हे, निगम सदा गुणगाय।।१।। पौषमास शुभ नौमी भृगुदिन, हस्त नक्षत्रहे सार।। वृषभ लग्न शुभयोग करणहे, धन्य शिशु निरधार।।२।। धन गुरू तृतीये राहु, पंचमे राकापति नवमे केत।। सप्तम शुक्र भौम शनि शोभित, अष्टम रवि बुध लेत।।३।। गिरि चरणाट सुरसरीके तट, फिर लीनो द्विजरूप।। ज्ञातिकर्म सबहोत बिविध बिधि, बैठे श्रीवल्लभ भूप।।४।। पंचशब्द बाजे बाजतहें, गावत गीत सुहाये।। मंगल कलश बिराजत द्वारें, बंदनवार बंधाये।।५।। मागध सूत पुरोहित मिलकें, शुभ

आशीश सुनाये।। देत दान महाराज श्रीवल्लभ, फूले अंग न माये।।६।। महा महोत्सव होत आंगनमें, नांचत गुनी अनेक।। विविध भांत पाटंबर भूषण, देत न आवे छेक।।७।। नवग्रहकी महिमा कहिये, जो कहत सबे द्विज आय।। पाखंड धर्म सब दूर करेंगे, वेद धर्म प्रकटाय।।८।। निराकार मायामत खंडन, करेंगे सुख दाय।। पुरूषोत्तम साकार भजन विधि, करि सिखवेंगे आय।।९।। दैवीजीव उद्धारण कारण, महामंत्रकों दान।। शरणगये गिरिधर रति उपजत, करत कथा रसपान।।१०।। जे हरि ब्रह्म रूद्रके हृदये, आवत नांहिन ध्यान।। सो निजजन गृह वसत निरंतर, अभय करतहें दान।।११।। प्राकृत रूप दिखाय मोहित किये, आसुर मानव जेह।। कृपा सुदृष्टि उद्धार कियेहें, स्त्री शुद्रादिक देह।।१२।। पतित जन पावन करिहें प्रभु, अनेक देश परवेश।। हस्तकमल धर दूर करेंगे, अन्य धर्मको लेश।।१३।। गोवर्धनधरसों रति लीला, करेंगे तहां जाय।। भोग शृंगार बनाय करेंगे, निरख निरख सुखपाय।।१४।। व्रजमंडल खग मृगकी, महिमा करेंगे विस्तार।। श्रीयमुना गोवर्धन द्रुम वेली, कहत सबे निरधार।।१५।। प्रेमलक्षणा दे दासनकों, कीनों भव निस्तार।। श्रीवल्लभराज तिहारे सुतकी, कीर्ति अपरंपार।।१६।। आनंद मग्न भये सुरनर मुनि, गुण गण सुन सुखपाये।। निरख मुखारविंदकी शोभा, चरण कमल शिर नाये।।१७।। सुखसागर उमग्यो महि ऊपर, वरणत वरण्यो न जाई।। श्रीवल्लभ पदरज महिमातें, "गोविंद" यह यश गाई।।१८।।

संध्या में राग-कान्हरौ यह धन धर्म ही तें पायो।। नीकें राखि जसोदा मैया, नारायण व्रज आयो।।१।। जा धनको मुनि जप तप खोजत, वेदहु पार न पायो।। सोधन धर्यो क्षीर सागर में, ब्रह्मा जाय जगायो।।२।। जा धनते गोकुल सुख लहियत, सगरे काज संवारे।। सो धन वारवार उर अन्तर, "परमानन्द" विचारे।।३।।

शयन भोग आवे तब (बधाई के पद) राग-कान्हरौ परम कृपाल श्रीवल्लभ नन्दन, करत कृपा निज हाथ दे माथे।। जे जन शरण आय अनुसरहीं, ग्रही सोंपत श्री गोवर्धन नाथे।।१।। परम उदार चतुर चिंतामणि, राखत भव धारा बहे जाते।। भज "कृष्णदास" काज सब सरहीं, जो जाने श्रीविट्ठलनाथे।।२।।

शयन में राग-नायकी सुधर सहेली सब मील आवो, गावों मंगल गीत।। (यह पूरा पद पेज २०१ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी जान्यो प्रीतके मरम।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ६

शृंगार - गोल चंद्रिका को।

वस्त्र - गुलाबी साटन को घेरदार वागा, रूपेरी कोर का कटी पटका, पाग पे गोल चन्द्रिका, आभरण हरे मीना के। ठाडा वस्त्र हरा तथा पिछवाई गुलाबी साटन की धराई गई है।

मंगला में राग-बिलावल धन्य गोकुल जाहां गोविंद आये।। (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-आशावरी माईरी कमल नैन श्याम सुन्दर, झूलत है पलना।। बाललीला गावत सब, गोकुलकी ललना।।१।। लालके अरून तरून चरणकमल, नख मणि शशि जोति। कुंचित कच भमराकृत, लर लटकत गज मोती।।२।। लाल अंगूठा गहि कमल पाणि, मेलत मुख मांही।। अपनो प्रतिबिंब देखी, पुनि पुनि मुसिकाई।।३।। रानी जसुमतिके पुन्यपुंज, वार वार लाले।। “परमानंद” स्वामी गोपाल, सुत स्नेह पाले।।४।।

राजभोग आते समय (बधाई) राग-कान्हरौ वृज में श्री विठ्ठलनाथ विराजे।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

राग-देवगंधार भयो श्री वल्लभ गृह अवतार।। (यह पूरा पद पेज २१० पर पढ़े।)

राग-सारंग केसर की धोती कटि ... (यह पूरा पद पेज २१२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग यशोदारानी सोवन फूलें फूली।। तुम्हारे पुत्र भयो कुलमंडन, वासुदेव समतूली।।१।। देत असिस विरध जे ग्वालिनि, गाम गामते आई।। ले ले भेट सबे मिल निकसी, मंगलचार बधाई।।२।। ऐसे दसक होई जो ओरें, सब कोऊ सचुपावे।। बाढ़ो वंश नन्दबाबाको, “परमानंद” जिय भावैं।।३।।

भोग में राग-नट जो पे श्रीविठ्ठल रूप न धरतें ... (यह पूरा पद पेज २०० पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी श्री विठ्ठल प्रभु नमो नमो।। (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय (बधाई के पद) राग-बिहाग जे जन शरण आयेते तारे।। (यह पूरा पद पेज २१० पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरो श्रीविठ्ठलनाथ बसत जिय जाके, ताकि रीत प्रीत छबि न्यारी।। प्रफुल्लित वदन कांति करूणामय, नैनन में झलकै गिरिधारी।।१।। उग्र स्वभाव परम् परमारथ, स्वारथ लेश नहिं संसारी।। मन, क्रम, वचन ताहि को संग किजै, पैयत व्रजयुवतिन सुखकारी।। “कृष्णदास” प्रभु रसिक मुकुटमणी, गुण निधान श्री गोवर्धनधारी।।२।।

मान में राग-बिहाग आवत जात हों हार परी री।। (यह पूरा पद पेज १६८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत अति.. (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ७

श्री गुसांई के पौत्र श्री कल्याणरायजी का उत्सव

आपश्री के प्राकट्य के समय श्रीगोविंदजी श्रीनाथजी को शृंगार धरा रहे थे तब श्रीजी ने आज्ञा की कि गोविन्द के घर कल्याण आये, बधाई लावों। तब श्रीगोविंदजी ने अपने हाथ की विंटी निकाल कर नग श्रीजी को भेंट किया और दण्डवत की। श्रीकल्याणरायजी, श्रीहरिराय महाप्रभु के पिताश्री थे।

शृंगार - कुल्हे जोड़का

वस्त्र - लाल साटन पर पक्षियों की भांत का रूपहरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार। पक्षि मोरन की मीना की कुल्हे पर मोरपिछका जोड़। स्थायी भारी श्रृंगार। गोपी वल्लभ भोग में जलेबी आरोगाई गई।

मंगला में राग-देवगंधार सांवरों मंगल रूप निधान।। जा दिनतें हरि गोकुल प्रगटे, दिन दिन होत कल्याण।।१।। बैठी रहौ श्याम गुन सुमरौं, रेन दिना सब याम।। "श्रीभटके" प्रभु नैन भर देखों, पीताम्बर घनश्याम।।

शृंगार में राग-आशावरी तुम व्रजरानीके लाला।। (यह पूरा पद पेज २१४ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय (बधाई-१) राग-देवगंधार भयो श्री वल्लभ गृह अवतार।। (यह पूरा पद पेज २१० पर पढ़े।)

(बधाई-२) राग जयति गोविंद आनन्दमय सर्वदा, सकल व्रजईश सेवे विहारी।। गोपी भाव उद्‌बोध निजदास कर, दैवी जन हेत निजदेह धारी।।१।। सूर सब ईषको मान मर्दन करन, सुरभि पद पून्यते प्रकट चारी।। भक्त सुख करन दुख दलन संसारकृत, सरस सुखरास रस रंगकारी।।२।।

राजभोग आते समय (बधाई-३) राग-बिलावल कहत सबनसों आवो आवो।। उदित भयो व्रज वृन्दावनको शशि, आनन्द मंगल गावो गावो।।१।। कंचन पट मणि माणिक भूषण, भेट अमोलिक लावो लावो।। "श्रीविट्ठल गिरिधरन" प्रकट भये, देखनकुं तुम जावो जावो।।२।।

राजभोग में राग-सारंग जय श्रीवल्लभ राजकुमार।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

भोग में राग-घनाश्री हों व्रज माँगनों जू, व्रज तज अनत न जाऊँ।।ध्रु.।। बड़ड़े भूपति भूतल महियाँ, दाता सुर सुजान।। कर न पसारों सीस न नाऊँ, या व्रजके अभिमान।।१।। सुरपति नरपति नागलोक पति, मेरे रंक समान।। भाँति भाँति मेरी पूजियै, व्रजजन जिजमान।।२।। मै व्रत करि करि देव मनाये, अपनी धरनी संयूत।। दियो विधाता सब सुखदाता, गोकुलपति के पूत।।३।। हों अपनौ मनभायो लैहों, कित बौरावत बात।। ओरनकों धन घन ज्यो बरखत, मो देखत हँस जात।।४।। अष्टसिद्धि नवनिधि मेरे मंदिर, तुव प्रताप व्रज ईश।। कहत "कल्याण" मुकुंद तात कर, कमल धरौ मम शीश।।५।।

संध्या में राग-कल्याण श्रीविट्ठल मंगल रूप निधान।। (यह पूरा पद पेज २१३ पर पढ़े।)

शयन भोग आवता बधाई के कीर्तन राग-नट जो पे श्रीविट्ठल रूप न धरतें।। (यह पूरा पद पेज २०० पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ आज धन्य भाग्य हमारे, प्रकटे श्री विट्ठलनाथ।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी सुनरी सखी तेरो दोष नहीं, मेरो पिय रसिया री।। नवललाल को सब कोउ चाहत, कौन कौनके मन बसिया री।।१।। एकनसों नयना जोरे एकनसों भ्रौंह मरोरे, एकनसों मुख हँसिया री।। "कृष्णजीवन लछीराम" के प्रभु माई, संग डोलत पूरन ससिया री।।२।।

राग-कान्हरौ सुनरी सखी तेरों दोष नहीं, मेरों पिय रसीया।। (यह पूरा पद पेज १५७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहागरों सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १५२ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ८

शृंगार - पाग चंद्रिका को।

वस्त्र - लाल साटन के बिना कोरके, सुथन तथा वागो घेरदार, पटको सुनहरी कोरको। लाल पाग पर सादी मोरकी चन्द्रिका धराई गई है। ठाड़ा वस्त्र पीला रंग के तथा पिछवाई लाल साटन की, रूपहरी कोरकी धराई गई है। आज श्रीजी गोपीवल्लभ भोग में कुन्डवारा अरोगते है।

आभरण - नित्यानुरसार हीरा माणक मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-देवगंघार/घनाश्री **आज बधाई श्रीवल्लभ द्वार।। पोष मास वदि नौंमि शुभ दिन, श्रीविट्ठल अवतार।।१।। ज्ञान रहित जीवन हित कारण, नाम विवेक विचार।। यह जान सुंदर मधुराकृत, मूरति परम उदार।।२।। भूतल भाग्य हमारे उघरे, मायिक मत निस्तार।। ब्रह्मवाद कलि कल्पवृक्ष की, फिर उलही सब द्वार।।३।। प्रेम समुद्र भक्ति मारग को, उमग्यो ताही वार।। याहीतें द्विजराज कहाये, श्री गिरिधर साकार।।४।।**

शृंगार में राग-बिलावल **सुखद स्वरूप श्री विट्ठलेशराय।। वेद वदत पूरण पुरूषोत्तम, श्री वल्लभ गृह प्रकटे आय।।१।। लटपटी पाग महारस भीने, अति सुन्दर वर सहज सुभाय।। "छीतस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, अगणित महिमा वरनी न जाय।।२।।**

राजभोग आते समय (बधाई) राग-सारंग **जो वसुदेव किये पूरन तप, सो फल फलित श्रीवल्लभ देह।।** (यह पूरा पद पेज २१२ पर पढ़े।)

राग-सारंग **गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ, श्री वल्लभ गुन गिने न जाई।।** (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े।)

राग-सारंग **केसर की धोती कटि, केसरी उपरना ओढ़े, केसरको तिलक भाल, मुद्रा मध्य सोहे।। श्रवणन मणि मुक्ता धरे, कोटि मदन मान हरे, मुकुलित शिर केश देख, कोहे जो न मोहे।।१।। श्रीवल्लभ सुत सुजान, उपमाको नहीं आन, नख शिख गिरिधरन रूप, देखेही बनि आवे।। सुंदरताई निकाई, तेज प्रताप अतुलताई, नंदनन्दन विट्ठलेश, एकही कहावें।।२।। अपने कर करि शृंगार, देखरी छाबिलों लाल, ठाडे निज मंदिरमें, निरांजन वारे।। घंटा ताल झालरि बाजे, जय जय शब्द गाजे, अपनपों "हरिदास", वारवार डारें।।३।।**

राजभोग में राग-घनाश्री यशोदा रानी जायौ है सुत नीकौ।। आनंद भयो है गोकुलमें, गोपबधू लाईं टीकौ।।१।। अक्षत दूब रोचन वंदन, नंदे तिलक दहीकौ।। अंचल वारि वारि मुख निरखत, कमल नैन प्यारौ जीकौ।।२।। अपने अपने भवनतें निकसी, पहेरे चीर कसूंभी को।। "यादवेन्द्र" व्रजकुल प्रतिपालक, कंस काल भय भीकौ।।३।।

भोग में राग-घनाश्री बधाई माई आज बधाई।।ध्रु.।। आज बधाई सब व्रज छाई।। व्रजकी नारि सबै जुरि आईं।।१।। सुंदर नंदमहरजूके मंदिर।। प्रगटयौ है पूत सकल सुख कंदर।।२।। होत ही ढोटा व्रजकी शोभा।। देखि सखी कछु और ही ओभा।।३।। मालिनसी जहाँ लक्ष्मी लोलै।। बंदनवार बाँधती डोलै।।४।। बगर बुहारत फिरत अष्टसिधि।। कोरेन साथिया चीतति नवनिधि।।५।। ग्रहग्रहतें गोपी गमनी जब।। रंगीली गलिनमें भीर भई तब।।६।। बीथी प्रेंमनदी छबि पावें।। नंदसदन सागरको धावें।।७।। हाथन कंचन थार रहे लसि।। कमलन चढ़ि आए मानों शशि।।८।। मंगल कलस जगमगे नगके।। भागे सकल अमंगल जगके।।९।। फूले ग्वाल मानों रणजीते।। भये सबनके मनके चीते।।१०।। कामधेंनुते नेक न हीनी।। द्वै लक्ष गाय द्विजनकों दीनी।।११।। नंदराय तहाँ अति रस भीने।। पर्वत सात रतनके दीने।।१२।। नंदराय गृह माँगन आये।। ते बहोर्‌यौं मांगन न कहाए।।१३।। घरके ठाकुरकें सुत जायौ।। "नंददास" तहा सब सुख पायौ।।१४।।

संध्या में राग-गौरी हौं चरणात पत्र की छैय्या।। (यह पूरा पद पेज १६६ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय (बधाई) राग-कान्हरौ वृज में श्री विट्ठलनाथ विराजे।। (यह पूरा पद पेज ५३ पर पढ़े।)

शयन में राग-कान्हरौ श्रीमद् वल्लभ रूप सुरंगे।। (यह पूरा पद पेज १६५ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग आवत जात हों हार परी री।। (यह पूरा पद पेज १६८ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाड़िली संग ले।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ९

श्रीमद् प्रभुचरण श्री गुसांईजी का उत्सव

शृंगार - कुल्हे जोड़के तथा शीशफूल, चाकदार कैसरी साटन का वागा, मोजाजी।

वस्त्र - श्रीमस्तक पर कुल्हे जोड़ का शृंगार चाकदार केसरी साटन का वागा, ठाड़े वस्त्र मेघश्याम तथा पिछवाई लाल रेशमी दरीयाई की तथा मोजड़ी केसरी साटन की धराई गई है।

आभरण - आज नियम का भारी शृंगार धराया गया। आभरण हीरा-माणक मोती के धराये गये।

विशेष – (जलेबी उत्सव) जलेबी तथा विविध कई प्रकार की सामग्री व पांच भात आरोगाये गये।

मंगला में राग-परज सुनोरी आज नवल बधायो है।। (यह पूरा पद पेज १८६ पर पढ़े।)

मंगला में राग-परज बृज भयो महरी के पूत... (यह पूरा पद पेज १६३ पर पढ़े।)

अभ्यंग समय राग-घनाश्री आपुन मंगल गावे हो रानीजू, आपुन मंगल गावें।। आज लालको जन्मद्योंस है, मोतिन चोक पुरावे।।१।। गामगाँमते जाति आपनी, गोपिन न्यौति बुलावें।। अन्वाचार्य मुनी गर्ग परासर, तिनपै वेद पढ़ावें।।२।। हरदी तेल सुगंध सुवासित, लाले उबटी न्हवावें।। हरि तन ऊपर वारि न्यौछावरि, जन "परमानंद" पावै।।३।।

राग-धनाश्री सबे मिली मंगल गावौ माई।। आज लाल कौ जन्मद्योंस है, बाजत रंग बधाई।।१।। आँगन लीपौ चोक पुरावौ, विप्र पढ़न लागे वेद।। करौ सिंगार श्याम सुन्दरकौ, चौवा चंदन मेद।।२।। आनंदभरी नंदजूकी रानी, फूली अंग न समाई।। "परमानंददास" तिहीं औसर, बोहोत न्योछावरी पाई।।३।।

राग-धनाश्री आनंद आज नन्दजु के द्वार।। दास अनन्य भजनरस कारन, प्रगटे श्याम मनोहर ग्वार।।१।। चंदन सकल धेनु तन मंडित, कुसुमदाम शोभित आगार।। पूरण कुंभ बने कंचन के, बीच बीच रूचिर पीपरकी डार।।२।। जुवती जूथ प्रति गोपी बिराजत, बाजत पणव मृंदग सुठार।। "हित हरिवंश" अजिर पुर वीथन, हरद दूध दधि घृत मधु खार।।३।।

राजभोग आते समय (बधाई) राग-घनाश्री नंदजु मेरे मन आनन्द भयो, सुनि गोवर्धनते आयो।। तुमारे पुत्र भयोहों सुनिके, अति आतुर उठिधायो।।१।। बंदीजन और भिक्षुक सुनि सुनि, देश देशते आये।। एक पहेलेंही आसा लागी, बहोत दिननके छाये।।२।।

श्रीमद् प्रभुचरण गुसाईंजी श्री विट्ठलनाथजी

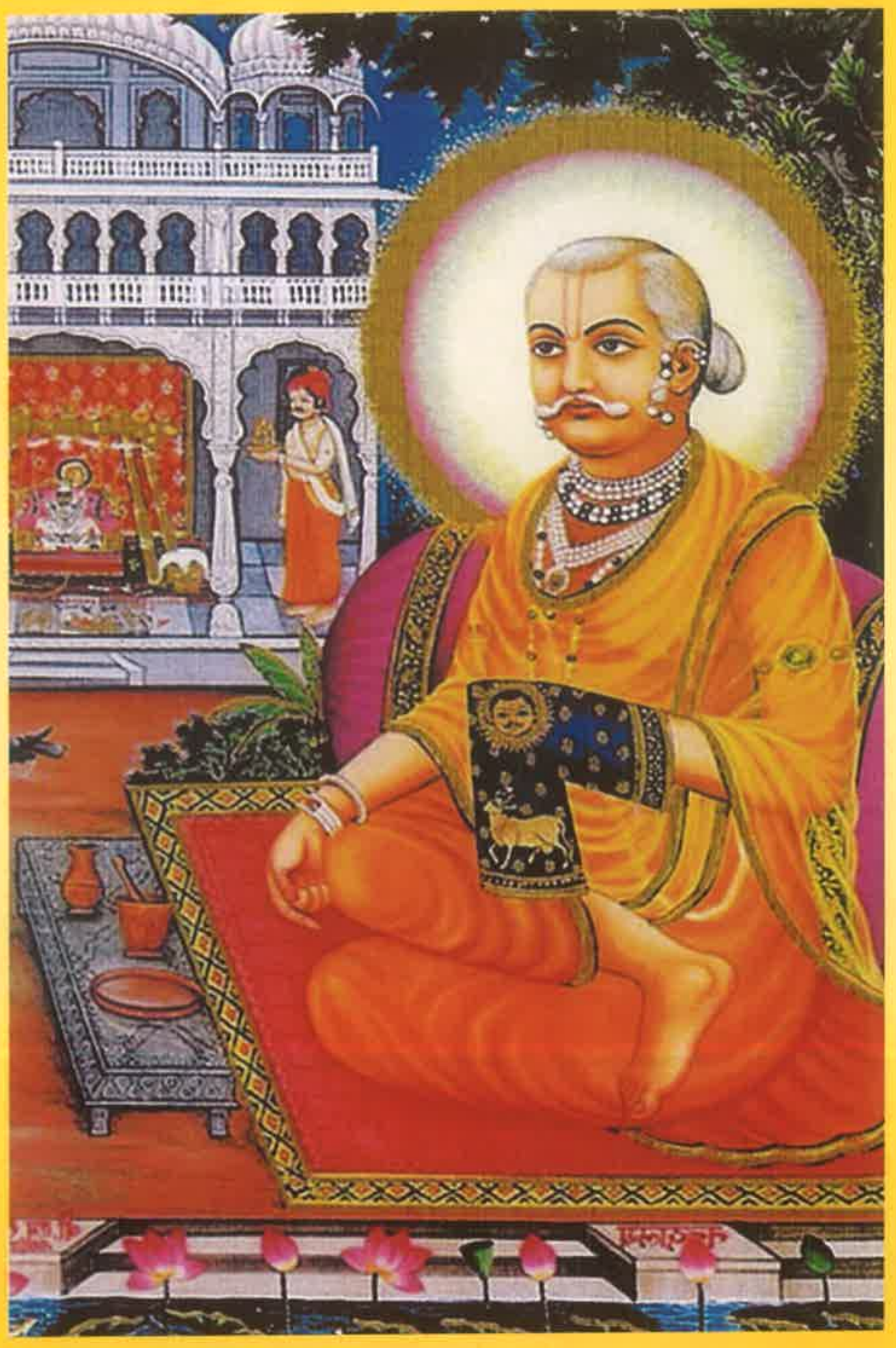

प.भ. श्री आसकरण धुलीलाल जड़िया, नाथद्वारा
का जय श्री कृष्ण

गुसाईंजी के उत्सव का श्रृंगार

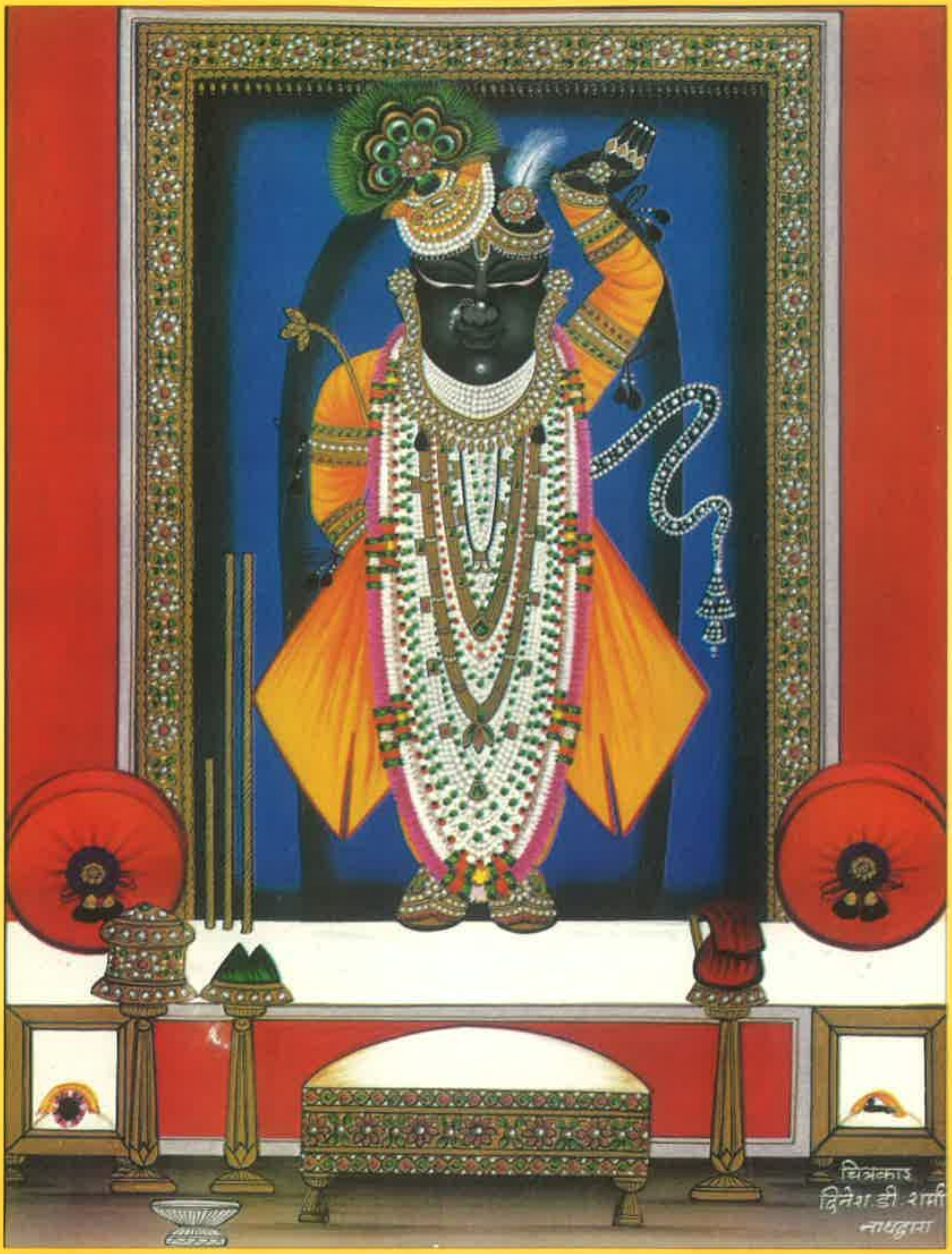
चित्रकार
दिनेश डी. शर्मा
नाथद्वारा

प.भ. श्री आसकरण धुलीलालजी जड़िया, नाथद्वारा
का जय श्री कृष्ण

तुम दीने कंचनमणि मुक्ता, नाना वसन अनूप।। मोही मिलें मारग में मानों, जात कहूंके भूप।।३।। दीजे मोही कृपा करी सोई, जो हों आयो मांगन।। जसुमति सुत अपने पायन चली, खेलन आवे आंगन।।४।। कोटी देहुं तो परयो रहुँगौ, बिनु देखे नहीं जाऊँ।। नंदराज सुनी बिनती मेरी, तबही बिदा भलें पाऊं।।५।। तुम तौ परम उदार नंदजू, जो माँग्यौ सो दिनौ।। ऐसौ और कौन त्रिभुवनमें, तुम सरको किनो।।६।। मदनमोहन मैया कहि बोलें, सुनिकें घर जाऊँ।। हो तौ तुम्हारे घर को ढ़ाढ़ी, "सूरदास" मेरौ नाँऊँ।।७।।

राग-बिलावल श्री वल्लभ गृह आज बधाई।। (यह पूरा पद पेज १६२ पर पढ़े।)

राग-सारंग विमल जस श्री विट्ठलनाथकौ।। भुवन चतुर्दस मानौ प्रगट भयौ, महिमा श्रुतिगाथ कौ।।१।। पतित सबै पान करि लिने, इहि प्रताप कुंज हाथ कौ।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, राखत सरन अनाथ कौ।।२।।

राजभोग में राग-सारंग आज बधाई को दिन नीको।। नन्द घरनी जसुमति जायो है, लाल भावतो जीको।।१।। पंच शब्द बाजे बाजत, घर घर ते आयो टिको।। मंगल कलश लिये व्रजसुन्दरी, ग्वाल बंधावत छीकों।।२।। देत असीस सकल गोपीजन, जीयो कौटी बरीसों।। "परमानंदास" को ठाकुर, गोप भेख जगदीशों।।३।।

भोग आरती में राग-गौरी आज बधावो श्री व्रजराजके, रानीजू जायो है मोहनपूत।।ध्रु.।। मास भादों द्योस आठे, रोहिणी बुधवार।। यशोदा की कूख प्रगटे, श्रीकृष्ण लियो अवतार।।१।। बहोत नारी सोहाग सिन्दुर, सबे घोख कुमारी।। साजन प्रितम नाम ले ले, दे परस्पर गारी।।२।। पुत्र मानो भये, निर्तत ठामो ठाम।। नन्द द्वारे भेंट ले ले, उमग्यो घर घर गोकुल गाम।।३।। साथिये श्यामा धरत, डारे सात सींव बनाय।। नव किशोरी मुदित व्हे व्हे, गहत यशुमति पायं।४।। चोक चन्दन लिपिके, आरति धरी है संजोय।। कहत घोषकुमार ऐसो, आनंद जो नित्य होय।।५।। एक मानिनि मंगल गावे, लीला गावें ग्वाल।। एक माखन दूख-दही ले, छिरकत फिरत है ग्वाल।।६।। एक हेरी दे दे नाचे, एक झटके दाई।। एक काहु वदत नाही, एक खिलावत गाई।।७।। एक नारि वृद्ध बालिक, एक जोबन जोरि।। एक काहू वदत नाही, एक हंसत मुखमोरी।।८।। कृष्ण जन्म प्रेम सागर, होत घोष विलाप।। देखी व्रजकी सम्पदा, जन फूले "माधोदास"।।९।।

संध्या में (आरती के समय) राग-कान्हरौ यह धन धर्म ही तें पायो।। (यह पूरा पद पेज २१६ पर पढ़े।)

शयन भोग आते समय राग-कान्हरौ श्रीवल्लभलाल बियारू कीजे।। पूरी शाक संधानों खटरस, बिलसारू रूचिकर ही लिजे।।१।। गुंजा मठडी जलेबी घेवर, थपड़ी सेव चनाकी लीजे।। "वृन्दावन चंद" जेंवत रूचिसों, जूठन रामदासको दीजे।।२।।

शयन में राग-नायकी सुधर सहेली सब मील आवों, गावों मंगल गीत।। (यह पूरा पद पेज २०१ पर पढ़े।)

मान में राग-केदार राय गिरीधरन संघ राधिका रानी।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सुखद सेज पोढ़े श्रीवल्लभ, संग पोढ़े श्रीनवनीत प्रिया।। ज्यों जसुमति सुत नंद नंदनको, त्यों प्रमुदित मन मांहि हिया।।१।। हुलरावत दुलरावत गावत, अंगुरिन अग्र दिखाय दिया।। कहत न बने देखत दृग नेननसों, दुःख विसरत सुख होत जीया।।२।। डरत जात बालक संग पोढ़े, हावभाव चितचाव किया।। "परमानंददास" गोपीजन सो, जस गायो धोख त्रिया।।३।।

पौष कृष्ण १०

शृंगार - कुल्हे जोड़ का। (प्रति श्रृंगार)

वस्त्र - पीली साटन के लाल गोट के कल का ही भारी शृंगार किया गया है।

आभरण - हीरा-माणक-मोती व सोने का भारी शृंगार किया गया है। ठाड़ा वस्त्र व पिछवाई कल के ही श्रृंगार धराये गये है।

मंगला में राग-बिलावल (चोखड़ा) मूलपुरूष नारायण यज्ञ, श्रुति अवतार भये सर्वज्ञ।। शाखा तैत्तरीय गोत्र भारद्वाज, तैलंग कुल उदित द्विजराज।। द्विजराजतें हरि आय प्रगटे, सोमयज्ञ कियो जबे, कुंडतें हरि कही बानी, जन्म कुल तुम्हरे अबे, चकित तत् क्षण भये सब जन, ऐसी अबलों न भई कबे, सुनत ही मन हरख कीनो, धन्य-धन्य कह्यो सबें।।१।। तिनके पुत्र भये गंगाधर, तिनके गणपति सुत वल्लभ वर, श्रीलक्ष्मणभट्ट अनुभव टेव, शुद्ध सत्व ज्यों श्रीवसुदेव।। सत्व गुण विद्या पयोनिधि, विशद कीर्ति प्रकटई, गाम कांकरवार में रही, जाति सब हरखित भई, पर्व पर सकुटुम्ब लेकें, चले प्रागकुं, साथ ले, स्नान-दान दिवाय द्विजकूं, चले काशी पात ले।।२।। कछुक दिन रही के चले सब दक्षण, आनंदित तनु सकुन सुलक्षण, चंपारण्यमें जब आये, इलम्मागारू गर्भ स्रवित जताये।। स्त्राव जानि चले तहांते, नगर चौड़ामें बसे, जगत में आनंद फेल्यो, दश दिशा मानो हँसे, चेन है सुनि चले काशी, फेर वही बन आवही, अग्नि चहुंथा मध्य बालक, देखि सन्मुख धावहीं।।३।। मारग दियो जानि जिय माता, लिये उछंग मोहे दियो है विधाता, तात सुनत दौरि कंठ लगाये, तिंहिं छिन मंगल होत बधाये।। मंगल बधायो होत तिहु पुर, देव दुंदुभि बाजहीं, जोतसी को लग्न पूछत, प्रथम समयो साधहीं, धन्य संवत पंद्रहा, पैंतीस माधव मास है, कृष्ण एकादशी श्रीवल्लभ, प्रकट वदन विलास है।।४।। श्रीवल्लभकूं ले आये काशी, सुंदर रूप नयन सुख राशी, सात बरस उपवीत धराये, तबतें विद्या पढ़न पठाये।। पढ़े चारों वेद अरू, खटशास्त्र महिना चारमें, ताकूं अचरज भयो, यह कौन रूप विचार में, नींद आई कह्यो प्रभुसे, संदेह क्यों तुम करत हो, प्रथम बानी भई है सो, प्रकट जानो अब भयो।।५।। जाग परी कह्यो पत्नी आगे, ये हे पूरण ब्रह्म अनुरागे, श्रीमुख वचन कह श्रीवल्लभ, मायामत खंडन भयो सुलभ।। सुलभतें दक्षिण पधारे, ग्यारे बरसको वपु धरे, देख मामा हरखकें, आदर कियो आवो घरे, विद्यानगर 'कृष्णदेव' राजा, बहुत मतही जहां मिले, जीतवे 'कनकाभिषेक' सूं, पढ़े आवत इहां पहिले।।६।। रामानुज अरू मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी, निमादित्य हरिभज, शंकरमें अनुसरत

और मत, युक्ति बलतें आज सबल अति, सबल सुन आपुहि पधारे, द्वारपें पहुंचें जबें, राय आय प्रणाम कीनो, सभामें जु पधारिये, सुनहो विनती कृपासागर, दुष्ट मतहि विदारिये।।७।। गजगति चाल चले श्रीवल्लभ, इनकी कृपा भये सब सुल्लभ, रविके उदय किरण ज्यों बाढ़ी, तैसी सभा पांत उठि ठाड़ी, ठाड़े सब स्तुति करे जब, कियो 'मायामत' खंडन, शब्द 'जै जै' होत सब मुख भक्ति पथ भुव मंडन, स्तुति करे द्विज हाथ जोरें, राय मस्तक नावहीं, परम मंगल होत है, 'कनकाभिषेक' करावही।।८।। पाछे जलसों न्हाय बिराजे, विनती करी राय मन साजे, 'द्रव्य सबे अंगीकृत करिये' प्रभु बोले 'यह नांहि ग्रहिये', ग्रहिये नाहिन स्नान जलवत, बांट सबकों दीजिये, बांट दीनो करी बिनति, 'मोहि शरणजु लीजिये', कृपा करि के शरण लीनो, थार भरि महोरें धर्यो, सप्त लेकें कह्यो दैवी द्रव्य अंगीकृत कर्यो।।९।। तहांते पंढरपुर जु सिधारे, श्रीविट्ठलनाथ मिलनकुं पधारे, भीमरथीके पार मिले जब, दोउ तनमें आनंद बढ्यो तब, बढ्यो आनंद करी बिनती, आपको यह श्रम भयो, कहि श्रीविट्ठलनाथजी ने, मित्रता पथ प्रकटियो, फेर श्रीगोकुल पधारे, निरख यमुना हरखहीं, संग दमलादिक हते, तिनपें कृपारस बरखही।।१०।। एकसमें चिंता चित्त आई, दैवी किहिं बिध जानी जाई? आसुरी सूं सब मिलित सदाही, भिन्न होय सो कौन उपाई।। भिन्नको जब चित्त धर्यो, तब प्रभु पधारे तिहिं समे, मधुर रूप अनंग मोहित, कहत सुध कीने हमें, करो अबतें ब्रह्म को, संबंध दैवी सृष्टिको, पांच दोष न रहे ताके, 'निवेदन' करो वृष्टि को।।११।। वचन सुनि हरखे श्रीवल्लभ, यह आज्ञातें परम अति सुल्लभ, कंठ पवित्रा ले पहराये, मिसरी भोग धरी मन भाये, भयो भायो चित्तको, तब पुष्टि पथकूं अनुसरे, शरण जे आवत निरंतर, काल-भयतें ना डरे, प्रकट सब लीला दिखावत, नंदनंदन जे करी, अवनि पर पद पद्म राखी, परिक्रमा मिष उर धरी।।१२।। फेरि पंढरपुर जब आये, श्रीविट्ठलनाथ कहि मन भाये, 'करि विवाह' बहु रूप दिखाओ, मेरो नाम सुवन को धराओ धरो चित्त में बात यह काशी विवाह जु होयगो, में कह्यो द्विज आय विनती, करे चरण समोयगो, आय वहांते विवाह कीनो, अधिक मंगल तब भयो, नाम धर्यो 'श्री महालक्ष्मी', देखि जोरि दुःख गयो।।१३।। परिक्रमा त्रीजी चित्त आई, निकस चले श्रीवल्लभराई, झारखंड में प्रभु ने जताई, अबते मोहि मिलो मनभाई।। मिलेंगे हरिदासपें, जहां तीन दमन कहावहीं, इन्द्र, नाग जु देवदमन, सो मेरो नाम धरावहीं, फेरके जब व्रज पधारे, पांच सेवक संग हें, सदू है आन्योर में, तहां द्वार पें ठाड़े रहे।।१४।। सदू कहि 'स्वामी कछु खैहे? मेघन कहि सेवकको लैहें', इतने प्रभु गिरि ऊपर बोले, 'लाई नरोदूध' रहे अनबोले।। बोली नरो

‘यह पाहुने आये, तिनहीं को बैठारिये’, प्रभु कहत मोहे बेर लागत, भली चित्त बिचारिये, ले गई पय प्याय आई, देख श्रीवल्लभ कह्यो, ‘बच्यो होय कछु हमें दीजें, बोल पहेलोही गह्यो’।।१५।। देख नरो बोली ‘हों वारी, नाम दीजिये गर्व प्रहारी’, नाम दीनो पूछि ‘वे कहां है’ कहि पर्वत जाओ तहांते, तहां देखे प्राणपति सब, हुलसि दोउ तन फूलही, वही समे सुख कहि न आवे, पंगु गति–मति भूलही, हंसि कह्यो ‘सकुटुंब आवो, निकट रहि सेवा करो’, मानि वचन प्रमाण कीनो, सासरे दिश पग धर्यो।।१६।। कछुक दिन रहि संग ले आये, बसे अडेलमें निज हरखाये, संवत पन्द्रह सडसठ आयो, आसो वदि द्वादशी शुभ गायो, गायो श्रीगोपीनाथजी, जब जन्म लीनो आयके, जानि बलको रूप हरखित, देत दान बढ़ायके, फेरके चरणाट आये, कछुक दिन रहे जानके, धन्य संवत पंद्रह, धन बहोंतरा शुभ मानके।।१७।। पोष कृष्ण नवमी जब आई, घर–घर मंगल होत बधाई, श्रीविट्ठलनाथ प्रकट भये सुनि के, कहत फिरत आनंद गुण गनि के आनंद बाढ़्यो चहुं दिशा, छबि निरखि श्रीवल्लभ हँसे, बेउ कछु मुसकाय चितये, दोऊ हँसत मेरे मन बसे, तिलक मृगमद छप्यो हरखित, कहांलो गुण गाईये, कृपातें उछलित निज रस, छिपत नाहीं छिपाईये।।१८।। श्री गोकुल में वास सुहायो, श्री रूक्मिणी, पद्मावती पति गायो, श्री गिरिवरधर जिनहीं छबीलो, श्री नवनीत प्रिय अरविलो प्रिय श्रीमथुरेश, श्री विट्ठलेश, श्री द्वारकेश जु, श्रीगोवर्धनधर, श्रीगोकुलचन्द्रमा, श्री मधुरेज जु, श्रीमदनमोहन अष्ट, यह विधि रमण श्रीविट्ठलनाथ के, तातको चित्त जानि सेवा, विस्तरी सब साथके।।१९।। पंद्रह से सत्ताणुं कार्तिक, विमल द्वादशी मंगल नित ढिंग, प्रथम पुत्र प्रकटे श्रीगिरिधर, षट्गुणधर्मी धर्मधुरंधर।। धुरंधर ऐश्वर्य श्रीगोविंद, पंचदश निन्यानवें, ऊर्ज शामल अष्टमी शुभ, गुरू सुदिन प्रकटे जबें, ऋतु वियत शुंगार आश्विन, असित तेरस भ्राजही, श्रीबालकृष्णजी महापराक्रमी, वह सुख सोलें राजही।।२०।। कवि सह सुदि सातें श्रीगोकुलपति, यश स्वरूप माला स्थापित रति, सोरह सें ग्यारह कार्तिक सित, अर्क बुध रघुनाथ श्रीसहित हेतु निज अभिधान प्रकटे, तात आज्ञा मानके, तिथि कला बुध मधु छठ, विमल ज्ञान बखानके, श्रीयदुनाथ प्रकटे रह्यो, विरह श्री घनश्याम स्वरूपके, सह कृष्ण तेरस रविज रिक्ष, सतकला श्रीविट्ठलभूपके।।२१।। भामिनी, रानी, कमला बखानी, पारवती, जानकी महारानी, कृष्णावती मिलि सातों कहाये, यह अलौकिक अष्ट छाप है, अलौकिक सब भक्तनजन जो, शरण लीने आप है, अलौकिक सब भक्तजन जो, शरण लीने आप है, यथामति कछु बरनि आई, जानियो यह दास है, ‘श्रीद्वारकेश’ निरोध मांगे, यही फलकी आश है।।२२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल द्वारे आय गुणी जन ठाड़े।। प्रकटे पुरूषोत्तम श्रीवल्लभ, सबहिन आनंद मंगल बाढ़े।।१।। श्रीलक्ष्मण भट दान देनकों, पट भूषण मणि-माणिक काढ़ें।। "सगुणदास" आस सब पूजी मानो, बरखत इन्द्र आषाढे।।२।।

राजभोग आते समय (बधाई) राग-देवगंधार चहूं युग वेद वचन प्रतिपार्यो।। (यह पूरा पद पेज ५२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सारंग नंद बधाई दीजै ग्वालन।। तुम्हारें श्याम मनोहर आये, गोकुलके प्रतिपालन।।१।। युवतिन बहु विधि भूषन दीजै, विप्रनकों गौदान।। गोकुल मंगल महामहोत्सव, कमल नैन घनश्याम।।२।। नाचत देव विमल गंधर्व मुनि, गावे गीत रसाल।। "परमानंद" प्रभु तुम चिरजियौं, नंद गोपके लाल।।३।।

भोग में राग-नट श्री लक्ष्मण भट्ट देत बधाई।। श्रीवल्लभप्रभु आनंदकी निधि, प्रकट भये गृह आई।।१।। धर्म आदि पुरूषारथ चार्यों, सबहीकों उरलाई।। निजजनकों कृपा प्रेम रस, आनंद वेलि बढ़ाई।।२।। निज जन सुन सुन अति आनंदित, गावत मंगल आई।। उदय भयो धन्य भाग्य हमारो, फिर लीला प्रकटाई।।३।। यह कालिंदी यह वृन्दावन, गिरि गोवर्धनधारी।। नंदनंदन संग केलि करो बल, "दास" चरण बलिहारी।।४।।

संध्या में राग-कान्हरौ आछी निकी सोहत हसत, द्वै द्वै दूधकि दतियाँ।। घुटरन आंगन रिंगन मोहन, खेलत आन भतियां।।१।। लर लटकन मटकन कर पहोंची, बोलत तोतरी बतियां।। मुख चुम्बत "रघुनाथदास" बलि, हंसी लगावत छतियां।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ आज धन्य धन्य भाग्य हमारे, प्रकटे श्री विट्ठलनाथ।। (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग मोहन मुखारविंद पर, मनमथ कौटिक वारों री माई।। (यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ११

गोस्वामी तिलकायत श्रीगोविंदजी महाराज को उत्सव

(देहरी वन्दन माल)

श्रृंगार - कुल्हे जोड़ का।

वस्त्र - सफेद किनखाब के छोटी बूटी के सुथन तथा वागा चाकदार, पटका सफेद रूपहरी कोरका। पन्ना की जड़ाऊ कुल्हे पर पन्ने का पान, श्रृंगार सब पन्ना मोती के। ठाड़ा वस्त्र लाल पिछवाई सफेद साटन की कलाबुत के काम की।

मंगला में राग-बिलावल बलिबलि चरित्र श्री गोकुल राय।। दावानल को पान कीयौ, पीबत दूध सिराय।।१।। पूतना के प्रान शोषे, रहे उर लपटाय।। कहत जननी दूध डारत, खीजत कछुब न खाय।।२।। धरयौ गिरिवर दाहिने कर, धरत बाँह पिराय।। शकट भंजन धरत कुच युग, कठिन लागत पाय।।३।। तृणावर्त आकाशतें पटक्यौ, हन्यौ मुष्ट फिराय।। डरत ललना झूलत पलना, खरे देत झुलाय।।४।। बकासुर की चोंच फारी, सुदिस दृष्टि दिखाय।। कीर पिंजरा देत अँगुरी, श्याम लेत भजाय।।५।। बिना दीपक भवन द्वारें, श्याम धरत न पाय।। अघासुर मुख पैठि निकस्यो, बच्छ बाल छुड़ाय।।६।। लिख्यौ द्वारें नागकारौ, स्याम देखि डराय।। सहस्त्र फन पर निर्त कीनों, सप्त ताल बजाय।।७।। घोषनारी संगमोहन, रच्यौ रास बनाय।। कहत जननी ब्याह की तब, हँसत वदन दुराय।।८।। यमलार्जुन तोरि तारे, हृदै प्रेम बढ़ाय।। कहत तात प्रकास पल्लव, देह देत दिखाय।।९।। वृषभ भंजन हनत केशी, हन्यौ पुच्छ फिराय।। डरत सखान समेत मोहन, देखि ब्याई गाय।।१०।। हरे ब्रह्मा बाल बच्छ कृत, देत दोरी माय।। बच्छ ग्वाल समूह सब मिलि, फिरि व्रज रज्यौ है आय।।१।। कहा कहूँ जो एक रसना, बुद्धि और उपाय।। "सूर" प्रभु हरि रसिक नागर, अंगअंग नित भाय।।१२।।

श्रृंगार में राग-बिलावल बालदशा गोपालकी सब काहू भावैं।। जाके भवन में जात है सो, लै गोद खिलावै।।१।। श्यामसुंदर मुख निरखिकें, अबला सचुपावै।। लाल लाल कहि ग्वालिनी, हँसी कंठ लगावै।।२।। चुटकी दै दै मुदित व्है, करताल बजावै।। "परमानंद" प्रभु नाचहीं, शिशुताई जनावै।।३।।

राजभोग आते समय राग-असावरी हरी भोजन करत.. (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

राजभोग में (बधाई) राग-सारंग श्री वल्लभ नंदन रूप अनूप..(यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

भोग में राग-गौरी कौन सुकृत इन वजवासिनको, बदत विरंचि शिव शेष।। श्रीहरि जिनके हेत, प्रगटे मानुष वेष।।ध्रु.।। जोति रूप जगधाम जगतगुरू, जगतपिता जगदीश।। योग यज्ञ जप तप व्रत दुर्लभ, सो गृह गोकुल ईश।।१।। एक एक रोम कूप विराट सम, अनंत कोटि ब्रह्मांड।। लिये उछंग बाहि तात यशोदा, अपने निज भुजदंड।।२।। जाके उदर लोक त्रय जल थल, पंच तत्व चहुँखान।। बालक होई झूलत व्रजपलना, जसुमति भवन निधान।।३।। अनुदित श्रवण सुधारस पंचम, चिंतामणिसी धैन।। सो तजि जसुमतिकौ पय पीवत, भक्तनकों सुखदैन।।४।। करन हरन प्रभु दाता भुक्ता, विश्वंभर जगजानि।। ताहि लगाय माखनकी चोरी, बाँध्यो हे नँदरानि।।५।। रवि शशि कोटि कला सम, लोचन त्रिविध तिमिर मिटि जात।। अंजन देत हुत सुतके चक्षु, लै कर काजर मात।।६।। कमला नायक बैकुंठ दायक, दुख सुख जाके हाथ।। काँधे कामरी कर लकुट नग्न पद, बन बछरनके साथ।।७।। वेद वेदांत उपनिषद षटरस, अरपत भुक्तत नाँहि।। गोप गवालनकी मंडली मोहन, हँसिहँसि जूठिन खाँहि।।८।। क्षिति नापी तृपद करूनामय, बलि छल दियौ पतार।। देहरी उलंघ सकत नहीं सो प्रभु, खेलत नंददुवार।।९।। बकी बकासुर शकट तृणावर्त, अघ धेनुक वृषभास।। कंस केसी को यह गति दीनी, राखे चरन निवास।।१०।। भक्तवत्सल प्रभु पतित उधारन, रहे सकल भरपूर।। मारग रोकि परयौ हट द्वारें, पतित सिरोमणि "सूर"।।११।।

संध्या में राग-गौरी तेरी लाल लागो मोय बलाय।। बाल गोपाल छगुनवा मेरे, चलो आंगन छाय।।१।। लाल जू के लटकन मटकन कर, पोहोंची नुंपुर बाजे पाय।। चुटकी दे दे ग्वाल नचावत, मुदित यशोदा माय।।२।। आनंद भरी नंदजू की रानी, अंग-अंग निरखत आय।। "परमानंद" नंदनंदन को, राखो उर लपटाय।।३।।

शयन दर्शन में राग-कान्हरौ आज धन्य भाग्य.. (यह पूरा पद पेज ५५ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग मोहन मुखारविंद पर.. (यह पूरा पद पेज १७५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-कान्हरौ धन्यरानी यशुमत ग्रह आवत गोपीजन।। वासर ताप निवारन कारन, वारंवार कमल मुख निरखन।।१।। चाहत पकर देहरी उलंघन, किलकी किलकी हुलसत मनही मन।। राई लोन उतारी दुहूँ कर, वारी फेरी डारत तन-मन-धन।।२।। लाले लेत उछंग चांपत हियो, भरी प्रेम विवश लागे दृग ढ़रकन।। ले चली पलना पोढ़ावन कों, अरकसाय पोढ़े सुन्दर घन।।३।। देत असीस सकल गोपीजन, चिरंजीयों लाल ज्यों गंग जमन।। "परमानन्ददासको" ठाकुर, भक्त वत्सल भक्तन मन रंजन।।४।।

पौष कृष्ण १२

शृंगार - टिपारा को।

वस्त्र - हरी खीनखाप के छोटी बुंटी के शुथन तथा वागो चाकदार कटि में हरा पटका रूपहरी कोर का धराया गया है। श्रीमस्तक पर टिपारों हीरा जड़े हुवे उसपर टिपारे का साज मोरपंख का।। ठाड़ा वस्त्र लाल तथा पिछवाई सुनहरी बुंटी की धराई गई है।

आभरण - शृंगार चरणारवृंद तक भारी हीरा-माणक-मोती व सोने का धराया गया है।

विशेष - आजसे बाललीला सम्पूर्ण तथा खंडिता की लीला प्रारम्भ है।

मंगला मे राग-ललित **माई! मेरो मोहनसों मन मान्यो।। अपने तन अरू कमलनयन कौ, एक ठौर करि सान्यो।।१।। लोक वेद की लाज तजी मैं, न्यौति आपने आन्यों।। एक गोविंदचंद के कारण, बैर सबनी सौ ठान्यो।।२।। अब क्यों भिन्न होहि मेरी सजनी, दूध मिल्यौं जैसें पान्यों।। "परमानंद" मिलिहों मोहन कों, है पहिलों पहिचान्यों।।३।।**

शृंगार में राग-रामकली **निर्तत मोहन रसिक सखन संग।।** (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आशावरी **भोजन करतहें गोपाल।।** (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-टोड़ी **निर्तत रस दोऊ भाई रंग।। सुलप संच गति लेत ग्रग्रतत किधिकिट, द्रुमद्रुमद्रुम बाजत मृदंग।।१।। कनक बरन टिपारो सिर, कमल बरन काछनी कटि, बनज धातु अति विचित्र सोहैं श्यामअंग।। "गोविंद" प्रभु त्रेलोक विमोहित, देखत ठगेसे ठाड़े रहे कोटि अनंग।।२।।**

भोग में राग-पूर्वि **नाचत गावत बनते आवत लाल, टिपारो सिस रहयों फबि।।** (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

भोग में राग-गौरी **अग्र तक तक ध्रं ध्रु ध्रुदनन, वर आवत गोधन संग।।** (यह पूरा पद पेज १५९ पर पढ़े।)

शयन दर्शन में राग-नायकी **तू मोहि कित लाईरी यह गली।।** (यह पूरा पद पेज २०९ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी **सरस बनी, प्यारी सरस बनी।।** (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग **पोढ़े रंग महल सुखदाई।।** (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण १३

शृंगार - पाग कतरा को।

वस्त्र - मेघश्याम शाटन के बिना कोरके, शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर पाग पर रूपहरी जरी के काम का कतरा धराया गया है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा-मोती के तथा ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम, पिछवाई मेघश्याम की धराई गई है।

मंगला में (खंडिता के पद) राग-ललित मेरे आये भोर प्यारे, रेनि कहां गवांई।। कौन त्रिया संग बस परे मोहन, जानि परी चतुराई।।१।। गरे हार बिनु डोर बिराजत, नख-क्षत देत दिखाई।। "छितस्वामी" गिरिधर वाही पै, यावक पाग रंगाई।।२।।

शृंगार में राग-परज रंगभरी मुरत अनंगभरी अँखियां, संग लिये प्यारीको महल मेरे आये हो।। बेठो जू पलंग पर पलकनसों झारो मग, तनमन धन वारों भागी मेरे आये हो।।१।। ऐसी है जू कोन त्रिय जिन वदन विलोक्यों, ताई के तो भाग जागे मृदु मुसकाये हो।। "नंददास" प्रभु तुम बहुनायक, मोहिनी के मोहीवे को मोहन बन आये हो।।२।।

राजभोग आते समय राग-आशावरी हरि भोजन करत विनोदसो।। कर कर कौर मुखारविंद में, देत जसोदा मोदसों।।१।। मधुमेवा पकवान मिठाई, दूध दह्यो घृत ओद सों।। "परमानंद" प्रभु भोजन किन्हों, भोग लग्यों संखोदसों।।२।।

राजभोग में (हिलग के पद) राग-टोड़ी श्यामा श्याम कुंज बन आवत।। भुज भुज कंठ परस्पर दीन्हे, यह छबि उनहीं पावत।।१।। इतते चंद्रावली जाती ब्रज, उततें ये दोऊ आये।। दूर ही तें चितवत उनहीं, तन इक टक नैन लगाये।।२।। एक राधिका दूसरी को है, याकौ नाहि पहिचानौ।। ब्रज बृषभानपुरा जुवतिनिकौ, एक-एक करि मै जानौ।।३।। यह आई कहुँ और गॉवते, छबि साँवरि सलोनी।। "सूर" आज यह नई बतानी, एकौ अंग न बिलोनी।।४।।

राजभोग में राग-आशावरी कृष्ण नाम जबतें श्रवन सुन्योंरी आली, भुलीरी भवन हों तो बावरी भईरी।। भर भर आवे नैन, चितहुँ न परे चैन, मुखहुँ न आवे बैन, तनकी दसा कछु औरें भईरी।।१।। जेतेक नेमधर्म, कीन्हे री मैं बहुविध, अंग अंग भई, हौं तो श्रवन मई री।। "नंददास" जाके श्रवन सुने यह गति, माधुरी मूरति कैंधों कैसी दई री।।२।।

भोग में राग-नट जो तूं अछन अछन पग धरनि धरें।। निस अँधियारी कोऊ नही जानत, नूपूर ध्वनि जिन प्रकट करें।।१।। किसलय-दल कुसुमनकी सय्या रची, चल निहार नवकुंज धरें।। “चतुर्भुजदास” स्वामिनी बेगि चल, रसिकराय गिरिधरन वरें।।२।।

संध्या में राग-ईमन गोवर्धन चढ़ि टेरी हो गाँग बुलाई धूमरी धौरी।। (यह पूरा पद पेज १७६ पर पढ़े।)

शयन में राग-अडानों आली री! साँवरी मूरति तेरे जियमें बसती, काहे को दुराव करति न दुरती।। नैननि-बैनति-हुतें प्रकट देखियत हैं, धाम धरी निधि जैसे लिलाट लसति।।१।। मुखकी रूखाई तो छिपाई न छिपति हैं, आछी आननकी ज्योति, चंद ज्योति को हरति।। “नंददास” प्रभु ऐसी सँकुच कौनकी चली, जाको मुख देखे तेरे उरको तिमिर लसति।।२।।

मान में राग-अडानो तेरी भ्रौंह की मरोरन तें, ललित त्रिमंगी भये, अंजन दे चितयों, भयेजू स्याम वाम।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण १४

श्रृंगार - वस्त्र पिली साटन के रूपेरी कोर के, शुथन लाल सोनेरी छापाको वागो घेरदार पिली साटन का। श्रीमस्तक पर पाग पर सोनेरी जरी का चीरा तथा सोनेरी जरी के कामका नागफणी कतरा धराया गया है। ठाड़ा वस्त्र हरा रंगका तथा पिछवाई सोनेरी छापा की जीसमें बड़े-बड़े मोर कला कर रहे है।

विशेष - आज पिताम्बर को चोलना को श्रृंगार धराया गया है।

मंगला में राग-ललित कहाँ जु बसे सारी रात नंदसुत।। चार पहर मोहि चार युग बीते, तुम जो आये परभात।।१।। लटपटी पाग नींद भरि अँखियाँ, काजर लाग्यो तेरे गात।। चोली के बंद चुभ रहे तन में, कसन भयों सब गात।।२।। रहो रहो बृषभान नंदिनी, सुन है यशोदा मात।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन को, रजनी कल्प सम जात।।३।।

श्रृंगार में राग-बिलावल पीताम्बर को चोलना पहरावत मैया।। कनक छाप तापर धरि, झीनी एक तनैया।।१।। लाल इजार चुनाय की, ओर जरकसी चीरा।। पोहंची रत्नजराय की, उर राजत हीरा।।२।। ठाडी निरख यशोमति, फूली अंग न समैया।। काजर ले बिंदुका दियो, ब्रजजन मुसकैया।।३।। नन्दबाबा मुरली दई, कह्यो ऐसें बजैया।। जोई सुने जाको मनहरे, "परमानंद" बल जैया।।४।।

राजभोग आते समय राग-आशावरी भोजन करत हैं पिय अरू प्यारी।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी माईरी मिठे हरिजू के बोलना।। पाय पैंजनियां रूनझून बाजत, आँगन-आँगन डोलना।।१।। काजर तिलक कण्ठ कठुलामणी, पीताम्बर को चोलना।। "परमाननंददास" को ठाकुर, गोपी झुलावत झोलना।।२।।

राजभोग में राग-टोड़ी देखरी मैया कैसे है बलदाऊ भैया, यमुना के तीर मोहे झुझुवा बतायो।। सुबल श्रीदामा साथ हँस हँस बूझत बात, आप डरपे ओर मोही डरपायो।।१।। जहीं जहीं बोले मोर चिते रहत ताही ओर, भाजोरे भाजोरे भैया वह देखो आयो।। आप गये तरू चढ़ मोही छांड्यो वाही तर, धरधर छाती करे दोर्यों घर आयो।।२।। उछंगसों लिये लगाय कंठसों रहे लपटाय, वारी रे वारी मेरो हियो भर आयो।। "परमानंद" रानी द्विज बुलाय वेदमंत्र पढ़ाय, बछिया की पूंछ गहि हाथहि दिवायो।।३।।

भोग में राग-कान्हरौ मोहन माखन चोरी करत फिरत, बरजों रानीजू।। माखन चोरी करो तो भलेई करो, ताको कछु न कहे री माई, और चोरी चित करत फिरत।। ताको रानी तुम हटको, देखत मनजु हरत।।१।। तनगति मनगति सब बिसरीरी, आवे न कछू गृहकाज करत।। निसदिन फिरत संग लागी लागी, “गोविन्द” प्रभुकी मैया सुनी सुनी मन हरषत।।२।।

संध्या में राग-ईमन महरि पूत तेरो, कैसेऊ बरज्यों न मानें।। बलमोहनकी जोटिऊ, और बालक संग लिये, मरकट घेरें फिरें पाछेतें, और लूटत घर मेरों।।१।। दूध दही घृत माखन, तनक न उबरत, कैसेक होय विस्वास, हम केरों।। “गोविंद” प्रभुके जू बाल विनोद, सुनत नंदरानी, मनहीमन मुसक्यानी, साँची ही कहत अनेरों।।२।।

शयन में राग-इमन/गौरी कहां केसें खेले लालन, बात कहो मोसों बनकी।। (यह पूरा पद पेज १३५ पर पढ़े।)

शयन में राग-इमन मोहन माखन चोरी करत फिरत, बरजों रानीजू।। (यही पद ऊपर भोग में आया है।)

मान में राग-अड़ानों खंजन नयन रूप रसमाते।। अतिशय चारू चपल अनियारे, पल पिंजरा न समाते।।१।। उड़उड़ जात निकट श्रवणनके, उलट फिरत ताटंक फंदाते।। “सूरदास” अंजन गुण अटके, नातरू अबहि उडजाते।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पौष कृष्ण ३०

(चि. गो. श्री भूपेश कुमार जी का जन्मोत्सव)

श्रृंगार - टिपारे का।

वस्त्र - केसरी साटन के वागा चाकदार, श्रीमस्तक पर टिपारें का साज, रूपहरी कोर के ठाडा वस्त्र मेघ श्याम, पिछवाई सोनेरी जरी के भरत काम की।

आभरण - हीरा माणक मोती व सोने के भारी श्रृंगार धराये गये।

विशेष - राजभोग में सोने का बंगला धराया गया।

मंगला में राग-ललित सुघर त्रिय कौन, वाही पे उतारो राई लोन।। नागर नटवर नेक चितवन, में रेन रहे भोंन।।१।। जा सुखको सनकादिक तरसत, मुनी धर रहे मोंन।। "रसिकप्रीतम" पीय चारौं जांम बिते, अनहोनी भई होंन।।२।।

श्रृंगार में राग-रामकली निर्तत मोहन रसिक सखन संग.... (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-धनाश्री जेंवत नंद कान्ह बलभैया।। (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी विमल कदब छांह तर ठाडे हैं पिय भानुसूता तट।। (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वि नाचत गावत बनते आवत लाल टिपारो सिस रहयों फबि।। (यह पूरा पद पेज १५८ पर पढ़े।)

संध्या आरती में राग-गौरी अग्र तक तक ध्रं ध्रु ध्रुदनननन निर्तत रसिक वर आवत गोधन संग।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

शयन में राग-ईमन लालन मुख की लोंनाई, कैसे हूं बरनी न जाई।। भाल तिलक कुटिल अलक बीच, चंपकली अरू झाई।।१।। अरून नैन मद माते तरून बरखे करन, अमृत मंदहास की जुन्हाई।। सुभग कपोल मृदु बोल "गोविन्दप्रभु" के, अंगअंग सुन्दर मनिराई।।२।।

मान में राग-ईमन झमकि चल राधे, तोपें श्याम बुलावें।। (यह पूरा पद पेज १७६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े माई मदन मोहन श्याम।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े।)

श्री विशाल बावा के जन्मदिन का श्रृंगार

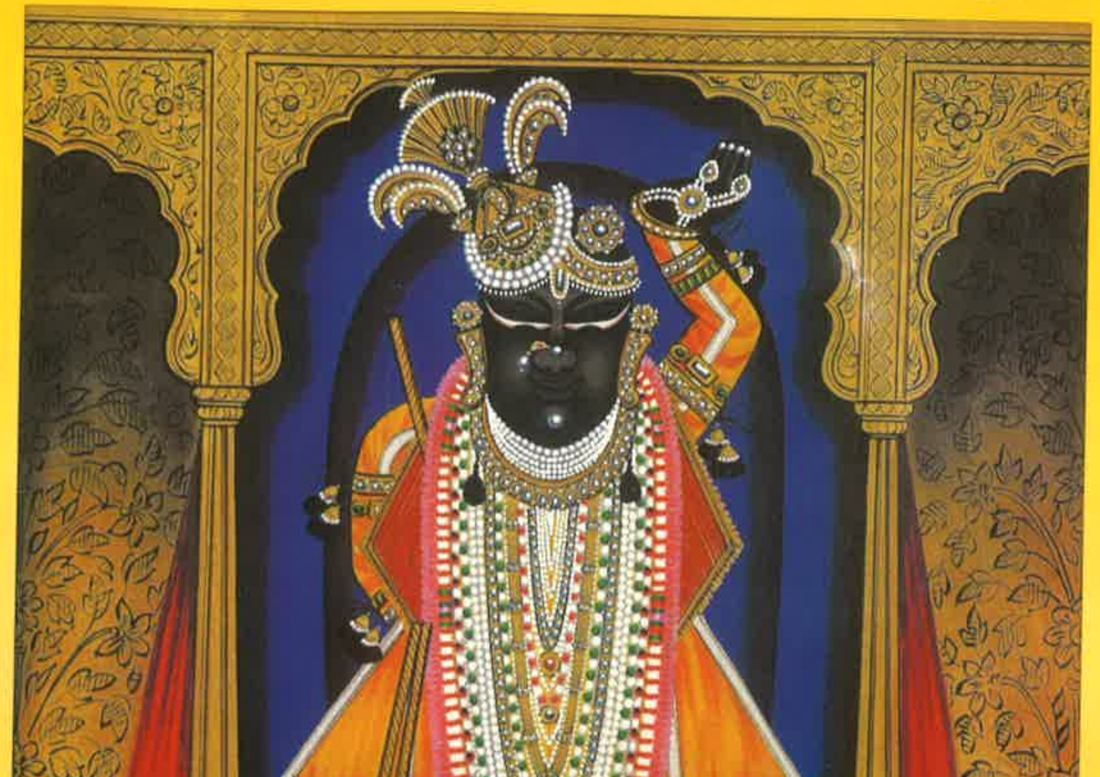
चित्रकार
दिनेश डी. शर्मा
नाथद्वारा

प.भ. श्रीमती आशाबेन द्वारकादास पारख, उदयपुर
का जय श्रीकृष्ण

श्री दामोदरलालजी एवं श्री विशाल बावा

प.भ. मोहनलाल बृजबिहारीलाल वार्ष्णेय हींगवाला, हाथरस (उ.प्र.) का जय श्रीकृष्ण

पौष शुक्ल १

शृंगार - पाग फतवी का।

वस्त्र - सफेद साटन की शुथन तथा घेरदार वागा ऊपर श्याम मखमल की मोती के काम की फतवी धराई गई है। श्रीमस्तक पर खिड़कीदार पाग पर रूपहरी जरी के कामका कतरा धराया गया है। श्रीचरण कमलों में सफेद साटन की मोजड़ी तथा ठाड़ा वस्त्र व पिछवाई लाल सुनहरी जरी की, भरत काम की धराई गई है। आभरण नित्यानुसार।

मंगला में राग-खट कान्हर कारो नन्द दुलारो, मों नेंनन को तारो री।। प्राण पियारो जग उजियारो, मोहन मीत हमारो री।।१।। द्रग में राजत हिय में छाजत, एकों छिन नहीं न्यारो री।। मोहन मुरली की तान सुनावे, रूप अनुपम बारो री।।२।। चरणकमल मकरंद लुब्धवे, मानो मधुकर गुंजारो री।। रसरंग केल "छबिले" प्रभुसंग, हितसों सदा विहारो री।।३।।

शृंगार में राग-ललित कहो तुम सांची कहांते आये, भोर भये नन्दलाल।। पीक कपोलन लाग रही है, घूमत नयन विशाल।।१।। लटपटी पाग अटपटै बंदसो, उर सोहे मरगजी माल।। "कृष्णदास" प्रभु रसवश कर लीने, धन्य धन्य व्रज की बाल।।२।।

राजभोग आवता (ग्रह भोजन के पद) राग-धनाश्री भोजन करत पिय अरू प्यारी।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी सुनि मेरो वचन छबिली राधा।। तैं पायो रससिन्धु अगाधा।।१।। जे रस निगम नेति नेति भाख्यो।। ताकौं तैं अधरामृत चाख्यो।।२।। सिव विरंची के ध्यान न आवै।। ताकौं कुंजनी कुसुम बिनावै।।३।। तू वृषभानु गोप की बेटी।। मोहनलाल कों भावतें भेटी।।४।। तेरो भाग्य मोहि कहत न आवै।। कछुकं रस "परमानंद" गावै।।५।।

भोग में राग-नट रूप देख नैना पलक लागे नहीं।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी आवत हैं आगें दे गैयाँ।। सुबल सुबाहु श्रीदामा संगी, क्वनित बेनु नित ही की नैयां।।१।। एक वे पैंज करत है ठाडे, धाय छुवत वे श्याम की छैयाँ।। हम आगे तुम पाछें परसें, ग्वाल परस्पर करत बढ़ैया।।२।। घेर रहे सब करत कुलाहल, देत गोपाल हिं नंद दुहैयां।। औरहु ग्वाल करत बहु क्रीड़ा, "रामदास" प्रभुके मन भैयां।।३।।

शयन में राग-बिहाग वारौं मीन खंजन आलीके..(यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग पिय तोहे नैनन मे ही राखो।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष शुक्ल २

शृंगार - दुमाला को, दोहरा वागो।

वस्त्र - अमरसी और वादलीरंग के साटन के शुथन, शीत काल में नीचे केसरी (अमरसी) के ऊपर मेघश्याम वागा धराया गया है। श्रीमस्तक पर दुमाला पर रेशम की केशरी मोर शिखा धराई गई है। चरण कमल में मेघश्याम मोजड़ी शाटन की तथा नुंपुर सोनाके, वेणुवेत्र लहरदार मीना के, ठाड़ा वस्त्र हरा रंग के, पिछवाई पीली व मेघश्याम हांसिया की धराई गई है। खिचड़ी आरोगाई जाती है। आभरण नित्यानुसार पिरोजा मोती के।

मंगला में राग-ललित सुघर त्रिय कौन..(यह पूरा पद पेज २३६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-ललित मैया तेरो मोहन अतिहि सयानो, देत अटपटी गारी।। कुंजमहल में अचरा फार्यो, हँसि हँसि दै दै तारी।।१।। गोरस ढ़ोरे मनके जोरे, माट दही के फोरे।। उठावे की डोरी कैसे बांधो, चौदह भवन बंध तोरे।।२।। अधर-पान परिरंभन चुंबन, कहीं कहा लजानी।। सुक नारद सो लीला अगोचर, "सूर" केतीक बखानी।।३।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री रूचि सों जेवत जुगल किशोर।। हास्य विनोद करत हैं बहु विध, देत परस्पर कोर।।१।। जो भावे सो लेत हैं दोऊ, ललितादिक तृन तोर।। "सूरदास" यह सोभा ऊपर, देत प्रान अकोर।।२।।

राजभोग में राग-असावरी चलरी सखी नंद गांव.. (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

भोग में राग-पूर्वि हाकें हटक हटक.. (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी माई बंसीकी भनक कान परन लागी..(यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग हिम ऋतु सिसिर ऋतु अति सुखदाई।। प्यारीजूके फरगुल सोहे, प्रीतम औढ़े सरस कवाई।।१।। रंग महल में परदा सुहाये, धरी अंगीठी अति सुखदाई।। बरत अंगार अंबर अति महकत, सरस सुगंध रह्यों तहँ छाई।।२।। कबहुक मधुर सीत तन व्यापत, बैठत अंग सो अंग मिलाई।। श्रीवल्लभ पदरज प्रतापतें, दास "रसिक" तहाँ बलि जाई।।३।।

मान में राग-बिहाग सरस बनी प्यारी सरस बनी।। झगमग ज्योति जड़ावको गहनो, ऐसी बनी जैसे हीराकी कनी।।१।। दुलरी ऊपर तीलरी सोहे, बीच बीच पदक मनी।। "सूरदास" प्रभु प्यारी मुख निरखत, ये छबि कापें जात गनि।।२।।

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋृतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पौष शुक्ल ३

शृंगार - लाल पाग व पटका का।

वस्त्र - लाल शाटन के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार तथा कटि में पीला सूती पटका, श्रीमस्तक पर लाल पाग छोड़ वाली पर सोनेरी जरी के कामकी गोल चन्द्रिका तथा लुमक धराई गई है। मोजड़ी लाल साटन की हार हमेल, हीरा मोती के आभरण धराये गये है। ठाड़ा वस्त्र पीला तथा पिछवाई लाल रेशम की भरत काम की धराई गई है।

मंगला में राग-ललित भली कीनी लाल गिरिधर, भोर आये बोल सांचे।। युवती वल्लभ विरद कहियत, तुम भले हो बांचे।।१।। यहां आये कौन पढ़ाये, मानो मंत्री कांचे।। तहां ही सिधारो लालन, जा त्रिया संग रंग राचे।।२।। अधर सूकत श्वास थिर नहीं, नव त्रिया संग बंद बाचे।। सुन "कृष्णदास" नागरी कहत, ज्योंहि नचाये त्यों ही नाचे।।३।।

शृंगार में राग-ललित कहो तुम सांची काहांते आये..(यह पूरा पद पेज २३७ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-धनाश्री आरोगत नंदलाल सयाने।। खटरस व्यंजन पाक मिठाई, दूध दही पकवाने।।१।। अचवावत हैं मात जसोदा, सीतल जल गोपाल अघानें।। "परमानंद" प्रभु जेंव उठे तब, बीरी दइ सुख मानें।।२।।

राजभोग में राग-आशावरी नेंक चितें चलेरी लालन, सखि ले जु गये चित चोर।। कबही हौं द्वारे ठाड़ी चितवत ही, प्रितम की मुसकानी मुख मोर।।१।। हौं दधिमथन करत भवनमें, उझकी चले ब्रजराज किशोर।। लटपटी पाग केस विलुलित सखी, ना जानौं कहाँतें आये उठि भोर।।२।। सब निसि जागे डगमगत चरन गति, खसि खसि परत पीतपट छोर।। "गोविंद" प्रभुकी लखि न जात गति, ऐसी वह चतुर नागरी कोर।।३।।

भोग में राग-पूर्वि सोहत लाल पाग सांकरे पेचन.. (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी टेढ़ी हेरी आली टेढी अलक लट.. (यह पूरा पद पेज १४२ पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानों मैं जब देखे री गोपाललाल, मोहनि मूरत नंदलाल, तन मन धन न्योछावर करन कों ले गई।। सुन्दर रूप उजागर नागर, ताकि छबि चित्र चितेरेने लिख लई।।१।। गरे सोहे गुंजामल, ताते मोहि ब्रज की बाल, ऐसी छबि निहारी मगन भई।। "नंददास" प्रभु कौन मंत्र पढ़ डार्यो मुरली, अधर धरि बजाई मधुरे नई।।२।।

मान में राग-नायकी लालन मनाये न मानति लाडिली.. (यह पूरा पद पेज १४३ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़िये लाल लाडिली संग ले।। (यह पूरा पद नित्य में पेज १२ पर पढ़े।)

पौष शुक्ल ४

शृंगार - पाग तथा नागफणी कतरा को।

वस्त्र - पिरोंजी शाटन के सुनहरी कोर के धोराके, शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीमस्तक पर नागफणी कतरा व पाग जरी काम के धराये गये है।

आभरण - माणक मोती के तथा चरण कमलों में पीरोंजी साटन की मोजड़ी तथा ठाड़ा वस्त्र श्याम तथा पिछवाई पिरोंजी रंगकी भरत कामकी धराई गई है। शयन में शीत के कारण सिगड़ी में अम्बर पधराया जाता है।

मंगला में राग-ललित कहो तुम सांची, कहां ते आये, कित जाओगे सवेरे।। ज़ानत हों पहिचानत नाहीं, आवत हो जू डरे रे।।१।। लाल पाग अध भाल, लटक रही मोतिनी माल, याहीं तें कहावत तुम रीझे रे। "तानसेन" के प्रभु, ठाडे रहो जू श्याम, सब सखियन मिलि घेरे।।२।।

शृंगार में राग-ललित सुधर त्रिय कौन..(यह पूरा पद पेज २३६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-धनाश्री रूचि सों जेवत.. (यह पूरा पद पेज २३८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी/टोड़ी माखन की चोरी तुम सीखे हो लाल, अब जो करन लागे चितकी चोरी।। जाकि दृष्टि मिले नंदनंदनसों, त्रिय फिरत गोदोहन दोरी।।१।। लोकलाज मर्यादा मेटी, बन बन बिहरत कुँवर किसोरी।। "आसकरन" प्रभु मोहन नागर, निगम श्रृंखला तोरी।।२।।

भोग में राग-नट हँसत हँसत लालन आयेरी मेरे अंगना।। हों तो तेरो रूप देख ठगीसी रही मेरी आली, जो पे कछु कहि आवे छबि देख भई मगना।।१।। जियकी रिस गई अधिक रूचि बाढ़ी, मोहन मोही री भयो री मन मगना।। करसों कर गहि हृदयसों लगाय लई, मिले री "गोविंद" प्रभु सब सुख निश जगना।।२।।

संध्या में राग-ईमन महरि पूत तेरों कैसेऊ बरज्यो न मानें।। बल मोहन की जोटी, और बालक संग लिये, मरकट घेरें फिरें पाछेतें, और लूटत घर मेरों।।१।। दूध दही घृत माखन तनक न उबरत, कैसेंक होय विस्वास हम केरों।। "गोविंद" प्रभुके जू बाल विनोद, सुनत नंदरानी, मन ही मन मुसक्यानी, साँची ही कहत अनेरो।।२।।

शयन में राग-बिहाग तैं जू नीलपट ओट दियौ री।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग पिय तोहे नैनन मे ही राखो।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष शुक्ल ५

शृंगार - पाग व सोनेरी जरी कामका कतरा।

वस्त्र - केशरियां साटन के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार धराये गये है। श्रीमस्तक पर केसरी पाग व सुनहरी जरी कामका कतरा तथा हीरा-पन्ना व मोती के धराये गये है। ठाड़ा वस्त्र मेघश्याम व पिछवाई केसरिया रूपहरी कोर की भरत काम की धराई गई है। मंगलभोग तथा वस्त्र श्री विट्ठलनाथजी के यहां से आते है। सुहाग सुंठि आरोगाई जाती है।

मंगला में राग-ललित कहो तुम सांची, कहां ते आये.. (यह पूरा पद पेज २४० पर पढ़े।)

शृंगार में राग-ललित सुधर त्रिय कौन वाही पे.. (यह पूरा पद पेज २३६ पर पढ़े।)

राजभोग आवता राग-धनाश्री चलहु गोपाल बोलत महतारी।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी माखन की चोरी तुम सीखे हो..(यह पूरा पद पेज २४० पर पढ़े।)

भोग में राग-नट हँसत हँसत लालन आयेरी.. (यह पूरा पद पेज २४० पर पढ़े।)

संध्या में राग-इमन/कान्हरौ (शयन में) मोहन माखन चोरी करत फिरत, बरजों हो नंदरानी।। माखन चोरी करो तो भले करो, और चोरी मन की करत, ताको तुम हटको रानीजु, देखत मनजु हरत।।१।। तनमन सुध-बुध सब बिसरी री, आवे न कछु गृह काज करत।। निसदिन फिरत संग लागी लागी, "गोविन्द प्रभु" की माता सुनि सुनि मन हरषत।।

शयन में राग-नायकी जान्यो प्रितको मरम।। मुखकी मोसों जियकी औरनसों, पायो हे तिहारो भरम।।१।। ऐसी हे कौन बाल जिन रस बस कर लीने, जानियत हियके नरम।। "हरिनारायण स्यामदास" के प्रभु, भली कीनी भोर आये चतुर परम।।२।।

मान में राग-पूर्वि स्यामाजु को श्याम मनावन आये।। सनमुख व्है के भाल छुवावत, मुकुट की परछांये।।१।। दर्पन ले वे ना ना करतहें, छबिसों धंसि के आये।। "सूरस्याम" बृन्दावन जीवन, छलसों हाँ हाँ खाये।।२।।

पोढ़वा में राग-नायकी पोढ़े रंगमहल नन्दलाल।। दोऊ ओर धरी है अंगीठी, परदा परे रंग लाल।।१।। ललितादिक सखी चरन चांपत, निरखत होत निहाल।। "रसिक" स्वामिनी लाय लई उर, भरि लिनी अंकवाल।।२।।

पौष शुक्ल ६

गोस्वामी श्री दामोदरलालजी महाराज को उत्सव

शृंगार - हीरा की टोपी का।

वस्त्र - पीली साटन के सोनेरी कोरके शुथन तथा वागो घेरदार श्रीमस्तक पर हीरा की जडाऊ टोपी पर तीन कलंगी धराई गई है। श्री चरणकमलों में हीरा जड़ी मोजड़ी ठाड़ा वस्त्र पतंगी रंगके, कन्दरा पर हीरा जड़े हुवे चोखटा तथा पलना की पिछवाई केशरिया जरी भरतकाम की इसमें श्री गोवर्धनलालजी महाराज तथा चि. श्री दामोदरलालजी बावासा बैठकर झूला रहे हैं। दूसरी तरफ श्रीनंदरायजी व श्रीजसोदाजी झूला रहे है।

आभरण - भारी शृंगार हीरा-मोती-माणक सोना के भारी शृंगार धराया गया है।

सामग्री - पांच भात व पाटिया की सामग्री धराई गई है।

मंगला में राग-ललित माई मेरो मोहन सों मन मान्यो।। (यह पूरा पद पेज २३१ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-ललित लरिकाई में जोबन की छबि, देखो सुन्दर नयनन भर-भर।। बिथुरी अलक बदन छबि राजत, सुरत केलि मानों सीख दई हर।।१।। गंड चखोड़ा पर चख बिदुला, चिन्ह कियें मानों चुम्बन कर कर।। नैन सलोने भ्रमर भमत मानो, ललित गिरा राजत तोतर।।२।। आंगन डोलत फिरत महाराज, लेत सखी लरकारे भुजन भर।। "सूरश्याम" सब समे महारस, देत लाल पावत सुखनागर।।३।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री लालको मीठी खीर जो भावे।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सांरग पोष निर्दोष सुखकोष सुन्दर मास (यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट हौं बलि बलि जाऊँ छबिले लाल की।। धूसरि धूरि घुटरवन टेकत, बोलत वचन रसाल की।।१।। छिटकी रही चहुँ दिसिजु लटुरियाँ, लट लटकन सोहे माल की।। मोतिन सहित नासिका नथुनी, कंठ कमल दल माल की।।२।। कछुक हाथ कछुक मुख माखन, चितवनि नैन विशाल की।।३।। "सूरदास" स्वामी सुखसागर, निमिष न तजें ब्रजबाल की।।३।।

संध्या में राग-कल्याण मेरे छगन-मगन खेलों आँगन, जसुमति के बारे।। लटकत लिलाट धूरि धूसर भरे गात, कहत मीठी तोतरी बात घुँघरवारे।।१।। कंठ कठुला बिराजे केहरी नख हीरा छाजे, पायन पैंजनी सोहे नंदके दुलारे।। "धोंधी" के प्रभुकी बाललीला अवगत, कहत निगम नेति नेति ब्रह्मवेद हारे।।२।।

शयन में राग-अड़ानों चलो मेरे लाडिले हों, पायन...(यह पूरा पद पेज २०६ पर पढ़े।)

मान में राग-अड़ानों पिय तोहे नैनन मे ही राखों।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सोवत नींद आय गई श्याम ही।। महरी उठ पोढ़ाय दुहुनकों, आपुन लागी गृहकाम ही।।१।। बरजतहें घर के लोगनको, हरिये लेले नाम ही।। गाढ़े बोलन पावत कोऊ, डर मोहन बलराम ही।।२।। शिव सनकादिक अंत नही पावत, ध्यावत हैं दिनयाम ही।। "सूरदास" प्रभु ब्रह्म सनातन, सो सोवत नन्दधाम ही।।३।।

शयन के बाद बधाई में राग-सारंग सामने तसवीर आजाती है जब आपकी, तो रूलाकर छोड़ती है वो अदाऐं आपकी।।१।। कहां चले व्रजराज इस प्यारी प्रजाको छोड़कर, अब जुदाई ना सही जाती है हमको आपकी।।१।। हस्तिनापुर की कोठियां सुनी पडी है आप बिन, जहाँ हुवा करती थी प्यारे राम क्रीड़ाएं आपकी।। मस्त हाथी हट नही सकता अड़ग से एक तिल, उसी तरह आदत थी निराली आपकी।।२।। मायामत खण्डन किया काशी में जाकर आपने, देख सब लज्जित भये लखि पंडिताई आपकी।। विरूद्ध धर्मि जीवको लीला दिखाई आपने, भूल जरा होगई सेवा भुलाई आपकी।।३।। नित्य नई लीला उदयपुर में दिखाई आपने, हे प्रजा फिरभी तसल्ली दे गये श्रीमान् तो, रख गये गोविंद को खासा निसानी आपकी।।४।। "रसिक" की विनति यही प्रभु दरस जल्दी दीजिये, याद आती है बहुत अब दामोदर भगवान की।।५।।

राग-सारंग (बधाई) जयति भागीरथी नाथ पद्मावती प्राणपति, वल्लभकुल छत्र आनंदकारी।। वल्लभवंश उदय निज भक्तहित, कोटि उडुराज सम तापहारी।।१।। जयति काशी नगर विजय करन, प्रभु दुष्ट मतिमंद पाखंड टारी।। वेद पथ थाप मर्यादा कुल राखिके, जगत उद्धरण प्रभु माया डारी।।२।। जयति स्तुति शेष कर न सकें, एक मुख सुयश वरनत तहाँ विश्व नारी।। द्वित्तीय लीला प्रभु करनको अनुसरे, पौष सुद छठ छांटनी विचारी।।३।। जयति नैनिताल लग्न राधिका संग, आसुरी जीव तहाँ मोह पांमी।। भाव भगवान को भूल के, भावना भावन भाव नारी।।४।। जयति दिल्ली निज धाम कर आपने, राज्य पद त्याग कर लीला बिहारी।। पतित पावन करन पुष्टि पथ अनुसरन, ईच्छा पूरन विट्ठल बिहारी।।५।। जयति गोविंद सुपुत्र श्रीमाधव, चरण तृतीया लीला विचारी।। मध्य मेवाड़ में पतित तुम्हरो पर्यो, वेगी सुधी लो गिरिराजधारी।।६।।

पौष शुक्ल ७

(गुलाबी घटा)

शृंगार - पाग-कतरा को।

वस्त्र - आज सभी वस्त्र गुलाबी शाटन के, बिना कोरके, शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर रेशम काम का कतरा गुलाबी पाग। मोजड़ी गुलाबी रंग की शाटनकी ठाड़ा वस्त्र गुलाबी तथा पिछवाई गुलाबी शाटनकी बीनाकोरकी धराई गई है।

आभरण - गुलाबी मीना के तथा सोने के धराये गये है।

सामग्री - श्रीगोपीवल्लभ भोगमें कुनवारा आरोगाया गया है।

मंगला में राग-ललित भली कीनी लाल गिरिधर, (यह पूरा पद पेज २३६ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-ललित कमलसी अंखियां लाल तिहारी।। तिनसों तक तक तीर चलावत, बेंधत छतियां हमारी।।१।। इन्हें कहा कोऊ दोष लगावत, ये अजहू न संभारी।। "श्रीविट्ठल" गिरिधारी कृपानिधि, सुरत ही तें सुखकारी।।२।।

राजभोग आते समय (ग्रह भोजन के पद) राग-धनाश्री सुतहि जिमावत यशोदामैया।। (यह पूरा पद पेज १५० पर पढ़े।)

राजभोग में राग-जोनपुरी माईरी लाल आयेरी मेरेही महल, तन मन धन सब वारौं।। हौं बल गई सखी आजकी आवन पर, पलकन सों मग झारौं।।१।। अति सुकुमार पद चरन सरि, कंकरगुन सब टारौं।। "नंददास" प्रभु नंदनंदनसों, ऐसी प्रीत नित धारौं।।२।।

भोग में राग-नट लालन नहिंन री काहूके वसके।। (यह पूरा पद पेज १५३ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी घर घर नंदमहर के, मिस ही मिस आवे गोकुलकी नार।। मदनमोहन बिन देखे कल न परत छिन, भूली धाम काम आछो बदन निहार।।१।। दीपक ले चली बाहर, बारमें बरो कर डार, फिर आई छबिसों, ब्यारहू को देती गार।। "नंददास" नंदनंदन सों अटक्यों मन, पलक की ओट मानो बीते जुग चार।।२।।

शयन में राग-कान्हरो आज सुहावनी रात, लालन मेरे ही आये।। मन मन फूली अंग न समाती, निकुंज में करत बधाये।।१।। नखशिख अंग अधिक बनीरी, वर लावण्य निकाये।। गिरिधर प्रिये नवरस वश कीने, ताते "कृष्णदास" गुण गायें।।२।।

मान में राग-बिहाग मनावत हार परीरी माई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पौष शुक्ल ८

श्रृंगार - सेहरा का।

वस्त्र एवं आभरण- अमरसी साटन के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागा चाकदार पटका केसरिया रूपहरि किनारी का। दुमाला पर हीरा जड़ा हुआ सेहरा, ठाड़ी लड़ मोती की, शीशफूल, कुण्डल हीरा जड़े वेणी श्याम हीरा मोती की जमनी तरफ। माणक का तिलक, श्रृंगार हीरा मोती और फीरोजी मीने के, कड़ा पायल पेंजनी सभी हीरा के। चरणारविंद में केसरी मोजड़ी, पिछवाई मेघश्याम मखमल की, लग्न मण्डप की सोनेरी जरी के भरत काम की।

मंगला में राग-ललित कांहा ते आये हो उठ प्रातः, आलस भरे जु जृंभात।। जो अलि निपुण बसे तुम्हारे संग मधुप गुंज, और न भाखत गावत गुणन गाथ।।१।। हों तुमते सिधे व्है बूझत, तुम उलटेही बरसत हमपर, हमने कहा भर लीने बाथ।। व्रजपति रसिक रसिक तुम दोऊ, रसिक जीन किये है "चतुर्भुज", सुन पिय गोकुलनाथ।।२।।

श्रृंगार में राग-ललित अति रंग लाग्यो बना बनी।। दोऊ जन अनुरागे पागे रजनी सजनी, जुवती जूथ चार चितवनी।।१।। वृंदावन नित धाय रसिकवर, तब गुनागुनी।। "मदनमोहन" चिर जीयों दोऊ, दुल्हे और दुल्हनी।।२।।

राजभोग आते समय राग-आशावरी श्री वृषभान सदन भोजन को, नन्दादिक सब आये हो।। (यह पूरा पद पेज ४७ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-सुधराई राधे जू नव दुलही, दुल्हे..(यह पूरा पद पेज १८० पर पढ़े।)

भोग में राग-नट बसो मेरे नैनन में यह जोरी।। नव दुल्हे व्रजराज साँवरो दुल्हनी राधा गौरी।।१।। गजमोतिन को सीस सेहरो, हरखि निरखी चित चोरी।। "हित हरिवंस" करि न्योछावर, चिर जीयो यह जोरी।।२।।

संध्या में राग-गौड़ी राधा प्यारी दुलहन जु को,... (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग जुगल वर आवत है गठजोरे।। संग सोभित वृषभाननंदिनी, ललितादिक तृन तोरे।।१।। सीस सेहरो बन्यो लालके, निरखी हँसत मुख मोरे।। निरख निरख बलिजाय "गदाधर", छबि न बाढ़ी कछु थोरे।।२।।

मान में राग-बिहाग ना छूटे मोहन डोरना अहो, (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंग महल सुखदाई।। (यह पूरा पद पेज १४१ पर पढ़े।)

पौष शुक्ल ९

शृंगार - सोने की पाग का।

वस्त्र - पीले साटन के रूपहरी कोरके शुथन तथा वागा घेरदार। सोने की पाग पर सुनहरी जरी काम का कतरा। ठाड़ा वस्त्र लाल, पिछवाई पीली साटन की रूपहरी जरी कोरकी, पीला पटका।

आभरण - सीरपेज कर्णफूल शीशफुल सब पन्ना मोती के। श्रृंगार सब पन्ना मोती के। मोजड़ी पीली साटन की। पायल पेंजनी नुपुर सब सोना पन्ना के।

मंगला में राग-ललित जागे हो रैन तुम सब, नैना अरूण हमारे।। तुम कियो मधुपान, घुमत हमारो मन, काहे ते जू नंददुलारे।।१।। उर नख चिन्ह तुम्हारे, पीर हमारे, कारण कौन पियारे।। "नंददास" प्रभु न्याय स्याम घन, बरखे अनत जाय हम पर झुमझुमारे।।२।।

शृंगार में राग-ललीत आजकी बानिक परहों लाल बलिबलि गई।। विगलित कच सुरंग पाग, ढ़रक रही वम भाग, अंग अंग अलसई।।१।। अरून नैन झबकि जात, अरू जृंभात वार वार, विघस इत बचनई।। धन्य भाग सुहाग जाको, "मुरली" के प्रभुके संग सब निसा बितई।।२।।

राजभोग आते समय राग-टोड़ी/धनाश्री चलहु गोपाल बोलत महतारी।। (यह पूरा पद पेज १४४ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-टोड़ी सोने की मटुकिया, जराव की ईंडुरिया, श्याम प्रेम भरी भूल गयी गोरस।। प्रीतम को नाम ले ले, कहेत लेओरी कोऊ, ब्रजमें डोलत बोलत है चहुँओ रस।।१।। चलो श्याम सुन्दर एकांत दधि खाइए, न जात तजे वाको रस।। "तानसेन" के प्रभु हौंजू कहतहों, साँझ भई रटत निकसी हुती भोरस।।२।।

भोग में राग-नट हँसत हँसत लालन आयेरी मेरी अंगना।। (यह पूरा पद पेज २४० पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौड़ी चल सखी चल अहो, वृज पेठ लगी है, तहां बिकत हरी प्रेम।। सुठसोंधों प्राननके पलटें, उलट धरो यह नेम।।१।। आन भाँति पायवो दुर्लभ, कोटिक खर्चो हेम।। "रामदास" प्रभु रत्न अमोलक, सखी पाइयत है एम।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ सिर सोनेके सूतन सोहत, पाग पेंचन ऊपर नग लगे।। रतनारे भारे ढरारे नयनन, देखत मूर्छित मैन जगे।।१।। मुखकी मंजुलताई बरनी न जाई, चंचलता देखी दूर भगे।। "नंददास" नंदरानी छबि निरख, वार पीवत पानी न काहुकी दृष्टि लगे।।२।।

मान में राग-नायकी रूसनों न कर प्यारी रूसवो निवार।। (यह पूरा पद पेज १५४ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष शुक्ल १०
(मकर संक्राति उत्सव होने पर)

शृंगार - पाग चन्द्रिका का।

वस्त्र - लाल छीटके बिनाकोर के शुथन तथा वागो घेरदार। श्रीमस्तक पर छींट की पाग पर सादी मोरकी चन्द्रिका धराई गई है। मौजड़ी लाल छींटकी ठाडा वस्त्र सफेद पिछवाई लाल छीट की रूपहरी कोर की धराई गई है।

आभरण - हीरा-माणक-मोती सोना के धराये गये है।

सामग्री - तिल्ली के लड्डू, खीच तथा अनसखड़ी में पुवा।

विशेष - राजभोग के बाद गोल डेली में चांदी की पालकी सजाकर रखी जाती है। नई गेंद पधराई गई।

मंगला में राग-विभास ऐक रसना कहा कहों सखीरी, ललन की प्रीति अमोली।। हसन खेलन चितवन जो छबीली, अमृत वचन मृदु बोली।।१।। अति रस भरे मदनमोहन पीय, अपने करकमल खोलत बंद चोली।। "गोविंद" प्रभुकी बहुत कहा कहुं, जे जे बातें कही अपनो हृदे खोली।।२।।

शृंगार में राग-विभास तरणी तनया तीर आवत ही प्रात समें, गेंदुक खेलत देख्यों आनन्द को कंदवा।। काछिनी किंकनी कटि पीताम्बर कसि बांधे, लाल उपरना सिर मोरन के चंदवा।।१।। पंकज नैन सलोने बोलत मधुरे बोल, गोकुल की सुन्दरी संग आनन्द सुछंदवा।। "कृष्णदास" प्रभु गिरिगोवर्धन धारी लाल, चारू चितवनी खोलत कंचुकी के बंदवा।।२।।

राजभोग आते समय राग-धनाश्री लालको मीठी खीर जो भावे।। (यह पूरा पद पेज १३८ पर पढ़े।)

राग-सारंग खेलतमें को काको गुसैयां।। श्रीदामा जीते तुम हारे, बरबट ही कहा करत बड़ैयाँ।।१।। जाति-पाँति कुल बड़े न हमतें, ना हम बसत तुम्हारी छैंया।। याहीतें अब देत अधिकायो, हमतें अधिक तिहारे गैयाँ।।२।। रूठ करै तासों को खेलै, रहहु सखा सब ठाँके ठैयाँ।। "परमानंद" प्रभु खेल्यों चाहो तो, पोत देहु कर नंद दुहैयाँ।।३।।

राजभोग में राग-पंचम बोलत श्याम मनोहर बैठे, कदम खण्ड और कदम्बकी छैयाँ।। कुसुमित दृग अलि गुंजत सखी, कोकिला कल कूजत तहियाँ।।१।। सुनत दुतिकाके बचन माधुरी, भयो है हुलास जाके मनमहियाँ।। “कुंभनदास” ब्रजकुँवरि मिलन चलि, रसिक कुँवर गिरिधरन पैयाँ।।२।।

राजभोग में राग-असावरी हरी भोजन करत विनोदसों।।(यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

भोग में राग-नट तें मेरी मोतीन लर क्यों तोरी।। रहे ढोटा तु नन्दमहर को, करन चहति कहा जोरी।।१।। मैं जान्यों मेरी गेंद चुराई, लै कंचुकी बिच होरी।। “परमानन्द” मुसिकाई चली तब, पूरन चन्द चकोरी।।२।।

संध्या मे राग-गौरी रहि गये भामीनी की बांह।। मदन गोपाल चतुर चिंतामनि, जानत हो जिय माँही।।१।। ठाडे बात कहत राधासों, तहाँ जसोदा आई।। जूठे हि मिस करि झगरन लागे, तैं मेरी गैंद चुराई।।२।। कौन टेब तेरे ढोटा की, बरजति काहे न माई।। या गोकुल में स्याम मनोहर, उलटी चाल चलाई।।३।। सुनि मृदु वचन स्याम-स्यामा के, महरि चली मुसिकाई।। “परमानन्द” अटपटी हरि की, सबै बात मन भाई।।४।।

शयन में राग-ईमन ग्वालीन तें मेरी गेंद चुराई।। अब ही आन परी पलका पर, अपनी ओट दुराई।।१।। रहे रहो लाडिले झूठ न बोलो, छतियाँ छूओं न पराई।। “आसकरन” प्रभु मोहन नागर, कहाँ सीखे चतुराई।।२।।

मान में राग-बिहाग मनावत हार परीरी माई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष शुक्ल ११

शृंगार - टिपारे को।

वस्त्र - करमची रंग के रूपहरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार श्रीमस्तक पर पन्ना व गुलाबी रंग को मीनाको टिपारो। मोजड़ी करमची रंग की, ठाड़ा वस्त्र पीला तथा पिछवाई करमची रंग की धुप-छांव की धराई गई है।

आभरण - मोती व गुलाबी मीना तथा सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित आज सगरी निशा कहां जागे लाल, कहो किन सांची शुभग सांवरे माधो।। घोख मथन शब्द प्राणपति गह कह्यो, रहो रहो मोहन सूर प्रकट भयो आधो।।१।। कमल विकसित भये चक्रवाकी हँसी, सुमुखी पुलकित मुदित निजपति आराध्यो।। "विश्वमोहन" वदन निरख नभ चंद्रमा, सगण लज्जित भयो प्रेमगुण बाध्यो।।२।।

शृंगार में राग-रामकली निर्तत मोहन रसिक सखन संग (यह पूरा पद पेज ५८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-धनाश्री रूचि सों जेवत जुगल किशोर।। (यह पूरा पद पेज २३८ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-टोड़ी कटि पर नीके लटपटात पीत पट।। सीस टिपारो मोरचंदसों मिलि, धातु प्रवाल विचित्र भेख नट।।१।। पचरंग छींट उदार ओढ़नी, लटकत चलत तरनी तनयातट।। "ब्रजभामिनिके" मोतीहार सों, उरझी रही री कुंचित अलकलट।।२।।

भोग में राग-पूर्वि गायन के पाछें पाछें कांछें कांछें, बन्यो है टीपारो आछो लाल गिरिधर के।। धातुको तिलक किये बनी गुंजामाल हिये, बनके सिंगार सब विपिन बिहारी के।।१।। नटवर वेस किये ग्वालमंडली संग लिये, गावत बजावत देत कर तारी के।। "गोविंद" प्रभु बनतें आवत दौर दौर, ब्रजनारी झाँकत मध्य जारी के।।२।।

संध्या में राग-गौरी अग्र तक तक ध्रुं ध्रुं ध्रुं लनन वर, आवत गोधन संग।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

शयन में राग-अड़ानो तेरी भ्रौंह की मरोरन तें ललित त्रिभंगी भये, अंजन दे चितयों भयेजू स्याम वाम।। (यह पूरा पद पेज १५६ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी सरस बनी प्यारी सरस बनी।। (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग यह ऋतु नीकी लागत सीतकी।। (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पौष शुक्ल १२

श्रृंगार - ग्वाल पगा को।

वस्त्र - श्याम रंग के खिनखाप के शुथन तथा वागो चाकदार। हीरा-माणक जड़ा हुवा ग्वाल पगा पर मोर पिछ धराया गया है। मोजड़ी श्याम साटन की, ठाड़ा वस्त्र पिला रंग के तथा पिछवाई श्याम खिनखाप की मोटी बुंटियों वाली लाल हांसिया की धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार हीरा माणक मोती के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित **भली कीनी लाल गिरिधर, भोर आये बोल सांचे।।** (यह पूरा पद पेज २३६ पर पढ़े।)

श्रृंगार में राग-ललित **मैया तेरो मोहन अतिहि सयानो, देत अटपटी गारी।।** (यह पूरा पद पेज २३८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आशावरी **हरि भोजन करत विनोद सों।।** (यह पूरा पद पेज १२५ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी **चढ़ गिरि श्रृंग कहत मोहन, इहाँतें देखिये सकल व्रज दाऊ।। यावत संपत तुम ही व्रजराज की, नेक इहाँ चढ़ आऊ।।१।। अंखी पंखी काहु सुजत न भैयाहो, कनक कलस पर धजा फिरत बताऊ।। "गोविंद" प्रभुसों कहत सखा, ऐसे ही तुम दिखाऊ।।२।।**

राग-आसावरी **गोवर्धनकी शिखर साँवरो, बोलत धौरी धेनु।। पीत वसन सिर मोरके चँदोवा, धरि मोहन मुख बेनु।।१।। बन जु धातु नव चित्र किये, अंग ग्वाल बाल संग सेतु।। "कृष्णदास" बलि बलि यह लीला, पीवत घैया मथ मथ फेनु।।२।।**

भोग में राग-पूर्वि **हाकें हटक हटक, गाय ठठक ठठक रही, गोकुलकी गली सब सांकरी।।** (यह पूरा पद पेज १५१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी **झुक रही सुन मुरली की टेर।।** (यह पूरा पद पेज ५७ पर पढ़े।)

शयन में राग-बिहाग **हिमऋतु सिसिर ऋतु अति सुखदाई।।** (यह पूरा पद पेज २३८ पर पढ़े।)

मान में राग-नायकी **सरस बनी प्यारी सरस बनी।।** (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग **यह ऋतु नीकी लागत सीतकी।।** (यह पूरा पद पेज १४५ पर पढ़े।)

पौष शुक्ल १३

(सुनहरी घटा)

शृंगार - पाग कतरा का।

वस्त्र - सुनहरी जरी के शुथन तथा वागो घेरदार। सुनहरी चिरा वाली पाग पर सुनहरी काम का जरि का कतरा। मोजड़ी सुनहरी जरीकी, ठाड़ा वस्त्र, पिछवाई, गादी तकिया सभी सुनहरी जरी के धराये गये है। आभरण नित्यानुसार सोना के धराये गये है।

मंगला में राग-ललित कांहा ते आये हो उठ प्रातः..(यह पूरा पद पेज २४५ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-मालकोष तेरी गति अगाध ये मोपे वरिण न जाई, निरंजन निराकार नारायण।। सप्तद्वीप सप्तखंड अष्टकुल, पर्वत को मेरू रच्यो सप्त धरायण।।१।। तू ही चंद तू ही सूरज तू ही उडगन के तारे, तू ही तेज पवन पानी, तू ही धरती आसमान।। "तानसेन" के प्रभु घटघट में करत ज्ञान, अगम निगम सकल सृष्टि धरत ध्यान।।२।।

राजभोग आते समय राग-आसावरी भोजन करत पिय.. (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

राग-जेतश्री गोपाल को मुखारविंद, जीयमें विचारो।। कोटि भानू कोंटी चन्द्र, मदन कोटि वारों।।१।। कमल नैन चारू बैन, मधुर हास सोहैं।। बंकन अवलोकन पर, जुवती सब मोहै।।२।। धर्म अर्थ काम मोक्ष, सब सुखके दाता।। "चत्रभूज" प्रभु गोवर्धनधर, गोकुलके त्राता।।३।।

भोग में राग-नट रूप देख नैना पलक लागे नहीं।। (यह पूरा पद पेज १७४ पर पढ़े।)

संध्या में राग-गौरी चल सखी चल अहो वृज पेठ लगी है..(यह पूरा पद पेज २४६ पर पढ़े।)

राग-कान्हरौ सिर सोनेके सूतन सोहत..(यह पूरा पद पेज १५५ पर पढ़े।)

शयन में राग-केदारों फुली-फुली डोले सोनेके सदन में, मदनमोहन रसमाती।। रस बस किने सुहाग, बिहारन मंद-मंद मुसक्याती।।१।। बहियाँ जोर परस्पर दोऊँ, लाड़ली फेर लड़ाती।। "हरिदास" के स्वामी स्यामा, रंग बरखत बहु भांती।।२।।

मान में राग-बिहाग दौरी दौरी आवत मोहि मनावत..(यह पूरा पद पेज ५६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग पोढ़े रंगमहल गोविंद।। राधिका संग शरद रजनी, उदित पून्यों चंद।।१।। अनेक चित्र-विचित्र चित्रित, कोटी-कोटीक बन्द।। निरख-निरख बिलास विलसत, दंपति रसकन्द।।२।। मलयचंदन अंग लेपन, परस्पर आनन्द।। कुसुम बींजना ब्यार ढोरत, सजनी "परमानंद"।।३।।

पौष शुक्ल १४

श्रृंगार - फेंटा को।

वस्त्र - मेघश्याम साटन के सुनहरी कोरके, शुथन तथा वागो चाकदार। मेघश्याम फेंटा सुनहरी कोरका पर सुनहरी जरी के काम का कतरा-कलंगी। ठाड़ा वस्त्र गुलाबी रंग का, पिछवाई श्याम साटन भरत काम की तथा मोजड़ी मेघश्याम धराई गई है।

आभरण - नित्यानुसार सोने के तथा वेणुवैत्र मीना की धराई गई है।

मंगला में राग-ललित आइये जु भले आये, कित सकुचत हो। सुरत संग्राम कीने, सौतिन को सुख दीने, याही रसभीने हों पें, मोको रूचत हो।।१।। तुम देखें रीस गई, उपजी है प्रीत नई, भई सो तों भई, अब काहेंधों सुचत हो।। "नारायण" बल्लभ मोहि जानो, वाहे चेरी कर मानों, कहा जीय एतो, अभिलाख मो मुचत हो।।२।।

श्रृंगार में राग-ललित मैया तेरो मोहन अतिहि सयानो, (यह पूरा पद पेज २३८ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-आशावरी भोजन करत नवल पिय प्यारी।। (यह पूरा पद पेज २०२ पर पढ़े।)

राजभोग में राग-आशावरी शुभग ललना सुनहि गोविंद गावै।। राग आसावरी चर्चरी ताल धरि, मधुरतर मुरलिका मोहन बजावैं।।१।। खसत उडृगन सकल, सेष रजनी रही, अजहुँ लगि नागर तोहीं बुलावै।। नाहिं जानति कवन प्रिति मनमें बसी, तुम नाम सँवलित स्वर गति जनावै।।२।। बिपिन तमचर घोष अरून प्राचि दिसा, चक्रवाकी मनसि मोद उपजावैं।। सुनि "कृष्णदास" पिय लाल गिरिधरन, रसिकवर भूपाल काहे न भावैं।।३।।

भोग में राग-नट/पूरबी गैया गई दूर टेरोजु कान्ह।। (यह पूरा पद पेज ५१ पर पढ़े।)

संध्या में राग-पूर्वि बोलत धेनु गोबर्द्धन गिरि चढ़।। मोहन मुरली धुनि सुन श्रवनन, काजर गंगा गुरनी हरनी, मुर धाई प्रेम बढ़।।१।। आस-पास सब घेर रही, वह वापर चढ़ि।। "गोविंदप्रभु" हस्तकमल परस कियो, तातें अति दूने दूध चढ़ी।।२।।

शयन में राग-कान्हरौ यह छबि मोपें जात न बरनी।। गोवर्धनके आसपास, सब झूल रही हैं अरनी।।१।। मदनमोहन पिय खेलन निकसे, संग राधा मनहरनी।। "श्रीविट्ठल" गिरिधर पद परसत, धन धन ब्रजकी धरनी।।२।।

मान में राग-बिहाग मनावत हार परीरी माई।। (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-बिहाग सखियन रूचि रूचि सेज बनाई।। (यह पूरा पद पेज १०० पर पढ़े।)

पौष शुक्ल १५

शृंगार - किरीट मुकुट का।

वस्त्र - मेघश्याम मखमल पर मोती के काम के शुथन तथा वागो चाकदार। श्रीकंठ में गातीका पटका लाल जरीका रूपहरी कोरका। मोती के कामका किरीट मुकुट, मोजड़ी मेघश्याम ठाड़ा वस्त्र लाल सुनहरी छापा के तथा पिछवाई बादली रंगकी जरीकी भरत कामकी।

आभरण - हीरा-मोती व सोने के धराये गये है।

मंगला में राग-खट **आज नंदलाल मुखचंद नैनन निरख..**(यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

शृंगार में राग-खट **व्रजराज को लाल ठाड़ो सखी..** (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

राजभोग आते समय राग-खट **मिल जेवत लाडली लाल, खट रस विंजन चार सबे सरसे।। हठ के मन मोहन हार रहे भटु, लाय जिमावत को तरसे।।१।। कर कंपत हाथ ते छूटे, पर कबहुक ग्रास मुखसों परसें।। रस की रूचि जो जीयमें उपजे, सखी माधुरी कुंजन में वरसे।।२।। सखी सोंझ लिये चहुँ और खरी, निरखे दरसे परसे।। यह सुख सिंधु कही न परे, सब सखियन तहां "हरिवंश" लसे।।३।।**

राजभोग में राग-आशावरी **गोवर्धन गिरिपर ठाड़े लसत।।** (यह पूरा पद पेज १४६ पर पढ़े।)

नवल किशोर मैं जू बन पाए।। नव घनश्याम फले वा वैभव, देखत नयन चटपटी लाए।।१।। धातु विचित्र काछनि कटी तट, ता महँ पीत वसन लपटाए।। माथे मोरमुकुट रचि बहु विधि, उर गुंजामनि हार बनाए।।२।। तिलक ललाट नासिका बेसरी, मुख मुरली गुन कहत सुनाए।। "चत्रभुज" प्रभु गिरिधर तनमन लियो, चोरी मंद मुसकाए।।३।।

भोग में राग-पूर्वि **आगें कृष्ण पाछें कृष्ण इत कृष्ण उत कृष्ण, जित देखो तित कृष्ण मईरी।। मोरमुकुट धरें कुंडल किरन धरें, मुरली मधुर ध्वनि तान नई री।।१।। काछिनी काछें लाल उपरैना पीत पट, तिहि काल सोभा देख थकित भई री।। "छितस्वामी" गिरिधरन श्रीविट्ठल, निरखत छबि अंगअंग छई री।।२।।**

संध्या में राग **देखन-देत न बैरिन पलके।।** (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

शयन में राग-केदार **अरी मैं रतन जतन कर पायों।।** (यह पूरा पद पेज १४७ पर पढ़े।)

मान में राग-बिहाग **मनावत हारपरीरी माई।।** (यह पूरा पद पेज ४६ पर पढ़े।)

पोढ़वा में राग-नायकी **पोढे रंग रमनीय राय।। रंगमहल चित्र किये सुन्दर, जगमगात जुराय।। रत्नजटित की आगे अंगीठी, परदा परे सुहाय।। बल जाऊँ छबिली छबि पर, "कृष्णदास" बली जाय।।२।।**

ग्रंथ प्रकाशन में आर्थिक सहयोगकर्ता वैष्णवजनों की सूचि

१.	श्रीमती उषा व्यास एवं श्री राजेन्द्र व्यास, चोपासनी रोड़, जोधपुर	२१०००/-
२.	श्रीमती वृजललना जोशी स्व. श्री भगवाल वल्लभ जी जोशी की स्मृति में डॉ. श्री विनय जोशी एवं श्रीमती सुषमा जोशी अहिंसापुरी, उदयपुर	११०००/-
३.	श्री आसकरण जी धुलीलाल जी जड़िया, नाथद्वारा	११०००/-
४.	श्रीमती मथरी बाई स्व. श्री मदनलाल जी पारख, उदयपुर	१००००/-
५.	श्रीमती स्मिता बेन शाह एवं श्री भुवनेश भाई शाह, उदयपुर	७५००/-
६.	श्रीमती कोकिला बेन एवं श्री रसिक लाल शाह, अहमदाबाद	७५००/-
७.	श्रीमती दक्षा बेन एवं श्री हेमन्त भाई ठक्कर, मुम्बई	५०००/-
८.	श्रीमती जया बेन एवं श्री दिनेश भाई मंकोड़िया, कांदिबली	५०००/-
९.	श्रीमती प्रवीणा बेन एवं श्री राजेश भाई नगरा, मुम्बई	५०००/-
१०.	श्रीमती रूक्मिणी बाई बालकृष्णदास पारख ट्रस्ट, उदयपुर	२५००/-
११.	श्रीमती आशा बेन एवं श्री द्वारका दास पारख, उदयपुर	२५००/-
१२.	श्री मोहनलाल बृजबिहारी लाल वार्ष्णेय, हींगवाला हाथरस (उ.प्र.)	२५००/-
१३.	श्रीमती मंजु एवं श्री मोहनलाल पारिख, उदयपुर	२०००/-
१४.	श्री पंकज दाधिच, पाटन पोल, कोटा	१०००/-
१५.	श्रीमती चम्पक बेन पारखजी वाला, मंदसौर	१०००/-

परिचय

इस ग्रंथ के प्रकाशनकर्ता मदनलाल शर्मा का श्रीनाथजी की नगरी नाथद्वारा में सम्वत् 1996 कार्तिक कृष्ण नवमी को श्री हरिशंकर जी हाड़ा (गुर्जर गौड ब्राह्मण) के पुत्र के रूप में जन्म हुआ। आपने एम.ए., बी.एड. तक की शिक्षा ग्रहण की एवं साहित्य रत्न की उपाधि भी प्राप्त की। आपने राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालय नाथद्वारा में प्रधानाध्यापक के पद पर कई कार्य किये।

आपके उत्कृष्ट कार्यों की वजह से राज्य स्तरीय पुरस्कार वर्ष 1993 में ''उत्कृष्ट शिक्षक की भूमिका एवं श्लाघनीय जन-सेवा''के कारण सार्वजनिक अभिनन्दन प्रदान किया।

आपकी रूचि बाल्यकाल से ही पुष्टिमार्ग में रही। आपका ब्रह्म संबंध वर्तमान तिलकायत श्री 108 श्री इन्द्रदमनेजी महाराज (श्री राकेशजी) द्वारा हुआ। इस कार्य के प्रेरणादायक श्री मदनलाल जी पारिख (खाण्डवाला) एवं श्री गोपालदासजी साकघरिया बाबा रहे। आपको पुष्टिमार्ग की कुछ सेवा करने का विचार मन में बार-बार आता था। अचानक ''निकुंज नायक श्रीनाथजी''नामक गुजराती ग्रंथ श्री हरसानी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित देखने को प्राप्त हुई। उसी से प्रेरणा मिली की इसी प्रकार की प्रतिदिन सेवा श्रृंगार व कीर्तनों की बारह महिनों की पुस्तक श्रीनाथजी को प्रणालिका के अनुसार हिन्दी भाषा में हो।

इसी प्रेरणा के फलस्वरूप कीर्तन संकलन प्रणालिका के अनुसार प्रारंभ किया एवं इसका प्रथम पुष्प (माह चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ) का प्रकाशन चैत्र शुल्का प्रतिपदा सं. 2065 को किया। द्वितीय पुष्प (माह आषाढ़, श्रावण एवं भाद्रपद) का आश्विन शुक्ल 10 सं. 2067 को प्रकाशन कर आप सभी वैष्णवजनों को समर्पित किया। अब यह तृतीय पुष्प (आश्विन, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष एवं पौष मास का) प्रकाशन कर आप वैष्णवजनों को समर्पित है।

यह कार्य प्रभु श्रीनाथजी की कृपा एवं तिलकायित गोस्वामी श्री 108 श्री राकेशजी महाराज के शुभाशीर्वाद से ही सम्पन्न हो सका है। आशा है वैष्णव जन इससे लाभान्वित होंगे।

निवेदक

यदुनन्दन त्रिपाठी

विद्याविभागाध्यक्ष

मंदिर मण्डल, नाथद्वारा (राज.)